मन्त्रात्मक सप्तशती

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

मन्त्रात्मक सप्तशती

उपहार-दाता

गुप्तावतार 'बाबाश्री'

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

'कौल-कल्पतरु'
चण्डी

मन्त्रात्मक सप्तशती

प्रथम भाग

मधु-कैटभ-वधः

***

उपहार-दाता

'गुप्तावतार'

पूज्य बाबाश्री मोतीलाल जी

***

सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

***

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

फोन : ०५३२-२५०२७८३ मो०: ९४५०२२२७६७

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

अनुक्रम

अनुदान
छः सौ पचास रु० (६५०/-)

पञ्चम संस्करण
शाकम्भरी जयन्ती
'पराभव' सं० २०७० वि०-१६ जनवरी, २०१४

मुद्रक
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

दो शब्द

'श्रीदुर्गा-सप्तशती' का प्रस्तुत संस्करण **गुप्तावतार पूज्य बाबा-श्री** द्वारा अपने प्रिय स्वदेश भारतवर्ष के प्रति दिया गया एक **अनूठा** और **अद्वितीय उपहार** है। इसकी पाण्डु-लिपि आपने अपने कर-कमलों से उस विलक्षण अनुष्ठान के लिए तैयार की थी, जिसके सम्पन्न होने के फल-स्वरूप ही संवत् १९९९ वि० - सन् १९४२ ई० में **'भारत छोड़ो'-आन्दोलन** हुआ और **भारत स्वतन्त्र** हुआ।

पूज्य-चरण बाबा मोतीलाल जी महाराज ने **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** के इस संस्करण के सम्बन्ध में अपने कर-कमलों से लिखित रजिस्टर के प्रारम्भ में लिखा है कि—

''....हिमालय के प्रवास में नेपाल की तिब्बती सीमा पर एक ब्राह्मण नेवार शिष्य-साधक ने **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** की यह प्रति मुझे दी, जो अपने ढङ्ग की अनूठी है। यह **पाण्डु-लिपि—संवत् ११२१ वि०** (सन् १०६४ ई०) की थी।...''

'मन्त्रात्मक सप्तशती' के प्रस्तुत संस्करण को **बाबा-श्री** ने संवत् १९८१ वि- सन् १९२४ ई० में काशी में पुनः लिपि-बद्ध किया था। इसमें उन्होंने विस्तार-पूर्वक **श्रीदुर्गा-सप्तशती के ७०० मन्त्रों का सम्पूर्ण पूजा-विधान** व **आहुति-प्रकार** लिखा। दैव-योग से **बाबा-श्री** द्वारा लिखित रजिस्टर **'श्रीचण्डी-धाम'** में आज भी सुरक्षित हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** में **प्रत्येक मन्त्र के अनुष्ठान** की जो विधि दी गई है, वह देखने से ही बड़ी वैज्ञानिक प्रतीत होती है। साधकों की सुविधा के लिए प्रस्तुत **नवीन संस्करण** द्वारा **प्रत्येक मन्त्र का विधान** और अधिक स्पष्ट रूप में अलग-अलग प्रकाशित किया जा रहा है। इससे कोई भी श्रद्धालु व्यक्ति सहज ही अपने **अभीष्ट मन्त्र का अनुष्ठान** कर लाभ उठा सकता है।

अन्त में यह लिखना आवश्यक है कि लोगों को अपने **गुरु-देव की अनुमति** प्राप्त कर ही **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** के अनुसार किसी अनुष्ठान में प्रवृत्त होना चाहिए।

प्रयाग-राज —**'कुल-भूषण'**

परिचय

हम सबको **'उपहार'**-स्वरूप **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** देनेवाले **पूज्य बाबा-श्री** का जन्म सं० १६४१ वि० की **श्रावण कृष्णा त्रयोदशी** को हुआ था। सं० २०५८ वि० अर्थात् आपकी **११७वीं जयन्ती** के पावन अवसर पर **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** के **तृतीय नए संस्करण** को प्रकाशित करते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस **तृतीय नए संस्करण** के प्रकाशन के सन्दर्भ में हमें **'चण्डी'**-पत्रिका के अनन्य सहयोगी एवं **कौलाचार्य पण्डित नथमल दाधीच** के सु-योग्य शिष्य वयो-वृद्ध **श्री निश्चलानन्दनाथजी** द्वारा विशेष सहयोग-प्रेरणा प्राप्त हुई है। अतः हम उनके प्रति हृदय से आभारी हैं।

परम पूज्य बाबा-श्री मन्त्र-शास्त्र के गहन ज्ञाता होने के साथ ही **परम देश-भक्त** थे। **'बाबा-श्री चरितामृत'**-नामक आपके परिचय-ग्रन्थ में आपके सम्बन्ध में सन् १६२७ से सम्पर्क में रहनेवाले **श्री यशवन्त केशव प्रधान जी** लिखते हैं कि—

"....सन् १६३० में जिन दिनों सारे देश में महात्मा गान्धी का आन्दोलन प्रारम्भ होकर उच्च स्थिति को प्राप्त कर रहा था, उन दिनों श्री बाबा जी महाराज सदा चिन्ता-ग्रस्त मालूम होते थे। भारत-वर्ष की भावी स्थिति के सम्बन्ध में वे सदैव चिन्तित रहते थे। मेरे देखने में जो श्रेष्ठ उपासक पुरुष, साधु-सन्त इत्यादि अब तक आए हैं, उनमें से अधिकांश अपनी स्वयं की उन्नति किस प्रकार हो सकती है, इसी विचार में मग्न रहनेवाले रहे हैं। **'भारत का पुनरुत्थान कैसे होगा और कैसे किया जाए?'**—इस प्रकार का विचार करनेवाले केवल बाबाजी महाराज मिले। उनके जैसा अपने शिष्य की उन्नतावस्था के लिए सदा सूक्ष्म दृष्टि से विचार करनेवाला और साथ-ही-साथ अपने राष्ट्र के सम्बन्ध में विचार करनेवाला सन्त मेरे देखने में तथा अध्ययन करने में अन्य कोई नहीं हुआ।

पूज्य श्रीबाबा जी ने **भारत के उत्थान** के लिए **'शत-चण्डी यज्ञ'** भी किया था। इसके लिए उनके निर्देशानुसार निम्न **'सङ्कल्प'** के अनुसार चैत्र पूर्णिमा के दिन अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। यथा—

"मम देशस्य क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा- योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त शरणागत-सम्पुटित-श्रीसप्तशत्यन्तर्गत अमुक (श्लोक सं०) मन्त्र-जपे विनियोगः।"

पूज्य बाबा-श्री ने हमें उक्त **'सङ्कल्प'** के साथ ही **सप्तशती के श्लोक-पाठ** भी दिखलाए। श्लोकों का अर्थ बताने के साथ-साथ, किन-किन कार्यों में इन श्लोकों का **'अनुष्ठान'** किया जाता है व किसने-किसने ऐसे **'अनुष्ठान'** किए हैं, इस सबका उन्होंने वर्णन किया। प्रत्येक श्लोक का कौन **'ऋषि'** है?, कौन **'देवता'** है?, मन्त्र-**'शक्ति'** कौन है?, **'बीज'** क्या है?, **'विद्या'** कौन-सी है?, कौन-सा **'गुण'** है?, कौन-सी **'इन्द्रिय'** है?, कौन-सा **'रस'** है?, कौन-सी **'कर्मेन्द्रिय'** है?, कौन-सा **'स्वर'** है?, कौन से **'तत्त्व'** हैं?, कौन-सी **'कला'** है?, कौन-सी **'मुद्रा'** है? और क्या **'ध्यान'** है?—इत्यादि समस्त बातें जब बाबा-श्री ने हमें बता दीं, तब हम सब लोगों ने मन्त्र के द्वारा **'आहुति'** दी।

इस प्रकार दस आदमी—दस बार मन्त्र पढ़कर **'आहुति'** देते थे। नित्य दस श्लोक होते थे और अन्त में **'आरती'** आदि होने के पश्चात् **'प्रसाद'** बाँटा जाता था। फिर रात के एक बज़े के बाद सारा समूह बाबाजी के साथ सागर के किनारे **'श्मशान-भूमि'** के पास बैठता था और प्रायः प्रातः चार बजे हमें बाँदरा स्टेशन पर पहुँचा दिया जाता था।

उक्त **'अनुष्ठान'** के पूर्ण होने में लगभग तीन मास लग गए। **'अनुष्ठान'** के पूर्ण होने पर पूज्य बाबाजी के निर्देशों से ऐसा आभास हुआ कि इसी प्रकार के और भी महत्त्व के **'अनुष्ठानों'** का योग आएगा।

दूसरा **'अनुष्ठान'** श्रावण मास में आरम्भ हुआ था। इस बार किसी **'यन्त्र'** की प्रतिष्ठा नहीं की गई। **'चाँदी'** का एक विशाल **'कुम्भ'**, जो पहले के **'कुम्भ'** से अधिक बड़ा था, एक **'यन्त्र'** पर स्थापित किया गया था। इस दूसरे **'अनुष्ठान'** का **'सङ्कल्प'** तीव्र था। भगवती योग-माया दुर्गा देवी के प्रसाद से स्वदेश के शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए पूर्व-वत् बीज-सहित प्रत्येक श्लोक को —**'इत्थं यदा यदा बाधा, दानवोत्या भविष्यति। तदा तदावतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि-संक्षयम्।'**—इस मन्त्र से सम्पुटित कर **'अनुष्ठान'** किया गया।

बाबाश्री ने **'सप्तशती'** के कुछ श्लोकों के लिए—

''कु - नीतिनः ब्रिटेनस्य, गृहीत्वा त्वमुपागता। लोकेषु विनाशाय ख्याता देवि! भविष्यसि।।''

उक्त **'पाठ'** लेकर **'हवन'** किया था। इसी प्रकार शेष श्लोकों के लिए—

''त्रैलोक्यमिन्द्रो लाभवान्, देवाः सन्तु हविर्भुजः। यूयं गच्छतु इंग्लैण्डं, यदि व्यापारमिच्छथ।।''

उक्त **'पाठ'** लेकर **'हवन'** किया था। कुछ समय के बाद मैंने महाराज-श्री से पूछा था कि—**''इस याग की फलद्रूपता कब होगी?''** उन्होंने बताया कि **''अभी और तम बाकी है। तीसरा 'अनुष्ठान' हो जाए, तो जल्दी ही सिद्धि प्राप्त होगी। नहीं तो तम निरसन होने में नौ या ग्यारह वर्ष लगेंगे।''** ऐसा ही हुआ। ग्यारह वर्षों के बाद ८ अगस्त, १९४२ को **'क्विट इण्डिया'** की घोषणा हुई और आगे के ९ वर्षों की अवधि के भीतर ही स्वराज मिल गया और **२६ जनवरी, १९५० को 'स्वतन्त्र भारत'** की घोषणा हो गई...''

स्पष्ट है कि **बाबा-श्री** द्वारा प्राप्त प्रस्तुत **'मन्त्रात्मक सप्तशती'**-नामक विधान अत्यन्त विलक्षण है। इसके द्वारा **पूज्य बाबा-श्री** ने भारत की स्वतन्त्रता हेतु **'अनुष्ठान'** कर हमें जो प्रेरणा दी है, वह अपने आप में अपूर्व एवं पूर्णतया फल-प्रद है। **'मन्त्रात्मक-सप्तशती'**-जैसे साङ्गोपाङ्ग **'अनुष्ठान'** के द्वारा हम अपना एवं अपने देश का अभीष्ट कल्याण करें, यही **बाबा-श्री** की इच्छा थी। हमें **बाबा-श्री** की इस इच्छा को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

प्रयाग-राज

—ऋतशील शर्मा

‘साधना’ की कुछ विशेष बातें

- ☐ **‘मन्त्रात्मक सप्तशती’** में **‘श्रीदुर्गा-सप्तशती’** के प्रत्येक मन्त्र का साङ्गोपाङ्ग विधान है। इसमें मन्त्र के १४ अङ्गों का वर्णन है। यथा— (१) **ऋषि,** (२) **देवता,** (३) **बीज,** (४) **शक्ति,** (५) **महा-विद्या,** (६) **गुण,** (७) **ज्ञानेन्द्रिय,** (८) **रस,** (९) **कर्मेन्द्रिय,** (१०) **स्वर,** (११) **तत्त्व,** (१२) **कला,** (१३) **उत्कीलन,** (१४) **मुद्रा।** मन्त्र के इन १४ अङ्गों से तादात्म्य स्थापित होने पर श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा की कृपा प्राप्त होती है।

- ☐ मन्त्र का पहला अङ्ग **‘ऋषि’** होता है। **‘ऋषि’**-शब्द गत्यर्थक ‘ऋ’-धातु और ‘षिङ् प्रापणे’ प्रत्यय से बना है; जिससे उस परम साधक का बोध होता है, जो मन्त्र की वास्तविक गति से परमात्मा के स्वरूप को स्वयं प्राप्त करता है एवं कराता है। इस प्रकार किसी **‘मन्त्र’** को सिद्ध करने के लिए मन्त्र के **‘ऋषि’** से तादात्म्य स्थापित करना परम आवश्यक है।

- ☐ **‘देवता’**—मन्त्र का दूसरा अङ्ग है। इसके द्वारा साधक को **‘देव-भाव’** की प्राप्ति होती है।

- ☐ **‘बीज’**—मन्त्र के स्फुरण एवं विकास का केन्द्र है, इसकी अपने में स्थापना होने से ही अभीष्ट **‘फल की प्राप्ति’** होती है।

- ☐ **‘शक्ति’**—मन्त्र की **‘क्रिया-शक्ति’** का बोधक है। इससे तादात्म्य होने पर साधक की **‘क्रिया-शक्ति’** मन्त्र-मय हो जाती है।

- ☐ **‘महा-विद्या’**—मन्त्र की **‘मूल प्रकृति’** की सूचक है। इससे तादात्म्य होने पर साधक की **‘प्रकृति’** भी मन्त्र-मय हो जाती है।

- ☐ **‘गुण’**, **‘ज्ञानेन्द्रिय’**, **‘रस’**, **‘कर्मेन्द्रिय’**, **‘स्वर’**, **‘तत्त्व’**, **‘कला’**—मन्त्र के अन्य विशिष्ट अङ्ग हैं। इनसे तादात्म्य होने पर साधक का **‘मन्त्र से सीधा सम्बन्ध’** हो जाता है।

- ☐ मन्त्र का **‘ऊर्जा’**-स्वरूप **‘उत्कीलन’** द्वारा हस्तगत होता है। इससे तादात्म्य स्थापित होने पर मन्त्र की **‘ऊर्जा’** प्रवाहित होने लगती है।

- ☐ मन्त्र की **‘ऊर्जा’** सतत प्रवाहित होने के लिए मन्त्र की प्रसन्नता-कारक-शक्ति—**‘मुद्रा’** का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः सम्पूर्ण शरीर में इसकी प्रतिष्ठा की जाती है।

- ☐ अभीष्ट फल की प्राप्ति साधक के प्रार्थना-भाव की गहराई पर निर्भर होती है। अतः ‘अञ्जलि’ —**‘प्रार्थना-मुद्रा’** में जुड़े दोनों हाथों में इसका **‘न्यास’** किया जाता है।

- ☐ मन्त्र के अक्षरों को छः भागों में विभाजित करके छः कर-अङ्गों—**१ अँगूठों, २ तर्जनियों, ३ मध्यमाओं, ४ अनामिकाओं, ५ कनिष्ठिकाओं** और **६ करतल-करपृष्ठ** में तथा छः प्रधान

अङ्गों—१ **हृदय**, २ **शिर**, ३ **शिखा**, ४ **कवच**, ५ **नेत्र** और ६ **अस्त्र** में प्रतिष्ठित किया जाता है।

☐ **'अंगुष्ठाभ्यां नमः'**, **'हृदयाय नमः'** का तात्पर्य यह है कि भावना-मय देवता के समक्ष साधक सब प्रकार से अपनी विनम्रता प्रकट करता है।

☐ **'तर्जनीभ्यां स्वाहा'**, **'शिरसे स्वाहा'** का तात्पर्य यह है कि साधक क्षुद्र **'अहन्ता'** के स्थान पर दिव्य **'अहन्ता'** का अनुभव करता है।

☐ **'मध्यमाभ्यां वषट्'**, **'शिखायै वषट्'** के द्वारा साधक **'आत्मा'** के दिव्य तेजो-मय स्वरूप का अनुभव करता है। **'वषट्'** का अर्थ समर्पण है।

☐ **'अनामिकाभ्यां हुम्'**, **'कवचाय हुम्'** के द्वारा साधक अपने तेजो-मय स्वरूप के सुरक्षित होने की भावना करता है। इससे साधक में दूसरों के लिए भय-प्रद और अपने लिए रक्षा-कारक तेज का प्रादुर्भाव होता है।

☐ **'कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्'**, **'नेत्र-त्रयाय वौषट्'** के द्वारा साधक **'मन्त्र-रूपी आत्म-शक्ति'** का साक्षात्कार करता है।

☐ **'करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्'**, **'अस्त्राय फट्'** के द्वारा साधक अपने तीनों प्रकार के तापों को दूर फेंककर मन्त्र-शक्ति की ज्ञानाग्नि में जलाकर भस्म करने की भावना करता है।

इस प्रकार साधना करने से **अभीष्ट फल** की प्राप्ति निश्चित होती है। **पूज्य बाबा-श्री** ने **श्रीदुर्गा-सप्तशती** के प्रत्येक मन्त्र हेतु हमें पूर्ण विधान उपहार-स्वरूप दिया है। हम सबको इस दिव्य विधान द्वारा अपना एवं अपने देश का अभीष्ट कल्याण सिद्ध करना चाहिए। **'श्रीदुर्गा- सप्तशती'** के श्लोकों में कल्याण-कारी भाव छिपे हैं। किसी अभीष्ट कल्याण-कारी श्लोक को **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** के विधान के अनुसार प्रत्येक श्लोक के साथ सम्पुटित कर **विशिष्ट 'अभीष्ट फल'** प्राप्त कर सकते हैं।

किसी विशिष्ट **'अभीष्ट फल'** की कामना न हो, केवल **माँ दुर्गा की कृपा** एवं **अपने कल्याण की कामना** हो, तो प्रस्तुत विधान के द्वारा **प्रति-दिन निश्चित संख्या में एक-एक मन्त्र का 'अनुष्ठान'** करने से **विशेष अनुभूतियों की प्राप्ति** होती है। यदि **'हवन'** करना सम्भव न हो, तो उसके स्थान पर दशांश **'जप'** अधिक करना चाहिए। इस प्रकार क्रमशः एक-एक **'मन्त्र'** का **'अनुष्ठान'** कर सभी **'७०० मन्त्रों'** का **'अनुष्ठान'** अकेले पूरा किया जा सकता है। जो बन्धु समर्थ हों, वे **'यज्ञ'** की भाँति इससे **'अनुष्ठान'** कर या करवा सकते हैं। १० या १० से अधिक योग्य व्यक्तियों का सहयोग लेकर सभी मन्त्रों का **'अनुष्ठान'** कुछ ही दिनों में सम्पन्न किया जा सकता है।

अन्त में यह उल्लेखनीय है कि **बाबा-श्री** के अनुसार प्रस्तुत **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** का विधान मुख्यतः **'ऊर्ध्वाम्नायोक्त'** है। अतः इसका प्रयोग क्षुद्र कामनाओं की पूर्ति के लिए नहीं करना चाहिए। **व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के वास्तविक कल्याण** हेतु ही इसका अनुष्ठान करना चाहिए।

* * *

प्रथम चरित-विधानं

विनियोगः— ॐ प्रथम चरितस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्त-दन्तिका बीजं, अग्निस्तत्त्वं, ऋग्वेदः स्वरूपं, श्रीमहा-काली-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः हृदि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, नन्दा-शक्तयै नमः नाभौ, रक्त-दन्तिका-वीजाय नमः लिङ्गे, अग्नि-तत्त्वाय नमः गुह्ये, ऋग्वेद-स्वरूपाय नमः पादौ, श्रीमहा-काली-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यासः

	कर-न्यासः	**अङ्ग-न्यासः**
खडिगनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा, शङ्खिनी चापिनी वाण-भुशुण्डी-परिघायुधा—	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके, घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च—	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे, भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि—	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते, यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवं—	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः—	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते—	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानम्— **खड्गं चक्र - गदेषु - चाप परिघांछूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रि-नयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरो कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

दक्षिणाम्नाय-मते आयुधानि : दक्षिण-करे—खड्ग, चक्र, गदा, इषु, चाप।
वाम-करे—परिघ, शूल, भुशुण्डी, शिरः, शङ्ख।

ऊर्ध्वाम्नाय-मते आयुधानि : दक्षिण-करे—खड्ग, गदा, चाप, शूल, शिरः।
वाम-करे—चक्र, इषु, परिघ, भुशुण्डी, शङ्ख।

* * *

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

प्रथम चरित (मधु-कैटभ-वधः)

प्रथम अध्याय

१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मार्कण्डेय उवाच'** इति सप्तशती-प्रथम-मन्त्रस्य श्रीमहर्षि वेदव्यास ऋषिः, भगवान् श्रीसदाशिवः देवता, श्रीं बीजं, जगद्धात्री शक्तिः, भुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वैराग्यो रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रूं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम★ क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, भगवान् श्रीसदाशिव-देवाय नमः द्वादशारे— हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे★★, जगद्धात्री-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, भुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वैराग्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ब्रूं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मार्कण्डेय उवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत-गिरि-निभं चारु-चन्द्रावतंसम्।**
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु - मृग - वराभीति-हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर-गणैर्व्याघ्र-कृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्व-वन्द्यं निखिल-भय-हरं पञ्च-वक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः मार्कण्डेय उवाच नमो श्रीं ऐं ॐ॥१॥

१००० जपात् सिद्धिः, गुड-तिल-घृतेन दशांश होमः।

★ यदि कोई अन्य व्यक्ति अनुष्ठान करे, तो यहाँ **'मम यजमानस्य'** की योजना करें।

★★ स्त्री-साधिकाएँ **'श्रीं रजसे नमः षडारे योनौ'** कहें। आगे भी ध्यान रखें।

२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सावर्णिः सूर्य-तनयो'** इति सप्तशती-द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, भगवान् श्रीसूर्यनारायणो देवता, ह्रीं बीजं, ज्योतिः शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, प्रश्न स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, सङ्कोचिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, भगवान् श्रीसूर्य-नारायण-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ज्योति-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः— ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, प्रश्न-स्वराय नमः— कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सङ्कोचिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सावर्णिः सूर्य-तनयो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निशामय तदुत्पत्तिं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विस्तराद् गदतो मम	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

(ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल-मध्य-वर्ती)

ध्यानं— **भास्वद्-रत्नाढ्य-मौलिः स्फुरदधर-रुचा रञ्जितश्चारु-केशो।**
भास्वान्यो दिव्य-तेजाः कर-कमल-युतः स्वर्ण-वर्णः प्रभाभिः॥
विश्वाकाशावकाशो ग्रह - गण-सहितो भाति यश्चोदयाद्रौ।
सर्वानन्द - प्रदाता हरि - हर - नमितः पातु मां विश्व-चक्षुः॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः सावर्णिः सूर्य-तनयो, यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं, विस्तराद् गदतो मम नमो ह्रीं ऐं ॐ॥२॥

१००० जपात् सिद्धिः, शर्करा-तिल-घृतेन दशांश होमः।

* * *

३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'महा-मायाऽनुभावेन'** इति सप्तशती-तृतीय-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, भगवान् श्रीसूर्य-नारायणो देवता, क्लीं वीजं, ज्योतिः शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, प्रश्न स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, सङ्कोचिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, भगवान् श्रीसूर्य-नारायण-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ज्योति-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, प्रश्न-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे —गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सङ्कोचिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय- मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
महा-मायाऽनुभावेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यथा मन्वन्तराधिपः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स बभूव महा-भागः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सावर्णिस्तनयो रवेः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **भास्वद्-रत्नाढ्य-मौलिः स्फुरदधर-रुचा रञ्जितश्चारु-केशो।**
भास्वान्यो दिव्य-तेजाः कर-कमल-युतः स्वर्ण-वर्णः प्रभाभिः।।
विश्वाकाशावकाशो ग्रह - गण-सहितो भाति यश्चोदयाद्रौ।
सर्वानन्द - प्रदाता हरि - हर - नमितः पातु मां विश्व-चक्षुः।।

ॐ ऐं क्लीं नमः महा-मायाऽनुभावेन, यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महा-भागः, सावर्णिस्तनयो रवेः नमो क्लीं ऐं ॐ।।३।।

१००० जपात् सिद्धिः, शर्करा-तिल-घृतेन दशांश होमः।

* * *

४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'स्वारोचिषेऽन्तरे'** इति सप्तशती-चतुर्थ-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, श्रीं वीजं, पद्मावती शक्तिः, दक्षिणा काली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश-तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, पद्मावती-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, दक्षिणा काली महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चैत्र-वंश-समुद्भवः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सुरथो नाम राजाऽभूत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
समस्ते क्षिति-मण्डले	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ ऐं श्रीं नमः स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं, चैत्र - वंश-समुद्भवः।
सुरथो नाम राजाऽभूत्, समस्ते क्षिति-मण्डले नमो श्रीं ऐं ॐ ।।४।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-होमः।

* * *

५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तस्य पालयतः'** इति सप्तशती-पञ्चम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रीं बीजं, चूडामणि शक्तिः, लक्ष्मी महा-विद्या, सत्व गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, मोहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चूडा-मणि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, लक्ष्मी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मोहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्य पालयतः सम्यक्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रजाः पुत्रानिवौरसान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बभूवुः शत्रवो भूपाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कोला-विध्वंसिनस्तदा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**

हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत - घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥

बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब- वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः तस्य पालयतः सम्यक्, प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।

बभूवुः शत्रवो भूपाः, कोला - विध्वंसिनस्तदा नमो प्रीं ऐं ॐ॥५॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस होमः।

* * *

६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तस्य तैरभवद् युद्धं'** इति सप्तशती-षष्ठ-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीवामा काली देवता, ह्रां वीजं, ज्वालामुखी शक्तिः, श्मशान-काली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उग्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं ह्रीं उत्कीलनं, प्लाविनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीवामा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ज्वालामुखी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्मशान-काली महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उग्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्लाविनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम पुटितोक्त-षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहाः	शिरसे स्वाहा
तस्य तैरभवद् युद्धं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अति-प्रबल-दण्डिनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कोला-विध्वंसिभिर्जितः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं ह्रां नमः तस्य तैरभवद् युद्धमति-प्रबल - दण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोला-विध्वंसिभिर्जितः नमो ह्रां ऐं ॐ॥६॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृत-होमः।

* * *

७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ततः स्व-पुरमायातो'** इति सप्तशती-सप्तम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, छत्रेश्वरी शक्तिः, तारा महा-विद्या, रजो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उद्वेग रसं, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जल तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम - पुटितोक्त-सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, छत्रेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उद्वेग-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम - पुटितोक्त-सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः स्व-पुरमायातो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निज-देशाधिपोऽभवत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आक्रान्तः स महा-भागः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तैस्तदा प्रबलारिभिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः ततः स्व-पुरमायातो, निज-देशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महा-भागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥७॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृत-होमः।

* * *

८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'अमात्यैर्बलिभिः'** इति सप्तशती-अष्टम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, सौं वीजं, डाकिनी शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, लज्ञा रसं, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं क्रीं उत्कीलनं, विद्रोहिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोमं-विलोम-पुटितोक्त-अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, डाकिनी शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, लज्ञा-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, विद्रोहिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दुर्बलस्य दुरात्मभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कोशो बलं चापहृतं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्रापि स्व-पुरे ततः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चर्वन्ती चास्थि - खण्डं प्रकट - कटकटा-शब्द-सङ्घातमुग्रम्।**
कुर्वाणा प्रेत-मध्ये कहह-कहकहा-हास्यमुग्रं कृशाङ्गी॥
नित्यं नित्य-प्रसक्ता डमरु-डिमि-डिमान् स्फारयन्ती मुखाब्जम्।
पायान्नश्चण्डिकेयं झझम-झमझमा जल्पमाना भ्रमन्ती॥

ॐ ऐं सौं नमः अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोषो बलं चापहृतं, तत्रापि स्व-पुरे ततः नमो सौं ऐं ॐ॥८॥

१००० जपात् सिद्धिः, छाग-मांसाभावे कूष्माण्ड-खण्ड-तिलैः सघृतेन होमः।

* * *

६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ततो मृगया-व्याजेन'** इति सप्तशती-नवम-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, प्रें बीजं, अभेद्या शक्तिः, सुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, घृणा रसं, गुदं कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायु तत्त्वं, विद्या कला, प्रूं उत्कीलनं, गोप्त्री मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, प्रें वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अभेद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, सुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, घृणा-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, प्रूं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गोप्त्री-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो मृगया-व्याजेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हृत-स्वाम्यः स भू-पतिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एकाकी हयमारुह्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगाम गहनं वनम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जयतु जयतु देवी देव-सङ्घाभि-पूज्या।**

जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्य-रूपा॥

जयतु जयतु सत्या सर्व-भूतान्तरस्था।

कर-पद-हृदयस्था लुब्ध-चित्ता भजेऽहम्॥

ॐ ऐं प्रें नमः ततो मृगया-व्याजेन, हृत-स्वाम्यः स भू-पतिः।

एकाकी हयमारुह्य, जगाम गहनं वनं नमो प्रें ऐं ॐ॥९॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृत-होमः।

* * *

१०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'स तत्राश्रममद्राक्षीद्'** इति सप्तशती-दशम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्रें बीजं, धर्म-धारिणी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणं, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, आशा रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायुः तत्त्वं, शान्तिः कला, द्रां उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्रें बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, धर्म-धारिणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आशा-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, द्रां उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव- वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स तत्राश्रममद्राक्षीद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
द्विज-वर्यस्य मेधसः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रशान्त-श्वापदाकीर्णं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुनि-शिष्योप-शोभितं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रिजगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं म्रें नमः स तत्राश्रममद्राक्षीद्, द्विज-वर्यस्य मेधसः।
प्रशान्त-श्वापदाकीर्णं, मुनि-शिष्योप-शोभितं नमो म्रें ऐं ॐ॥१०॥

१००० जपात् सिद्धि, तिल-घृत-होमः।

* * *

११

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तस्थौ कञ्चित् स कालं'** इति सप्तशती-एकादश-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ल्हीं वीजं, धर्म-चारिणी शक्तिः, कमला महा-विद्या, सत्त्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, शान्त स्वरं, भू तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमोयुत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, धर्म-चारिणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, शान्त-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमोयुत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्थौ कञ्चित् स कालं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुनिना तेन सत्कृतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इतश्चेतश्च विचरन्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तस्मिन् मुनि-वराश्रमे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्।**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्॥
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः तस्थौ कञ्चित् स कालं च, मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनि - वराश्रमे नमो ल्हीं ऐं ॐ॥११॥

१००० जपात् सिद्धिः, कुंकुम-पायसैः होमः।

* * *

१२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सोऽचिन्तयत्तदा'** इति सप्तशती-द्वादश-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, म्लीं वीजं, हाकिनी शक्तिः, धूमा महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, गाम्भीर्य रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, गम्भीर स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्ति कला, धूँ उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वादश-मन्त्र- जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, म्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, हाकिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, धूमा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, गाम्भीर्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, गम्भीर-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, धूँ उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ 'ऐं म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सोऽचिन्तयत् तदा तत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ममत्वाकृष्ट-चेतनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मया हीनं पुरं हि तत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वामे कर्णे मृगाङ्कं प्रलय-परिगतं दक्षिणे सूर्य-बिम्बम्।**
कण्ठे नक्षत्र-हारं वर-विकट-जटा-जूटके मुण्डमालाम्॥
स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्र-ध्वज-निकर-युतं ब्रह्म-कङ्काल-भारम्।
संहारे धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली॥

ॐ ऐं म्लीं नमः सोऽचिन्तयत् तदा तत्र, ममत्वाकृष्ट-चेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं, मया हीनं पुरं हि तत् नमो म्लीं ऐं ॐ॥१२॥

१००० जपः, सर्षप-तिलैश्च होमः।

* * *

१३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मद्-भृत्यैस्तैः'** इति सप्तशती-त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, स्त्रीं बीजं, शाकिनी शक्तिः, धूमा महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, गाम्भीर्य रसः, गुदं कर्मेन्द्रियं, गम्भीर स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्ति कला, धूं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शाकिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, धूमा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, गाम्भीर्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, गम्भीर-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, धूं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मद्-भृत्यैस्तैरसद्-वृत्तैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धर्मतः पाल्यते न वा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
न जाने स प्रधानो मे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शूर-हस्ती सदा-मदः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्ता-बालाम्बराढ्याम्।**
काकाङ्क-स्यन्दनस्थां धवल-कर-युगां शूर्प-हस्तातिरूक्षाम्॥
नित्यं क्षुत्क्षाम-देहां रजत-रज-युतामन्तरश्शान्त-चित्ताम्।
ध्यायेद् धूमावतीं वाम-नयन-युगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥

ॐ ऐं स्त्रीं नमः मद्-भृत्यैस्तैरसद्-वृत्तैः, धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे, शूर-हस्ती सदा-मदः नमो स्त्रीं ऐं ॐ॥१३॥

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-तिलैश्च दशांश होमः।

* * *

१४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मम वैरि-वशं यातः'** इति सप्तशती-चतुर्दश-मन्त्रस्य श्री महर्षि वेदव्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, क्रां वीजं, दया शक्तिः, पीताम्बरा महा-विद्या, रजो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, गाम्भीर्य रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, गम्भीर स्वरं, भू तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, ल्हीं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, पीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, गाम्भीर्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, गम्भीर-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ल्हीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मम वैरि-वशं यातः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कान् भोगानुप-लप्स्यते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ये ममानुगता नित्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रसाद-धन-भोजनैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **पीताम्बरां पीत-माल्यां, पीताभरण-भूषिताम्।**
पीत-कञ्ज-पद-द्वन्द्वां, कमलां चिन्तयेऽनिशम्॥

ॐ ऐं क्रां नमः मम वैरि-वशं यातः, कान् भोगानुप-लप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं, प्रसाद - धन-भोजनैः नमो क्रां ऐं ॐ॥१४॥

१००० जपात्सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैः हरिद्रया च दशांश होमः।

* * *

१५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'अनुवृत्तिं ध्रुवं'** इति सप्तशती-पञ्चदश-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्त्हीं बीजं, हस्तिनी शक्तिः, मातङ्गी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, द्वेषो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भूं तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, ह्रीं वृं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्त्हीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, हस्तिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, मातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, द्वेष-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं वृं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कुर्वन्त्यन्य-मही-भृतां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
असम्यग्-व्यय-शीलैस्तैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कुर्वद्भिः सततं व्ययम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**

हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥

विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं स्त्हीं नमः अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य, कुर्वन्त्यन्य - मही-भृतां।

असम्यग्-व्यय-शीलैस्तैः, कुर्वद्भिः सततं व्ययं नमो स्त्हीं ऐं ॐ॥१५॥

१००० जपात् सिद्धिः, पलाश-समिध-घृतेन दशांश होमः।

* * *

१६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सञ्चितः सोऽति-दुःखेन'** इति सप्तशती-षोडश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्री महालक्ष्मी देवता, क्रीं बीजं, क्षेमङ्करी शक्तिः, बगला महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, द्वेषो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्तिः कला, ल्हीं उत्कीलनं, योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, क्षेमङ्करी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, बगला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, द्वेष-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ल्हीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, योनि-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सञ्चितः सोऽति-दुःखेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षयं कोषो गमिष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एतद्यान्यच्च सततं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चिन्तयामास पार्थिवः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः सञ्चितः सोऽति-दुःखेन, क्षयं कोषो गमिष्यति।
एतद्यान्यच्च सततं, चिन्तयामास पार्थिवः नमो क्रीं ऐं ॐ॥१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस होमः।

* * *

१७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तत्र विप्राश्रमाभ्यासे'** इति सप्तशती-सप्तदश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, चां बीजं, वैप्रचित्ता शक्तिः, तारा महाविद्या, रजो-गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, स्त्रीं उत्कीलनं, आवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, चां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, वैप्रचित्ता-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नम अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं चां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तत्र विप्राश्रमाभ्यासे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वैश्यमेकं ददर्श सः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हेतुश्चागमनेऽत्र कः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रिजगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं चां नमः तत्र विप्राश्रमाभ्यासे, वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो, हेतुश्चागमनेऽत्र कः नमो चां ऐं ॐ॥१७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

१८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'स-शोक इव'** इति सप्तशती-अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, भें वीजं, वैप्रचित्ता शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, करुणा रसं, गुद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्नि तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, द्रां उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, भें बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, वैप्रचित्ता-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, करुणा-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, द्रां उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स-शोक इव कस्मात् त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दुर्मना इव लक्ष्यसे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भू-पतेः प्रणयोदितम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शब-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं भें नमः स-शोक इव कस्मात् त्वं, दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य, भू - पतेः प्रणयोदितम् नमो भें ऐं ॐ।।१८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायस होमः।

* * *

१६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'प्रत्युवाच स तं वैश्यः'** इति सप्तशती-एकोनविंशति-मन्त्रस्य श्री वेदव्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रीं वीजं, तोयदा शक्तिः, वगला महाविद्या, रजो-गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, त्रीं उत्कीलनं, प्लाविनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, तोयदा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, बगला-महाविद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्लाविनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रत्युवाच स तं वैश्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रश्रयाव-नतो नृपम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**

नग्नां वा नृकरां वरां शब-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं क्रीं नमः प्रत्युवाच स तं वैश्यः, प्रश्रयाव-नतो नृपम् नमो क्रीं ऐं ॐ॥१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, यव-घृत-होमः।

* * *

२०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'वैश्य उवाच'** इति सप्तशती-विंशति-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्री महाविष्णुः देवता, वैं वीजं, महामाया शक्तिः, बगला महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, विद्या कला, व्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाविष्णु-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, वैं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, महामाया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, बगला महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, व्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वैं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं वैं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वैश्य उवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शान्ताकारं भुजग - शयनं पद्म - नाभं सुरेशम्।**
विश्वाधारं गगन - सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरणं सर्व-लोकैक-नाथम्।।

ॐ ऐं वैं नमः वैश्य उवाच नमो वैं ऐं ॐ।।२०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायस होमः।

* * *

२१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'समाधिर्नाम'** इति सप्तशती-एकविंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ह्रौं बीजं, अयोनिजा शक्तिः, कमला महा-विद्या, रजो गुणं, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसं, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रौं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्रौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समाधिर्नाम वैश्योऽहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उत्पन्नो धनिनां कुले	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले नमो ह्रौं ऐं ॐ॥२१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल होमः।

* * *

२२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'पुत्र-दारैः'** इति सप्तशती-द्वाविंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, युं वीजं, अयोनिजा शक्तिः, कमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, युं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः—ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः—कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः—पादयोः, मस्त्य-मुद्रायै नमः—सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं युं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुत्र-दारैर्निरस्तश्च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धन-लोभादसाधुभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विहीनश्च धनैदरिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पुत्रैरादाय मे धनं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**

हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।।

विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

ॐ ऐं युं नमः पुत्र-दारैर्निरस्तश्च, धन-लोभादसाधुभिः।

विहीनश्च धनैदरिः, पुत्रैरादाय मे धनम् नमो युं ऐं ॐ।।२२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-बिल्वैः दशांश होमः।

* * *

२३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वनमभ्यागतो'** इति सप्तशती-त्रयोविंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, जुं बीजं, अयोनिजा शक्तिः, कमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयोविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, जुं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयोविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वनमभ्यागतो दुःखी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निरस्तश्चाप्त-बन्धुभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कुशलाकुशलात्मिकाम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥
बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं जुं नमः वनमभ्यागतो दुःखी, निरस्तश्चाप्त-बन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां, कुशलाकुशलात्मिकां नमो जुं ऐं ॐ॥२३॥

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-पलाश-समिद्भिः होमः।

* * *

२४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'प्रवृत्तिं स्व-जनानां'** इति सप्तशती-चतुर्विंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, हं वीजं, शताक्षी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, उद्वेग-युत-मध्यम स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, अविद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, हं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, उद्वेग-युत-मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्रवृत्तिं स्व-जनानां च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दाराणां चात्र संस्थितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किं नु तेषां गृहे क्षेमं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अक्षेमं किं नु साम्प्रतम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं हं नमः प्रवृत्तिं स्व-जनानां च, दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतं नमो हं ऐं ॐ।।२४।।

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-पलाश-समिद्भिः होमः।

* * *

२५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'कथं ते किं नु'** इति सप्तशती-पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, शं वीजं, शताक्षी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, उद्वेग-युत मध्यम स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, अविद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, उद्वेग-युत मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ शं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं शं नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कथं ते किं नु सद्-वृत्ताः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संविर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं शं नमः कथं ते किं नु सद्-वृत्ताः, दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः नमो शं ऐं ॐ।।२५।।

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-तिलैश्च होमः।

* * *

२६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'राजोवाच'** इति सप्तशती-षड्विंशति-मन्त्रस्य श्री महर्षि वेदव्यास ऋषिः, श्रीदुर्गा देवता, रौं वीजं, दुर्गा शक्तिः, छिन्नमस्ता महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रां उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीदुर्गा-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, रौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजोगुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ब्रां उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
राजोवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

ॐ ऐं रौं नमः राजोवाच नमो रौं ऐं ॐ॥२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैः हरिद्रया च होमः।

* * *

२७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'यैर्निरस्तो'** इति सप्तशती-सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, यं बीजं, माया शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, आश्चर्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, अविद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, यं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आश्चर्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं यं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यैर्निरस्तो भवांल्लुब्धैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पुत्र-दारादिभिर्धनैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**

नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं यं नमः यैर्निरस्तो भवांल्लुब्धैः, पुत्र-दारादिभिर्धनैः नमो यं ऐं ॐ॥२७॥

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-तिलैश्च दशांश-होमः।

* * *

२८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तेषु किं भवतः'** इति सप्तशती-अष्टाविंशति-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, विं वीजं, माया शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, आश्चर्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, अविद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, विं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमोगुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आश्चर्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं विं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तेषु किं भवतः स्नेहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अनु-बध्नाति मानसम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं विं नमः तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसं नमो विं ऐं ॐ।।२८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायस होमः।

* * *

२६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'वैश्य उवाच'** इति सप्तशती-एकोनत्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीविष्णुः देवता, वैं वीजं, माया शक्तिः, बगला महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनत्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीविष्णु-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, वैं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, बगला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ब्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनत्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वैं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं वैं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वैश्य उवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **शान्ताकारं भुजग - शयनं पद्म - नाभं सुरेशम्।**
विश्वाधारं गगन - सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरणं सर्व-लोकैक-नाथम्।।

ॐ ऐं वैं नमः वैश्य उवाच नमो वैं ऐं ॐ।।२६।।

१००० जपात् सिद्धिः, यव-घृत होमः।

* * *

३०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'एवमेतद् यथा'** इति सप्तशती-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, चें वीजं, अयोनिजा शक्तिः, कमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे हृदि, चें वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ चें	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं चें नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवमेतद् यथा प्राह	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भवानस्मद्-गतं वचः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत - घटैरासिच्य-मानां श्रियं।।
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

ॐ ऐं चें नमः एवमेतद् यथा प्राह, भवानस्मद्-गतं वचः नमो चें ऐं ॐ।।३०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-होमः।

* * *

३१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'किं करोमि न बध्नाति'** इति सप्तशती-एकत्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, ह्रीं वीजं, अयोनिजा शक्तिः, कमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकत्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, कमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकत्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
किं करोमि न बध्नाति	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मम निष्ठुरतां मनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यैः सन्त्यज्य पितृ-स्नेहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धन-लुब्धैः निराकृतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।।
बिभ्राणां वरमब्ज - युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं नमः किं करोमि न बध्नाति, मम निष्ठुरतां मनः।
यैः सन्त्यज्य पितृ-स्नेहं, धन-लुब्धैः निराकृतः नमो ह्रीं ऐं ॐ।।३१।।

१००० जपात् सिद्धिः, शर्करा-तिल-घृतेन दशांश होमः।

* * *

३२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'पतिः स्व-जन-हार्दं'** इति सप्तशती-द्वा-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रं बीजं, माया शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, आश्चर्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-—युत - प्रणव - वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आश्चर्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पतिं स्व-जन हार्दं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हार्दि तेष्वेव मे मनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किमेतन्नाभि-जानामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जानन्नपि महा-मते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीति वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं क्रं नमः पतिं स्वजन-हार्दं च, हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभि-जानामि, जानन्नपि महा - मते नमो क्रं ऐं ॐ॥३२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैश्च दशांश होमः।

* * *

३३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'यत् प्रेम-प्रवणं'** इति सप्तशती-त्रयस्त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, सं वीजं, माया शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, आश्चर्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, सं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि,त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आश्चर्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यत् प्रेम-प्रवणं चित्तं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विगुणेष्वपि बन्धुषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तेषां कृते मे निःश्वासो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दौर्मनस्यं च जायते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**

नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं सं नमः यत् प्रेम - प्रवणं चित्तं, विगुणेष्वपि बन्धुषु।

तेषां कृते मे निःश्वासो, दौर्मनस्यं च जायते नमो सं ऐं ॐ॥३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैश्च दशांश होमः।

* * *

३४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'करोमि किं'** इति सप्तशती-चतुस्त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीसमाधि ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, कं वीजं, माया शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, आश्चर्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, मत्स्य मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसमाधि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, कं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, माया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, आश्चर्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मत्स्य-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ कं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं कं नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
करोमि किं यत्र मनः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं कं नमः करोमि किं यत्र मनः तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरं नमो कं ऐं ॐ॥३४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैश्च दशांश होमः।

* * *

३५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मार्कण्डेय उवाच'** इति सप्तशती-पञ्च-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीमहर्षि वेदव्यास ऋषिः, भगवान् श्रीसदाशिवः देवता, श्रीं बीजं, जगद्धात्री शक्तिः, भुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वैराग्यो रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रूं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, भगवान् श्रीसदाशिव-देवाय नमः द्वादशारे— हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, जगद्धात्री-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, भुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वैराग्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ब्रूं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मार्कण्डेय उवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत-गिरि-निभं चारु-चन्द्रावतंसम्।**
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु - मृग - वराभीति-हस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर-गणैर्व्याघ्र-कृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्व-वन्द्यं निखिल-भय-हरं पञ्च-वक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ॐ ऐं श्रीं नमः मार्कण्डेय उवाच नमो श्रीं ऐं ॐ।।३५।।

१००० जपात् सिद्धिः, गुड-तिल-घृतेन दशांश होमः।

* * *

३६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ततस्तौ सहितौ'** इति सप्तशती-षड्-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, त्रों बीजं, भीमाक्षी शक्तिः, तारा महाविद्या, रजो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, शङ्का रसं, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जल तत्त्वं, अविद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, त्रों वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भीमाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शङ्का-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ त्रों	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं त्रों नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततस्तौ सहितौ विप्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तं मुनिं समुपस्थितौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं त्रों नमः ततस्तौ सहितौ विप्र! तं मुनिं समुपस्थितौ नमो त्रों ऐं ॐ॥३६॥
१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल होमः।

* * *

३७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'समाधिर्नाम वैश्य'** इति सप्तशती-सप्त-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, स्त्रां बीजं, भीमाक्षी शक्तिः, तारा महाविद्या, रजो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, शङ्का रसं, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जल तत्त्वं, अविद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्त्रां बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भीमाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शङ्का-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, अविद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ स्त्रां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्त्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स च पार्थिव-सत्तमः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्त्रां नमः समाधिर्नाम वैश्योऽसौ, स च पार्थिव-सत्तमः नमो स्त्रां ऐं ॐ॥३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-होमः।

* * *

३८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'कृत्वा तु तौ यथा-न्यायं'** इति सप्तशती-अष्ट-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीः देवता, ज्यैं बीजं, शताक्षी शक्तिः, सुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, श्रीं उत्कीलनं, योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ज्यैं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, सुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ज्यैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कृत्वा तु तौ यथा-न्यायं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यथार्हं तेन संविदम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उपविष्टौ कथाः काश्चित्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चक्रतुर्वैश्य-पार्थिवौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ज्यैं नमः कृत्वा तु तौ यथा-न्यायं, यथार्हं तेन संविदम्।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्य - पार्थिवौ नमो ज्यैं ऐं ॐ॥३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, तैल-बिल्व-समिद् होमः।

* * *

३६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'राजोवाच'** इति सप्तशती-एकोन-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहर्षि वेदव्यास ऋषिः, श्रीदुर्गा देवता, रौं वीजं, दुर्गा शक्तिः, छिन्नमस्ता महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीदुर्गा-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, रौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दुर्गा-शक्तयै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजोगुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ब्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
राजोवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ ऐं रौं नमः राजोवाच नमो रौं ऐं ॐ ।।३९।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैः हरिक्र्या च दशांश होमः।

* * *

४०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'भगवंस्त्वामहं'** इति सप्तशती-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, द्रां बीजं, शाकम्भरी शक्तिः, तारा महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, पाणि कर्मेन्द्रियं, दीन स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, द्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शाकम्भरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, दीन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ द्रां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं द्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भगवंस्त्वामहं प्रष्टुं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
इच्छाम्येकं वदस्व तत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं द्रां नमः भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् नमो द्रां ऐं ॐ॥४०॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृत-होमः।

* * *

४१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'दुःखाय यन्मे'** इति सप्तशती-एक-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, द्रों बीजं, शाकम्भरी शक्तिः, तारा महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, पाणि कर्मेन्द्रियं, दीन स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, द्रों वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शाकम्भरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, दीन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
द्रों नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं द्रों नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दुःखाय यन्मे मनसः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्व-चित्तायत्ततां विना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं द्रों नमः दुःखाय यन्मे मनसः स्वः-चित्तायत्ततां विना नमो द्रों ऐं ॐ॥४१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस होमः।

* * *

४२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ममत्वं गत-राज्यस्य'** इति सप्तशती-द्वि-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रां वीजं, भीमा शक्तिः, ज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, गम्भीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, आश्चर्य-युत स्वरं, वायुस्तत्त्वं, भ्रान्तिः कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भीमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, ज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, गम्भीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, आश्चर्य-युत-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, भ्रान्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ममत्वं गत-राज्यस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
किमेतन् मुनि-सत्तम	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा रौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि! सर्वं क्षणार्द्धात्।**
संसारस्यान्त - काले नर-रुधिर-वसा-सम्प्लवे भूम-विद्युः॥
काली कापालिकी सा शव-शयन-तरा योगिनी योग-मुद्रा।
रक्ता-रुद्धिः समस्त-मरण-भय-हरा त्वं शिवा चन्द्र-घण्टा॥

ॐ ऐं ह्रां नमः ममत्वं गत-राज्यस्य, राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।
जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य, किमेतन् मुनि-सत्तम नमो ह्रां ऐं ॐ॥४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस होमः।

* * *

४३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'अयं च निकृतः'** इति सप्तशती-त्रयश्चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, द्रूं वीजं, भीमा शक्तिः, भैरवी महाविद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, गम्भीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, आश्चर्य स्वरं, वायुस्तत्त्वं, भ्रान्ति कला, भ्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भीमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, भैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, गम्भीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, आश्चर्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, भ्रान्ति-कलायै नमः करतले, भ्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अयं च निकृतः पुत्रैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्व-जनेन च सन्त्यक्तः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तेषु हार्दी तथाप्यति	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं द्रूं नमः अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।
स्व-जनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति नमो द्रूं ऐं ॐ।।४३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस होमः।

* * *

४४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'एवमेष तथा'** इति सप्तशती-चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, शां वीजं, मीनाक्षा शक्तिः, भुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्तिः कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, शां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, मीनाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, भुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवमेष तथाऽहं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
द्वावप्यत्यन्त-दुःखितौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दृष्ट-दोषेऽपि विषये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ममत्वाकृष्ट-मानसौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्॥
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं शां नमः एवमेष तथाऽहं च, द्वावप्यत्यन्त-दुःखितौ।
दृष्ट-दोषेऽपि विषये, ममत्वाकृष्ट-मानसौ नमो शां ऐं ॐ॥४४॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः।

* * *

४५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तत् किमेतन्महा-भाग'** इति सप्तशती-पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्रीं बीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जलः तत्त्वं, प्रज्ञा कला, त्रीं उत्कीलनं, उन्मादिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, म्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रज्ञा-कलायै नमः करतले, त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, उन्मादिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तत् किमेतन्महा-भाग	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यन्मोहो ज्ञानिनोरपि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ममास्य च भवत्येषा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अविवेकान्धस्य मूढता	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥

गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं म्रीं नमः तत् किमेतन्महा-भाग! यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।

ममास्य च भवत्येषाऽविवेकान्धस्य मूढता नमो म्रीं ऐं ॐ॥४५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

४६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-षड्-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जल तत्त्वं, विद्या कला, त्रीं उत्कीलनं, उन्मादिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे-नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या कलायै नमः करतले, त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, उन्मादिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षड्-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥

गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ॥४६॥

१००० जपात्सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

४७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ज्ञानमस्ति'** इति सप्तशती-सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, जूं बीजं, काल-रात्रिः शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, रजो गुणः, त्वग् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायुस्तत्त्वं, प्रज्ञा कला, ऐं उत्कीलनं, स्थापिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, जूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, काल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वग्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रज्ञा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्थापिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्ञानमस्ति समस्तस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जन्तोर्विषय-गोचरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विषयश्च महा-भाग	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
याति चैवं पृथक् पृथक्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं जूं नमः ज्ञानमस्ति समस्तस्य, जन्तोर्विषय - गोचरे।
विषयश्च महा-भाग! याति चैवं पृथक् पृथक् नमो जूं ऐं ॐ॥४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत होमः।

* * *

४८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'दिवान्धा प्राणिनः'** इति सप्तशती-अष्ट-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्री महाकाली देवता, ल्हूं बीजं, मोह-रात्रि शक्तिः, काली महा-विद्या, तमो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभः रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश तत्त्वं, माया कला, ह्रीं उत्कीलनं, अवगुण्ठिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ल्हूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, मोह-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, काली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, माया-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, अवगुण्ठिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रात्रावन्धास्तथाऽपरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
केचिद् दिवा तथा रात्रौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्राणिनस्तुल्य-दृष्टयः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्, रात्रावन्धास्तथाऽपरे।
केचिद् दिवा तथा रात्रौ, प्राणिनस्तुल्य-दृष्टयः नमो ल्हूं ऐं ॐ॥४८

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-मांस-होमः, विल्व समिधा।

* * *

४६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ज्ञानिनो मनुजा'** इति सप्तशती-एकोन-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्री महाकाली देवता, श्रूं वीजं, मोह-रात्रि शक्तिः, काली महा-विद्या, तमो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभः रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश तत्त्वं, माया कला, ह्रीं उत्कीलनं, अवगुण्ठिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, मोह-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, काली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, माया-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, अवगुण्ठिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
किं नु ते नहि केवलम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पशु-पक्षि-मृगादयः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं श्रूं नमः ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं, किं नु ते नहि केवलम्।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे, पशु-पक्षि - मृगादयः नमो श्रूं ऐं ॐ॥४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस होमः।

* * *

५०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ज्ञानं च तन्मनुष्याणां'** इति सप्तशती-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रीं बीजं, महा-रात्रि शक्तिः, मातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, तत्त्व मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, प्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, महा-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, मातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक् कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, तत्त्व-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
यत् तेषां मृग-पक्षिणां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मनुष्याणां च यत् तेषां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तुल्यमन्यत् तथोभयोः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियं॥
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः ज्ञानं च तन्मनुष्याणां, यत् तेषां मृग-पक्षिणाम्।
मनुष्याणां च यत् तेषां, तुल्यमन्यत् तथोभयोः नमो प्रीं ऐं ॐ॥५०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-बिल्व-समिद्धः होमः।

* * *

५१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ज्ञानेऽपि सति'** इति सप्तशती-एक-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, रं बीजं, दारुणा शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, स्वादु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, क्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दारुणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, छिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, स्वादु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, कीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पतङ्गाञ्छाव-चञ्चुषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कण-मोक्षाद् ऋतान् मोहात्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पीड्यमानानपि क्षुधा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।

गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं रं नमः ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्, पतङ्गाञ्छाव-चञ्चुषु।

कण-मोक्षाद् ऋतान् मोहात्, पीड्यमानानपि क्षुधा नमो रं ऐं ॐ।।५१।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः।

* * *

५२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मानुषा मनुज-व्याघ्र'** इति सप्तशती-द्वि-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, वं बीजं, दारुणा शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, स्वादु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, क्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, वं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दारुणा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, स्वादु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, कीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मानुषा मनुज-व्याघ्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
साभिलाषाः सुतान् प्रति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लोभात् प्रत्युपकाराय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नन्वेतान् किं न पश्यति	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं वं नमः मानुषा मनुज-व्याघ्र!, साभिलाषाः सुतान् प्रति।
लोभात् प्रत्युपकाराय, नन्वेतान् किं न पश्यति नमो वं ऐं ॐ॥५२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस दशांश होमः।

* * *

५३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तथापि ममतावर्ते'** इति सप्तशती-त्रि-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, व्रीं वीजं, भ्रामरी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू-तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, क्लीं उत्कीलनं, छोटिका मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रि-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, व्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भ्रामरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे-गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, छोटिका-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रि-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथापि ममतावर्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मोह-गर्ते निपातिताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-माया-प्रभावेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
संसार-स्थिति-कारिणा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,

सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं व्रीं नमः तथापि ममतावर्ते, मोह - गर्ते निपातिताः।

महा-माया-प्रभावेण, संसार-स्थिति-कारिणा नमो व्रीं ऐं ॐ॥५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः, बिल्व-समिधाः।

* * *

५४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तन्नात्र विस्मयः कार्यो'** इति सप्तशती-चतुष्पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ब्लूं बीजं, चित्रघण्टा शक्तिः, श्रीकालिका महा -विद्या, तमो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, मोहिनी कला, क्लीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुष्पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ब्लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, चित्रघण्टा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकालिका-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, मोहिनी-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुष्पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तन्नात्र विस्मयः कार्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
योग-निद्रा जगत्-पतेः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-माया हरेश्चैतत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तया सम्मोह्यते जगत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु -चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**

शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रि - नयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥

नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।

यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ब्लूं नमः तन्नात्र विस्मयः कार्यो, योग-निद्रा जगत्-पतेः।

महा - माया हरेश्चैतत्, तया सम्मोह्यते जगत् नमो ब्लूं ऐं ॐ॥५४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस होमः।

* * *

५५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ज्ञानिनामपि चेतांसि'** इति सप्तशती-पञ्च-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्री वशिष्ठ ऋषिः, श्रीआद्या-महाकाली देवता, स्त्रौं वीजं, कामाक्षा शक्तिः, त्रिपुर-सुन्दरी महाविद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, मोहो रसः, भग कर्मेन्द्रियं, आश्चर्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, अविद्या कला, स्त्रीं उत्कीलनं, योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवशिष्ठ-ऋषये नमः सहस्त्रारे— शिरसि, श्रीआद्या-महाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्त्रौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कामाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, त्रिपुर-सुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, भग-कर्मेन्द्रियाय नमः भग-कर्मेन्द्रिये, आश्चर्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, अविद्या- कलायै नमः करतले, स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्ञानिनामपि चेतांसि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी भगवती हि सा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बलादाकृष्य मोहाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-माया प्रयच्छति	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं स्त्रौं नमः ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय, महा - माया प्रयच्छति नमो स्त्रौं ऐं ॐ।।५५।।

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-पायस-बिल्व-कदम्ब समिद्भिः होमः।

* * *

५६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तया विसृज्यते'** इति सप्तशती-षट्-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्री वशिष्ठ ऋषिः, श्रीआद्या-महाकाली देवता, ब्लां बीजं, कामाक्षा शक्तिः, श्री त्रिपुर-सुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, भग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवशिष्ठ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीआद्या-महाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ब्लां बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कामाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, भग-कर्मेन्द्रियाय नमः भग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ब्लां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ब्लां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तयाँ विसृज्यते विश्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगदेतच्चराचरम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**

नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं ब्लां नमः तया विसृज्यते विश्वं, जगदेतच्चराचरम् नमो ब्लां ऐं ॐ॥५६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-तिलैश्च बिल्व-कदम्ब-समिद्भिः दशांश-होमः।

* * *

५७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सैषा प्रसन्ना'** इति सप्तशती-सप्त-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीवशिष्ठ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, लूं वीजं, योगिनी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महाविद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, मोहो रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, श्रीं उत्कीलनं, धेनु मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवशिष्ठ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, योगिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोहो-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धेनु-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सैषा प्रसन्ना वरदा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नृणां भवति मुक्तये	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा विद्या परमा मुक्तेः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हेतु-भूता सनातनी	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **समुन्मीलन् नीलाम्बुज-निकर-नीराजित-रुचा—**

मपाङ्गनां भृगैरमृत - लहरी - श्रेणि-मसृणैः।

ह्रिया हीनं दीनं भृशमुदर-लीनं करुणया,

हरि-श्यामा सा मामवतु जड़-सामाजिकमपि॥

ॐ ऐं लूँ नमः. सैषा प्रसन्ना वरदा, नृणां भवति मुक्तये।

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु-भूता सनातनी नमो लूँ ऐं ॐ॥५७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः होमः।

* * *

५८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'संसार-बन्ध-हेतुश्च'** इति सप्तशती-अष्ट-पञ्चाशत्-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती-देवता, सां वीजं, नारायणी शक्तिः, लक्ष्मी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, मोहो रसः, भग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, तत्त्व मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे हृदि, सां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, नारायणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, लक्ष्मी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, भग-कर्मेन्द्रियाय नमः भग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, तत्त्व-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-पञ्चाशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ सां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं सां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
संसार-बन्ध-हेतुश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सैव सर्वेश्वरेश्वरी	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं सां नमः संसार-बन्ध-हेतुश्च, सैव सर्वेश्वरेश्वरी नमो सां ऐं ॐ॥५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-होमः।

* * *

५९

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'राजोवाच'** इति सप्तशती-एकोन-षष्टि-मन्त्रस्य श्री महर्षि वेदव्यास ऋषिः, श्रीदुर्गा देवता, रौं वीजं, दुर्गा शक्तिः, छिन्नमस्ता महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, विद्या कला, ब्रीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीदुर्गा-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, रौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजोगुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ब्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
राजोवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ ऐं रौं नमः **राजोवाच** **नमो रौं ऐं ॐ।।५९।।**

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैः हरिद्रया च दशांश होमः।

* * *

६०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'भगवन् का हि सा'** इति सप्तशती-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्सौं बीजं, भैरवी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, स्फ्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्सौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भैरवी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, स्फ्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्सौं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्सौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भगवन् का हि सा देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-मायेति यां भवान्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चन्द्रावतंस-कलिताम्बु-धरस्य श्यामाम्,**
पञ्चाशदक्षर-मयीं हृदि क्लृप्तवन्तीम्।
त्वां पुस्तकं जप-वटीममृताम्भ-कुम्भाम्,
व्याख्यां च हस्त-कमलैर्दधतीं भजेम।।

ॐ ऐं ह्सौं नमः भगवन्! का हि सा देवी, महा-मायेति यां भवान् नमो ह्सौं ऐं ॐ।।६०

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-छागेन दशांश होमः।

* * *

६१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ब्रवीति कथमुत्पन्ना'** इति सप्तशती-एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्री सुरथ ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रूं वीजं, भैरवी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, स्क्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे-लिङ्गे, भैरवी-शक्त्यै नमः दशारे नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, स्क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ब्रवीति कथमुत्पन्ना	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सा कर्माऽस्याश्च किं द्विज	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यत्-स्वभावा च सा देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यत्-स्वरूपा यदुद्भवा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चन्द्रावतंस-कलिताम्बु-धरस्य श्यामाम्,**

पञ्चाशदक्षर-मयीं हृदि क्लृप्तवन्तीम्।

त्वां पुस्तकं जप-वटीममृताम्भ-कुम्भाम्,

व्याख्यां च हस्त-कमलैर्दधतीं भजेम॥

ॐ ऐं क्रूं नमः ब्रवीति कथमुत्पन्ना, सा कर्माऽस्याश्च किं द्विज?

यत्-स्वभावा च सा देवी, यत्-स्वरूपा यदुद्भवा नमो क्रूं ऐं ॐ॥६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-छागेन होमः।

* * *

६२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि'** इति सप्तशती-द्वि-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, शौं बीजं, विजया शक्तिः, श्रीकमला महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, सम्मुखी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, शौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, विजया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमला महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्मुखी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वि-षष्टि-मन्त्र-जप विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ शौं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं शौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वत्तो ब्रह्म-विदां वर	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वन्दे लक्ष्मीं पर-शिव-मयीं शुद्ध-जाम्बू-नदाभाम्,**
तेजो-रूपां कनक - वसनां सर्व-भूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनक - कलशं हेम - पद्मं दधाना—
माद्यां शक्तिं सकल-जननीं विष्णु-वामाङ्क-संस्थाम्॥

ॐ ऐं शौं नमः तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि, त्वत्तो ब्रह्म-विदां वर नमो शौं ऐं ॐ॥६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, दधि-घृत-मध्वाक्तैस्तिलैः होमः।

* * *

६३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-त्रि-षष्ट-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, जलः तत्त्वं, विद्या कला, त्रीं उत्कीलनं, उन्मादिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रि-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे-नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या कलायै नमः करतले, त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, उन्मादिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रि-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।६३।।**

* * *

६४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'नित्यैव सा जगन्मूर्तिः'** इति सप्तशती-चतुष्षष्ट-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, वं वीजं, जयन्ती शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, त्रयोगुणाः गुणः, प्रज्ञा ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ॐ ऐं ह्रीं उत्कीलनं, शकट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुष्षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, वं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, जयन्ती-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, त्रयोगुणेभ्यो नमः अन्तरारे— मनसि, प्रज्ञा-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ॐ ऐं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, शकट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुष्षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ वं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं वं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नित्यैव सा जगन्मूर्तिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तया सर्वमिदं ततम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**
नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं।।
कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

ॐ ऐं वं नमः नित्यैव सा जगन्मूर्तिः, तया सर्वमिदं ततम् नमो वं ऐं ॐ।।६४।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः।

* * *

६५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तथापि तत्-समुत्पत्तिः'** इति सप्तशती-पञ्च-षष्ट-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, त्रूं बीजं, मङ्गला शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, गुद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायुः तत्त्वं, शान्ति कला, ॐ क्लीं उत्कीलनं, कूर्म मद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, त्रूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, मङ्गला-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, ॐ क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कूर्म-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथापि तत्-समुत्पत्तिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बहुधा श्रूयतां मम	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवानां कार्य-सिद्ध्यर्थं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
आविर्भवति सा यदा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमाद्यां जगद् - व्यापिनीम्,**
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि - प्रदां शारदाम्।।

ॐ ऐं त्रूं नमः तथापि तत् - समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।
देवानां कार्य-सिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा नमो त्रूं ऐं ॐ।।६५।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-ब्राह्मी होमः।

* * *

६६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'उत्पन्नेति तदा लोके'** इति सप्तशती-षट्-षष्ट-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्रौं बीजं, कपालिनी शक्तिः, श्रीलक्ष्मी महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्निस्तत्वं, विद्या कला, क्लीं उत्कीलनं, कूर्म मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे-शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, कपालिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीलक्ष्मी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कूर्म-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उत्पन्नेति तदा लोके	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सा नित्याऽप्यभिधीयते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
योग-निद्रां यदा विष्णुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगत्येकार्णवी-कृते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**

हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।।

विभ्राणां वरमब्ज - युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्।

क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

ॐ ऐं क्रौं नमः उत्पन्नेति तदा लोके, सा नित्याऽप्यभिधीयते।

योग-निद्रां यदा विष्णुः, जगत्येकार्णवी-कृते नमो क्रौं ऐं ॐ।।६६।।

१००० जपात्सिद्धिः, छाग-घृत-तिलैः होमः।

* * *

६७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'आस्तीर्य शेषमभजत्'** इति सप्तशती-सप्त-षष्ट-मन्त्रस्य श्रीअसित ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लूं बीजं, लाकिनी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, मनः ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, जल तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीअसित-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, लाकिनी-शक्तयै नमः दशारे— नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, मनः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आस्तीर्य शेषमभजत्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कल्पान्ते भगवान् प्रभुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदा द्वावसुरौ घोरौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विख्यातौ मधु-कैटभौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग - भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं क्लूं नमः आस्तीर्य शेषमभजत्, कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।
तदा द्वावसुरौ घोरौ, विख्यातौ मधु - कैटभौ नमो क्लूं ऐं ॐ॥६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-तिल-घृत होमः।

* * *

६८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'विष्णु-कर्ण-मलोद्भूतौ'** इति सप्तशती-अष्टा-षष्ट-मन्त्रस्य श्री असित ऋषिः, श्री महासरस्वती देवता, क्लीं बीजं, काकिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, भू तत्त्वं, प्रवृत्तिः कला, ल्हीं उत्कीलनं, प्रवाहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टा-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीअसित-ऋषये नमः सहस्रारे-शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे — हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, काकिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, ल्हीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवाहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टा-षष्ट-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विष्णु-कर्ण-मलोद्भूतौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स नाभि-कमले विष्णोः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्थितो ब्रह्मा प्रजा-पतिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः विष्णु - कर्ण-मलोद्भूतौ, हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।
स नाभि-कमले विष्णोः, स्थितो ब्रह्मा प्रजा-पतिः नमो क्लीं ऐं ॐ॥६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, सर्षप-खदिर-समिद्भिः होमः।

* * *

६९

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'दृष्ट्वा तावसुरौ'** इति सप्तशती-एकोन-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीदेवल ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीं वीजं, हाकिनी शक्तिः, सुन्दरी महाविद्या, सत्व गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, ऐं उत्कीलनं, प्रभाविनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीदेवल-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, हाकिनी-शक्त्यै नमः दशारे नाभौ, सुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रभाविनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोन-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रसुप्तं च जनार्दनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तुष्टाव योग-निद्रां तां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
एकाग्र-हृदय-स्थितः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ, प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तुष्टाव योग-निद्रां तां, एकाग्र-हृदय-स्थितः नमो श्रीं ऐं ॐ॥६९॥

१००० जपः, पायस-घृत-तिलैः होमः।

* * *

७०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'विबोधनार्थाय'** इति सप्तशती-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीजैमिनि ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, व्लूं बीजं, क्षमा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, तमो गुणः, मनः ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्तिः कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीजैमिनि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, व्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, क्षमा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, मन-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तत-मन्त्र-जप विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विबोधनार्थाय हरेः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हरि-नेत्र-कृतालयां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्थिति-संहार-कारिणीं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमाद्यां जगद्-व्यापिनीम्,**
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि-प्रदां शारदाम्॥

ॐ ऐं व्लूं नमः विबोधनार्थाय हरेर्हरि-नेत्र-कृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं, स्थिति-संहार-कारिणीं नमो व्लूँ ऐं ॐ॥७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः होमः।

* * *

७१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'निद्रां भगवतीं'** इति सप्तशती-एक-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमृकण्ड ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ठां वीजं, शिवा शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, तमो गुणं, रसना ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमृकण्ड-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ठां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शिवा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ठां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ठां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निद्रां भगवतीं विष्णोः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अतुलां तेजसः प्रभुः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृतां॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकां।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं॥

ॐ ऐं ठां नमः निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः नमो ठां ऐं ॐ॥७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-छागेन होमः।

* * *

७२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ब्रह्मोवाच'** इति सप्तशती-द्वा-सप्तत-मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ठ्रीं वीजं, शिवा शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, तमो गुणं, रसना त्रानेन्द्रियं, मृदु रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत्त-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ठ्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शिवा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ठ्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ठ्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ब्रह्मोवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ठ्रीं नमः **ब्रह्मोवाच** **नमो ठ्रीं ऐं ॐ॥७२॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-छागेन होमः।

* * *

७३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'त्वं स्वाहा त्वं स्वधा'** इति सप्तशती-त्रय-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्त्रां वीजं, नन्द-गोपजा शक्तिः, तारा महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रय-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्त्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, नन्द-गोपजा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, तारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुः-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रय-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ स्त्रां	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्त्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वषट्-कारः स्वरात्मिका	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं स्त्रां नमः त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि, वषट्-कारः स्वरात्मिका नमो स्त्रां ऐं ॐ।।७३।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-होमः।

* * *

७४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सुधा त्वमक्षरे'** इति सप्तशती-चतुस्सप्तत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लूं बीजं, भ्रामरी शक्तिः, छिन्नमस्ता महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, मृदु रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्तिः कला, क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुस्सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भ्रामरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, छिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मृदु-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुस्सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सुधा त्वमक्षरे नित्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यानुच्चार्या विशेषतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्लूं नमः सुधा त्वमक्षरे नित्ये, त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।
अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या, यानुच्चार्या विशेषतः नमो स्लूं ऐं ॐ॥७४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

७५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'त्वमेव सन्ध्या'** इति सप्तशती-पञ्च-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रैं वीजं, शैल-पुत्री शक्तिः, सुन्दरी महाविद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, ह्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रैं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शैल-पुत्री-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, सुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्वमेव सन्ध्या सावित्री	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वं देवि जननी परा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वयैतद् धार्यते विश्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वयैतत् सृज्यते जगत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**

शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥

नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।

यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं क्रैं नमः त्वमेव सन्ध्या सावित्री, त्वं देवि! जननी परा।

त्वयैतद् धार्यते विश्वं, त्वयैतत् सृज्यते जगत् नमो क्रैं ऐं ॐ॥७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-छाग होमः।

* * *

७६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'त्वयैतत् पाल्यते'** इति सप्तशती-षट्-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ग्रां बीजं, ब्रह्मचारिणी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो-गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्तिः कला, श्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ग्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ब्रह्मचारिणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षट्-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्वयैतत् पाल्यते देवि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्थिति-रूपा च पालने	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ग्रां नमः त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वं, स्थिति-रूपा च पालने नमो ग्रां ऐं ॐ।।७६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस होमः।

* * *

७७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तथा संहृति-रूपान्ते'** इति सप्त-शती-सप्त-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, फ्रां वीजं, चन्द्र-घण्टा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्निस्तत्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, फ्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, चन्द्र-घण्टा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथा संहृति-रूपान्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जगतोऽस्य जगन्मये	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-विद्या महा-माया	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-मेधा महा-स्मृतिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं फ्रां नमः तथा संहृति-रूपान्ते, जगतोऽस्य जगन्मये!
महा-विद्या महा-माया, महा-मेधा महा-स्मृतिः नमो फ्रां ऐं ॐ।।७७।।

१००० जपात् सिद्धिः, छाग-घृत-पलाश-समित् होमः।

* * *

७८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'महा-मोहा च भवती'** इति सप्तशती-अष्ट-सप्तत-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, जीं वीजं, कूष्माण्डा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, तमो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, जीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कूष्माण्डा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
महा-मोहा च भवती	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महा-देवी महाऽसुरी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गुण-त्रय-विभाविनी	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रि - नयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ ऐं जीं नमः महा-मोहा च भवती, महा-देवी महाऽसुरी।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य, गुण-त्रय-विभाविनी नमो जीं ऐं ॐ।।७८।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः।

* * *

७९

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'कालिरात्रिर्महा-रात्रिः'** इति सप्तशती-एकोनाशीत-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, लूं वीजं, स्कन्द-माता शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसं, वाक्-कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्लीं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, स्कन्द-माता-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकोनाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
काल-रात्रिर्महा-रात्रिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मोह-रात्रिश्च दारुणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं लूं नमः काल-रात्रिर्महा-रात्रिः, मोह-रात्रिश्च दारुणा।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा नमो लूं ऐं ॐ।।७९।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत होमः।

* * *

८०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'लज्जा पुष्टिस्तथा'** इति सप्तशती-अशीति-तम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, स्लूं बीजं, कात्यायनी शक्तिः, श्रीधूमा महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अशीति-तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कात्यायनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीधूमा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, घ्राण-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अशीति-तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खड्गिनी शूलिनी घोरा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गदिनी चक्रिणी तथा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कामं फाल-तले दुरक्षरततिर्देवी ममास्तानभी-**
र्मातस्त्वत्पद-पङ्कजोत्थ-रजसा लुम्पामि तां श्चिनतिं।
मार्कण्डेय-मुनिर्यथा भव-पदाम्भोजार्चना-प्राभवात्
कालं तद्वदहं चतुर्मुख-मुखाम्भोजात् सूर्य-प्रभे॥

ॐ ऐं स्लूं नमः लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिः, त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा, गदिनी चक्रिणी तथा नमो स्लूं ऐं ॐ॥८०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः होमः।

* * *

८१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'शङ्खिनी चापिनी'** इति सप्तशती-एकाशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, नों वीजं, काल-रात्रिः शक्तिः, श्रीबगलामुखी महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, नों बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, काल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीबगलामुखी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एकाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शङ्खिनी चापिनी वाण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भुशुण्डी परिघायुधा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सौम्या सौम्य-तराऽशेष	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सौम्येभ्यस्त्वति-सुन्दरी	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्।**

नग्नां वा नृकरां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिं॥

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्।

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

ॐ ऐं नों नमः शङ्खिनी चापिनी वाण-भुशुण्डी - परिघायुधा।

सौम्या सौम्य-तराऽशेष-सौम्येभ्यस्त्वति-सुन्दरी नमो नों ऐं ॐ॥८१॥

१००० जपात् सिद्धिः, छाग-पायस होमः।

* * *

८२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'पराऽपराणां परमा'** इति सप्तशती-द्वयशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्त्रीं वीजं, महा-गौरी शक्तिः, श्रीतारा महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्निः तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वयशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्त्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, महा-गौरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वयशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पराऽपराणां परमा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वमेव परमेश्वरी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सदसद् वाऽखिलात्मिके	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनं।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थितां॥

ॐ ऐं स्त्रीं नमः पराऽपराणां परमा, त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु, सदसद् वाऽखिलात्मिके नमो स्त्रीं ऐं ॐ॥८२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस होमः।

* * *

८३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तस्य सर्वस्य'** इति सप्तशती-त्र्यशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, प्रूं बीजं, सिद्धिदा शक्तिः, श्रीकमला महाविद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, भग कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्र्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सिद्धिदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महाविद्यायै नमः चतुरारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, भग-कर्मेन्द्रियाय नमः भग-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः षडारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्या- युरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्र्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्य सर्वस्य या शक्तिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सा त्वं किं स्तूयसे तदा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यया त्वया जगत्-स्रष्टा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगत्-पाताऽत्ति यो जगत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शुक्लां ब्रह्म - विचार-सार-परमाद्यां जगद्-व्यापिनीम्,**

वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।

हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,

वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि-प्रदां शारदाम्॥

ॐ ऐं प्रूं नमः तस्य सर्वस्य या शक्तिः, सा त्वं किं स्तूयसे तदा।

यया त्वया जगत्-स्रष्टा, जगत्-पाताऽत्ति यो जगत् नमो प्रूं ऐं ॐ॥८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस होमः।

* * *

८४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'सोऽपि निद्रा-वशं नीतः'** इति सप्तशती-चतुरशीत-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, स्रूं वीजं, महा-क्रोधा शक्तिः, धूमा महाविद्या, तमो गुणं, रसना ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुरशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, स्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, महा-क्रोधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीधूमा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुरशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सोऽपि निद्रा-वशं नीतः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विष्णुः शरीर-ग्रहणं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अहमीशान एव च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा रौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि! सर्वं क्षणार्द्धात्।**
संसारस्यान्त-काले नर-रुधिर-वसा-सम्प्लवे भूम-विद्युः॥
काली कापालिकी सा शव-शयन-तरा योगिनी योग-मुद्रा।
रक्ता-रुद्धिः समस्त-मरण-भय-हरा त्वं शिवा चन्द्र-घण्टा॥

ॐ ऐं स्रूं नमः सोऽपि निद्रा-वशं नीतः, कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीर - ग्रहणमहमीशान एव च नमो स्रूं ऐं ॐ॥८४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-छागेन होमः।

* * *

८५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'कारितास्ते यतो'** इति सप्तशती-पञ्चाशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ज्रां बीजं, भैरवी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महाविद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसं, पाद कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, श्रीं उत्कीलनं, सम्पुट मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ज्रां वीजाय नमः षडारे-- लिङ्गे, भैरवी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीमातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुट-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ज्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उदारैर्देवि संस्तुता	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ज्रां नमः कारितास्ते यतोऽतस्त्वां, कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः, स्वैरुदारैर्देवि! संस्तुता नमो ज्रां ऐं ॐ।।८५।।

१००० जपात्सिद्धिः, पायस-ज्ञागेन-होमः।

* * *

८६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'मोहयैतौ दुराधर्षा'** इति सप्तशती-षडशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, वौं वीजं, इन्द्राणी शक्तिः, श्रीभैरवी महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरः, वायुः तत्त्वं, शान्तिः कला, ऐं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षडशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, वौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे इन्द्राणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षडशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मोहयैतौ दुराधर्षा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुरौ मधु-कैटभौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रबोधं च जगत्-स्वामी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नीयतामच्युतो लघु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं वौं नमः मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु - कैटभौ।
प्रबोधं च जगत्-स्वामी, नीयतामच्युतो लघु नमो वौं ऐं ॐ।।८६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

८७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'बोधश्च क्रियतां'** इति सप्तशती-सप्ताशीत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ॐ बीजं, आग्नेयी शक्तिः, श्री भुवनेश्वरी महा-विद्या, तमो गुणः, नेत्र ज्ञानेन्द्रियं, स्तवन रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, मृदु स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, सम्पुटी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्ताशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ॐ बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, आग्नेयी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, नेत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, स्तवन रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, मृदु-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, सम्पुटी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्ताशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ॐ	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ॐ नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बोधश्च क्रियतामस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हन्तुमेतौ महाऽसुरो	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ॐ नमः बोधश्च क्रियतामस्य, हन्तुमेतौ महाऽसुरौ नमो ॐ ऐं ॐ॥८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-ब्राह्मी होमः।

* * *

८८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-अष्टाशीत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यमं स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नम ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।८८।।**

* * *

८६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'एवं स्तुता'** इति सप्तशती-नवाशीत-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ऋृं वीजं, वाराही शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ऋृं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वाराही शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीसुन्दरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ऋृं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ऋृं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवं स्तुता तदा देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तामसी तत्र वेधसा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियं।।
विभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थितां।।

ॐ ऐं ऋृं नमः एवं स्तुता तदा देवी, तामसी तत्र वेधसा नमो ऐं ऋृं ॐ।।८६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

९०

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'विष्णोः प्रबोधनार्थाय'** इति सप्तशती-नवति-तम-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्री महासरस्वती देवता, रूं बीजं, खड्ग-धारिणी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, सतो गुणः श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवति-तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे-शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, खड्ग-धारिणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नवति-तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रूँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विष्णोः प्रबोधनार्थाय	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निहन्तुं मधु-कैटभौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नेत्रास्य-नासिका-बाहु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हृदयेभ्यस्तथोरसः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं रूं नमः विष्णोः प्रबोधनार्थाय, निहन्तुं मधु - कैटभौ।
नेत्रास्य - नासिका - बाहु - हृदयेभ्यस्तथोरसः नमो रूं ऐं ॐ॥९०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः होमः।

* * *

९१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'निर्गम्य दर्शने'** इति सप्तशती-एक-नवत-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं बीजं, वारुणी शक्तिः, श्रीतारा महाविद्या, तमो गुणं, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, दश-मुखी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वारुणी शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीतारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, दश-मुखी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-एक-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निर्गम्य दर्शने तस्थौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्मणोऽव्यक्त-जन्मनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उत्तस्थौ च जगन्नाथः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा मुक्तो जनार्दनः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः निर्गम्य दर्शने तस्थौ, ब्रह्मणोऽव्यक्त-जन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन्नाथः, तथा मुक्तो जनार्दनः नमो क्लीं ऐं ॐ॥९१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस होमः।

* * *

६२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'एकार्णऽवे-हि-शयनात्'** इति सप्तशती-द्वा-नवत-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, मृग-वाहिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, रजो-गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, एक-मुखी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वा-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीदुर्गा-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, दुं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, मृग-वाहिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, एक-मुखी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वा-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एकार्णवेऽहि-शयनात्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ततः स ददृशे च तौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मधु-कैटभौ दुरात्मनौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अति-वीर-पराक्रमौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्,**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

ॐ ऐं दुं नमः एकार्णवेऽहि-शयनात्, ततः स ददृशे च तौ।
मधु - कैटभौ दुरात्मानावति-वीर्य-पराक्रमौ नमो दुं ऐं ॐ।।६२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस होमः।

* * *

६३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'क्रोध-रक्तेक्षणा'** इति सप्तशती-त्रयो-नवत-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, कौमारी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, श्रीमहा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयो-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे-लिङ्गे, कौमारी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीतारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, श्रीमहा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-त्रयो-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्रोध-रक्तेक्षणावत्तुं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्माणं जनितोद्यमौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समुत्थाय ततस्ताभ्यां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युयुधे भगवान् हरिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमाद्यां जगद्-व्यापिनीम्,**
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि-प्रदां शारदाम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः क्रोध -.रक्तेक्षणावत्तुं, ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां, युयुधे भगवान् हरिः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः होमः।

* * *

६४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'पञ्च-वर्ष-सहस्राणि'** इति सप्तशती-चतुर्नवत-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, गूं बीजं, कौबेरी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, ह्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, गूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कौबेरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः चेतसि, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक् ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं गूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पञ्च-वर्ष-सहस्राणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बाहु-प्रहरणो विभुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तावप्यति-बलोन्मत्तौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-माया-विमोहितौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेत् कालीं महा-मायां, त्रि-नेत्रां बहु-रूपिणीम्,**
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां, पूर्ण-चन्द्र-निभाननाम्।
नीलोत्पल-दल-श्यामां, शत्रु - सङ्घ-विदारिणीम्,
नर-मुण्डं तथा हि खड्गाभयं च वरं तथा॥

ॐ ऐं गूं नमः पञ्च-वर्ष-सहस्राणि, बाहु-प्रहरणो विभुः।
तावप्यति-बलोन्मत्तौ, महा-माया-विमोहितौ नमो गूं ऐं ॐ॥६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, छाग-पायस-घृत होमः।

* * *

९५

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'उक्त-वन्तौ वरो'** इति सप्तशती-पञ्च-नवत-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, लां वीजं, ईशाना शक्तिः, श्रीसुन्दरी महाविद्या, रजो-गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुः तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ईशाना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
लां नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं लां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उक्त-वन्तौ वरोऽस्मत्तो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
व्रियतामिति केशवं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रीं-वीजे! नाद - विन्दु-द्वितय-शशि-कलाकार-रूपे! स्वरूपे!**
मातर्मे देहि बुद्धिं जहि जहि दुरितं पाहि मां दीन-नाथे!
अज्ञान-ध्वान्त-नाशे! क्षय-रुचि-रुचिरे! प्रोल्लसत्-पाद-पद्मे!
ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुर-गण-नमिते! संस्तुते त्वां नमामि॥

ॐ ऐं लां नमः उक्त-वन्तौ वरोऽस्मत्तो, व्रियतामिति केशवं नमो लां ऐं ॐ॥९५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिलैः होमः।

* * *

९६

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'भगवान् उवाच'** इति सप्तशती-षण्ण-नवत-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रां बीजं, शूल-धारिणी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षण्णवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शूल-धारिणी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षण्ण-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रां नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रां नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भगवानुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रीं वीजे! नाद-विन्दु-द्वितय-शशि-कलाकार-रूपे! स्वरूपे!**

मातर्मे देहि बुद्धिं जहि जहि दुरितं पाहि मां दीन-नाथे!

अज्ञान-ध्वान्त-नाशे! क्षय-रचि-रुचिरे! प्रोल्लसत्-पाद-पद्मे!

ब्रह्मेशाद्यैः सुरेन्द्रैः सुर-गण-नमिते! संस्तुते त्वां नमामि॥

ॐ ऐं ह्रां नमः भगवानुवाच नमो ह्रां ऐं ॐ॥९६॥

१००० जपात्सिद्धिः, छाग-घृत-तिल-पायसैः होमः।

* * *

९७

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'भवेतामद्य मे तुष्टौ'** इति सप्तशती-सप्त-नवत-मन्त्रस्य श्रीभगवान् विष्णु ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, गं बीजं, ब्राह्मी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीभगवान् विष्णु-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, गं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ब्राह्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
गं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं गं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भवेतामद्य मे तुष्टौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मम वध्यावुभावपि	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ऐं वीजं वाग्भवाख्यं त्वमिह जड़-मति-ध्वान्त-चक्षुः-प्रकाशा,**
मातः! कारुण्य-धारा भव-वलित-दृशा पश्य मां दीन-नाथे!
मोह्यन्ते मोहितास्ते तव जननि! महा-मायया बद्ध-चित्ताः,
कारुण्यं प्रार्थयन्ते मम विशतु भुजां नाशितुं कैटभानाम्॥

ॐ ऐं गं नमः भवेतामद्य मे तुष्टौ, मम वध्यावुभावपि नमो गं ऐं ॐ॥९७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैः होमः।

* * *

६८

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'किमन्येन वरेणात्र'** इति सप्तशती-अष्टा-नवत-मन्त्रस्य श्रीभगवान् विष्णु ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ऐं वीजं, वैष्णवी शक्तिः, श्रीभैरवी महाविद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, महा-योनि मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टा-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीभगवान् विष्णु-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ऐं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, वैष्णवी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, महा-योनि-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-अष्टा-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ऐं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ऐं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किमन्येन वरेणात्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
एतावद्धि वृतं मया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अन्तर्वीज-स्वरूपे! त्रि-जगति वरदे! व्रीडया या स्थितेऽयम्,**

तां नित्यां शम्भु-शक्तिं त्रि-भुवन-जननीं पालिनीं जन्म-हेतुम्।

सर्वासां तां निदानं सकल-गुण-मयीं सच्चिदानन्द-रूपाम्,

तेजो-रूपां प्रदीप्तां त्रिभुवन-नमितां ज्ञान-दात्रीं नमामि॥

ॐ ऐं ऐं नमः किमन्येन वरेणात्र, एतावद्धि वृतं मया नमो ऐं ऐं ॐ॥६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-छागेन होमः।

* * *

९९

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति श्री सप्तशती नव-नवत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नव-नवत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे-नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थ च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-नव-नवत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह -समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥९९॥**

१०० जपात् सिद्धि, घृत-पायस-होमः।

* * *

१००

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'वञ्चिताभ्यां'** इति सप्तशती-शत-तम-मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, जूं वीजं, रौद्री शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसं, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-शत-तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रौद्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्या- भिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-शत-तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
जूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं जूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वञ्चिताभ्यामिति तदा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्वमापो-मयं जगत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यन्मोह्यौ मधु-कैटभौ प्रकृतिः सा माया महा-लक्ष्यदा,**
त्वं सिद्धिः त्रिपुरान्तका स्मर-रिपु-सम्मोहिनी मोहदा।
यामाराध्य स विष्णु विश्व-कर्ता ब्रह्मा शिवो संहतिः,
सा मां पातु सदैव सर्व-वशगा विष्णु-प्रिया शाङ्करी॥

ॐ ऐं जूं नमः वञ्चिताभ्यामिति तदा, सर्वमापो-मयं जगत् नमो जूं ऐं ॐ॥१००॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैः होमः।

* * *

१०१

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'विलोक्य ताभ्यां गदितो'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य प्रथम-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, डें बीजं, चामुण्डा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महाविद्या, सतो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य-निःश्वास-युत स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य-प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, डें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चामुण्डा-शक्तये नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-निःश्वास-युत-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्वबीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं डें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विलोक्य ताभ्यां गदितो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भगवान् कमलेक्षणः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आवां जहि न यत्रोर्वी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सलिलेन परिप्लुता	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह -समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं डें नमः विलोक्य ताभ्यां गदितो, भगवान् कमलेक्षणः।
आवां जहि न यत्रोर्वी, सलिलेन परिप्लुता नमो डें ऐं ॐ॥१०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिल-मेदैः होमः।

* * *

१०२

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे-नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह -समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।१०२।।**

* * *

१०३

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'तथेत्युक्त्वा'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, छ्रां बीजं, चण्डिका शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसं, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, खण्डिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, छ्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चण्डिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, खण्डिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं छ्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथेत्युक्त्वा भगवता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शङ्ख-चक्र-गदा-भृता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जघने शिरसी तयोः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अञ्जनाद्रि-निभां देवीं, युद्धालय-निवासिनीम्,**
रक्त-नेत्रां मुक्त-केशीं, शुष्क-मांसाति-भीषणाम्।
स्मित - वक्त्रां सदा चर्म-रक्त-चोषण-तत्पराम्,
सर्पालङ्कार - भूषाङ्गीं, मधु-मत्तां शिवां भजे।।

ॐ ऐं छ्रां नमः तथेत्युक्त्वा भगवता, शङ्ख-चक्र-गदा-भृता।
कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने, जघने शिरसी तयोः नमो छ्रां ऐं ॐ।।१०३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैः होमः।

* * *

१०४

विनियोगः — ॐ अस्य श्री **'एवमेषा समुत्पन्ना'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, क्लीं बीजं, विजया शक्तिः, श्रीबगला महाविद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, धारिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विजया-शक्तयै नमः दशारे— नाभौ, श्रीबगला-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, धारिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवमेष समुत्पन्ना	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्मणा संस्तुता स्वयं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रभावमस्या देव्यास्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भूयः शृणु वदामि ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः एवमेषा समुत्पन्ना, ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु, भूयः शृणु वदामि ते नमो क्लीं ऐं ॐ॥१०४॥

१००० जपात्सिद्धिः, पायस-घृत-होमः।

* * *

॥इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये मधु-कैटभ-वधो नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥
(श्लोकाः ९०, उवाच-मन्त्राः १४)

मन्त्रात्मक सप्तशती

द्वितीय भाग

महिषासुर-वधः

***

उपहार-दाता

'गुप्तावतार'

पूज्य बाबाश्री मोतीलाल जी

***

सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

***

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

फोन : ०५३२-२५०२७८३ मो०: ९४५०२२२७६७

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

अनुक्रम

पञ्चम संस्करण

शाकम्भरी जयन्ती

'पराभव' सं० २०७० वि०-१६ जनवरी, २०१४

मुद्रक

परा-वाणी प्रेस

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

दो शब्द

'श्रीदुर्गा सप्तशती' का प्रत्येक श्लोक ही **'मन्त्र'**-रूप है और **सात सौ मन्त्रों** का केवल पाठ मात्र ही त्रि-तापों का निवारण कर सभी कामनाओं को पूर्ण करने में सक्षम है। यही कारण है कि उन्हीं का आधार लेकर **शत-चण्डी, अयुत-चण्डी, लक्ष-चण्डी** जैसे महद् अनुष्ठान बड़े-बड़े महात्मा तक करते आए हैं। उसी **श्रीदुर्गा सप्तशती** का प्रस्तुत **'मन्त्रात्मक' स्वरूप** अपने ढँग का अनूठा है, जिसका प्रयोग **गुप्तावतार बाबाश्री** द्वारा **भारत की स्वाधीनता-प्राप्ति** हेतु **१३ अप्रैल, १६३०** को किया गया था।

यह **दुर्लभ 'मन्त्रात्मक सप्तशती'** दूसरी बार अपने नए पूर्ण रूप में प्रकट हो रही है। यह उन्हीं अद्वितीय महा-पुरुष प्रातः-स्मरणीय **पूज्य बाबा-श्री** की ही कृपा से सम्भव हो सका है। अतः हम इसे उन्हीं की पुण्य स्मृति में देश-वासियों को समर्पित करते हैं।

'मन्त्रात्मक सप्तशती' का सम्पूर्णतः प्रयोग तो **गुप्तावतार बाबाश्री** जैसे महात्माओं के ही निर्देशन में सम्भव है, किन्तु अलग-अलग मन्त्रों का प्रयोग कोई भी सामान्य साधक सहज ही कर सकता है और हमारा व्यक्ति-गत अनुभव है कि प्रस्तुत संस्करण के अनुसार जिस किसी मन्त्र का अनुष्ठान करनेवाले को शीघ्र ही विशेष लाभ मिला है।

प्रायः लोग यह जानना चाहते हैं कि **'सप्तशती'** के किस मन्त्र से किस कामना की पूर्ति होती है। इस सम्बन्ध में यह सूचनीय है कि सामान्यतः जिस श्लोक का जो अर्थ है, वही उसका फल होता है। उदाहरण के लिए पहले श्लोक का सामान्य अर्थ यह है कि **'जो सूर्य-पुत्र सावर्णि आठवें मनु कहे गए हैं, उनकी उत्पत्ति की कथा मैं विस्तार से कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो।'** अब इस श्लोक के पाठ करनेवाले को क्या फल मिल सकता है? उसकी कौन-सी कामना पूर्ण हो सकती है? इस प्रश्न का उत्तर यही है कि **'सूर्य-पुत्र'** कितना पुण्यात्मा और तेजस्वी व्यक्ति हो सकता है, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है और उसके जन्म का वृत्तान्त कितना उद्‌बोधक होगा, यह भी सहज ही बोध-गम्य है। अतः इस श्लोक का अनुष्ठान करनेवाले का जीवन वैसा ही तेजस्विता-पूर्ण एवं दूसरों के लिए मार्ग-दर्शक बनेगा, जैसा कि **सूर्य-पुत्र मनु** का वर्णित है। इसी प्रकार अन्य श्लोकों के अर्थ से उसके फल का अनुमान लगाया जा सकता है। जहाँ तक **'उवाच'**-मन्त्रों का सम्बन्ध है, उनका फल वही मानना चाहिए, जो उनसे सम्बन्धित श्लोकों के भावार्थ से ज्ञात होता है।

'मन्त्रात्मक सप्तशती' के मन्त्रों के प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ अन्य जानकारी हेतु कृपया पृष्ठ २७२ पर प्रकाशित **'मन्त्रात्मक सप्तशती का प्रयोग'** देखें।

प्रयाग-राज

—'कुल-भूषण'

मन्त्रात्मक सप्तशती

द्वितीय चरित-विधानं

विनियोगः— ॐ अस्य श्रीदुर्गायाः मध्यम चरितस्य श्रीविष्णु ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, श्रीशाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजं, वायुस्तत्त्वं, यजुर्वेद स्वरूपं, श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीविष्णु-ऋषये नमः शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः हृदि, उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे, श्री शाकम्भरी-शक्त्यै नमः नाभौ, दुर्गा-बीजाय नमः लिङ्गे, वायुस्तत्त्वाय नमः गुह्ये, यजुर्वेद-स्वरूपाय नमः पादयोः, श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यासः	**कर-न्यासः**	**अङ्ग-न्यासः**
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा, शङ्खिनी चापिनी वाण - भुशुण्डी-परिघायुधा	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके, घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे, भ्रामणेनात्म - शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते, यानि चात्यर्थ - घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके, कर-पल्लव - सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्व - स्वरूपे सर्वेशे! सर्व - शक्ति - समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानम्— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्।**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्॥
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

दक्षिणाम्नाय-मते आयुधानि—

दक्षिण-करे— अक्ष-माला, परशु, गदा, कुलिश, पद्म, धनुः, जलज, घण्टा, सुरा-पात्रे

वाम-करे— इषु (बाण) कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, असि (खड्ग), चर्म, शूल, पाश, सुदर्शन

ऊर्ध्वाम्नाय-मते आयुधानि—

दक्षिण-करे— अक्ष-माला, गदा, पद्म, कुण्डिका, शक्ति, चर्म, घण्टा, शूल, इषु (बाण)

वाम-करे— परशु, कुलिश, धनुः, दण्ड, असि, जलज, सुरा-पात्र, पाश, सुदर्शन

अत्र माया-बीजं (ह्रीं) प्रधानं— सर्व-देवजं माया शक्ति-रूपं तस्मात्।

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्री आदि-नाथाय नमः।

द्वितीय चरित (महिषासुर-वधः)

द्वितीय अध्याय

१०५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्रीवेद- व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, त्राण-करी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, त्रीं उत्कीलनं, ताडिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य-पञ्चम-मन्त्र-जपेविनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, त्राण-करी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति कलायै नमः करतले, त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ताडिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ॥१०५॥

१००० जपात्सिद्धिः, घृत-पायस-होमः।

* * *

१०६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देवासुरमभूद् युद्धं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं बीजं, चण्डी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उग्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, ताड़िनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चण्डी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उग्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ताड़िनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवासुरमभूद् युद्धं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पूर्णमब्द-शतं पुरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महिषेऽसुराणामधिपे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवानां च पुरन्दरे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग - भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकां।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः देवासुरमभूद् युद्धं, पूर्णमब्द-शतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे, देवानां च पुरन्दरे नमो श्रीं ऐं ॐ॥१०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृतेन होमः।

* * *

१०७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तत्रासुरैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, ह्सूं वीजं, जया शक्तिः, श्रीसुन्दरी महाविद्या, सत्त्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, हर्षन रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, मोहिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे — हृदि, ह्सूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, जया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, हर्षन्-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, मोहिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तत्रासुरैर्महा-वीर्यैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देव-सैन्यं पराजितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जित्वा च सकलान् देवान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
इन्द्रोऽभून्महिषासुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्त्या काञ्चन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।**
हस्तोत्क्षिप्त - हिरण्मयामृत-घटैरासिच्य-मानां श्रियम्।।
विभ्राणां वरमब्ज - युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-वलितां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ह्सूं नमः तत्रासुरैर्महा - वीर्यैर्देव - सैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः नमो ह्सूं ऐं ॐ।।१०७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृतेन होमः।

* * *

१०८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततः पराजिता देवाः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रौं वीजं, क्षान्ति शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, करुणा रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, क्रीं उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्षान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, करुणा-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः पराजिता देवाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पद्म-योनिं प्रजा-पतिं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पुरस्कृत्य गतास्तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यत्रेश-गरुड़-ध्वजौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ अञ्जनाद्रि-निभां देवीं युद्धालय-निवासिनीम्,**
रक्त-नेत्रां मुक्त-केशीं शुष्क-मांसाति-भीषणाम्।
स्मित - वक्त्रां सदा चर्म-रक्त-चोषण-तत्पराम्,
सर्पालङ्कार - भूषाङ्गीं मधु-मत्तां शिवां भजे॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः ततः पराजिता देवाः, पद्म-योनिं प्रजा-पतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र, यत्रेश - गरुड़ - ध्वजौ नमो ह्रौं ऐं ॐ॥१०८।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैः होमः।

* * *

१०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यथा-वृत्तं तयोः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, दया शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, करुणा रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुस्तत्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, करुणा-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यथा-वृत्तं तयोस्तद्-वत्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महिषासुर-चेष्टितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रिदशाः कथयामासुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवाभि-भव-विस्तरं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वेदाभ्यास-जडोऽपि यत्कर-सरोजात-ग्रहात् पद्म-भू—**
श्चित्रं विश्वमिदं तनोति विविधं वीत-क्रियं सक्रियम्।
तां तुङ्गा-तट-वास-सक्त-हृदयां श्रीचक्र-राजालयाम्,
देवानां हित-बोधनं वितनुतीं श्रीशारदां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः यथा-वृत्तं तयोस्तद्-वन्महिषासुर-चेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभि-भव-विस्तरम् नमो ह्रीं ऐं ॐ॥१०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैः होमः।

* * *

११०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, अं वीजं, प्रबला शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, द्वेषो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्तिः कला, ह्रीं उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, अं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रबला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, द्वेष-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं अं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यमस्य वरुणस्य च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्येषां चाधिकारान् स	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्वयमेवाधि-तिष्ठति	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां, षड्-भुजां च चतुर्मुखां।**
त्रिनेत्रां च त्रिशूलां च, पद्म-चक्र-गदा-धरां॥
पीताम्बर - धरां देवीं, नानालङ्कार-भूषितां।
तेजः-पुञ्ज-धरां श्रेष्ठां, ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्॥

ॐ ऐं अं नमः सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां, यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स, स्वयमेवाधि-तिष्ठति नमो अं ऐं ॐ॥११०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैः होमः।

* * *

१११

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स्वर्गान्निराकृताः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकादश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं वीजं, प्रबला शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, करुणा रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, विक्षेपिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मा-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रबला-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, करुणा-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, विक्षेपिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम--स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तेन देव-गणा भुवि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विचरन्ति यथा मर्त्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महिषेण दुरात्मना	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यद्-भानु सहस्र-कोटि-सदृशा केयूर-हारोज्वला।**
बिम्बोष्ठी स्मित - दन्त-पंक्ति-रुचिरा रक्ताम्बरालंकृता।।
विष्णु-ब्रह्म-सुरेन्द्र-रुद्र-सहिता युद्धेऽजिता शत्रुभिः।
क्षां क्षीं तस्य वधः परा विजयते काली-कला पातु माम्।।

ॐ ऐं क्लीं नमः स्वर्गान्निराकृताः सर्वे, तेन देव-गणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या, महिषेण दुरात्मना नमो क्लीं ऐं ॐ।।१११।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एतद् वः कथितं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्रीदेवराज इन्द्रो ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, चां बीजं, प्रवृत्ति शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, गालिनी मुद्रा, मम क्षेम स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीदेवराज-इन्द्र-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, चां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रवृत्ति-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा - महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं चां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एतद् वः कथितं सर्व	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अमरारि-विचेष्टितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शरणं च प्रपन्नाः स्मो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वधस्तस्य विचिन्त्यताम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता।**
या वीणा वर-दण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना॥
या ब्रह्माच्युत-शङ्कर-प्रभृतिभिः देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा॥

ॐ ऐं चां नमः एतद् वः कथितं सर्वममरारि-विचेष्टितम्।
शरणं च प्रपन्नाः स्मो, वधस्तस्य विचिन्त्यताम् नमो चां ऐं ॐ॥११२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इत्थं निशम्य देवानां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, मुं बीजं, तीव्रा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, मनो ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, ज्वालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, मुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, तीव्रा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, मनो-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ज्वालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं मुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्थं निशम्य देवानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वचांसि मधु-सूदनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चकार कोपं शम्भुश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भ्रुकुटी कुटिलाननौ	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं मुं नमः इत्थं निशम्य देवानाम्, वचांसि मधु-सूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च, भ्रुकुटी-कुटिलाननौ नमो मुं ऐं ॐ॥११३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततोऽति-कोप-पूर्णस्य'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, डां वीजं, ज्वाला शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, ज्वालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, डां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ज्वाला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ज्वालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं डां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततोऽति-कोप-पूर्णस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चक्रिणो वदनात् ततः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निश्चक्राम महत्-तेजो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ब्रह्मणः शङ्करस्य च	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हंसो बाह्यान्धकार-प्रदलन-चतुरो मोद-चोद-प्रकाशः।**
पद्मानामेष मे दत्तः स्थित-तिमिर-ततेर्वारयित्र्याश्च रात्रौ॥
देवानां देह-भूत शिरसि शिव-मयं पूर्ण-तेज-स्वरूपात्।
जाता रूपाधि-रूपा अनल-बल-मया शक्ति-रूपा पुनातु॥

ॐ ऐं डां नमः ततोऽति-कोप-पूर्णस्य, चक्रिणो वदनात् ततः।
निश्चक्राम महत् - तेजो, ब्रह्मणः शङ्करस्य च नमो डां ऐं ॐ॥११४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैः दशांश-होमः।

* * *

११५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अन्येषां चैव देवानां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-दश-मन्त्रस्य श्रीनारदो ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, यैं वीजं, उद्भवा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, ज्वालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यैं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, उद्भवा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ज्वालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अन्येषां चैव देवानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शक्रादीनां शरीरतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निर्गतं सु-महत्-तेजः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तच्चैक्यं समगच्छत	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्त्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं यैं नमः अन्येषां चैव देवानां, शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सु-महत्-तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत नमो यैं ऐं ॐ॥११५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अतीव-तेजसः कूटं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, विं बीजं, प्राकट्या शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, ज्वालिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, विं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्राकट्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ज्वालिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं विं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अतीव-तेजसः कूटं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ज्वलन्तमिव पर्वतं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ददृशुस्ते सुरास्तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं विं नमः अतीव-तेजसः कूटं, ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र, ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम् नमो विं ऐं ॐ।।११६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अतुलं तत्र तत्-तेजः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, च्रें वीजं, दृष्टि शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, च्रें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दृष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं च्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अतुलं तत्र तत्-तेजः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व-देव-शरीरजं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एकस्थं तदभून्नारी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
व्याप्त-लोक-त्रयं त्विषा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं च्रें नमः अतुलं तत्र तत्-तेजः, सर्व-देव-शरीरजं।
एकस्थं तदभून्नारी, व्याप्त-लोक-त्रयं त्विषा नमो च्रें ऐं ॐ॥११७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यदभूच्छाम्भवं तेजः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ईं बीजं, मोहिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ईं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मोहिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी - महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टादश - मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यदभूच्छाम्भवं तेजस्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तेनाजायत तन्मुखं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
याम्येन चाभवन् केशा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बाहवो विष्णु-तेजसा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हंसो बाह्यान्धकार-प्रदलन-चतुरो मोद-चोद-प्रकाशः।**
पद्मानामेष मे दत्तः स्थित-तिमिर-ततेर्वारयित्र्याश्च रात्रौ॥
देवानां देह-भूत शिरसि शिव-मयं पूर्ण-तेज-स्वरूपात्।
जाता रूपाधि-रूपा अनल-बल-मया शक्ति-रूपा पुनातु॥

ॐ ऐं ईं नमः यदभूच्छाम्भवं तेजस्, तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा, बाहवो विष्णु-तेजसा नमो ईं ऐं ॐ॥११८॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-तिलैर्होमः।

* * *

११६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सौम्येन स्तनयोर्युग्मं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सौं वीजं, पूषा शक्तिः, श्रीतारा महाविद्या, सत्व गुणः, मनो ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, पूषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, मनो-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वारुणेन च जङ्घोरू	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नितम्बस्तेजसा भुवः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत-हंसे भ्रमति च गमने दक्षिणे चाक्ष-सूत्रम्।**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर-कनक-मयं पुस्तकं ज्ञान-गम्या॥
वीणां वादयन्ती स्व-कर-जपैः शास्त्र-विज्ञान-शब्दैः।
क्रीडन्ती दिव्य-स्वरूपा कर-कमल-धरा भारती सुप्रसन्ना॥

ॐ ऐं सौं नमः सौम्येन स्तनयोर्युग्मं, मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू, नितम्बस्तेजसा भुवः नमो सौं ऐं ॐ॥११६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ब्रह्मणस्तेजसा पादौ'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, व्रां बीजं, ग्राहिणी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ग्राहिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तदंगुल्योऽर्क-तेजसा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वसूनां च करांगुल्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कौबेरेण च नासिका	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्वेत - पद्मासना देवी, श्वेत - गन्धानुलेपना।**
अर्जिता मुनिभिः सर्वैः, ऋषिभिः स्तूयते सदा।
एवं ध्यात्वा सदा देवीं, वांछितं लभते नरः।।

ॐ ऐं व्रां नमः ब्रह्मणस्तेजसा पादौ, तदंगुल्योऽर्क-तेजसा
वसूनां च करांगुल्यः, कौबेरेण च नासिका नमो व्रां ऐं ॐ।।१२०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, त्रौं वीजं, विक्षेपा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विक्षेपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्राजापत्येन तेजसा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नयने त्रितयं जज्ञे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा पावक-तेजसा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हंसो बाह्यान्धकार-प्रदलन-चतुरो मोद-चोद-प्रकाशः।**
पद्मानामेष मे दत्तः स्थित-तिमिर-ततेर्वारयित्र्याश्च रात्रौ॥
देवानां देह-भूत शिरसि शिव-मयं पूर्ण-तेज-स्वरूपात्।
जाता रूपाधि-रूपा अनल-बल-मया शक्ति-रूपा पुनातु॥

ॐ ऐं त्रौं नमः तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः, प्राजापत्येन तेजसा।
नयने त्रितयं जज्ञे, तथा पावक - तेजसा नमो त्रौं ऐं ॐ॥१२१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, लूं वीजं, पूर्णा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, पूर्णा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
श्रवणावनिलस्य च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्येषां चैव देवानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सम्भवस्तेजसां शिवा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **षडाधार-पङ्केरुहान्तर्विराजत्-सुषुम्नान्तरालेऽति-तेजोल्लसन्तीं।**
सुधा-मण्डलं द्रावयन्तीं पिबन्तीं सुधा-मूर्तिमीडेऽहमानन्द-रूपाम्॥

ॐ ऐं लूं नमः भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः, श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां, सम्भवस्तेजसां शिवा नमो लूं ऐं ॐ॥१२२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः समस्त-देवानां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्रस्य श्रीवेद - व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, वं बीजं, श्रीधनुर्धरा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, हर्ष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, वं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीधनुर्धरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, हर्ष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः समस्त-देवानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तेजो-राशि-समुद्भवां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तां विलोक्य मुदं प्रापुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अमरा महिषार्दिताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं वं नमः ततः समस्त-देवानां, तेजो-राशि-समुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः नमो वं ऐं ॐ।।१२३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्रस्य श्रीभगवान् रुद्रो ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्रां वीजं, यामिनी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता-महाविद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभगवान्-रुद्र-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, यामिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ददौ तस्यै पिनाक-धृक्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
समुत्पाद्य स्व-चक्रतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ज्वलत्-कोटि-वालार्क-भासारुणाङ्गीं सु-लावण्य-शृङ्गार-शोभाभिरामाम्।**
महा-पद्म-किंजल्क-मध्ये विराजत्-त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥

ॐ ऐं ह्रां नमः शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य, ददौ तस्यै पिनाक-धृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः, समुत्पाद्य स्व-चक्रतः नमो ह्रां ऐं ॐ॥१२४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शङ्खं च वरुणः शक्तिं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्चविंशति-मन्त्रस्य श्रीभगवान्-मरुत ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं बीजं, श्रीकामान्धा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति-मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभगवान्-मरुत्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामान्धा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शङ्खं च वरुणः शक्तिं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ददौ तस्यै हुताशनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मारुतो दत्तवांश्चापं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट
वाण-पूर्णे तथेषुधो	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शिरीष-प्रसूनोल्लसद्-बाहु-दण्डैर्ज्वलद्-बाण-कोदण्ड-पाशांकुशैश्च।**
चलत्-कङ्कणोदार-केयूर-भूषा सु-शस्त्रान् ग्रहन्तीं भजे तारिकाम्बाम्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः शङ्खं च वरुणः शक्तिं, ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवांश्चापं, वाण - पूर्णे तथेषुधो नमो क्रीं ऐं ॐ॥१२५॥

१००० जपात् सिद्धिः, धृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षट्- विंशति-मन्त्रस्य श्रीइन्द्रो ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, सौं वीजं, रात्रि शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीइन्द्र-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे — हृदि, सौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कुलिशादमराधिपः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ददौ तस्यै सहस्राक्षो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
घण्टामैरावताद् गजात्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्वणित्-किङ्किणी नूपुरोद्भासि-रत्न-प्रभालीढ़-लाक्षार्द्र-पादारविन्दाम्।**
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां भजेऽहं सदा कालिकां वज्र-हस्ताम्।।

ॐ ऐं सौं नमः वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य, कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो, घण्टामैरावताद् गजात् नमो सौं ऐं ॐ।।१२६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'काल-दण्डाद् यमो दण्डं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीभगवान् मृत्युः ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, यं बीजं, शशि-प्रभा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त द्वितीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभगवान् मृत्यु-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शशि-प्रभा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नम कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
काल-दण्डाद् यमो दण्डं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पाशं चाम्बु-पतिर्ददौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रजा-पतिश्चाक्ष-मालां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शान्तानन्त-महा-विभूति-परमं यद्-ब्रह्म-रूपं हरेः,**
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि यत् प्रिय-तरं रूपं यदत्यद्भुतम्।
यान्यन्यानि यथा-सुखं विहरतो रूपाणि मृत्योश्च ते,
आहुः स्वैरनुरूप-रूप-विभवैः श्रीशारदायै नमः।।

ॐ ऐं यं नमः काल-दण्डाद् यमो दण्डं, पाशं चाम्बु-पतिर्ददौ।
प्रजा-पतिश्चाक्ष-मालां, ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् नमो यं ऐं ॐ।।१२७।।

१००० जपात् सिद्धिः घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'समस्त-रोम-कूपेषु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीभगवान् सूर्यो ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ऐं बीजं, लोलाक्षी शक्तिः, श्रीकाली महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभगवान् सूर्य-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऐं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लोलाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टाविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
समस्त-रोम-कूपेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निज-रश्मीन् दिवाकरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कालश्च दत्त-वान् खड्गं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तस्याश्चर्म च निर्मलम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यद्-भानु-सहस्त्र-कान्तिममलां विद्युच्छटा-भास्वरां।**
खड्गं चर्म - वराभयं विदधतीं केयूर-हारोज्ज्वलाम्।।
सूर्य-काल-समुद्र-वेद-प्रकृतिं श्रीश्चोदयन्तीं भ्रुवैः।
विष्णु-ब्रह्म-सुरेन्द्र-सेवित-पदां श्रीक्षीरजां चिन्तयेत्।।

ॐ ऐं ऐं नमः समस्त - रोम - कूपेषु, निज-रश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्त-वान् खड्गं, तस्याश्चर्म च निर्मलम् नमो ऐं ऐं ॐ।।१२८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'क्षीरोदश्चामलं हारं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकोन-त्रिंशति मन्त्रस्य श्रीवरुण ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, मूं वीजं, चञ्चला शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, उत्साह रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवरुण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नम द्वादशारे —हृदि, मूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चञ्चला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं मूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षीरोदश्चामलं हारं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अजरे च तथाऽम्बरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चूडा-मणिं तथा दिव्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कुण्डले कटकानि च	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यद्-भानु-सहस्र-कान्तिममलां विद्युच्छटा-भास्वरां।**
खड्गं चर्म - वराभयं विदधतीं केयूर-हारोज्ज्वलाम्॥
सूर्य - काल-समुद्र-वेद-प्रकृतिं श्रीश्चोदयन्तीं ध्रुवैः।
विष्णु-ब्रह्म-सुरेन्द्र-सेवित-पदां श्रीक्षीरजां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं मूं नमः क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे।
चूडा-मणिं तथा दिव्यं, कुण्डले कटकानि च नमो मूं ऐं ॐ॥१२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अर्द्ध-चन्द्रं तथा शुभ्रं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीवडवानल ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, सः बीजं, दीप्तिः शक्तिः, श्रीतारा महाविद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवडवानल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सः बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दीप्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अर्द्ध-चन्द्रं तथा शुभ्रं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
केयूरान् सर्व-वाहुषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नूपुरौ विमलौ तद् वद	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ग्रैवेयकमनुत्तमम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ज्वलत्-कोटि-वालार्क-भासारुणाङ्गीं सु-लावण्य-शृङ्गार-शोभाभिरामाम्।**
महा-पद्म-किंजल्क-मध्ये विराजत्-त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥

ॐ ऐं सः नमः अर्द्ध-चन्द्रं तथा शुभ्रं, केयूरान् सर्व-बाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्-वद्, ग्रैवेयकमनुत्तमम् नमो सः ऐं ॐ॥१३०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अंगुलीयक-रत्नानि'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीभगवान्-त्वष्ट्रा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हं बीजं, सुखगा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभगवान्-त्वष्ट्रा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुखगा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अंगुलीयक-रत्नानि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समस्तास्वंगुलीषु च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विश्व-कर्मा ददौ तस्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट
परशुं चाति-निर्मलं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रीमत्सुन्दर-नायिकां भय-हरां ज्ञान-प्रदां निर्मलां,**
श्यामाभां कमलासनार्चित-पदां नारायणस्यानुजां।
वीणा-वेणु मृदङ्ग-वाद्य-रसिकां नाना-विधाऽम्बिकां,
श्रीतारां प्रणतोऽस्मि सततमहं रत्न-प्रभां शारदां।।

ॐ ऐं हं नमः अंगुलीयक-रत्नानि, समस्तास्वंगुलीषु च।
विश्व-कर्मा ददौ तस्यै, परशुं चाति-निर्मलं नमो हं ऐं ॐ।।१३१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अस्त्राण्यनेक-रूपाणि'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीनिर्ऋत ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सं बीजं, सुभगा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षुर्ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्तिः कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीनिर्ऋत-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुभगा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अस्त्राण्यनेक-रूपाणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथाऽभेद्यं च दंशनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अम्लान-पङ्कजां मालां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिरस्युरसि चापरां	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्वणित्-किङ्किणी नूपुरोद्भासि-रत्न-प्रभालीढ़-लाक्षार्द्र-पादारविन्दाम्।**
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां भजेऽहं सदा कालिकां वज्र-हस्ताम्।।

ॐ ऐं सं नमः अस्त्राण्यनेक-रूपाणि, तथाऽभेद्यं च दंशनम्।
अम्लान-पङ्कजां मालां, शिरस्युरसि चापराम् नमो सं ऐं ॐ।।१३२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अददज्जलधिस्तस्यै'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीकुबेरो ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीः देवता, सों बीजं, दुर्भगा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकुबेर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सों बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दुर्भगा-शक्तयै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा - महा-विद्यायै नमः षोडशारे-कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अददज्जलधिस्तस्यै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पङ्कजं चाति-शोभनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हिम-वान् वाहनं सिंहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रत्नानि विविधानि च	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यद्-भानु-सहस्र-कान्तिममलां विद्युच्छटा-भास्वरां।**
खड्गं चर्म - वराभयं विदधतीं केयूर-हारोज्ज्वलाम्॥
सूर्य - काल - समुद्र-वेद-प्रकृतिं श्रीश्चोदयन्तीं भ्रुवैः।
विष्णु-ब्रह्म-सुरेन्द्र-सेवित-पदां श्रीक्षीरजां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं सों नमः अददज्जलधिस्तस्यै, पङ्कजं चाति-शोभनम्।
हिम-वान् वाहनं सिंहं, रत्नानि विविधानि च नमो सों ऐं ॐ॥१३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ददावशून्यं सुरया'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीकुबेर ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, शं बीजं, शुभगा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकुबेर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शुभगा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ददावशून्यं सुरया	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पान-पात्रं धनाधिपः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शेषश्च सर्व-नागेशो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-मणि-विभूषितं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रीमत्सुन्दर-नायिकां भय-हरां ज्ञान-प्रदां निर्मलां,**

श्यामाभां कमलासनार्चित-पदां नारायणस्यानुजां।

वीणा-वेणु मृदङ्ग-वाद्य-रसिकां नाना-विधाऽम्बिकां,

श्रीतारां प्रणतोऽस्मि सततमहं रत्न-प्रभां शारदां।।

ॐ ऐं शं नमः ददावशून्यं सुरया, पान-पात्रं धनाधिपः।

शेषश्च सर्व-नागेशो, महा-मणि-विभूषितम् नमो शं ऐं ॐ।।१३४।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नाग-हारं ददौ तस्यै'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअनन्त ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हं बीजं, शिवा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, उत्साहो रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रवृत्ति मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअनन्त-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, हं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, शिवा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाम नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उत्साह-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रवृत्ति-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नाग-हारं ददौ तस्यै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धत्ते यः पृथिवीमिमां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्यैरपि सुरैर्देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भूषणैरायुधैस्तथा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रीमत्सुन्दर-नायिकां भय-हरां ज्ञान-प्रदां निर्मलां,**

श्यामाभां कमलासनार्चित-पदां नारायणस्यानुजां।

वीणा-वेणु मृदङ्ग-वाद्य-रसिकां नाना-विधाऽम्बिकां,

श्रीतारां प्रणतोऽस्मि सततमहं रत्न-प्रभां शारदां॥

ॐ ऐं हं नमः नाग-हारं ददौ तस्यै, धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।

अन्यैरपि सुरैर्देवी, भूषणैरायुधैस्तथा नमो हं ऐं ॐ॥१३५॥

१००० जपात् सिद्धि, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सम्मानिता ननादोच्चैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षड्-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीकालः ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ह्रौं वीजं, गर्भा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षड्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, गर्भा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षड्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सम्मानिता ननादोच्चैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
साट्टहासं मुहुर्मुहुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्या नादेन घोरेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कृत्स्नमापूरितं नभः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥१३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैः दशांश-होमः।

* * *

१३७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अमायताति-महता'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीकालो ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, म्लीं वीजं, भोगिनी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, द्राविणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भोगिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, द्राविणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अमायताति-महता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रति-शब्दो महानभूत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चुक्षुभुः सकला लोकाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
समुद्राश्च चकम्पिरे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यद्-भानु सहस्र-कोटि-सदृशा केयूर-हारोज्ज्वला।**
बिम्बोष्ठी स्मित - दन्त-पंक्ति-रुचिरा रक्ताम्बरालंकृता॥
विष्णु-ब्रह्म-सुरेन्द्र-रुद्र-सहिता युद्धेऽजिता शत्रुभिः।
क्षां क्षीं तस्य वधः परा विजयते काली-कला पातु माम्॥

ॐ ऐं म्लीं नमः अमायताति-महता, प्रति-शब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः, समुद्राश्च चकम्पिरे नमो म्लीं ऐं ॐ॥१३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

१३८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चचाल वसुधा चेलुः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीव्योमेशो ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, यूं वीजं, श्रीकाल-रात्रि शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीव्योमेश-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकाल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चचाल वसुधा चेलुः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सकलाश्च मही-धराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जयेति देवाश्च मुदा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तामूचुः सिंह-वाहिनीम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यन्मार्तण्ड - कान्तिं विगलित-कबरीं कृष्ण-वस्त्रावृताङ्गीम्।**
दण्डं लिङ्गं कराब्जैर्वरमथ भवनं सन्दधानां त्रिनेत्राम्॥
नाना-कल्पौघ-भासां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-संघैः।
त्रैलोक्यं चालयन्तीं प्रखर-खर-स्वरैः पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं यूं नमः चचाल वसुधा चेलुः, सकलाश्च मही-धराः।
जयेति देवाश्च मुदा, तामूचुः सिंह-वाहिनीम् नमो यूं ऐं ॐ॥१३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१३९

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, त्रूं वीजं, भोगिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भोगिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्रैलोक्यममरारयः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुक्ता-हार-लसत्-किरीट-रुचिरामादित्य-दिव्य-प्रभाम्।**
शिञ्जन्नूपुर - किङ्किणी-मणि-धरां युद्धार्थ-सम्मोदिनीम्॥
सर्वाभीष्ट-फल-प्रदां गिरि-सुतां वाणी-रमा-सेविताम्।
ध्यायेद् विन्ध्य-निवासिनीं पर-शिवां श्रीशारदाम्बिकाम्॥

ॐ ऐं त्रूं नमः तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां, भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं, त्रैलोक्यममरारयः नमो त्रूं ऐं ॐ॥१३९॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१४०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सन्नद्धाखिल-सैन्यास्ते'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्त्रीं बीजं, बालिका शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, बालिका-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सन्नद्धाखिल-सैन्यास्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समुत्तस्थुरुदायुधाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आः किमेतदिति क्रोधाद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
आभाष्य महिषासुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-केशीं दुरन्ताम्।**
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति-कुटिलां क्रोध-मोहाधिकाराम्॥
चर्वन्तीमस्थि-खण्डं विषय-द्विष-करां शत्रूणां भीतिदास्या।
लक्ष्मी द्विषतामलक्ष्मी हरतु मम भयं पातु मां श्रीरनाद्या॥

ॐ ऐं स्त्रीं नमः सन्नद्धाखिल-सैन्यास्ते, समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः नमो स्त्रीं ऐं ॐ॥१४०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१४१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अभ्यधावत तं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, आं बीजं, अग्नि (स्वाहा) शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, आं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अग्नि (स्वाहा) शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीसुन्दरी महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अभ्यधावत तं शब्दम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अशेषैरसुरैर्वृतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स ददर्श ततो देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
व्याप्त-लोक-त्रयां त्विषा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उद्यन्मार्तण्ड - कान्तिं विगलित-कबरीं कृष्ण-वस्त्रावृताङ्गीम्।**
दण्डं लिङ्गं कराब्जैर्वरमथ भवनं सन्दधानां त्रिनेत्राम्॥
नाना-कल्पौघ-भासां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-संघैः।
त्रैलोक्यं चालयन्ती प्रखर-खर-स्वरैः पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं आं नमः अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं, व्याप्त-लोक-त्रयां त्विषा नमो आं ऐं ॐ॥१४१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-युत-घृत-हव्येन होमः।

* * *

१४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पादाक्रान्त्या नत-भुवं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वि-चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, प्रें वीजं, धूम्रा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, धूम्रा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पादाक्रान्त्या नत-भुवं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
किरीटोल्लिखिताम्बरां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षोभिताशेष-पातालां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धनुर्ज्या-निःस्वनेन तां	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-केशीं दुरन्ताम्।**
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति-कुटिलां क्रोध-मोहाधिकाराम्॥
चर्वन्तीमस्थि-खण्डं विषय-द्विष-करां शत्रूणां भीतिदात्या।
लक्ष्मी द्विषतामलक्ष्मी हरतु मम मयं पातु मां श्रीरनाद्या॥

ॐ ऐं प्रें नमः पादाक्रान्त्या नत-भुवं, किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेष-पातालां, धनुर्ज्या-निःस्वनेन ताम् नमो प्रें ऐं ॐ॥१४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१४३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दिशो भुज-सहस्रेण'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, शं बीजं, अर्चिषा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, अर्चिषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दिशो भुज-सहस्रेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समन्ताद् व्याप्त संस्थितां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततः प्रववृते युद्धं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तया देव्या सुर-द्विषाम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुक्ता-हार-लसत्-किरीट-रुचिरामादित्य-दिव्य-प्रभाम्।**
शिञ्जन्नूपुर-किङ्किणी-मणि-धरां युद्धार्थ-सम्मोदिनीम्॥

ॐ ऐं शं नमः दिशो भुज-सहस्रेण, समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं, तया देव्या सुर-द्विषाम् नमो शं ऐं ॐ॥१४३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१४४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्रां वीजं, ज्वालिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियँ, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ज्वालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आदीपित-दिगन्तरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महिषासुर-सेनानीः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चिक्षुराख्यो महाऽसुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कस्तूरी-तिलकाञ्चितेन्दु-विलसत्-प्रोद्भासि-फाल-स्थलीम्।**
कर्पूर-द्रव-मिश्र-चूर्ण-खदिरामोदोल्लसद्-वीटिकाम्।।
लोलापाङ्ग - तरङ्गितैरधि - कृपा - सारैर्नतानन्दिनीम्।
श्रीशैल-स्थल-वासिनीं भगवतीं युद्ध-स्थितां भावये।।

ॐ ऐं ह्रां नमः शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित-दिगन्तरम्।
महिषासुर-सेनानीश्चिक्षुराख्यो महाऽसुरः नमो ह्रां ऐं ॐ।।१४४।।

१००० जपात् सिद्धिः मांस-घृतेन होमः।

* * *

१४५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'युयुधे चामरश्चान्यैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्मूं बीजं, सूक्ष्मा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्मूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सूक्ष्मा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्मूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युयुधे चामरश्चान्यैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चतुरङ्ग-बलान्वितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रथानामयुतैः षड्भिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उदग्राख्यो महाऽसुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चाञ्चल्यारुण-लोचनाञ्चित-कृपा-चन्द्रार्क-चूडामणिम्।**
चारु-स्मेर-मुखां चराचर-जगत्-संरक्षिणीं तत्-पदाम्॥
चञ्चच्चम्पक-नासिकाग्र-विलसन्मुक्ता-मणी-रञ्जिताम्।
श्रीयुद्ध-स्थल-वासिनीं विजयते शत्रून् कटाक्षैर्हरन्॥

ॐ ऐं स्मूं नमः युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्ग-बलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महाऽसुरः नमो स्मूं ऐं ॐ॥१४५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतेन होमः।

* * *

१४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अयुध्यतायुतानां च'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षट्-चत्वारिंश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ऊं बीजं, ज्वालिनी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऊं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, ज्वालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयो, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम - पुटितोक्त - द्वितीय - शतकस्य षट् - चत्वारिंश - मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ऊं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अयुध्यतायुतानां च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सहस्रेण महा-हनुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असिलोमा महाऽसुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुक्ता-हार-लसत्-किरीट-रुचिरामादित्य-दिव्य-प्रभाम्।**
शिञ्जन्नूपुर-किङ्किणी-मणि-धरां युद्धार्थ-सम्मोदिनीम्॥

ॐ ऐं ऊं नमः अयुध्यतायुतानां च, सहस्रेण महा-हनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महाऽसुरः नमो ऊं ऐं ॐ॥१४६॥

१००० जपात् सिद्धिः मांस-घृतेन होमः।

* * *

१४७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अयुतानां शतैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, गूं बीजं, ज्वालिनी शक्तिः, ज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, गूं बीजाय नमः षड्डारे— लिङ्गे, ज्वालिनी शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, ज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं गूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अयुतानां शतैः षड्भिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वाष्कलो युयुधे रणे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
गज-वाजि-सहस्रौघैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अनेकैः परिवारितः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हंसो बाह्यान्धकार-प्रदलन-चतुरो मोद-चोद-प्रकाशः।**
पद्मानामेष मे दत्तः स्थित-तिमिर-ततेर्वारयित्र्याश्च रात्रौ॥
देवानां देह-भूत शिरसि शिव-मयं पूर्ण-तेज-स्वरूपात्।
जाता रूपाधि-रूपा अनल-बल-मया शक्ति-रूपा पुनातु॥

ॐ ऐं गूं नमः अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे।
गज - वाजि - सहस्रौघैरनेकैः परिवारितः नमो गूं ऐं ॐ॥१४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतेन होमः।

* * *

१४८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वृतो रथानां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, व्यूं वीजं, विस्फुलिङ्गिनी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्यूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विस्फुलिङ्गिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्यूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वृतो रथानां कोट्या च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
युद्धे तस्मिन्नयुध्यत	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विडालाख्योऽयुतानां च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पञ्चाशद्भिरथायुतैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-केशीं दुरन्ताम्।**
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति-कुटिलां क्रोध-मोहाधिकाराम्।।
चर्वन्तीमस्थि-खण्डं विषय-द्विष-करां शत्रूणां भीतिदास्या।
लक्ष्मी द्विषतामलक्ष्मी हरतु मम भयं पातु मां श्रीरनाद्या।।

ॐ ऐं व्यूं नमः वृतो रथानां कोट्या च, युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
विडालाख्योऽयुतानां च, पञ्चाशद्भिरथायुतैः नमो व्यूं ऐं ॐ।।१४८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'युयुधे संयुगे तत्र'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हूं वीजं, सुश्री शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुश्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युयुधे संयुगे तत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रथानां परिवारितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्ये च तत्रायुतशो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रथ-नाग-हयैर्वृताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां लीला-लवैश्शस्त्रभिः।**
युध्यन्तीं प्रभवादि-देव-मुकुटे राजत्पदाम्भोरुहाम्॥
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां तीव्रैः कटाक्ष-क्षुरैः।
फट्-यन्तीं त्रिपुरेश्वरीं भगवतीं श्रीमातरं भावये॥

ॐ ऐं हूं नमः युयुधे संयुगे तत्र, रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो, रथ-नाग-हयैर्वृताः नमो हूं ऐं ॐ॥१४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृत-मांसेन होमः।

* * *

१५०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'युयुधुस्संयुगे देव्या'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, भैं वीजं, सुरूपा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भैं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुरूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युयुधुः संयुगे देव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सह तत्र महाऽसुराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कोटि-कोटि-सहस्रैस्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रथानां दन्तिनां तथा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कस्तूरी-तिलकाञ्चितेन्दु-विलसत्-प्रोद्भासि-फाल-स्थलीम्।**
कर्पूर-द्रव-मिश्र-चूर्ण-खदिरामोदोल्लसद्-वीटिकाम्॥
लोलापाङ्ग - तरङ्गितैरधि - कृपा - सारैर्नतानन्दिनीम्।
श्रीशैल-स्थल-वासिनीं भगवतीं युद्ध-स्थितां भावये॥

ॐ ऐं भैं नमः युयुधुः संयुगे देव्या, सह तत्र महाऽसुराः।
कोटि-कोटि-सहस्रैस्तु, रथानां दन्तिनां तथा नमो भैं ऐं ॐ॥१५०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१५१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हयानां च वृतो युद्धे'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ह्रां वीजं, कपिला शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कपिला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ एं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हयानां च वृतो युद्धे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तत्राभून् महिषासुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शक्तिभिर्मुसलैस्तथा	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धूम्राभां धूम्र-वस्त्रां प्रकटित-दशनां मुक्त-केशीं दुरन्ताम्।**
नित्यं कलहान्तरालां मुहुरति-कुटिलां क्रोध-मोहाधिकाराम्॥
चर्वन्तीमस्थि-खण्डं विषय-द्विष-करां शत्रूणां भीतिदास्या।
लक्ष्मीं द्विषतामलक्ष्मीं हरतु मम भयं पातु मां श्रीरनाद्या॥

ॐ ऐं ह्रां नमः हयानां च वृतो युद्धे, तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च, शक्तिभिर्मुसलैस्तथा नमो ह्रां ऐं ॐ॥१५१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-युत-हव्यैर्होमः।

* * *

१५२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'युयुधुः संयुगे देव्या'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रूं बीजं, हव्य-कव्य-वहा-शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु त्वक् च ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद वाक् च कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, हव्य-कव्य-वहा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षुस्त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाभ्यां नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-वाक्-कर्मेन्द्रियाभ्यां नमः गुद-वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युयुधुः संयुगे देव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खड्गैः परशु-पट्टिशैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
केचित् पाशांस्तथाऽपरे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **षट्-ताराङ्गण-दीपिका शिव-सतीं षड्जाल-वर्गापहाम्।**
षट्-चक्रान्तर-संस्थिताम्बर-सुधां षड्-योगिनी-वेष्टिताम्॥
षण्मोहादिक-वैरि-नाश-निरतां षड्-भावगां षोडशीम्।
श्रीयुद्ध - स्थल-क्रीडनं विजयते श्रीशारदायाः शिवम्॥

ॐ ऐं क्रूं नमः युयुधुः संयुगे देव्या, खड्गैः परशु - पट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तिः, केचित् पाशांस्तथाऽपरे नमो क्रूं ऐं ॐ॥१५२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१५३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देवीं खड्ग-प्रहारैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यासः ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीः देवता, मूं बीजं, कीर्ति शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, मूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कीर्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं मूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवीं खड्ग-प्रहारैस्तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
साऽपि देवी ततस्तानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **समुन्मीलत्वन्तः-करण-करुणोद्गार-चतुरः।**
करि-प्राण-त्राण-प्रणयिनि दृगन्तस्तव मयि॥
तवेदं सौन्दर्यं महिष - सेनानास्सहाया।
सहायोद्धुं वीरा प्रहसन-परा श्रीर्विजयते॥

ॐ ऐं मूं नमः देवीं खड्ग-प्रहारैस्तु, ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
साऽपि देवी ततस्तानि, शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका नमो मूं ऐं ॐ॥१५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१५४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'लीलयैव प्रचिच्छेद'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ल्हीं वीजं, कान्ति शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, कान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
लीलयैव प्रचिच्छेद	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अनायस्तानना देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्तूयमाना सुरर्षिभिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शान्तानन्त-महा-विभूति - परमामाद्या क्रिया विश्वधा।**
काऽन्या सर्व-महीन्द्र-विष्णु-वरदा वामेशि प्राक्-पालिनी॥
लीला - कर्दम - कोण-वाण-प्रहरा शस्त्रैस्तथास्त्रैस्तथा।
युध्यन्तीं त्रिपुरां परां पर-मयीं श्रीशारदाम्बां भजे॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः लीलयैव प्रचिच्छेद, निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी।
अनायस्तानना देवी, स्तूयमाना सुरर्षिभिः नमो ल्हीं ऐं ॐ॥१५४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१५५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मुमोचासुर-देहेषु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, श्रां बीजं, श्रीतुष्टि शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाणी कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीतुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाणी-कर्मेन्द्रियाय नमः वाणी-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां .	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मुमोचासुर-देहेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सोऽपि क्रुद्धो धुत-सटो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्या वाहन-केसरी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्।।
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्।।

ॐ ऐं श्रां नमः मुमोचासुर - देहेषु, शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुत-सटो, देव्या वाहन-केसरी नमो श्रां ऐं ॐ।।१५५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१५६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चचारासुर-सैन्येषु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, द्रूं वीजं, श्रीपुष्टि शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चचारासुर-सैन्येषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वनेष्विव हुताशनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युद्ध्यमाना रणेऽम्बिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्यान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं द्रूं नमः चचारासुर - सैन्येषु, वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च, युध्यमाना रणेऽम्बिका नमो द्रूं ऐं ॐ॥१५६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१५७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'त एव सद्यः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, द्व्रूं वीजं, धृति शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्व्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, धृति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्व्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त एव सद्यः सम्भूता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गणाः शत-सहस्रशः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युयुधुस्ते परशुभिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भिन्दिपालाऽसि-पट्टिशैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **समुन्मीलत्वन्तः-करण-करुणोद्गार-चतुरः।**
करि-प्राण-त्राण-प्रणयिनि दृगन्तस्तव मयि।।
तवेदं सौन्दर्यं महिष - सेनायास्सहाया।
सहायोद्धुं वीरा प्रहसन-परा श्रीर्विजयते।।

ॐ ऐं द्व्रूं नमः त एव सद्यः सम्भूता, गणाः शत-सहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालाऽसि - पट्टिशैः नमो द्व्रूं ऐं ॐ।।१५७

१००० 'जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैस्तु होमः।

* * *

१५८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नाशयन्तोऽसुर-गणान्'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्सौं वीजं, शान्ति शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा - महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नाशयन्तोऽसुर-गणान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी-शक्त्युपबृंहिताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अवादयन्त पटहान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शान्तानन्त-महा-विभूति-परमामाद्या क्रिया विश्वधा।**
काऽन्या सर्व-महीन्द्र-विष्णु-वरदा वामेशि प्राक्-पालिनी॥
लीला - कर्दम-कोण-वाण-प्रहरा शस्त्रैस्तथास्त्रैस्तथा।
युध्यन्तीं त्रिपुरां परां पर - मयीं श्रीशारदाम्बां भजे॥

ॐ ऐं ह्सौं नमः नाशयन्तोऽसुर-गणान्, देवी-शक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान्, गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे नमो ह्सौं ऐं ॐ॥१५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१५९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मृदङ्गांश्च तथैवान्ये'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रां बीजं, क्रिया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, वाणी कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायुस्तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्रिया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, वाणी-कर्मेन्द्रियाय नमः वाणी-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मृदङ्गांश्च तथैवान्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततो देवी त्रिशूलेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गदया शक्ति-ऋष्टिभिः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **षट्-ताराङ्गण-दीपिका शिव-सतीं षड्जाल-वर्गापहाम्।**
षट्-चक्रान्तर-संस्थिताम्बर-सुधां षड्-योगिनी-वेष्टिताम्।।
षण्मोहादिक-वैरि-नाश-निरतां षड्-भावगां षोडशीम्।
श्रीयुद्ध - स्थल-क्रीडनं विजयते श्रीशारदायाः शिवम्।।

ॐ ऐं क्रां नमः मृदङ्गांश्च तथैवान्ये, तस्मिन् युद्ध-मोहत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन, गदया शक्ति-ऋष्टिभिः नमो क्रां ऐं ॐ।।१५९।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१६०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'खड्गादिभिश्च शतशो'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षष्टितम-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, स्हौं बीजं, दया शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्टितम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्हौं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्टितम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
खड्गादिभिश्च शतशो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निजघान महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पातयामास चैवान्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
घण्टा-स्वन-विमोहितान्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरौ माया-वीजौ हिम-कर-कलाक्रान्त-धनुषि।**
प्रकर्ष्योर्ध्वं विन्दुं प्रखर - वेद्धव्यमिति च॥
विडालासिर्लोपौ वधन-कुशला श्रीर्विजयते।
हरि-श्यामा सा मामवतु त्वभिरामा रुचि-कला॥

ॐ ऐं स्हौं नमः खड्गादिभिश्च शतशो, निजघान महाऽसुरान्।
पातयामास चैवान्यान्, घण्टा-स्वन-विमोहितान् नमो स्हौं ऐं ॐ॥१६०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्येन होमः।

* * *

१६१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'असुरान् भुवि पाशेन'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, म्लूं वीजं, मेधा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मेधा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
असुरान् भुवि पाशेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
केचिद् द्विधा कृताः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तीक्ष्णैः खड्ग-पातैस्तथाऽपरे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं म्लूं नमः असुरान् भुवि पाशेन, बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः, खड्ग-पातैस्तथाऽपरे नमो म्लूं ऐं ॐ॥१६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१६२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'विपोथिता निपातेन'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीव्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं वीजं, श्रीश्रद्धा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीश्रद्धा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विपोथिता निपातेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गदया भुवि शेरते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वेमुश्च केचिद् रुधिरं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुसलेन भृशं हताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः विपोथिता निपातेन, गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद् रुधिरं, मुसलेन भृशं हताः नमो श्रीं ऐं ॐ॥१६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१६३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'केचिन्निपतिता भूमौ'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रि-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, गैं बीजं, लज्जा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, गैं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लज्जा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः गुदे—चतुरारे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं गैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
केचिन्निपतिता भूमौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भिन्नाः शूलेन वक्षसि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निरन्तराः शरौघेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कृताः केचिद् रणाजिरे	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **षट्-ताराङ्गण-दीपिका शिव-सतीं षज्ञाल-वर्गापहाम्।**
षट्-चक्रान्तर-संस्थिताम्बर-सुधां षड्-योगिनी-वेष्टिताम्।।
षण्मोहादिक-वैरि-नाश-निरतां षड्-भावगां षोडशीम्।
श्रीयुद्ध - स्थल-क्रीडनं विजयते श्रीशारदायाः शिवम्।।

ॐ ऐं गैं नमः केचिन्निपतिता भूमौ, भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण, कृताः केचिद् रणाजिरे नमो गैं ऐं ॐ।।१६३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'श्येनानुकारिणः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, क्रूं वीजं, लक्ष्मी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लक्ष्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ एं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्येनानुकारिणः प्राणान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
छिन्न-ग्रीवास्तथाऽपरे	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरौ माया-बीजौ हिम-कर-कलाक्रान्त-धनुषौ।**
प्रकर्ष्योर्ध्वं विन्दुं प्रखर - वेद्धव्यमिति च।।
विडालासिर्लोपौ वधन-कुशला श्रीर्विजयते।
हरि-श्यामा सा मामवतु त्वभिरामा रुचि-कला।।

ॐ ऐं क्रूं नमः श्येनानुकारिणः प्राणान्, मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्न - ग्रीवास्तथाऽपरे नमो क्रूं ऐं ॐ।।१६४।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१६५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शिरांसि पेतुरन्येषां'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, त्रीं बीजं, लक्ष्मी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लक्ष्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि- तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी- मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शिरांसि पेतुरन्येषां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अन्ये मध्ये विदारिताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विच्छिन्न-जङ्घास्त्वपरे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पेतुरुर्व्यां महाऽसुराः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अनेकं ब्रह्माण्ड-स्थिति-नियम-लीला-विलसिते।**
दया - पीयूषाम्भोनिधि-सहज-सम्वास-भवने॥
शिरान् वितरन् भूमौ च रिपु-सहस्र-धारैर्वहन्।
कदा ते सौरभ्यं विकसित कराम्भोज-कृपया॥

ॐ ऐं त्रीं नमः शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्न-जङ्घास्त्वपरे, पेतुरुर्व्यां महाऽसुराः नमो त्रीं ऐं ॐ॥१६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एक-बाह्वक्षि-चरणाः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, क्ष्फीं बीजं, श्रीसरस्वती शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महाविद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्फीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीसरस्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्फीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एक-बाह्वक्षि-चरणाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
केचिद् देव्या द्विधा कृताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पतिताः पुनरुत्थिताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यत् सङ्कल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां,**
जन्म-क्षेम-प्रलय-रचना जङ्गमाजङ्गमानाम्।
तत्-कल्याणं किमपि यमिनामेक-लक्ष्य समाधौ,
काम-क्रोध-प्रबल-विलय-कारिणी मां पुनातु॥

ॐ ऐं क्ष्फीं नमः एक-बाह्वक्षि-चरणाः, केचिद् देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि, पतिताः पुनरुत्थिताः नमो क्ष्फीं ऐं ॐ॥१६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१६७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'कबन्धा युयुधुर्देव्या'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य **सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य** श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्सीं बीजं, प्रीति शक्तिः, ज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्सीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, प्रीति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, ज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्सीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कबन्धा युयुधुर्देव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीत-परमायुधाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ननूतुश्चापरे तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युद्धे तूर्य-लयाश्रिताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं क्सीं नमः कबन्धा युयुधुर्देव्या, गृहीत-परमायुधाः।
ननूतुश्चापरे तत्र, युद्धे तूर्य-लयाश्रिताः नमो क्सीं ऐं ॐ॥१६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-द्रव्यैर्होमः।

* * *

१६८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'कबन्धाश्छिन्न-शिरसः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, फ्रों बीजं, रति शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्निस्तत्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रों बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो ब्रूमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कबन्धाश्छिन्न-शिरसः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खड्ग-शक्त्यृष्टि-पाणयः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवीमन्ये महाऽसुराः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कस्तूरी-तिलकाञ्चितेन्दु-विलसत्-प्रोद्भासि-फाल-स्थलीम्।**
कर्पूर-द्रव-मिश्र-चूर्ण-खदिरामोदोल्लसद्-वीटिकाम्।।
लोलापाङ्ग - तरङ्गितैरधि - कृपा - सारैर्नतानन्दिनीम्।
श्रीशैल-स्थल-वासिनीं भगवतीं युद्ध-स्थितां भावये।।

ॐ ऐं फ्रों नमः कबन्धाश्छिन्न-शिरसः, खड्ग-शक्त्यृष्टि-पाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो, देवीमन्ये महाऽसुराः नमो फ्रों ऐं ॐ।।१६८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैः होमः।

* * *

१६९

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'पातितै रथ-नागाश्वैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नव-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रीं बीजं, रमा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, रमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पातितै रथ-नागाश्वैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुरैश्च वसुन्धरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अगम्या साऽभवत् तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यत्राऽभूत् स महा-रणः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स-कुंकुम-विलेपनां प्रखर-रक्त-शोणोद्भवां,**
स-मन्द-हसितेक्षणामुदय-नाशतो लीलया।
अशेष-जन-मोहिनीं समर-मेरु-भञ्जाकुलाम्,
स्मरामि श्रीकालिकां पटु-पटीर-चर्चा-रताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं नमः पातितै रथ - नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साऽभवत् तत्र, यत्राऽभूत् स महा-रणः नमो ह्रीं ऐं ॐ।।१६९।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-होमः।

* * *

१७०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शोणितौघा महा-नद्यः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्तत-मन्त्रस्य श्रीयज्ञ-वर्चस् ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, शां बीजं, जया शक्तिः, श्री ज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयज्ञ-वर्चस्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शां बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, जया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शोणितौघा महा-नद्यः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मध्ये चासुर-सैन्यस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	कवचाय वौषट्
वारणासुर-वाजिनाम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स - कुंकुम - विलेपनां प्रखर-रक्त-शोणोद्भवां,**
स-मन्द-हसितेक्षणामुदय-नाशतो लीलया।
अशेष-जन-मोहिनीं समर-मेरु-मज्जाकुलाम्,
स्मरामि श्रीकालिकां पटु-पटीर-चर्चा-रताम्॥

ॐ ऐं शां नमः शोणितौघा महा-नद्यः, सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवः।
मध्ये चासुर-सैन्यस्य, वारणासुर-वाजिनाम् नमो शां ऐं ॐ॥१७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-होमः।

* * *

१७१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'क्षणेन तन्महा-सैन्यं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, क्ष्म्रीं बीजं, श्रीदुर्गा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षणेन तन्महा-सैन्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराणां तथाऽम्बिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निन्ये क्षयं यथा वह्निः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तृण-दारु-महा-चयम्	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अनेकं ब्रह्माण्ड-स्थिति-नियम-लीला-विलसिते।**
दया-पीयूषाम्भोनिधि-सहज-सम्वास-भवने।।
शिरान् वितरन् भूमौ च रिपु-सहस्र-धारैर्वहन्।
कदा ते सौरभ्यं विकसित कराम्भोज-कृपया।।

ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः क्षणेन तन्महा - सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृण-दारु-महा-चयम् नमो क्ष्म्रीं ऐं ॐ।।१७१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१७२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स च सिंहो महा-नादं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वि-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, रों वीजं, प्रभा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रों वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रभा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स च सिंहो महा-नादं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
उत्सृजन् धुत-केशरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शरीरेभ्योऽमरारीणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असूनिव विचिन्वति	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अनेकं ब्रह्माण्ड-स्थिति-नियम-लीला-विलसिते।**
दया-पीयूषाम्भोनिधि-सहज-सम्वास-भवने॥
शिरान् वितरन् भूमौ च रिपु-सहस्र-धारर्वहन्।
कदा ते सौरभ्यं विकसति कराम्भोज-कृपया॥

ॐ ऐं रों नमः स च सिंहो महा-नादमुत्सृजन् धुत-केशरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति नमो रों ऐं ॐ॥१७२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१७३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देव्या गणैश्च'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रि-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ड्रुं वीजं, सत्या शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलन, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रि-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ड्रुं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीसत्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रि-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ड्रुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देव्या गणैश्च तैस्तत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृतं युद्धं महाऽसुरैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यथैषां तुतुषुर्देवाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यत् सङ्कल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां,**
जन्म - क्षेम-प्रलय-रचना जङ्गमाजङ्गमानाम्।
तत्-कल्याणं किमपि यमिनामेक-लक्ष्य समाधौ,
काम-क्रोध-प्रबल-विलय-कारिणी मां पुनातु॥

ॐ ऐं ड्रुं नमः देव्या गणैश्च तैस्तत्र, कृतं युद्धं महाऽसुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः, पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि नमो ड्रुं ऐं ॐ॥१७३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

॥इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये महिषासुर-सैन्य-वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

(श्लोकाः ६८, उवाच-मन्त्राः १, आदितो १७३)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

द्वितीय चरित (महिषासुर-वधः)

तृतीय अध्याय

१७४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुस्सप्तत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, चण्डा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसं, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुस्सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, चण्डा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुस्सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ।।१७४।।

१००० जपात्सिद्धिः, घृत-मांस-होमः।

* * *

१७५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निहन्य-मानं तत्सैन्यं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, क्लीं वीजं, वाणी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वाणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निहन्य-मानं तत्-सैन्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अवलोक्य महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः निहन्य - मानं तत् -सैन्यमवलोक्य महाऽसुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्, ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् नमो क्लीं ऐं ॐ॥१७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-होमः।

* * *

१७६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स देवीं शर-वर्षेण'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षट्-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सां वीजं, विलासिनी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विलासिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स देवीं शर-वर्षेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ववर्ष समरेऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यथा मेरु-गिरेः शृङ्गं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तोय-वर्षेण तोयदः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं सां नमः स देवीं शर - वर्षेण, ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरु-गिरेः शृङ्गं, तोय-वर्षेण तोयदः नमो सां ऐं ॐ॥१७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१७७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तस्य च्छित्वा ततो देवी'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, त्रों वीजं, विजया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रों वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विजया-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्य च्छित्वा ततो देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
लीलयैव शरोत्करान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जघान् तुरगान् वाणैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यन्तारं चैव वाजिनाम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कर्पूरागरु - कुंकुमाङ्कित - कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।**
कृष्टोत्कृष्ट-सुकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामदाम्॥
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
श्रीकालीं वर-दायिनीं कुश-कशैर्युद्धे वृतां चिन्तयेत्॥

ॐ ऐं त्रों नमः तस्य च्छित्वा ततो देवी, लीलयैव शरोत्करान्।
जघान् तुरगान् वाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् नमो त्रों ऐं ॐ॥१७७॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१७८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चिच्छेद च धनुः सद्यो'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रूं बीजं, गिरिजा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, प्रूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, गिरिजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्ट-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चिच्छेद च धनुः सद्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ध्वजं चाति-समुच्छ्रितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विव्याध चैव गात्रेषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
छिन्न-धन्वानमाशुगैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट

ध्यानं— **यत् सङ्कल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां,**
जन्म - क्षेम-प्रलय-रचना जङ्गमाजङ्गमानाम्।
तत्-कल्याणं किमपि यमिनामेक-लक्ष्य समाधौ,
काम-क्रोध-प्रबल-विलय-कारिणी मां पुनातु॥

ॐ ऐं प्रूं नमः चिच्छेद च धनुः सद्यो, ध्वजं चाति-समुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु, छिन्न - धन्वानमाशुगैः नमो प्रूं ऐं ॐ॥१७८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१७६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स च्छिन्न-धन्वा विरथो'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, ग्लौं बीजं, विश्वा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री मेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विश्वा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स च्छिन्न-धन्वा विरथो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हताश्वो हत-सारथिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अभ्यधावत तां देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
खड्ग-चर्म-धरोऽसुरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुक्ता - कुन्देन्दु-गौरां मणि-मय-मुकुटां रत्न-ताटङ्क-युक्ताम्।**
अक्ष-स्रक्-कुण्ड-चिह्नामभय-वर-करां चन्द्र-चूडां त्रिनेत्राम्॥
युध्यन्तिश्चिक्षुराद्यैः स्फुट-मुकुट-मणिः चागतं खड्ग-हस्तम्।
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन - जननीं वारयन्तीं नमामि॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः स च्छिन्न-धन्वा विरथो, हताश्वो हत-सारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं, खड्ग-चर्म-धरोऽसुरः नमो ग्लौं ऐं ॐ॥१७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१८०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सिंहमाहत्य खड्गेन'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अशीतितम-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्रौं बीजं, विनदा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अशीतितम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, विनदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अशीतितम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सिंहमाहत्य खड्गेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आजघान भुजे सव्ये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवीमप्यति-वेग-वान्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुक्ता - कुन्देन्दु-गौरां मणि-मय-मुकुटां रत्न-ताटङ्क-युक्ताम्।**
अक्ष-स्रक्-कुण्ड-चिह्नामभय-वर-करां चन्द्र-चूडां त्रिनेत्राम्।।
युध्यन्तिश्चिक्षुराद्यैः स्फुट-मुकुट-मणिः चागतं खड्ग-हस्तम्।
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन - जननीं वारयन्तीं नमामि।।

ॐ ऐं क्रौं नमः सिंहमाहत्य खड्गेन, तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये, देवीमप्यति-वेग-वान् नमो क्रौं ऐं ॐ।।१८०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१८१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य'** इति सप्तशती द्वितीय-शतकस्य एकाशीत-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, व्रीं बीजं, सुनदा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, स्तम्भिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, व्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुनदा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तम्भिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एकाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पफाल नृप-नन्दन	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततो जग्राह शूलं स	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कोपादरुण-लोचनः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हर-क्रोध-त्रस्यन् मदन-नव-दुर्ग-द्वय-तुलाम्।**
दधत् कोक-द्वन्द्व-द्युति-दमन-दीक्षाधि-गुरुताम्।।
प्रहारं खड्गस्य भुजमुप-गतं चिक्षुर-कृतम्।
भजे श्रीकालीं हुंकारैर्प्रमथतीं देवीमपराम्।।

ॐ ऐं व्रीं नमः तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य, पफाल नृप-नन्दन!
ततो जग्राह शूलं स, कोपादरुण-लोचनः नमो व्रीं ऐं ॐ।।१८१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसेन होमः।

* * *

१८२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चिक्षेप च ततस्ततु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वयशीत-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लीं वीजं, स्मृति शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वयशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, स्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, स्मृति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वयशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चिक्षेप च ततस्ततु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भद्रकाल्यां महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जाज्वल्य-मानं तेजोभी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रवि-बिम्बमिवाम्बरात्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातर्देवि! सरस्वति! तव गुणाख्याता वरास्तावका—**
स्तानेव प्रति साम्बु - जिह्वमुदिता यन्मामिका भारती।।
चिक्षेपश्चिक्षुराख्यो प्रखर-वर-वराधार-धारा वहन्तम्।
शूलं जाज्वल्य-मानं निरस-कृत-शतं पातयन्तीं नमामि।।

ॐ ऐं स्लीं नमः चिक्षेप च ततस्ततु, भद्रकाल्यां महाऽसुरः।
जाज्वल्य-मानं तेजोभी, रवि-बिम्बमिवाम्बरात् नमो स्लीं ऐं ॐ।।१८२।।

१००० जपात् सिद्धिः घृत-मांसेन होमः।

* * *

१८३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दृष्ट्वा तदापतच्छूलं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्र्यशीत-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रीं वीजं, श्रीऋद्धि शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्र्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीऋद्धि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्र्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दृष्ट्वा तदापतच्छूलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी शूलममुञ्चत	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तच्छूलं शतधा तेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नीतं स च महाऽसुरः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कनकाब्ज - विभूषित - भूति - भवं,**
भव-भाव-विभावित-भिन्न-पदम्।
कर - शूल - शिला धृतं - मुद्गरं वै,
चर - चिक्षुर-मारिणि मातु भजे॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः दृष्ट्वा तदापतच्छूलं, देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन, नीतं स च महाऽसुरः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥१८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, पलाश-समिद्भः घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१८४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'हते तस्मिन् महा-वीर्ये'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुरशीत-मन्त्रस्य श्रीवात्स्य ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, हौं बीजं, समृद्धि शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुरशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, समृद्धि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुरशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हते तस्मिन् महा-वीर्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महिषस्य चमू-पतौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आजगाम गजारूढः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चामरस्त्रिदशार्दनः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **देवि! त्वन्महिमावधिर्न हरिणा नापि त्वया ज्ञायते।**
यद्यप्येवमथापि नैव युवयोः सर्वज्ञता हीयते।।
सेनानी महिषस्य चामरमहो चिक्षुर्मृते भूपते।
आयातो मरणाय मोह-महिमा ते मातुर्ज्ञातं त्वया।।

ॐ ऐं हौं नमः हते तस्मिन् महा-वीर्ये, महिषस्य चमू-पतौ।
आजगाम गजारुढश्चामरस्त्रिदशार्दनः नमो हौं ऐं ॐ।।१८४।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१८५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशीत-मन्त्रस्य श्रीवात्स्य ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रां वीजं, शुद्धि शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शुद्धि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्चाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देव्यास्तामम्बिका द्रुतं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हुङ्काराभि-हतां भूमौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पातयामास निष्प्रभाम्	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातर्देवि! सरस्वति! तव गुणाख्याता वरास्तावका—**
स्तानेव प्रति साम्बु-जिह्वमुदिता यन्मामिका भारती।।
चिक्षेपश्चिक्षुराख्यो प्रखर-वर-वराधार-धारा वहन्तम्।
शूलं जाज्वल्यं-मानं निरस-कृत-शतं पातयन्तीं नमामि।।

ॐ ऐं श्रां नमः सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ, देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुङ्काराभि - हतां भूमौ, पातयामास निष्प्रभाम् नमो श्रां ऐं ॐ।।१८५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१८६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षडशीत-**मन्त्रस्य श्रीवात्स्य** ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, ग्रीं वीजं, भुक्ति शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो **गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं,** रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्व, परा-शान्ति कला, **श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी** मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षडशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भुक्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः **षोडशारे—कण्ठे,** रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षडशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भग्नां शक्तिं निपतितां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चिक्षेप चामरः शूलं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाणैस्तदपि साच्छिनत्	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आपन्नार्ति-प्रशमन-विधौ बद्ध-दीक्षस्य विष्णो-**
राचम्युस्त्वां प्रिय-सहचरीमैकमत्योपपन्नाम्।
भग्नां शक्तिं निपतित-दृशा क्रोध-युक्तो स शूरः
शूलं वेगेनाभिपतितं छेदयन्तीं मा पुनातु॥

ॐ ऐं ग्रीं नमः भग्नां शक्तिं निपतितां, दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं, वाणैस्तदपि साच्छिनत् नमो ग्रीं ऐं ॐ॥१८६।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैस्तु होमः।

* * *

१८७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः सिंहः समुत्पत्य'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्ताशीत-मन्त्रस्य श्रीवात्स्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रूं वीजं, मुक्ति शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्ताशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मुक्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्ताशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सिंहः समुत्पत्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गज-कुम्भान्तरे-स्थितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बाहु-युद्धेन युयुधे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तेनोच्चैस्त्रि-दशारिणा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दृष्ट्वा त्वत्पाद-पङ्केरुह-नमन-विधावुद्यतान् भक्त-लोकान्।**
दूरं गच्छन्ति रोगा हरिमिव हरिणा वीक्ष्य तद्वत्सुदूरम्।।
सिंहस्ते वाहनोऽयं गज-शिरसि गतः युध्यते चामरेण।
त्वच्छक्तिस्सर्वमोघा नयति गज-पदं यत्-पिपीलाति-क्षुद्रा।।

ॐ ऐं क्रूं नमः ततः सिंहः समुत्पत्य, गज-कुम्भान्तरे-स्थितः।
बाहु - युद्धेन युयुधे, तेनोच्चैस्त्रि - दशारिणा नमो क्रूं ऐं ॐ।।१८७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-हव्यैर्होमः।

* * *

१८८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टाशीत-मन्त्रस्य श्रीवात्स्य ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं वीजं, क्षमा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्षमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तस्मान्नागान् महीं गतौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युयुधातेऽति-संरब्धौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रहारैरति-दारुणैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यत् सङ्कल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां,**
जन्म - क्षेम-प्रलय-रचना जङ्गमाजङ्गमानाम्।
तत्-कल्याणं किमपि यमिनामेक-लक्ष्य समाधौ,
काम-क्रोध-प्रबल-विलय-कारिणी मां पुनातु॥

ॐ ऐं क्रीं नमः युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु, तस्मान्नागान् महीं गतौ।
युयुधातेऽति - संरब्धौ, प्रहारैरति - दारुणैः नमो क्रीं ऐं ॐ॥१८८।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१८६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततो वेगात् खमुत्पत्य'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नवाशीत-मन्त्रस्य श्रीवात्स्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, यां वीजं, उमा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवात्स्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, उमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवाशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो वेगात् खमुत्पत्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निपत्य च मृगारिणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कर-प्रहारेण शिरः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चामरस्य पृथक् कृतम्	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कनकाब्ज - विभूषित - भूति - भवं,**
भव-भाव विभावित-भिन्न-पदम्।
कर - शूल - शिला धृतं - मुद्गरं वै,
चर-चिक्षुर-मारिणि मातु भजे।।

ॐ ऐं यां नमः ततो वेगात् खमुत्पत्य, निपत्य च मृगारिणा।
कर - प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् नमो यां ऐं ॐ।।१८६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'उदग्रश्च रणे देव्या'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नवति-तम-मन्त्रस्य श्रीमाण्डव्य ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, दूलूं वीजं, रमा शक्तिः, श्रीकमला महाविद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवति-तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री माण्डव्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, दूलूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नवति-तम-मन्त्र-जपेविनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दूलूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उदग्रश्च रणे देव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिला-वृक्षादिभिर्हतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
करालश्च निपातितः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शशि-सूर्य-चन्द्र-मुख्या भगवति बरदे रमा श्यामा।**
करालश्चोदग्रमसुरान् निबहन् पराश्रीर्विजयते॥

ॐ ऐं दूलूं नमः उदग्रश्च रणे देव्या, शिला-वृक्षादिभिर्हतः।
दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव, करालश्च निपातितः नमो दूलूं ऐं ॐ॥१६०॥

१००० जपात् सिद्धि, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देवी क्रुद्धा गदा-पातैः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्रस्य श्री माण्डव्य ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, द्रूं वीजं, क्लेदिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमाण्डव्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्लेदिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवी क्रुद्धा गदा-पातैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चूर्णयामास चोद्धतं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वाष्कलं भिन्दिपालेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरण्ये वरण्ये सुकारुण्य-पूर्णे, परं देव-कार्ये स्व-पुत्रान् मथन्ती।**
गदापाततो वाष्कलं ताम्र-संज्ञं, वधायानितोऽहं भजे शारदाऽम्बाम्॥

ॐ ऐं द्रूं नमः देवी क्रुद्धा गदा - पातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन, वाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम् नमो द्रूं ऐं ॐ॥१६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'उग्रास्य उग्र-वीर्यं च'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्रस्य श्रीमाण्डव्य ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, क्षं वीजं, क्लिन्ना शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमाण्डव्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्षं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्लिन्ना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्षं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उग्रास्य उग्र-वीर्यं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथैव च महा-हनुम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट
जघान परमेश्वरी	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अरण्ये रणे दारुणे शत्रु-मध्ये,**
सदा त्रायमाणा स्व-भक्तं भवानी।
यथा चोग्र-वीर्यं हनुं चोग्र हत्वा,
सुरान् हर्षयन्तीं भजे सर्वदा श्रीं।।

ॐ ऐं क्षं नमः उग्रास्य उग्र-वीर्यं च, तथैव च महा-हनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन, जघान परमेश्वरी नमो क्षं ऐं ॐ।।१६२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'विडालास्यासिना कायात्'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्रस्य श्रीमाण्डव्य ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, वसुदा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमाण्डव्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वसुदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विडालास्यासिना कायात्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पातयामास वै शिरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शरैर्निन्ये यम-क्षयं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ ह्रीं ह्रीं जाप्य-तुष्टे हिम-रुचि-मुकुटे मोक्षदे मुक्ति-मार्गे।**
अन्तर्भक्तं विडालं हृदय-शुचि-गतं बद्ध-हस्तं नमन्तम्॥
छित्वा शीर्षं कपालं प्रखर असि-धराधार संशोध्य तं सा।
मालायां धारयन्ती कहह हहहहा हास्त-युक्तं भजेऽहम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः विडालास्यासिना कायात्, पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ, शरैर्निन्ये यम - क्षयम् नमो ह्रीं ऐं ॐ॥१६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एवं संक्षीयमाणे तु'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्रीकक्षायन ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रौं वीजं, वसुधा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकक्षायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वसुधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवं संक्षीयमाणे तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्व-सैन्ये महिषासुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
माहिषेण स्वरूपेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्रासयामास तान् गणान्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्॥
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-घृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणी भद्रकाली॥

ॐ ऐं क्रौं नमः एवं संक्षीयमाणे तु, स्व-सैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण, त्रासयामास तान् गणान् नमो क्रौं ऐं ॐ॥१६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१९५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'कांश्चित् तुण्ड-प्रहारेण'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्रस्य श्रीकक्षायन ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्ष्म्लीं बीजं, परा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकक्षायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, क्ष्म्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, परा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कांश्चित् तुण्ड-प्रहारेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खुर-क्षेपैस्तथाऽपरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लांगूल-ताडितांश्चान्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शृङ्गाभ्यां च विदारितान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्।।
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणी भद्रकाली।।

ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः कांश्चित् तुण्ड - प्रहारेण, खुर-क्षेपैस्तथाऽपरान्।
लांगूल-ताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् नमो क्ष्म्लीं ऐं ॐ।।१९५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१९६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वेगेन कांश्चिदपरान्'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्रस्य श्रीकक्षायन ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, वां बीजं, परायणा शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकक्षायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, वां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, परायणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेशी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्यषड्-नवति-मन्त्र-जपेविनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वेगेन कांश्चिदपरान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नादेन भ्रमणेन च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निः श्वास-पवनेनान्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पातयामास भू-तले	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्॥
आयातो माहिषोऽयं महिष-वपु-घृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा-धारिणी पातु मे श्रीः॥

ॐ ऐं वां नमः वेगेन कांश्चिदपरान्, नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वास-पवनेनान्यान्, पातयामास भू-तले नमो वां ऐं ॐ॥१९६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

१६७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निपात्य प्रमथानीकं'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्रीकाश्यप ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रूं बीजं, सूक्ष्मा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाश्यप-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, सूक्ष्मा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निपात्य प्रमथानीकं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अभ्यधावत सोऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सिंहं हन्तुं महा-देव्याः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कोपं चक्रे ततोऽम्बिका	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्॥
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणी शारदाम्बा॥

ॐ ऐं श्रूं नमः निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महा-देव्याः, कोपं चक्रे ततोऽम्बिका नमो श्रूं ऐं ॐ॥१६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

१६८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-नवति-मन्त्रस्य श्रीकाश्यप ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ग्लूं बीजं, सन्ध्या शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाश्पय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ग्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सन्ध्या-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य अष्टा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खुर-क्षुण्ण-मही-तलः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चिक्षेप च ननाद च	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्॥
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणि भद्रकाली॥

ॐ ऐं ग्लूं नमः **सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः, खुर-क्षुण्ण-मही-तलः।**
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च नमो ग्लूं ऐं ॐ॥१६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

१६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य नव-नवति-मन्त्रस्य श्रीकाश्यप ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, ह्रीं वीजं, प्रज्ञा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाश्यप-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रज्ञा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मही तस्य व्यशीर्यत	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लांगूलेनाहतश्चाब्धिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्लावयामास सर्वतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लक्ष्मी-मौक्तिक-लक्ष-कल्पित-सितच्छत्रं तु धत्ते रसा—**
दिन्द्राणी च रतिश्च चामर-वेलानन्दोलयन्त्यौ शिवे!
क्रोधाध्मातमनन्त-शक्ति-सहितो श्रीमाहिषो च योद्धु—
मम्बायाः-सहसागतो विजयते श्रीलक्ष्मि युद्ध-प्रिया॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा, मही तस्य व्यशीर्यत।
लांगूलेनाहतश्चाब्धिः, प्लावयामास सर्वतः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥१६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२००

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च'** इति सप्तशती-द्वितीय-शतकस्य द्वि-शततम-मन्त्रस्य श्रीकाश्यप ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रें वीजं, प्रभा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतकस्य द्वि-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकाश्यप-ऋषय नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, प्रभा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-द्वितीय-शतक द्वि-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नम नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खण्डं खण्डं ययुर्धनाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्वासानिलास्ताः शतशो	कनिष्ठिभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निपेतुर्नभसोऽचलाः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्॥
आयातो माहिषोऽयं महिष-वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणि शारदाम्बा॥

ॐ ऐं प्रें नमः धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च, खण्डं खण्डं ययुर्धनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो, निपेतुर्नभसोऽचलाः नमो प्रें ऐं ॐ॥२००॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इति क्रोध-समाध्मातम्'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य प्रथम-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, हूं बीजं, निशा शक्तिः, सुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र-स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, निशा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, सुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इति क्रोध-समाध्मातं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आपतन्तं महाऽसुरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तद्-बधाय तदाऽकरोत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चाञ्चल्यारुण - लोचनाञ्चित - चन्द्रार्क-चूडामणिम्।**
चारु - स्मेर - मुखां चराचर-जगत् संरक्षणीं तत्पदाम्॥
चापततं महिषं महाऽसुर-वरं धुत-शृङ्ग-विध्वंसिनम्।
तस्य च नाश-परां परापर-मयीं श्रीकालिकां चिन्तये॥

ॐ ऐं हूं नमः इति क्रोध - समाध्मातमापतन्तं महाऽसुरं।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं, तद्-बधाय तदाऽकरोत् नमो हूं ऐं ॐ॥२०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीअसित ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, ह्रौं वीजं, अमोघा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअसति-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, अमोघा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयांय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तं बबन्ध महाऽसुरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत्याज माहिषं रूप	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सोऽपि बद्धो महामृधे	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कल्लोलोल्लसितामृताब्धि - लहरी-मध्ये विराजन्मणि—**
द्वीपे कल्पक -वाटिका - परिवृते कादम्ब-वाट्युज्ज्वले।
रत्न-स्तम्भ-सहस्र-निर्मित सदा युद्ध-स्थले मोदिनीम्।
क्षिप्त्वा पाशं बबन्ध देवि! महिषं सिंह-स्वरूपोऽसुरः॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं, तं बबन्ध महाऽसुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं, सोऽपि बद्धो महा-मृधे नमो ह्रौं ऐं ॐ॥२०२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सिंहोऽभवत् सद्यो'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्रीअसित ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, दें वीजं, विघ्ना शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री असित-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, दें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विघ्ना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सिंहोऽभवत् सद्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यावत् तस्याम्बिका शिरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छिनत्ति तावत् पुरुषः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
खड्ग-पाणिरदृश्यत	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्।।
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणी शारदाम्बा।।

ॐ ऐं दें नमः ततः सिंहोऽभवत् सद्यो, यावत् तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत् पुरुषः, खड्ग - पाणिरदृश्यत नमो दें ऐं ॐ।।२०३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तत एवाशु पुरुषं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्री असित ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, नूं वीजं, श्री पूर्णोदरी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअसित-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, नूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपूर्णोदरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तत एवाशु पुरुषं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी चिच्छेद सायकैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तं खड्ग-चर्मणा सार्धं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततः सोऽभून्महा-गजः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालिका-तिमिर-कुन्तलान्त-धन-भृङ्ग-मङ्गल-विराजिनीम्।**
चूलिका-शिखर-मालिका-वलय-मल्लिका-सुरभि-सौरभाम्॥
बालिका - मधुर - गण्ड-मण्डल-मनोहरानन-सरोरुहाम्।
कालिकामखिल - नायिकां महिष-मर्दिनीं पर-देवताम्॥

ॐ ऐं नूं नमः तत एवाशु पुरुषं, देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्ग-चर्मणा सार्धं, ततः सोऽभून्महा-गजः नमो नूं ऐं ॐ॥२०४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'करेण च महा-सिंहं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्रीअसित ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, आं वीजं, विरजा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअसित-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, आं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, विरजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
करेण च महा-सिंहम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तं चकर्ष जगर्ज च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कर्षतस्तु करं देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
खड्गेन निरकृन्तत	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मेश - विष्णु - पुरुहूत-हुताशनादि—**
तेजोभवा महिष-पीड़ित-निर्जराणाम्।
स्थानाप्तयेऽति-कृपया तु युद्धं चकार
गज-रूप-रूप-महिष-करं हि छित्वा।।

ॐ ऐं आं नमः करेण च महा-सिंहं, तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी, खड्गेन निरकृन्तत नमो आं ऐं ॐ।।२०५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततो महाऽसुरो भूयो'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्रस्य श्रीअसित ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, फ्रां बीजं, लोलाक्षी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअसित-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लोलाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो महाऽसुरो भूयो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
माहिषं वपुरास्थितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथैव क्षोभयामास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्रैलोक्यं स-चराचरम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि,**
साम्राज्य-दान-विभवानि सरोरुहाक्षि!
प्राप्तं पदं प्रथमतः महिषाख्य-देवः,
तस्यान्तं परं प्रपश्यन्नव शारदाम्बा॥

ॐ ऐं फ्रां नमः ततो महाऽसुरो भूयो, माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास, त्रैलोक्यं स-चराचरम् नमो फ्रां ऐं ॐ॥२०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२०७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततः क्रुद्धा जगन्माता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्रीं वीजं, कामाक्षा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, आकाश-तत्त्वं, महा-शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कामाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, महा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः क्रुद्धा जगन्माता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्डिका पानमुत्तमम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पपौ पुनः पुनश्चैव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जहासारुण-लोचना	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्यामालि-मसौ कुमार्यामानन्दामन्द-सम्पदुन्मेषाम्।**
तरुणिम-करुणा-पूरां मद-जल-पान-प्रदां वन्दे॥

ॐ ऐं प्रीं नमः ततः क्रुद्धा जगन्माता, चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव, जहासारुण - लोचना नमो प्रीं ऐं ॐ॥२०७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसदिना होमः।

* * *

२०८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ननर्द चासुरः सोऽपि'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, दं वीजं, मीनाक्षा शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरंः, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीनारद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, दं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मीनाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेशी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे; मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ननर्द चासुरः सोऽपि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बल-वीर्य-मदोद्धतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विषाणाभ्यां च चिक्षेप	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चण्डिकां प्रति भूधरान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लक्ष्मी-मौक्तिक-लक्ष-कल्पित-सितच्छत्रं तु धत्ते रसा—**
दिन्द्राणी च रतिश्च चामर-वेलानन्दोलयन्त्यौ शिवे!
क्रोधाध्मातमनन्त-शक्ति-सहितो श्रीमाहिषो च योद्धु—
मम्बायाः-सहसागतो विजयते श्रीलक्ष्मि! युद्ध-प्रिया॥

ॐ ऐं दं नमः ननर्द चासुरः सोऽपि, बल - वीर्य - मदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप, चण्डिकां प्रति भूधरान् नमो दं ऐं ॐ॥२०८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसदिना होमः।

* * *

२०६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सा च तान् प्रहितांस्तेन'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, फ्रीं बीजं, दीर्घ-उषा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, दीर्घ उषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा च तान् प्रहितांस्तेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चूर्णयन्ती शरोत्करैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उवाच तं मदोद्धूत	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुख-रागाकुलाक्षरम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम कर धरितं मा कदाचित् त्यजेथा।**
नो मे बुद्धिर्विरोधा भवतु न च मनो भक्ति-हीनां कदाचित्।।
आयातो माहिषोऽयं महिष - वपु-धृतो युद्ध-काक्षांवृतोऽसौ।
दीनानार्तान् भयार्तानवाव वसुधा - धारिणी शारदाम्बा।।

ॐ ऐं फ्रीं नमः सा च तान् प्रहितांस्तेन, चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूत - मुख - रागाकुलाक्षरम् नमो फ्रीं ऐं ॐ।।२०६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२१०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्रीं बीजं, दीर्घ-घोषा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत्-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दीर्घ-घोषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥२१०॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२११

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'गर्ज गर्ज क्षणं मूढ'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकादश-मन्त्रस्य श्रीमहा-लक्ष्मी ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, गूं बीजं, गोमुखी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-लक्ष्मी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, गूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, गोमुखी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं गूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
गर्ज गर्ज क्षणं मूढ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मधु यावत् पिबाम्यहम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मया त्वयि हतेऽत्रैव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गर्जिष्यन्त्याशु देवताः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्रैलोक्य-स्फुट-मन्त्र-तन्त्र-महिमा स्वात्मोक्ति-रूपं विना।**
यद्-बीजं व्यवहार-जालमखिलं नास्त्येव मातस्तव॥
तज्ज्ञाप्य - स्मरण - प्रसक्त-सुमतिः सर्वज्ञतां प्राप्यकः।
शब्द-ब्रह्म-निवास-भूत-वदनो नेन्द्रादिभिः स्पर्धते॥

ॐ ऐं गूं नमः गर्ज गर्ज क्षणं मूढ!, मधु यावत् पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव, गर्जिष्यन्त्याशु देवताः नमो गूं ऐं ॐ॥२११॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२१२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, ह्रस्व-जीवा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः — श्री वेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे — लिङ्गे, ह्रस्व-जीवा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह -समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥२१२॥**

* * *

२१३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एवमुक्त्वा समुत्पत्य'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सां वीजं, कुण्डोदरी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे — हृदि, सां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, कुण्डोदरी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवमुक्त्वा समुत्पत्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पादेनाक्रम्य कण्ठे च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शूलेनैनमताडयत्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या बालेन्दु - दिवाकराक्षि - मधुरा या रक्त-पद्मासना।**
रत्नाकल्प-विराजिताङ्ग-लतिका पूर्णेन्दु-वक्त्रोज्ज्वला।।
अक्ष-स्रक्-कर-पाश-मुद्गर-करा या बाल-भानु-प्रभा।
तां देवीं महिषासुर-प्रमथिनीं श्रीकालिकां चिन्तये।।

ॐ ऐं सां नमः एवमुक्त्वा समुत्पत्य, साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च, शूलेनैनमताडयत् नमो सां ऐं ॐ।।२१३।।

१००० जपात् सिद्धिः घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२१४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततः सोऽपि पदाक्रान्तः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं बीजं, ऊर्ध्व-केशी शक्तिः, श्रीतारा-महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र-स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ऊर्ध्व-—केशी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्या नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सोऽपि पदाक्रान्तः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तया निज मुखात् ततः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अर्द्ध-निष्क्रान्त एवासीद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्या वीर्येण सम्वृतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गायत्री सशिरास्तुरीय - सहिता शर्म-प्रदा कर्मणाम्।**
कोशैः पञ्चभिरेभिरम्ब! भवती महिषः प्रलीनोऽति॥
सच्चित् तत्वमसीति वाक्य-विदितैरध्यात्म-विद्या शिवे!
ज्योतिः प्रज्वलदुज्ज्वलात्म-चपलां जानन् स ते रूप-धृक्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः ततः सोऽपि पदाक्रान्तः, तया निज-मुखात् ततः।
अर्द्ध - निष्क्रान्त एवासीद्, देव्या वीर्येण सम्वृतः नमो श्रीं ऐं ॐ॥२१४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२१५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अर्ध-निष्क्रान्त एवासौ'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, जुँ वीजं, विकृत-मुखी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जुँ 'वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विकृत-मुखी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जुँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अर्द्ध-निष्क्रान्त एवासौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
युद्ध्यमानो महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तया महाऽसिना देव्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिरश्छित्वा निपातितः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मेश - विष्णु - पुरुहूत-हुताशनादि—**
तेजोभवा महिष-पीड़ित-निर्जराणाम्।
स्थानाप्तयेऽति-कृपया महिषं ममर्द
इन्द्रादयो सुर - गणान् हर्षन्नव-श्रीः।।

ॐ ऐं जुं नमः अर्द्ध-निष्क्रान्त एवासौ युद्ध्यमानो महाऽसुरः।
तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः नमो जुं ऐं ॐ।।२१५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२१६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततो हा-हा कृतं सर्वं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, हं बीजं, श्रीमुखी शक्तिः, श्री सुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, भय रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमुखी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, भय-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-बिलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य-षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो हा-हा कृतं सर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दैत्य-सैन्यं ननाश तत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रहर्षं च परं जग्मुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सकला देवता-गणाः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कल्लोलोल्लसितामृताब्धि - लहरी - मध्ये विराजन्मणि—**
द्वीपे कल्पक -वाटिका - परिवृते कादम्ब-वाट्युज्वले।
रत्न-स्तम्भ-सहस्र-निर्मित सदा युद्ध-स्थले मोदिनीम्।
क्षिप्त्वा पाशं बबन्ध देवि! महिषं सिंह-स्वरूपोऽसुरः॥

ॐ ऐं हं नमः ततो हा-हा कृतं सर्वं, दैत्य-सैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः, सकला देवता - गणाः नमो हं ऐं ॐ॥२१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२१७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तुष्टुवुस्तां सुरा-देवीं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, सं वीजं, विद्या-मुखी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विद्या-मुखी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः—पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तुष्टुवुस्तां सुरा-देवीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सह दिव्यैर्महर्षिभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जगुर्गन्धर्व-पतयो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ननृतुश्चाप्सरो-गणाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सुरेश - विष्णु - वन्दितां महा - सुरारि - खण्डिनीम्।**
विशुद्ध - बुद्धि - कारिणीं भजामि श्री - श्रियं सदा।।

ॐ ऐं सं नमः तुष्टुवुस्तां सुरा-देवीं, सह-दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्व-पतयो, ननृतुश्चाप्सरो गणाः नमो सं ऐं ॐ।।२१७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये महिषासुर-वधो नाम तृतीयोऽध्याय।।३।।
(श्लोकाः ४१, उवाच-मन्त्राः ३, आदितो २१७)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

द्वितीय चरित (महिषासुर-वधः)

चतुर्थः अध्यायः (शक्रादि-स्तुतिः)

२१८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, सरस्वती शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सरस्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रिजगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ॥२१८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादिना होमः।

* * *

२१६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शक्रादयः सुर-गुणा निहतेऽति-वीर्ये'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सौं बीजं, श्रीसर्व-सिद्धा शक्तिः, श्री-तारा महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसर्व-सिद्धा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शक्रादयः सुर-गणा निहतेऽति-वीर्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्या	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तां तुष्टुवुः प्रणति-नम्र-शिरोधरांसा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारु-देहाः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्वन्नाम-स्मरणात् पलायन-परा द्रष्टुं च शक्ता न ते,**
भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस - गणा यक्षाश्च नागाधिपाः।
दैत्या दानव-पुङ्गवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो,
डाकिन्यः कुपितान्तकाश्च मनुजं मातः क्षणं भू-तले॥

ॐ ऐं सौं नमः शक्रादयः सुर-गणा निहते अति-वीर्ये,
तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्यां।
तां तुष्टुवुः प्रणति-नम्र-शिरोधरांसा,
वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारु-देहाः नमो सौं ऐं ॐ॥२१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२२०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देव्या यया ततमिदं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीप्रजापति ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, दीं वीजं, त्रैलोक्य-विद्या शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापति-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, दीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, त्रैलोक्य-विद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निश्शेष-देव-गण-शक्ति-समूह-मूर्त्या	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तामम्बिकामखिल-देव-महर्षि-पूज्यां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विधात्री धर्माणां त्वमसि सकलाम्नाय-जननी।**
त्वमर्थानां मूलं त्वमसि सर्व-भूतानां हि शक्तिः॥
त्वमादिः कामानां जननि कृत-कन्दर्प-विजये।
सतां भक्ते बीजं त्वमसि परम - ब्रह्म - महिषी॥

ॐ ऐं दीं नमः देव्या यया ततमिदं जगदात्म - शक्त्या,
निश्शेष - देव - गण - शक्ति-समूह-मूर्त्या।
तामम्बिकामखिल - देव - महर्षि - पूज्याम्,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः नमो दीं ऐं ॐ॥२२०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२२१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यस्याः प्रभावमतुलं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्रस्य श्री इन्द्र ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, प्रें वीजं, ज्वालामुखी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीइन्द्र-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, प्रें बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ज्वालामुखी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा चण्डिकाऽखिल-जगत्-परिपालनाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट

ध्यानं— **वसन्ते सानन्दे कुसुमित-लताभिः परिवृते, स्फुरन्नाना-पद्मे सरसि कल - हंसालि - सुभगे।**
सखीभिः खेलन्तीं मलय-पवनान्दोलित-जलैः, स्मरेत् कालीं मालीं पर-जनित-पीडाऽपसरति।।

ॐ ऐं प्रें नमः यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाऽखिल-जगत्-परिपालनाय,
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु नमो प्रें ऐं ॐ।।२२१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२२२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या श्रीः स्वयं सुकृतिनां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वा-विंशति मन्त्रस्य श्रीबृहस्पति ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, यां बीजं, उल्का-मुखी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त तृतीय-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवृहस्पति-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, उल्का-मुखी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विधायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्री उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पापात्मनां कृत-धियां हृदयेषु बुद्धिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रद्धा सतां कुल-जन-प्रभवस्य लज्जा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि! विश्वं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **समीपे सङ्गीत-स्वर-मधुर-भङ्गी मृग-दृशां,**
विदूरे दानान्धं द्विरद-कलभोद्दाम-निनदः।
बहिर्द्वारि तेषां भवति हय-हषा-कल-कलो,
दृगेषा ते येषामुपरि कमले, देवि! सदया॥

ॐ ऐं यां नमः या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृत - धियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुल - जन - प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि! विश्वं नमो यां ऐं ॐ॥२२२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-मांसेन होमः।

* * *

२२३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'किं वर्णयाम तव रूपं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रयोविंशति-मन्त्रस्य श्रीअग्नि ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, रूं बीजं, श्रीभूत-माता शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयोविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअग्नि-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभूतमाता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमःचतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी (प्रणाम) मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयोविंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
किं चाति-वीर्यमसुर-क्षय-कारि भूरि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्वेषु देव्यसुर-देव-गणादिकेषु	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जगन्मिथ्या - भूतं मम निगदतां वेद - वचसां,**
अभिप्रायो नाद्यावधि-हृदय-मध्या विशदिदम्।
इदानीं विश्वेषां महिष - वध-जातं विमृशतो,
विसन्देहं चेतोऽजनि जनक-सेतोः प्रियतमे॥

ॐ ऐं रूं नमः किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्,
किं चाति-वीर्यमसुर-क्षय-कारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुर - देव - गणादिकेषु नमो रूं ऐं ॐ॥२२३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

२२४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'हेतुः समस्त-जगतां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्रस्य श्रीवायु ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, भं बीजं, लम्बोदरी शक्तिः, श्रीकमला महाविद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवायु-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, लम्बोदरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणाऽपि दोषैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
न ज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंश-भूतम्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जगन्मिथ्या-भूतं मम निगदतां वेद-वचसां,**
अभिप्रायो नाद्यावधि-हृदय-मध्या विशदिदम्।
इदानीं विश्वेषां महिष-वध-जातं विमृशतो,
विसन्देहं चेतोऽजनि जनक-सेतोः प्रियतमे॥

ॐ ऐं भं नमः हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणाऽपि दोषै—
र्न ज्ञायसे हरि - हरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंश - भूत—
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या नमो भं ऐं ॐ॥२२४॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

२२५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यस्याः समस्त-सुरता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्री भू-ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सूं बीजं, श्रीद्राविणी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं; सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री भू-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीद्राविणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यस्याः समस्त -सुरता समुदीरणेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्वाहाऽसि वै पितृ-गणस्य च तृप्ति-हेतुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नाथस्यापि ममानिवेद्य हरिणः सेवां कथं प्रातनोद्,**
वाग्-देव्याश्चरणाब्जयोरिति रुषा सारङ्ग-बालं भृशम्।
त्वां शीघ्र-प्रपलायनात् सर्व-पर सेवां करोत्यादरा,
दृश्येशं च स्वधा द्विठोप करुणा-वारां निधे शारदे!।।

ॐ ऐं सूं नमः यस्याः समस्त - सुरता समुदीरणेन,
तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि!
स्वाहाऽसि वै पितृ-गणस्य च तृप्ति-हेतु—
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च नमो सूं ऐं ॐ।।२२५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२२६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्रस्य श्रीआदित्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रां वीजं, श्रीकालिका शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीआदित्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकालिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
अभ्यस्यसे सु-नियतेन्द्रिय-तत्त्व-सारैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त-समस्त-दोषैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि!	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ह्रीङ्कारोङ्कार - रूपा त्वमिह शशि - मुखी क्रीं-स्वरूपा त्वमेव,**
क्षान्तिस्त्वं च कान्तिर्हरि-हर-कमलोद्भूत-रूपा च त्वमेव।
त्वं सिद्धिः त्वं च ऋद्धिः स्मर-रिपु-मनसस्त्वं च सम्मोहयन्ती,
विद्या त्वं मुक्ति-हेतु-भव-जल-तरणी पातु मां कालिकाम्बा॥

ॐ ऐं श्रां नमः या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता त्व-
मभ्यस्यसे सु-नियतेन्द्रिय - तत्त्व-सारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त - समस्त-दोषै—
विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि! नमो श्रां ऐं ॐ॥२२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२२७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीअन्तरिक्ष ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, औं बीजं, नागरी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअन्तरिक्ष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, नागरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां निधानं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
उद्गीथ-रम्य-पद-पाठ-वतां च साम्नाम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवी त्रयी भगवती भव-भावनाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वार्ता च सर्व-जगतां परमार्ति-हन्त्री	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विष्णौ वीक्ष्य जड़ाधिवासमथ च स्वामित्व-शायित्वम्—**
घ्यण्डोद्भूत - पतिर्विहाय तमिमं विज्ञान-रूपामयम्।
त्वमेवाद्य निषेवते खलु मुदा शब्दं च मात्रा च तत्।
को वा शत्रु-सहासिकां हि सहते लोकेषु भक्तास्तव॥

ॐ ऐं औं नमः शब्दात्मिका सु - विमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथ-रम्य-पद-पाठ-वतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भव - भावनाय,
वार्ता च सर्व - जगतां परमार्ति - हन्त्री नमो औं ऐं ॐ॥२२७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२२८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मेधाऽसि देवि! विदिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्ट-विंशति-मन्त्रस्य श्री द्यौ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, लूं बीजं, खेचरी-शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री द्यौ-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, खेचरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, मातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीजं-लोम-विलोम-पुटितोक्त तृतीय-शतकस्य अष्ट-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ऐं लूं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दुर्गाऽसि दुर्ग-भव-सागर-नौर-सङ्गा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्रीः कैटभारि-हृदयैक-कृताधिवासा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्
गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृत-प्रतिष्ठा		

ध्यानं— **विष्णौ वीक्ष्य जड़ाधिवासमथ च स्वामित्व-शायित्वम—**
म्यण्डोदभूत-पतिर्विहाय तमिमं विज्ञान-रूपामयम्।
त्वमेवाद्य निषेवते खलु मुदा शब्दं च मात्रा च तत्।
को वा शत्रु-सहासिकां हि सहते लोकेषु भक्तास्तव॥

ॐ ऐं लूं नमः मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा,
दुर्गाऽसि दुर्ग - भव - सागर - नौर-सङ्गा।
श्रीः कैटभारि - हृदयैक - कृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशि - मौलि-कृत-प्रतिष्ठा नमो लूं ऐं ॐ॥२२८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ईषत् सहासममलं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य नव-विंशति-मन्त्रस्य श्रीचन्द्र ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, डूं बीजं, मन्त्र-सिद्धि शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नव-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचन्द्र-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, डूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मन्त्र-सिद्धि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नव-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं डूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ईषत् सहासममलं परि-पूर्ण-चन्द्र-	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बिम्बानु-कारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अत्यद्‌भुतं प्रहृतमात्त-रुषा तथापि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गन्धर्वामर - यक्ष - पन्नग - नुते! ईषत् सहासामले,**
पूर्णाश्चन्द्र-निभानने, गिरि-सुते, सुश्यामले, सुस्थिते!
खातीते, खल-दारु-पावक-शिखे! खद्योत-कोट्युज्ज्वले,
मन्त्राराधित-दैवते, मुनि-सुते! मां पाहि श्रीकालिके।।

ॐ ऐं डूं नमः ईषत् सहासममलं परि - पूर्ण - चन्द्र—
बिम्बानु-कारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम्।
अत्यद्‌भुतं प्रहृतमात्त - रुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण नमो डूं ऐं ॐ।।२२६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२३०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीअश्विनीकुमार ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, जूं बीजं, आत्म-शक्ति शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, कर-पल्लवी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअश्विनीकुमार-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जूँ वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, आत्म-शक्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, कर-पल्लवी प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं भ्रुकुटी-करालम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
उद्यच्छशाङ्क-सदृशच्छवि यन्न सद्यः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक-दर्शनेन	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गन्धर्वामर - यक्ष - पन्नग - नुते! ईषत् सहासामले,**
पूर्णाश्चन्द्र-निभानने, गिरि-सुते, सुश्यामले, सुस्थिते!

खातीते, खल-दारु-पावक-शिखे! खद्योत-कोट्युज्ज्वले,
मन्त्राराधित-दैवते, मुनि-सुते! मां पाहि श्रीकालिके॥

ॐ ऐं जूं नमः दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं भ्रुकुटी-करालम्
उद्यच्छशाङ्क - सदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रम्,
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक - दर्शनेन नमो जूं ऐं ॐ॥२३०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देवि! प्रसीद परमा'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, धूं बीजं, गौरी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, धूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, गौरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य एक-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं धूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवि! प्रसीद परमा भवती भवाय	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सद्यो विनाशयसि कोप-वती कुलानि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नीतं बलं सु-विपुलं महिषासुरस्य	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **निदानं शृङ्गार - प्रकर - मकरन्दस्य कमले,**
महानेवालम्बो हरि-नयन-रोलम्ब-वरयोः।
निधानं शोभानां निधनमनु-तापस्य जगतो,
जवेनाभीतिं मे दिशतु तव नाभि-सरसिजम्॥

ॐ ऐं धूं नमः देवि! प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोप-वती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत—
न्नीतं बलं सु - विपुलं महिषासुरस्य नमो धूं ऐं ॐ॥२३१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ते सम्मत्ता जन-पदेषु'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, त्रें वीजं, त्रैलोक्य-विद्या शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, त्रैलोक्य-विद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **निदानं शृङ्गार - प्रकर - मकरन्दस्य कमले,**
महानेवालम्बो हरि - नयन-रोलम्ब-वरयोः।
निधानं शोभानां निधनमनु-तापस्य जगतो,
जवेनाभीतिं मे दिशतु तव नाभि-सरसिजम्॥

ॐ ऐं त्रें नमः ते सम्मता जन - पदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,
येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना नमो त्रें ऐं ॐ॥२३२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'धर्म्याणि देवि! सकलानि'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ल्हीं वीजं, मञ्जरी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो-गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं बीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, मञ्जरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव कर्माणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अत्यादृतः प्रति-दिनं पुकृती करोति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती-प्रसादात्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
लोक-त्रयेऽपि फलदा ननु देवि! तेन	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **भू-सूर्य-चन्द्र-मुख्यानहमेवास्थाय पालयामीदमखिलम्।**
जगदिति विबोधनार्थं वागीश्वरी भासि शिखिनमास्याय॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव कर्मा—
ण्यत्यादृतः प्रति-दिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती-प्रसादा—
ल्लोक-त्रयेऽपि फलदा ननु देवि! तेन नमो ल्हीं ऐं ॐ॥२३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं बीजं, रूपिणी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रूपिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना- ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्वोपकार-करणाय! सदाऽऽर्द्र-चित्ता	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विद्युद्दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

ॐ ऐं श्रीं नमः दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि! का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता नमो श्रीं ऐं ॐ॥२३४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, ईं बीजं, चित्रिणी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ईं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, चित्रिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**अङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
संग्राम-मृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **निवासी मुक्तानां निबिड-तर-नीलाम्बुद-निभ—**
स्तवायं धम्मिल्लो विमलयतु मल्लोचन-युगम्।
भृशं यस्मिन् कालागुरु-बहुल-सौरभ्य-निवहैः,
पतन्ति श्री-भिक्षार्थिन इव मदान्धा मधु-लिहः॥

ॐ ऐं ईं नमः एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राम-मृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि! नमो ईं ऐं ॐ॥२३५॥

'१००० जपात् सिद्धिः, हव्यैर्होमः।

* * *

२३६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रां वीजं, काकोदरी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, काकोदरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लोकोन् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र-पूता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लीला-लब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,**
लोकातीतैर्योगिभरन्तश्चिर-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जाम्,
कालीमम्बामम्बुज-रुहाक्षीमहमीडे॥

ॐ ऐं ह्रां नमः दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र-पूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी नमो ह्रां ऐं ॐ॥२३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य- वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्हूं बीजं, पूतना शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, पूतना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽसुराणाम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु-खण्ड-	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लीला-लब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,**
लोकातीतैर्योगिभिरन्तश्चिर-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जाम्,
कालीमम्बामम्बुज-रुहाक्षीमहमीड़े॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः खड्ग - प्रभा - निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः,
शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु - खण्ड—
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् नमो ल्हूं ऐं ॐ॥२३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२३८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दुर्वृत्त-वृत्त शमनं तव देवि! शीलं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्टात्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, क्लूं बीजं, श्रीयोगिनी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीयोगिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम
वीर्यं च हन्तृ हृत-देव-पराक्रमाणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद-प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं क्लूं नमः दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृत-देव-पराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् नमो क्लूं ऐं ॐ॥२३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२३६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहाकाली देवता, क्रां वीजं, भद्रकाली-शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीभद्रकाली-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रूपं च शत्रु-भय-कार्यति-हारि कुत्र	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्ट्वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वय्येव देवि वरदे! भुवन-त्रयेऽपि	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कदम्ब-वन-मध्यगां कनक-मण्डलोपस्थिताम्,**
षडम्बुरुह-वाहिनीं सतत-सिद्ध-सौदामिनीम्।
विडम्बित-जपा-रुचिं विकच-चन्द्र-चूडामणिम्,
कलाधर - कुटुम्बिनीं महा-कालिकामाश्रये।।

ॐ ऐं क्रां नमः केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूपं च शत्रु-भय-कार्यति-हारि कुत्र।
चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्ट्वा,
त्वय्येव देवि वरदे! भुवन-त्रयेऽपि नमो क्रां ऐं ॐ।।२३६।।

१००० जपात् सिद्धिः घृत-युत-तिलैर्होमः।

* * *

२४०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु-नाशनेन'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, लूँ वीजं, शङ्खिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थ च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शङ्खिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु-नाशनेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्रातं त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नीता दिवं रिपु-गणा भयमप्यपास्तं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अस्माकमुन्मद-सुरारि-भवं नमस्ते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद-प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं लूं नमः त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु - नाशनेन,
त्रातं त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपु-गणा भयमप्यपास्त—
मस्माकमुन्मद - सुरारि - भवं नमस्ते नमो लूं ऐं ॐ॥२४०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शूलेन पाहि नो देवि'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीसहस्राक्ष ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, फ्रें वीजं, गर्जिणी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसहस्राक्ष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रें बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, गर्जिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शूलेन पाहि नो देवि!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पाहि खड्गेन चाम्बिके!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
घण्टा-स्वनेन नः पाहि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चाप-ज्या-निःस्वनेन च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कदम्ब-वन-मध्यगां कनक-मण्डलोपस्थिताम्,**
षडम्बुरुह-वाहिनीं सतत-सिद्ध-सौदामिनीम्।
विडम्बित-जपा-रुचिं विकच-चन्द्र-चूडामणिम्,
कलाधर - कुटुम्बिनीं महा-कालिकामाश्रये।।

ॐ ऐं फ्रें नमः शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि, चाप-ज्या-निःस्वनेन च नमो फ्रें ऐं ॐ।।२४१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वा-
चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीअग्नि ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं बीजं, कुब्जिनी शक्तिः, श्रीतारा
महाविद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति
कला, ह्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-
भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-
शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअग्नि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः
द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, कुब्जिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-
विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः
ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-
मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः,
प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-
प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-
चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्डिके! रक्ष दक्षिणे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भ्रामणेनात्म-शूलस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उत्तरस्यां तथेश्वरि	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या बालेन्दु - दिवाकराक्षि-मधुरा या श्वेत-पद्मासना,**
रत्नाकल्प - विराजिताङ्ग-लतिका पूर्णेन्दु-वक्त्रोज्ज्वला।
अक्ष-स्रक्-सृणि-पाश-पुस्तक-करा या बाल-भानु-प्रभा,
तां देवीं त्रिपुरां शिवां हृदि भजे श्रीशारदाम्बां सदा॥

ॐ ऐं क्रीं नमः प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म - शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरि ! नमो क्रीं ऐं ॐ॥२४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सौम्यानि यानि रूपाणि'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवायु ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्लूं बीजं, कपर्दिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवायु-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, कपर्दिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सौम्यानि यानि रूपाणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्रैलोक्ये विचरन्ति ते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यानि चात्यर्थ-घोराणि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या बालेन्दु-दिवाकराक्षि-मधुरा या श्वेत-पद्मासना,**
रत्नाकल्प-विराजिताङ्ग-लतिका पूर्णेन्दु-वक्त्रोज्ज्वला।
अक्ष-स्रक्-सृणि-पाश-पुस्तक-करा या बाल-भानु-प्रभा,
तां देवीं त्रिपुरां शिवां हृदि भजे श्रीशारदाम्बां सदा।।

ॐ ऐं म्लूं नमः सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि, तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् नमो म्लूं ऐं ॐ।।२४३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२४४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'खड्ग-शूल-गदादीनि'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीयम ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ग्रें वीजं, वज्रपा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीयम-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, ग्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वज्रपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
खड्ग-शूल-गदादीनि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कर-पल्लव-सङ्गीनि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तैरस्मान् रक्ष सर्वतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **देह-क्षोभ-करैर्व्रतैर्बहु-विधैर्दानैश्च होमैर्जपैः,**
सन्तानैर्हय-मेध-मुख्य-सुमखैर्नाना-विधैः कर्मभिः।
यत्सङ्कल्प-विकल्प-जाल-मलिनं प्राप्यं पदं तस्य,
ते दूरादेव निवर्तन्ते पर-तरं काल्या नः निर्मलम्॥

ॐ ऐं ग्रें नमः खड्ग-शूल-गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर - पल्लव - सङ्गीनि, तैरस्मान् रक्ष सर्वतः नमो ग्रें ऐं ॐ॥२४४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्यैर्होमः।

* * *

२४५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, जया शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, मध्यम स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, जया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, मध्यम-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रिजगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।२४५।।**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता, ह्रौं वीजं, विजया शक्तिः, श्रीकमला-महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विजया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**अङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अर्चिता जगतां धात्री	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा गन्धानुलेपनैः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद-प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः, कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री, तथा गन्धानुलेपनैः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥२४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'भक्त्या समस्तैः त्रिदशैः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, व्रीं वीजं, सुमुखेश्वरी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो-गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, सुमुखेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भक्त्या समस्तैः त्रिदशैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दिव्यैर्धूपैः सु-धूपिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्राह प्रसाद-सुमुखी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
समस्तान् प्रणतान् सुरान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद-प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं व्रीं नमः भक्त्या समस्तैः त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सु-धूपिता।
प्राह प्रसाद-सुमुखी, समस्तान् प्रणतान् सुरान् नमो व्रीं ऐं ॐ॥२४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय-ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्रीं बीजं, रेवती शक्तिः, श्रीमातङ्गी महाविद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, रेवती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग - भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥२४८॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'व्रियतां त्रिदशाः सर्वे'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहालक्ष्मी ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, त्रौं बीजं, श्रीमाधवी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-लक्ष्मी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाधवी-शक्तयै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ त्रौं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं त्रौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
व्रियतां त्रिदशाः सर्वे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यदस्मत्तोऽभि-वाञ्छितं	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद - प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं त्रौं नमः व्रियतां त्रिदशाः सर्वे, यदस्मत्तोऽभि वाञ्छितं नमो त्रौं ऐं ॐ॥२४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देवा ऊचुः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्लौः बीजं, वारुणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व-गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लौः बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, वारुणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्लौः नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्लौः नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवा ऊचुः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्लौः नमः देवा ऊचुः नमो ह्लौः ऐं ॐ॥२५०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भगवत्या कृतं सर्वं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीइन्द्रादयो ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, गीं वीजं, रण-विधायिनी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीइन्द्र-देवादि-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, गीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, रण-विधायिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं गीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भगवत्या कृतं सर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
न किञ्चिदवशिष्यते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यदयं निहतः शत्रुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अस्माकं महिषासुरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अभेद-प्रत्यूहः सकल-हरिदुल्लासन-विधि—**
विलीनो लोकानां स हि नयन-तापोऽपि कमले।
तवास्मिन् पीयूषं किरति-सदने रम्य-वदने,
कुतो हेतोश्चेतो विधुरयमुदेति स्म जलधेः॥

ॐ ऐं गीं नमः भगवत्या कृतं सर्वं, न किञ्चिदवशिष्यते।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः नमो गीं ऐं ॐ॥२५१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यदि चापि वरो देयः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीशक्रादयो देवाः ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, यूं वीजं, श्रीसहसा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्लेदिनी मद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशक्रादि-देव-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसहसा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्लेदिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यूँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यदि चापि वरो देयः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वयाऽस्माकं महेश्वरि!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
संस्मृता संस्मृता त्वं नो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हिंसेथाः परमापदः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **देह-क्षोभ - करैर्व्रतैर्बहु - विधैर्दानैश्च होमैर्जपैः,**
सन्तानैर्हय-मेध-मुख्य-सुमखैर्नाना-विधैः कर्मभिः।
यत्सङ्कल्प-विकल्प-जाल-मलिनं प्राप्यं पदं तस्य,
ते दूरादेव निवर्तन्ते पर-तरं काल्या नः निर्मलम्॥

ॐ ऐं यूं नमः यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि!
संस्मृता संस्मृता त्वं नो, हिंसेथाः परमापदः नमो यूं ऐं ॐ॥२५२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रि-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीशक्रादयो देवाः ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्हीं बीजं, श्रीलक्ष्मी-शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशक्रादि-देवः-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीलक्ष्मी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्वां स्तोष्यत्यमलानने!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्य वित्तर्द्धि-विभवैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धन-दारादि-सम्पदाम	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आत्माऽसौ सकलेन्द्रियाश्रय-मनो-बुद्ध्यादिभिः शोचितः।**
तत्ते देवि! महा - विलास-लहरी दिव्य-क्रियाणां जपः।।
त्वद् - रूपस्य मुखारविन्द-विवरात् सम्प्राप्य दीक्षा मनोः।
यो यो स्तोष्यति तस्य तस्य हृदये त्वां सर्वतः संस्मरे।।

ॐ ऐं ल्हीं नमः यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिः, त्वां स्तोष्यत्यमलानने!
तस्य वित्तर्द्धि - विभवैः, धन-दारादि-सम्पदाम् नमो ल्हीं ऐं ॐ।।२५३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-युत-तिलैर्होमः।

* * *

२५४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीशक्रादयो देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ल्हूं वीजं, व्यापिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं ह्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशक्रादि-देव-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, व्यापिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ल्हूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्हूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट
भवेथाः सर्वदाऽम्बिके!	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धन्यां सोम-विभावनीय-चरितां धाराधर-श्यामलाम्।**
मुन्याराधन-मेधिनीं सुमवता मुक्ति-प्रदान-व्रताम्॥
कन्या-पूजन-सुप्रसन्न-हृदयां कांची-लसन्मध्यमाम्।
श्रीशैल-स्थल-वासिनीं भगवतीं श्रीशारदां भावये॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः वृद्धयेऽस्मत्-प्रसन्ना त्वं, भवेथाः सर्वदाऽम्बिके! नमो ल्हूं ऐं ॐ॥२५४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, महा-माया शक्तिः, श्रीभैरवी महाविद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, महामाया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥२५५॥**

१००० जपात् सिद्धिः घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इति प्रसादिता देवैः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ओं वीजं, ह्रीं शक्तिः, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ओं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ह्रीं-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षष्ठ-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इति प्रसादिता देवैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथेत्युक्त्वा भद्र-काली	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बभूवान्तर्हिता नृप!	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्रीं विद्यां शिव-वाम-भाग-निलयां ह्रींकार-मन्त्रोज्ज्वलाम्।**
श्रीचक्राङ्कित-विन्दु-मध्य-वसतिं श्रीमत्-सभा-नायिकीम्॥
श्रीमत् - षण्मुख - विघ्नराज-जननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीम्।
श्रीकालीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्य-वारां निधिम्॥

ॐ ऐं ओं नमः इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्र-काली, बभूवान्तर्हिता नृप! नमो ओं ऐं ॐ॥२५६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इत्येतत् कथितं भूप'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, अं बीजं, श्रीं शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, अं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीं-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं अं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्येत् कथितं भूप!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सम्भूता सा यथा पुरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवी-देव-शरीरेभ्यो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगत् त्रय-हितैषिणी	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आत्माऽसौ सकलेन्द्रियाश्रय-मनो-बुद्ध्यादिभिः शोचितः।**
तत्ते देवि! महा-विलास-लहरी दिव्य-क्रियाणां जपः।।
त्वद् - रूपस्य मुखारविन्द-विवरात् सम्प्राप्य दीक्षा मनोः।
यो यो स्तोष्यति तस्य तस्य हृदये त्वां सर्वतः संस्मरे।।

ॐ ऐं अं नमः इत्येतत् कथितं भूप! सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देव - शरीरेभ्यो, जगत्-त्रय-हितैषिणी नमो अं ऐं ॐ।।२५७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पुनश्च गौरी-देहात् सा'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्हौं वीजं, पुष्टि शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू-तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट - पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्हौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, पुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**अङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुनश्च गौरी-देहात् सा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समुद्भूता यथाऽभवत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वधाय दुष्ट-दैत्यानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा शुम्भ-निशुम्भयोः	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **धन्यां सोम-विभावनीय-चरितां धाराधर-श्यामलाम्।**
मुन्याराधन-मेधिनीं सुमवता मुक्ति-प्रदान-व्रताम्॥
कन्या - पूजन-सुप्रसन्न-हृदयां कांची-लसन्मध्यमाम्।
श्रीशैल-स्थल-वासिनीं भगवतीं श्रीशारदां भावये॥

ॐ ऐं म्हौं नमः पुनश्च गौरी-देहात् सा, समुद्भूता यथाऽभवत्।
वधाय दुष्ट - दैत्यानां, तथा शुम्भ - निशुम्भयोः नमो म्हौं ऐं ॐ॥२५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२५६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'रक्षणाय च लोकानां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रीं वीजं, श्रीशान्ति शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु-तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रक्षणाय च लोकानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवानामुप-कारिणी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यथा-वत् कथयामि ते	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्त्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः रक्षणाय च लोकानां, देवानामुप-कारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं, यथा-वत् कथयामि ते नमो प्रीं ऐं ॐ॥२५६॥

१००० जपात् सिद्धिः धृत-तिलैर्होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये शक्रादि-स्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥
(श्लोकाः ३७, उवाच-मन्त्राः ५, एवमादितो २५६)

'मन्त्रात्मक सप्तशती' का प्रयोग

'सप्तशती' के सात सौ मन्त्र एक 'माला-मन्त्र' के समान हैं। अतः उनका समग्र रूप में ही पाठ करना विशेष फल-दायक है। इस माला के एक-एक मन्त्र में अकल्पित शक्ति भरी है, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु प्रत्येक मन्त्र का पृथक् रूप से अनुष्ठान करने की निधि होते हुए भी केवल कुछ चुने हुए मन्त्रों के ही प्रयोग में लाने की परम्परा मिलती है। ऐसे मन्त्रों को सम्पुटित करके **'सप्तशती' का पाठ** करने की विधि तो है ही, उनके प्रयोग की अलग से स्वतन्त्र पद्धति भी दृष्टि-गत होती है।

'मन्त्र-महार्णव', 'मन्त्र-महोदधि', 'पुरश्चर्यार्णव'— जैसे संग्रह-ग्रन्थों के आधार पर **'सप्तशती'** के संस्करणों में मुख्य-मुख्य कामनाओं की पूर्ति के लिए कुछ श्लोकों की तालिका मिलती है, जिनका प्रयोग सामान्यतः लोग बहुत दिनों से करते आ रहे हैं। उनसे वाञ्छित अभीष्ट की पूर्ति भी होती देखी गई है।

किसी भी कामना से अनुष्ठान करने में सर्वाधिक महत्त्व की बात यह है कि उस अनुष्ठान का **'सङ्कल्प'** और **'विनियोग'** तदनुरूप ही होना चाहिए। उदाहरण के लिए प्रथम अध्याय का ५५वाँ मन्त्र (देखें पृष्ठ ६३) **'सद्यः मोहन'** या **'वशीकरण'** के लिए प्रयोग में आता है। अतः उस कामना से जब अनुष्ठान करना हो, तो उसके विनियोग में 'योनि-मुद्रा' के बाद जो **'मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च'**— यह वाक्य है, इसके स्थान पर **'अमुकस्य सद्यः मोहनार्थं (वशीकरणार्थं वा)'** यह वाक्य जोड़ लेना चाहिए। **'अमुक'**-शब्द के स्थान पर **साध्य व्यक्ति का नामोल्लेख** होना चाहिए।

अनुष्ठान के **'सङ्कल्प'** में अपनी **'अभीष्ट कामना का सूचक वाक्य'** भी **विनियोग** के ही समान रखना चाहिए। **'सङ्कल्प'** का प्रारूप **'ॐ तत्-सद् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वाराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे'** इत्यादि प्रसिद्ध ही है।

जैसा कि **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** के प्रत्येक श्लोक-मन्त्र के अन्त में निर्दिष्ट है, प्रत्येक मन्त्र का **एक हजार जप** और नियमानुसार उससे दशांश **होम, तर्पण, मार्जन, अभिषेक, ब्राह्मण-भोजन** करना आवश्यक है। तभी **अनुष्ठान का पूर्ण फल** मिल सकता है। इस विधि में **दीक्षा**-प्राप्त शिष्यों को **गुरु-कृपा** से सरलता का अनुभव सहज ही हो सकता है।

अन्त में एक आवश्यक बात। **'सकाम'** साधना करनेवाले अपनी **'कामना'** के पूर्ण होने के बाद प्रायः **'देवता को कृतज्ञता-पूर्वक धन्यवाद'** देना भूल जाते हैं। इससे उन्हें **'कृतघ्नता'** का अक्षम्य दोष लगता है और कोई आश्चर्य नहीं कि उसके कारण उन्हें कालान्तर में कष्ट भोगना पड़ता है। अतः **'कामना-पूर्ति के पश्चात्'** देवता को यथा-शक्ति पूजनादि से अवश्य सन्तुष्ट करना चाहिए।

* * *

मन्त्रात्मक सप्तशती

तृतीय भाग

शुम्भ-निशुम्भ-वधः

***

उपहार-दाता

'गुप्तावतार'

पूज्य बाबाश्री मोतीलाल जी

***

सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

***

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

फोन : ०५३२-२५०२७८३ मो०: ९४५०२२२७६७

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

अनुक्रम

पञ्चम संस्करण

शाकम्भरी जयन्ती

'पराभव' सं० २०७० वि०-१६ जनवरी, २०१४

मुद्रक : **परा-वाणी प्रेस**

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

सम्पुटित-विधिः तत्फलं च

त्र्यम्बकस्य जपः कार्यरनुलोम - विलोमतः।
मन्त्रान्ते स्वर्भुवर्भूश्च सः जूं हौमोमिति क्रमात्।। (ऊर्ध्वाम्नायोक्त— मृत्युञ्जय-संहितायां)

१ प्रति-श्लोकं वाग्बीज-सम्पुटितस्य शतावृत्या विद्या-प्राप्तिः। २ प्रति-श्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवं जपेन्मन्त्र-सिद्धिः (श्लोक-पदं मन्त्रोप-लक्षणं)। ३ स-प्रणवमनुलोम-याहृति-त्रयमादौ अन्ते तु विलोमं तदित्येवं प्रति-श्लोकं कृत्वा शतावृत्तिपाठेऽति-शीघ्रं सिद्धिः। ४ प्रति-श्लोकमादौ 'जातवेदस' इत्यृचं पठेत् सर्व-काम-सिद्धिः (सम्पुटेन शीघ्र-सिद्धिः)। ५ अप-मृत्यु-वारणाय त्र्यम्बक-मन्त्र-सम्पुटितमथवा मृत्युञ्जय-बीजानि लोम-विलोम-भावेन प्रति-श्लोके सम्पुटं दत्वा पठेत्, तेन सिद्धिः शत-पाठात्। ६ प्रति-श्लोकस्यादावन्ते च बीज (मृत्युञ्जय-बीज)-सम्पुटित-मात्र बीजानाम् वा शत-जपात् अवश्यमप-मृत्यु-नाशः। ७ प्रति-श्लोकं 'शूलेन पाहि नो देवी' ति पाठादप-मृत्यु-नाशः। अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपे अप-मृत्यु-वारणम्। ८ प्रति-श्लोकं 'शरणागत-दीनार्ते' ति सम्पुटेन सर्व-कार्य-सिद्धिः। ९ प्रति-श्लोकं 'करोतु सा नः शुभे'त्यर्द्धं पठेत् सर्व-कार्य-सिद्धिः। १० स्वाभीष्ट-वर-प्राप्तये 'एवं देव्या वरं लब्ध्वे'ति श्लोकं पठेत् (सम्पुट-पाठेति भावः)।

११ सर्वापत्ति-निवारणाय प्रति-श्लोकं 'दुर्गे स्मृते'ति पठेत् (सम्पुट-पाठेति भावः)। अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षम् सहस्रम् शतं वा जपात् सर्वापन्निवारणं। १२ 'सर्वा बाधे'त्यस्य लक्ष-जपे प्रति-श्लोकं पाठे वा श्लोकोक्तं फलं (शत-पाठेन)। १३ 'इत्थं यदा यदा बाधे' ति लक्ष-जपे प्रति-श्लोकं पाठे वा शत-पाठेन महामारी-शान्तिः। १४ 'ततो वव्रे नृपो राज्यं' इति मन्त्रस्य लक्ष-जपे पाठे वा स्वराज्य पुनः प्राप्तिः। १५ 'हिनस्ति दैत्य-तेजांसि' इत्यनेन स-दीप-बलिदाने घण्टा-बन्धने च बाल-ग्रह-शान्तिः (अयुत-सहस्र-जपानंन्तरं वा दीप-दानादिकं कुर्यात्)। १६ आद्यावृत्तिमनुलोमेन पठित्वा ततो विपरीत-क्रमेण द्वितीयांमनुलोमेन तृतीयामित्येवमावृत्ति-त्रयेण शीघ्रं कार्य-सिद्धिः। १७ सर्वापत्ति-वारणाय 'दुर्गे स्मृते'त्यर्द्धं ततो 'यदन्ति यच्च दूरके' इत्यृचं तदन्ते 'दारिद्र्य-दुःखे'त्यर्द्धमेवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः। १८ 'कांसोस्मी'त्यृचं प्रति-श्लोकं पठेल्लक्ष्मी-प्राप्तिः। १९ प्रति-श्लोकमनृणां अस्मिन्नित्यृचं पठेदृण-परिहारः।

२० मारणार्थमेवमुक्तवा समुत्पत्येति श्लोकं प्रति-श्लोकं पठेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फल-सिद्धिः। २१ 'ज्ञानिनामपि चेतांसि' इति श्लोक-जप-मात्रेण सद्यो मोहनं इत्यनुभव-सिद्धम्। प्रति-श्लोकं तच्छ्लोक-पाठे तु वश्यम्। २२ 'रोगानशेषानि' ति श्लोकस्य प्रति-श्लोक-पाठे सकल-रोग-नाशः तन्मात्र जपेऽपि सः। २३ 'इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरे'-ति श्लोकस्य प्रति-श्लोकं पाठे पृथग् जपेन् वा विद्या-प्राप्तिः वाग्वैकृति-नाशश्च। २४ 'भगवत्या कृतं सर्वमि'त्यादि द्वादशोत्तर-शताक्षरो मन्त्रः सर्व-कामदः सर्वापत्ति-निवारकश्च। २५ 'देवि प्रपन्नार्ति-हरे प्रसीद' इति श्लोकस्य यथा कार्यं लक्षायुत-सहस्र-शतान्यतम- संख्या-जपे प्रति-श्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्व-कामाप्तिश्च। एषु प्रयोगेषु प्रति-श्लोकं दीपाग्रे केवलमेव नमस्करणेऽति-शीघ्रं सिद्धिः। २६ प्रति-श्लोकं काम-बीज-सम्पुटितस्य एक-चत्वारिंशद्दिनं त्रिरावृत्तौ सर्व-काम-सिद्धिः। २७ प्रति-श्लोकं काम-बीज-सम्पुटितस्य एक-विंशति-दिन-पर्यन्तं १२ आवृत्तौ वशीकरणं। २८ प्रति-श्लोकं माया-बीज-सम्पुटितस्य फट्-पल्लव-सहितस्य सप्त-दिन-पर्यन्तं १३ आवृत्तौ उच्चाटनं। २९ प्रति-श्लोक माया-बीज-सम्पुटितस्य दिन-चतुष्टय ११ आवृत्तौ सर्वोपद्रव-नाशः। ३० प्रति-श्लोकं श्री-बीज-पुटितस्य ४९ दिन-पर्यन्तं पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मी-प्राप्तिः।।

तृतीय चरित-विधानं

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीदुर्गायाः उत्तर-चरितस्य श्रीरुद्र ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजं, सूर्यस्तत्त्वं, साम-वेद स्वरूपं, श्रीमहा-सरस्वती-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीरुद्र-ऋषये नमः शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः हृदि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, भीमा-शक्त्यै नमः नाभौ, भ्रामरी-बीजाय नमः लिङ्गे, सूर्य-तत्त्वाय नमः गुह्ये, साम-वेद-स्वरूपाय नमः पादयोः, श्रीमहा-सरस्वती-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यासः	**कर-न्यासः**	**अङ्ग-न्यासः**
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा, शङ्खिनी चापिनी वाण - भुशुण्डी-परिघायुधा	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके, घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे, भ्रामणेनात्म - शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते, यानि चात्यर्थ - घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके, कर-पल्लव - सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्व - स्वरूपे सर्वेशे! सर्व - शक्ति - समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानम्— घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु - भजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ऊर्ध्वाम्नाय-मते आयुधानि—

दक्षिण-करे— घण्टा, हल, मुशल, धनुः

वाम-करे— शूल, शङ्ख, चक्र, सायक

अत्र काम-वीजं (क्लीं) प्रधानं— काम-रूपिणी कौशिकी गौरी-देहात् समुद्भूता तस्मात्।

(विशेषः— पश्चिमाम्नायोक्तं आयुधानि यद् यद् करे तत् वैकृतिक-रहस्ये उक्तम्।)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्री आदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

पञ्चम अध्याय

२६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीक्षान्ति शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीक्षान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥२६०॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्यां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रीं वीजं, श्रीस्वाहा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वाहा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्यां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराभ्यां शची-पतेः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्यं यज्ञ-भागाश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हृता मद-बलाश्रयात्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रवालानां दीक्षा-गुरुरपि च लाक्षारुण-रुचाम्।**
नियन्त्री बन्धूक-द्युति-निकर-बन्धू-कृति-पटः॥
नृणामन्तर्ध्वातं निविड़मप - हर्तुं तव किल।
प्रभात - श्री-रेखा चरण-रुचि-वेषा विजयते॥

ॐ ऐं प्रीं नमः पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शची-पतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञ-भागाश्च, हृता मद-बलाश्रयात् नमो प्रीं ऐं ॐ॥२६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तावेव सूर्यतां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ओं वीजं, श्रीसरस्वती शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्त कला, ऐं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ओं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसरस्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तावेव सूर्यतां तद्-वद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अधिकारं तथैन्दवम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कौबेरमथ याम्यं च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चक्राते वरुणस्य च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातर्पाहि सरस्वती हिम-गिरि-प्राप्ता सुरास्ते पुराः।**
शुम्भेनापि निशुम्भ-वीर्य-महतास्ते निर्जिताः निर्जराः।।
विष्णुश्चेन्द्र - महेन्द्र-रुद्र-सविताऽग्निर्वायु-कौबेरका—
नधिकारांश्च यांश्च शुम्भः स्वयमेवाधिष्ठति पाहि नः।।

ॐ ऐं ओं नमः तावेव सूर्यतां तद्-वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च, चक्राते वरुणस्य च नमो ओं ऐं ॐ।।२६२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तावेव पवनर्द्धिं च'** इति सप्तशती - तृतीय-शतकस्य त्रि-षष्ठि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रीं बीज, श्रीमेधा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-षष्ठि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमेधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-षष्ठि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तावेव पवनर्द्धिं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चक्रतुर्वह्नि-कर्म च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततो देवा विनिर्धूता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भ्रष्ट-राज्याः पराजिताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातर्पाहि समुद्यता हिम-गिरि-प्राप्ता सुरास्ते पुरा—**
शुम्भेनापि निशुम्भ-वीर्य-महतास्ते निर्जिताः निर्जराः॥
विष्णुश्चेन्द्र-महेन्द्र-रुद्र-सविताऽग्निर्वायु-कौबेरका—
नधिकारांश्च यांश्च शुम्भः स्वयमेवाधिष्ठति पाहि नः॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः तावेव पवनर्द्धिं च, चक्रतुर्वह्नि - कर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता, भ्रष्ट-राज्याः पराजिताः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥२६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हताधिकाराः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुष्षष्ठि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ल्रीं वीजं, श्रीकान्ति शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हताधिकारास्त्रिदशाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ताभ्यां सर्वे निराकृताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महाऽसुराभ्यां तां देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
संस्मरन्त्यपराजिताम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातर्पाहि महान्तके! हिम-गिरि-प्राप्ता सुरास्ते पुरा—**
शुम्भेनापि निशुम्भ-वीर्य-महतास्ते निर्जिताः निर्जराः॥
विष्णुश्चेन्द्र-महेन्द्र-रुद्र-सविताऽग्निर्वायु-कौबेरका—
नधिकारांश्च यांश्च शुम्भः स्वयमेवाधिष्ठति पाहि नः॥

ॐ ऐं ल्रीं नमः हताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महाऽसुराभ्यां तां देवीं, संस्मरन्त्यपराजिताम् नमो ल्रीं ऐं ॐ॥२६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तयाऽस्माकं वरो दत्तो'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, त्रों वीजं, श्रीकामिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रों वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तयाऽस्माकं वरो दत्तो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भवतां नाशयिष्यामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्क्षणात् परमापदः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नमस्ते शरण्ये शिवे! सानुकम्पे! नमस्ते जगद्-व्यापिके! विश्व-रूपे!**
नमस्तेऽमरास्ते नमन्त्यब्ज-युग्मं नमस्ते जगत्-तारिणि! पाहि दुर्गे॥

ॐ ऐं त्रों नमः तयाऽस्माकं वरो दत्तो, यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि, तत्क्षणात् परमापदः नमो त्रों ऐं ॐ॥२६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैः होमः।

* * *

२६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इति कृत्वा मतिं देवा'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षड्-षष्ठि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं बीजं, श्रीमोहिनी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, स्वस्तिक मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमोहिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्वस्तिक-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इति कृत्वा मतिं देवा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हिम-वन्तं नगेश्वरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जग्मुस्तत्र ततो देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विष्णु-मायां प्रतुष्टुवुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **षडाधार-पङ्केरुहान्तर्विराजत् सुषुम्नान्तरालेऽति-तेजोल्लसन्तीम्।**
सुधा-मण्डलं द्रावयन्ती पिबन्ती निशुम्भार्दितां तुष्टुवुस्तेऽमरास्ते॥

ॐ ऐं क्रीं नमः इति कृत्वा मतिं देवा, हिम-वन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं, विष्णु-मायां प्रतुष्टुवुः नमो क्रीं ऐं ॐ॥२६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देवा ऊचुः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्लौः वीजं, श्रीनटी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लौः वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनटी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रियैं, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्लौः नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्लौः नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवा ऊचुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्लौः नमः **देवा ऊचुः** **नमो ह्लौः ऐं ॐ॥२६७॥**

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

२६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नमो देव्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, श्रीपार्वती शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपार्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो देव्यै महा-देव्यै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिवायै सततं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नमः प्रकृत्यै भद्रायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नियताः प्रणताः स्म ताम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ह्रीङ्कारोङ्कार - रूपा हसकहल - कूटोद्भासिनी दिव्य-रूपा,**
ऐङ्कार-क्षान्ति-कान्तिर्हरि-हर-कमलोद्भूत-बुद्धिश्च छाया।
निद्रा-शक्तिर्क्षुधा त्वं त्वमसि स्मृतिर्दया चेतना विष्णु-माया,
जातिश्श्रद्धा च लक्ष्मीर्विमल-मन-वरा मुक्ति-हेतुस्त्वमेका।।

ॐ ऐं ह्रीं नमः नमो देव्यै महा - देव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्म ताम् नमो ह्रीं ऐं ॐ।।२६८।।

१००० जपात् सिद्धिः। पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

२६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'रौद्रायै नमो'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं बीजं, श्रीज्वालिनी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रि-गुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीज्वालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे — मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रौद्रायै नमो नित्यायै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गौर्यै धात्र्यै नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सुखायै सततं नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नमो रुद्र-रूपे नमो नित्य-गौरी, नमो चन्द्र-रूपा सुखाधात्रि शिक्षा।**

सुधा-स्यन्दि बिम्बाधराणि नमस्ते, प्रपन्नार्त्त-भक्त सदा पाहि दुर्गे!।।

ॐ ऐं श्रीं नमः रौद्रायै नमो नित्यायै, गौर्यै धात्र्यै नमो नमः

ज्योत्स्नायै चेन्दु - रूपिण्यै, सुखायै सततं नमः नमो श्रीं ऐं ॐ।।२६६।।

१००० जपात् सिद्धिः। पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

२७०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कल्याण्यै प्रणतां'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, हूं बीजं, श्रीनन्दा शक्तिः, श्रीकमलादि दश - महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनन्दा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै	मध्यमाभ्यां वौषट्	शिखायै वौषट्
सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शर्वाण्यै ते नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या अम्बा मधु-कैटभ-प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-दलिनी या रक्त-बीजाशिनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलिनी या सिद्धि-लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नव-कोटि-मूर्ति-सहिताऽस्मान् पातु सर्वेश्वरी॥

ॐ ऐं हूं नमः कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै, सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै, शर्वाण्यै ते नमो नमः नमो हूं ऐं ॐ॥२७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दुर्गायै दुर्ग-पारायै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं वीजं, श्रीसुयशा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पंच-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुयशा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसायः नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दुर्गायै दुर्ग-पारायै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सारायै सर्व-कारिण्यै	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धूम्रायै सततं नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या अम्बा मधु - कैटभ - प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-दलिनी या रक्त-बीजाशिनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलिनी या सिद्धि-लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नव-कोटि-मूर्ति-सहिताऽस्मान् पातु सर्वेश्वरी॥

ॐ ऐं क्लीं नमः दुर्गायै दुर्ग-पारायै, सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै, धूम्रायै सततं नमः नमो क्लीं ऐं ॐ॥२७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अति-सौम्याति-रौद्रायै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, रौं बीजं, श्रीनन्दजा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनन्दजा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अति-सौम्याति-रौद्रायै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नतास्तस्यै नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्यै कृत्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या अम्बा मधु-कैटभ-प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-दलिनी या रक्त-बीजाशिनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलिनी या सिद्धि-लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नव-कोटि-मूर्ति-सहिताऽस्मान् पातु सर्वेश्वरी॥

ॐ ऐं रौं नमः अति-सौम्याति-रौद्रायै, नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै, देव्यै कृत्यै नमो नमः नमो रौं ऐं ॐ॥२७२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

२७३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-माया'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्रस्य श्री ब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली (श्रीमहा-विष्णु-माया) देवता, स्त्रीं वीजं, श्रीकाम-रूपा शक्तिः, श्रीकाल्यादि दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली (श्रीमहा-विष्णु-माया)-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकाम-रूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे— गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे,-मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्त्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विष्णु-मायेति शब्दिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्ग चक्र-गदेषु-चाप - परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं-शिरः,**
शङ्ख सन्दधती करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग - भूषावृताम्।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्,
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ ऐं स्त्रीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, विष्णु-मायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमो स्त्रीं ऐं ॐ।।२७३

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः। पालाश समिधा।

* * *

२७४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'विष्णु-मायायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, म्लीं बीजं, श्री उग्र-तेजोवती शक्तिः, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीउग्र-तेजोवती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विष्णु-मायायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,

सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं म्लीं नमः विष्णु-मायायै नमस्तस्यै नमो म्लीं ऐं ॐ।।२७४।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'विष्णु-मायायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्लूं वीजं, श्रीसत्या शक्तिः, श्रीतारादि दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसत्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं प्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विष्णु-मायायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥

गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं प्लूं नमः विष्णु-मायायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो प्लूं ऐं ॐ॥२७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु चेतना'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षड्-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ह्सौं वीजं, श्रीविघ्नेशानी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणा, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री ब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविघ्नेशानी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्सौं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चेतनेत्यभिधीयते	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ह्रीङ्कारोङ्कार - रूपा हसकहल - कूटोद्भासिनी दिव्य - रूपा,**
ऐङ्कार-क्षान्ति-कान्तिर्हरि-हर-कमलोद्भूत-बुद्धिश्च छाया।
निद्रा-शक्तिर्क्षुधा त्वं त्वमसि स्मृतिर्दया चेतना विष्णु-माया,
जातिश्श्रद्धा च लक्ष्मीर्विमल-मन-वरा मुक्ति-हेतुस्त्वमेका।।

ॐ ऐं ह्सौं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, चेतनेत्यभिधीयते
नमस्तस्यै नमो ह्सौं ऐं ॐ।।२७६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चेतनायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्त्रीं वीजं, श्रीस्वरूपिणी शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वरूपिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्त्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्त्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चेतनायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं स्त्रीं नमः **चेतनायै नमस्तस्यै** **नमो स्त्रीं ऐं ॐ॥२७७॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चेतनायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ग्लूं बीजं, श्रीकामदा शक्तिः श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वत्यै देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामदा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर -प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ग्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ग्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चेतनायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं ग्लूं नमः चेतनायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो ग्लूं ऐं ॐ।।२७८।।

१००० जपात् सिद्धिः। घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

२७६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवा सर्व-भूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, व्रीं वीजं, श्रीमद-जिह्वा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमद-जिह्वा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे — मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः, सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
व्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बुद्धि-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्वत्-पादाम्बुज-पूजनाप्त-हृदयाम्भोजाप्त-शुद्धिर्जनः,**
स्वर्गं रौरवमेव वेत्ति कमला-नाथास्पदं दुःखदम्।
त्वच्चरणाम्बुज-सेवया सकल शान्त्यादि-लक्ष्यं विदुः,
बुद्धिर्बुद्धि-मतां सदा विजयते श्रीकालिका दुःखदा।।

ॐ ऐं व्रीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, बुद्धि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो व्रीं ऐं ॐ।।२७६।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसैर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

२८०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बुद्ध्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, सौः बीजं, श्रीभूति शक्तिः, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्म्यै देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौः बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभूति-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे— गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
सौः नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं सौः नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बुद्ध्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं सौः नमः बुद्ध्यै नमस्तस्यै नमो सौः ऐं ॐ॥२८०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिलपायसैर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

२८१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बुद्ध्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकाशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, लूं वीजं, श्रीभौतिका शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वत्यै देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभौतिका-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बुद्ध्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं लूं नमः बुद्ध्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो लूं ऐं ॐ॥२८१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसैर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

२८२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्व्यशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लूं वीजं, श्रीसिता शक्तिः, श्री काल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्व्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसिता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्व्यशीत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निद्रा-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दुरापा दुर्वृत्तैर्दुरित - दमने रण - भरा दयार्द्रा,**

दीनानामुपरि-दलदिन्दीवर-निभा महा-कालिका।

दहन्ती दारिद्र्य-द्रुम-कुलमुदार-द्रविण-दायिनी,

त्वदीया दृष्टिर्मे जननि! दुरदृष्टं दलयतु सदा॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, निद्रा-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमो ल्लूं ऐं ॐ॥२८२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

२८३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निद्रायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, द्रां वीजं, श्रीरमा शक्तिः, श्रीकमलादि - दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रि-गुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महाविद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
द्रां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं द्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निद्रायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं द्रां नमः निद्रायै नमस्तस्यै नमो द्रां ऐं ॐ॥२८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

२८४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्सां वीजं, श्रीमहिषी शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्सां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमहिषी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रि-गुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्सां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वैषट्
ॐ ऐं क्सां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निद्रायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि - जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं क्सां नमः निद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो क्सां ऐं ॐ॥२८४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

२८५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, क्ष्म्रीं वीजं, श्रीमञ्जरी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम् मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चांशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमञ्जरी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्ष्म्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षुधा-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कुलैः कस्तूरीणां भृशमनिशमाशास्यमपि च,**
प्रभात - प्रोन्मीलन् नलिन - निवहैरश्रुत-चरम्।
वहन्तः सौरभ्यं जगतमखिलं नर्तयति सा,
तव श्वासा नासा-पुट-विहित-वासाऽवतु क्षुधा॥

ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, क्षुधा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो क्ष्म्रीं ऐं ॐ॥२८५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

२८६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'क्षुधायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षडाशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ग्लौं वीजं, श्रीविकर्णा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविकर्णा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ग्लौं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ग्लौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षुधायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,

सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः क्षुधायै नमस्तस्यै नमो ग्लौं ऐं ॐ॥२८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२८७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'क्षुधायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्कं वीजं, श्रीभृकुटि शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्कं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभृकुटि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे— गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्कं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्कं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षुधायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्कं नमः क्षुधायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो स्कं ऐं ॐ॥२८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२८८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु छाया-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, त्रूं वीजं, श्रीलज्ञा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीलज्ञा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
त्रूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छाया-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधतीं मध्ये ललाट - प्रभाम्,**
श्यामां कान्तिमनुष्य गोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्मांशोः सदा स्थिता,
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं छायां च ज्योतिर्मयी।।

ॐ ऐं त्रूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, छाया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो त्रूं ऐं ॐ।।२८८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पालाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

२८६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'छायायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्लूं बीजं, श्रीदीर्घ-घोषा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदीर्घ-घोषा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-प्रधान-त्रि-गुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्क्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्क्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छायायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं स्क्लूं नमः **छायायै नमस्तस्यै** **नमो स्क्लूं ऐं ॐ॥२८६॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पालाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

२६०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'छायायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रौं वीजं, श्रीमेधा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमेधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्रौं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्रौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छायायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं क्रौं नमः छायायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो क्रौं ऐं ॐ।।२६०।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पालाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

२६१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता'** इति-सप्तशती-तृतीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, च्छ्रीं वीजं, श्रीतपिनी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, च्छ्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीतपिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
च्छ्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शक्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या मात्राभिमुखी लता-तनु-लसत्-तन्तु-स्थिति-स्पर्धिनी,**
वाग्बीजो प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्वीहते वयम्।

शक्तिं कुण्डलिनीति विश्व - जनन-व्यापार-बद्धोद्यमाम्,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी-गर्भेऽर्भकत्वं नराः॥

ॐ ऐं च्छ्रीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो च्छ्रीं ऐं ॐ॥२६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

२६२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शक्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, म्लूं वीजं, श्रीतापिनी शक्तिः, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीतापिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे — मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
म्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं म्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शक्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं म्लूं नमः शक्त्यै नमस्तस्यै नमो म्लूं ऐं ॐ॥२६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

२६३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शक्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लूं बीजं, श्रीधूम्रा-शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीधूम्रा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि. श्रोतृ-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शक्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं क्लूं नमः शक्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो क्लूं ऐं ॐ।।२६३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होम।

* * *

२६४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहाकाली देवता, शां वीजं, श्रीमरीचिनी-शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि शां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमरीचिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
शां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तृष्णा-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **तृष्णां सम्भ्रम-कारि-वस्तु सहसा दृष्ट्वा अइश्चाहरी,**
येनाकूत - वशादपीह वरदे! विन्दु विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि! तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति-सुधा रास-द्रव-मुचो निर्यान्ति श्रीकालिके॥

ॐ ऐं शां नमः या देवी सर्व-भूतेषु, तृष्णा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो शां ऐं ॐ॥२६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

२६५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तृष्णायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवता, ल्हीं वीजं, श्री ज्वालिनी शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीज्वालिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-प्रधान-त्रि-गुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्हीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्हीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तृष्णायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः **तृष्णायै नमस्तस्यै** **नमो ल्हीं ऐं ॐ॥२६५॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तृष्णायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्रूं वीजं, श्रीरुचि शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त्तृतीय-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरुचि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्रूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्रूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तृष्णायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥

गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—

पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्रूं नमः तृष्णायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो स्रूं ऐं ॐ॥२६६॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-पायस-तिलैः बिल्व-काष्ठैश्च होमः।

* * *

२६७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लीं वीजं, श्रीसुधूम्रा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुधूम्रा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वींज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षान्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्षान्तिस्त्वं वचसां प्रवृत्ति-करणे दृष्ट-प्रभावा बुधै—**

स्तार्तीयं तदहं नमामि मनसा तद्-बीजमिन्दु-प्रभम्।

अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनुगते जाड्याम्बु-विच्छित्तये,

गो-शब्दो गिरि-पर्वते सुनियतां योगं विना सिद्धितः॥

ॐ ऐं ल्लीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, क्षान्ति-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमो ल्लीं ऐं ॐ॥२६७

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पालाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

२६८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'क्षान्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, लीं बीजं, श्रीभोगदा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभोगदा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-प्रधान-त्रि-गुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं लीं नमः क्षान्त्यै नमस्तस्यै नमो लीं ऐं ॐ॥२६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पालाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

२६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'क्षान्त्यै-नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-तृतीय-शतकस्य नव-नवति मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सं वीजं, श्रीविश्वा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविश्वा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
सं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं सं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
क्षान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥

गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं सं नमः क्षान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो सं ऐं ॐ॥२६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिलैः पलाश-काष्ठैर्होमः।

* * *

३००

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-त्रि-शत मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, लूं वीजं, श्रीबोधिनी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्ततृतीय-शतकस्य त्रि-शत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीबोधिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर -प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-तृतीय-शतकस्य त्रि-शत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जाति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जातिस्त्वं तव कामराज - मनुमित्येकाक्षरं निष्कलम्,**

तत्-सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्-बुधश्चेत् भुवि।

आख्यानं प्रति-जाति सत्य-तपसो यत् कीर्तयन्तोऽब्दिजाः,

प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितुं नीत्योच्चरन्ति स्फुटम्॥

ॐ ऐं लूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, जाति-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमो लूं ऐं ॐ॥३००॥

१०० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३०१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जात्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य प्रथम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्सूं वीजं, श्रीधारिणी शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीधारिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे — मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर -प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्सूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्सूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जात्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्सूं नमः जात्यै नमस्तस्यै नमो ह्सूं ऐं ॐ॥३०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३०२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'जात्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रूं वीज, श्रीक्षमा-शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीक्षमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यः नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं श्रूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जात्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रिजगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रूं नमः जात्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो श्रूं ऐं ॐ।।३०२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३०३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु लज्ज्ञा-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहाकाली देवता, जूं वीजं, श्रीमानदा-शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमानदा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे— गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
जूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लज्ज्ञा-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लज्ज्ञा त्वं च पराग - पुञ्ज-पिहितां शीलं कुलं तेजसा,**
मुर्वी चापि विलीन-यावक-रस-प्रस्तार-मग्नामिव।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य-मनसस्तेषामनङ्ग-ज्वर-क्लान्ता-
स्त्रस्त-कुरङ्ग-दारक - दृशो वश्या ध्रुवं कालिका॥

ॐ ऐं जूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, लज्ज्ञा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो जूं ऐं ॐ॥३०३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३०४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'लज्जायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्स्त्रीं वीजं, श्रीअमृता शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्स्त्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअमृता-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्स्त्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्स्त्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लज्जा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ह्स्त्रीं नमः लज्जायै नमस्तस्यै नमः नमो ह्स्त्रीं ऐं ॐ।।३०४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३०५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'लज्जायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्कीं वीजं, श्रीपूजा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वत्यै देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्कीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपूजा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्कीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्कीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लज्जायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्कीं नमः लज्जायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो स्कीं ऐं ॐ॥३०५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३०६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, क्लां वीजं, श्रीतुष्टि शक्तिः, श्री काल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काल्यै देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीतुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शान्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शान्तिस्त्वं शशि-खण्ड-मण्डित-जटा-जूट-नृ-मुण्ड-सृजम्,**
बन्धूक-प्रसवारुणाम्बर - धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रि - नयनामापीन-तुङ्ग-स्तनीम्,
मध्ये निम्न-वलि-त्रयाङ्कित-तनुं श्रीकालिकां चिन्तये।।

ॐ ऐं क्लां नमः या देवी सर्व-भूतेषु, शान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो क्लां ऐं ॐ।।३०६

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३०७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शान्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि - देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्रूं वीजं, श्रीपुष्टि शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महाविद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे —मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं श्रूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं श्रूं नमः **शान्त्यै नमस्तस्यै** **नमो श्रूं ऐं ॐ॥३०७॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३०८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हं बीजं, श्रीरति शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
हं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं हं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं हं नमः शान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो हं ऐं ॐ।।३०८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३०६

विनियोगः— ॐ अस्य **'या देवी सर्व-भूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ह्लीं वीजं, श्रीधृति शक्तिः, श्रीपीतादि-दश-महा-विद्याः, तमो-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीधृति-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीतादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रद्धा-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रद्धा पुष्टि ध्रुवा त्वं दह दह दुरितं सम्प्रतर्णागतस्य,**
ह्रां ह्रीं हूं स्व-स्वरूपे स्मित-मुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भ-विद्ये!
पुण्ये पुण्य-प्रवाहे परिणत-पठिते पञ्च-पञ्चादि-रूढ़े,
गीगौर्वाग् भारती त्वं कविवर - रसना कालिके सिद्ध - साध्ये॥

ॐ ऐं ह्लीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो ह्लीं ऐं ॐ॥३०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३१०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'श्रद्धायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्स्रूं वीजं, श्रीशङ्खिनी शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्स्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशङ्खिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्स्रूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्स्रूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रद्धायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकाम्,**

दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,

सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्स्रूं नमः श्रद्धायै नमस्तस्यै नमो क्स्रूं ऐं ॐ॥३१०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३११

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'श्रद्धायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकादश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, द्रौं वीजं, श्रीचन्द्रिका शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्त्व-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचन्द्रिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्त्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
द्रौं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं द्रौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रद्धायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं द्रौं नमः श्रद्धायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो द्रौं ऐं ॐ॥३११॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३१२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, क्लूं वीजं, श्रीकान्ति शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकान्ति-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कान्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कान्तिर्कर्णिक-राग-पुञ्ज-पिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमां,**

मुर्वी चापि विलीन-यावक-रस - प्रस्तार - मग्नामिव।

पश्यन्ति कुलमप्यनन्य-मनसस्तेषां कलाद्या गुणाः,

सद्या सिद्धि-सुशील-श्लाघ्य-सगुणो सर्वेशि तुभ्यं नमः॥

ॐ ऐं क्लूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, कान्ति-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमो क्लूं ऐं ॐ॥३१२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

३१३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कान्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, गां वीजं, श्रीज्योत्स्ना शक्तिः, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, गां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीज्योत्स्ना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्योः नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं गां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।

शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं गां नमः **कान्त्यै नमस्तस्यै** **नमो गां ऐं ॐ॥३१३॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

३१४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'कान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सं बीजं, श्रीप्रीति शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे-हृदि, सं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीप्रीति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
सं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं सं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं सं नमः कान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो सं ऐं ॐ॥३१४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

३१५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्स्त्रां बीजं, श्रीअङ्गदा शक्तिः, काल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, ल्स्त्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअङ्गदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्स्त्रां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय-फट्

ध्यानं— **मणि-स्यूत-ताटङ्क-शोणास्य-बिम्बां, हरित्-पट्ट-वस्त्रां त्वगुल्लासि-भूषाम्।**
हृदा भावयंस्तप्त - हेमप्रभां त्वां, श्रियो नाशयत्यम्ब चांचल्य - भावम्॥

ॐ ऐं ल्स्त्रां नमः या देवी सर्व-भूतेषु, लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो ल्स्त्रां ऐं ॐ॥३१५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

३१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'लक्ष्म्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रीं बीजं, श्री श्री-शक्तिः, श्रीकमलादि-दश - महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री श्री-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
फ्रीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं फ्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लक्ष्म्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्त्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं फ्रीं नमः लक्ष्म्यै नमस्तस्यै नमो फ्रीं ऐं ॐ॥३१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३१७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'लक्ष्म्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लां वीजं, श्रीपूर्णा शक्तिः, श्रीतारादि दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपूर्णा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्लां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्लां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
लक्ष्म्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं स्लां नमः लक्ष्म्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो स्लां ऐं ॐ।।३१७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३१८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लूं बीजं, श्रीपूर्णामृता शक्तिः, श्रीकाल्यादि दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपूर्णामृता-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृत्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वृत्तिर्विश्व-क्रिया विराजित-वधूर्ज्वालावली-सन्निभा,**
सर्वाधार-तुरीय-शक्ति-परम-ब्रह्माभिधा शब्दिताम्।
यद् वेदेषु च गीयते श्रुति-मुखं मात्रा-त्रयेणोमिति,
भ्राजद्-रूपमनन्य-तुल्यमभितः स्वान्तर्मम द्योतताम्॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः　या देवी सर्व-भूतेषु, वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै　　नमो ल्लूं ऐं ॐ॥३१८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः समिधा पालाशः।

* * *

३१९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वृत्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, फ्रें बीजं, श्रीक्षमा शक्तिः, श्रीकमलादि दश-महाविद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीक्षमा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
फ्रें नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वौषट्	शिखायै वौषट्
ॐ ऐं फ्रें नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृत्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं फ्रें नमः **वृत्त्यै नमस्तस्यै** **नमो फ्रें ऐं ॐ॥३१९॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

३२०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वृत्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ओं वीजं, श्रीविश्वा शक्तिः, श्रीतारादि- दश - महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ओं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविश्वा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमःअन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ओं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ओं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृत्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ओं नमः वृत्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो ओं ऐं ॐ॥३२०॥

१००० जपात् सिद्धिः। पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३२१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, स्लीं बीजं, श्रीमाया शक्तिः, श्री काल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाया-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्मृति-रूपेण-संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शब्दानां जननी स्मृतिश्च भुवने वाग्-वादिनीत्युच्यसे,**
त्वत्तः केशव-वासव - प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति ध्रुवम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प - विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य-रूप-महिमा शक्तिः स्मृतिर्गीयते॥

ॐ ऐं स्लीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, स्मृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो स्लीं ऐं ॐ॥३२१॥

१००० जपात् सिद्धिः। पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३२२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्मृत्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रां बीजं, श्रीसती शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसती-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्मृत्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या अम्बा मधु - कैटभ - प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड - दलिनी या रक्त-बीजाशिनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलिनी या सिद्धि-लक्ष्मीः परा,
सा दुर्गा नव-कोटि-मूर्ति-सहिताऽस्मान् पातु सर्वेश्वरी।।

ॐ ऐं ह्रां नमः स्मृत्यै नमस्तस्यै नमो ह्रां ऐं ॐ।।३२२।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३२३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्मृत्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ऊं वीजं, श्रीहंसी शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऊं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीहंसी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऊं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ऊं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्मृत्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ऊं नमः स्मृत्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो ऊं ऐं ॐ॥३२३॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३२४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु दया-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहाकाली देवता, ल्हूं वीजं, श्रीमर्दिनी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त्चतुर्थ-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री ब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमर्दिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे — मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्हूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दया-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दाया कुण्डलिनी क्रिया मधु-मती काली कला मालिनी,**
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्कर - वल्लभा त्रि-नयना वाग्-वादिनी भैरवी,
ह्रीङ्कारी त्रिपुरा परा पर - मयी मातस्सदा त्वं दया॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, दया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो ल्हूं ऐं ॐ॥३२४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिलैस्तु होमः।

* * *

३२५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दयायै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, हूं वीजं, श्रीरतिका शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरतिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पंच-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
हूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं हूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दयायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरभि-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं हूं नमः **दयायै नमस्तस्यै** **नमो हूं ऐं ॐ॥३२५॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिलैस्तु होमः।

* * *

३२६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दयायै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, नं वीजं, श्रीदेवमाता शक्तिः, श्रीतारादिं-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान पंच-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, नं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदेवमाता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, सत्त्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पंच-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पंच-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं नं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दयायै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं नं नमः दयायै नमस्तस्यै नमो नमः नमो नं ऐं ॐ॥३२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिलैस्तु होमः।

* * *

३२७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, स्त्रां वीजं, श्रीदेवकी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदेवकी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये , शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
स्त्रां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तुष्टि-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लक्ष्मीस्तोष-करी जया रण-मुखे क्षेमङ्करीमध्वनि,**
क्रव्याद-द्विप-सर्प-कीट-शबरीमेकेन तन्त्रेण च।
विश्वं तोषमती सदा बहु-करैरासिच्यमानां श्रियम्,
वैराग्यैक-तनुस्सकञ्ज-वलयां श्रीं श्रीरहं चिन्तये॥

ॐ ऐं स्त्रां नमः या देवी सर्व-भूतेषु, तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो स्त्रां ऐं ॐ॥३२७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३२८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तुष्ट्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, वं वीजं, श्री परा-शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा - विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तचतुर्थ-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, वं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे —मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
वं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं वं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तुष्ट्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं वं नमः तुष्ट्यै नमस्तस्यै नमो वं ऐं ॐ॥३२८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तुष्ट्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, मं बीजं, श्रीत्रिमुखी-शक्तिः, श्री-तारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, मं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिमुखी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
मं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं मं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तुष्ट्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं मं नमः तुष्ट्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो मं ऐं ॐ॥३२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिल-कुक्कुट-पालाश-समिधैर्होमः।

* * *

३३०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवो सर्व-भूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, म्क्लीं बीजं, श्रीसप्त-मुखी शक्तिः, श्री काल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त-रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसप्त-मुखी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
म्क्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मातृ-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आधारे तरुणार्क-बिम्ब-रुचिरं सोम-प्रभं वाग्भवम्,**
बीजं मन्मथमिन्द्र - गोपक-निभं हृत्पङ्कजे संस्थितम्।
रन्ध्रे ब्रह्म - पदे च मातृमपरं चन्द्र-प्रभा-भासुरम्,
ये ध्यायन्ति पद-त्रयं तव शिवे! ते यान्ति सौख्यं पदम्॥

ॐ ऐं म्क्लीं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, मातृ-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो म्क्लीं ऐं ॐ॥३३०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मात्रे नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, शां बीजं, श्रीकमलासना शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त-रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै-नमः द्वादशारे—हृदि, शां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकमलासना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
शां नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं शां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मात्रे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं शां नमः मात्रे नमस्तस्यै नमो शां ऐं ॐ॥३३१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३३२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मात्रे नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, लं वीजं, श्रीभगवती शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त-रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तचतुर्थ-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभगवती-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
लं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं लें नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मात्रे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं लं नमः मात्रे नमस्तस्यै नमो नमः नमो लं ऐं ॐ।।३२३।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृत-तिल-पालाश-समिद्भिश्च होमः।

* * *

३३३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या देवी सर्व-भूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, भैं वीजं, श्रीलम्बोष्ठी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्यत्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भैं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीलम्बोष्ठी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षौडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
भैं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
या देवी सर्व-भूतेषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुखे ते ताम्बूलं नयन - युगले कज्जल - कला,**
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।
स्फुरत्-काञ्ची-शाटी पृथु-कटि-तटे हाटक-मयी,
भजामस्त्वां भ्रान्तिं नग-पति-किशोरीं च गौरीम्॥

ॐ ऐं भैं नमः या देवी सर्व-भूतेषु, भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमो भैं ऐं ॐ॥३३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३३४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'भ्रान्त्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्लूं वीजं, श्रीऊर्ध्व-केशी शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त-रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीऊर्ध्व-केशी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्लूं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भ्रान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः भ्रान्त्यै नमस्तस्यै नमो ल्लूं ऐं ॐ॥३३४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३३५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'भ्रान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं वीजं, श्रीबहु-शीर्षा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रिगाणि, शान्त-रसः, वाक्-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तचतुर्थ-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीबहु-शीर्षा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रौं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्रौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भ्रान्त्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः भ्रान्त्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥३३५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३३६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इन्द्रियाणामधिष्ठात्री'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ईं वीजं, श्रीरथरेखा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ईं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरथरेखा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इन्द्रयाणामधिष्ठात्री	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भूतानां चाखिलेषु या	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भूतेषु सततं तस्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
व्याप्त-देव्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्वदन्यस्मादिच्छा - विषयं - फल-लाभेन नियम—**

त्वमर्थानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे।

इति प्राहुः प्राञ्चः कमल-भवनाद्यास्त्वयि मन-

स्त्वदासक्तं नक्तं दिवमुचितमीशनि! कुरु तत्॥

ॐ ऐं ईं नमः इन्द्रियाणामधिष्ठात्री, भूतानां चाखिलेषु या

भूतेषु सततं तस्यै, व्याप्ति-देव्यै नमो नमः नमो ईं ऐं ॐ॥३३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३३७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चिति-रूपेण'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, चें वीजं, श्रीवृकोदरी शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान पंच-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, चें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवृकादरी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
चें नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चिति-रूपेण या कृत्स्नं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एतद् व्याप्य स्थिता जगत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **लीला-लब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,**
लोकातीतैर्योगिभिरन्तश्चिर-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जाम्,
कालीमम्बामम्बुज - रुहाक्षीमहमीड़े॥

ॐ ऐं चें नमः चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्त स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमो चें ऐं ॐ॥३३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-पायसैर्होमः, प्लक्ष-पालाश-समिधैः।

* * *

३३८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चित्यै नमस्तस्यै'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्लीं वीजं, श्रीशशिरेखा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशशिरेखा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे — मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चित्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः **चित्यै नमस्तस्यै** **नमो क्लीं ऐं ॐ॥३३८॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३३६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'चित्यै नमस्तस्यै नमो नमः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशत-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहासरस्वती देवता, ल्हीं वीजं, श्रीअपरा शक्तिः, श्रीतारादि दश-महा-विद्याः, सत्व-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसिं, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअपरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ल्हीं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नमो नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्हीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चित्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नमस्तस्यै नमो नमः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः चित्यै नमस्तस्यै नमो नमः नमो ल्हीं ऐं ॐ॥३३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३४०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्तुता सुरैः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चत्वारिंश-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्ष्म्ब्रीं वीजं, श्री गगन-वेगा-शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रज-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्ब्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीगगन-वेगा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रज-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्ब्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा-निवसनम्,**

श्मशानम् क्रीडा-भूर्भुजग-निवहो भूषण-निधिः।

समग्रासामग्री जगति विदितैव स्मर-रिपो,

यदेतस्यैश्वर्यं तव जननि! सौभाग्य महिमा।।

ॐ ऐं क्ष्म्ब्रीं नमः स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्, तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः नमो क्ष्म्ब्रीं ऐं ॐ।।३४०।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३४१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'या साम्प्रतं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीब्रह्मादि-देवा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, पूं वीजं, श्रीपवन-वेगा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तम-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, सौम्य स्वरं, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, सकला कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री ब्रह्मादि-देवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, पूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपवन-वेगा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, तम-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यः नमः चतुरारे—गुदे, सकला-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं पूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **निवासः कैलाशे विधि-शत-मखाद्याः स्तुति-कराः,**
कुटुम्बं त्रैलोक्यं कृत-कर-पुटः सिद्धि-निकरः।
महेशः प्राणेशो तदवनि धराधीश - तनये!
न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना॥

ॐ ऐं पूं नमः या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः नमो पूं ऐं ॐ॥३४१।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीपरा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कलाः, ऐं उत्कीलनं, प्रणाम मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषिये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रणाम-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ।।३४२।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३४३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एवं स्तवादि-युक्तानां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रौं वीजं, श्रीमदनातुरा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमदनातुरा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवं स्तवादि-युक्तानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवानां तत्र पार्वति!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्नातुमभ्याययौ तोये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जाह्नव्या नृप-नन्दन!	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **महान्तं विश्वासं तव चरण - पङ्केरुह-युगे,**
निधायान्यन्नैवाश्रितमिह मया दैवतमुमे!
तथापि त्वच्चेतो यदि मयि न जायेत सदयं,
निरालम्बो लम्बोदर-जननि! कं यामि शरणम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः एवं स्तवादि-युक्तानां, देवानां तत्र पार्वति!
स्नातुमभ्याययौ तोये, जाह्नव्या नृप-नन्दन! नमो ह्रौं ऐं ॐ॥३४३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः समिधा पालाशः।

* * *

३४४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'साऽब्रवीत् तान् सुरान्'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, भ्रूं वीजं, श्रीअङ्गना शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भ्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री अङ्गना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्री भैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
साऽब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का?	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शरीर-कोशतश्चास्याः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
समुदभूताऽब्रवीच्छिवा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्फुरन्नान-रत्न-स्फटिक-मय-भित्ति-प्रतिफलत्-त्वदाकारं चञ्चच्छशधर-विलासौध-शिरम्।**
मुकुन्द - ब्रह्मेन्द्र - प्रभृति - परिवार विजयते, तवागारं रम्य त्रिभुवन-महाराज-गृहिणि॥

ॐ ऐं भ्रूं नमः साऽब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का?
शरीर-कोशतश्चास्याः, समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा नमो भ्रूं ऐं ॐ॥३४४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-मांस-तिलैस्तु होमः।

* * *

३४५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्तोत्रं ममैतत् क्रियते'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीकौशिकी ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, क्स्त्रीं वीजं, श्रीभुवन-पाला शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महाविद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीकौशिकी-ऋषिये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्स्त्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभुवन-पाला-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीताम्बरा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणायः नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्स्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते	मध्यमाभ्यां वौषट्	शिखायै वौषट्
शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवैः समेतैः समरे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निशुम्भेन पराजितैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अशेष-ब्रह्माण्ड-प्रलय-विधि-नैसर्गिक-मतिः,**
श्मशानेष्वासीनः कृत-भसित-लेपः पशु-पतिः।
दधौ कण्ठे हालाहलमखिल-भूगोल-कृपया,
भवत्या सङ्गत्याः फलमिति च कल्याणि! कलये॥

ॐ ऐं क्स्त्रीं स्तोत्रं ममैतत् क्रियते, शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे, निशुम्भेन पराजितैः नमो क्स्त्रीं ऐं ॐ॥३४५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

३४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शरीर-कोशाद् यत् तस्याः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, आं वीजं, श्रीअनङ्ग-वदना शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, आं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअनङ्ग-वदना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शरीर-कोशाद् यत् तस्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पार्वत्याः नि-सृताऽम्बिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कौशिकीति समस्तेषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततो लोकेषु गीयते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं आं नमः शरीर-कोशाद् यत् तस्याः, पार्वत्याः निःसृताऽम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु, ततो लोकेषु गीयते नमो आं ऐं ॐ॥३४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३४७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तस्यां विनिर्गतायां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रूं बीजं, श्रीअनङ्ग-मेखला शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो-गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, आकाश तत्त्वं, परा-शान्ति कला, क्रीं ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री मार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअनङ्ग-मेखला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्यां विनिर्गतायां तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृष्णाऽभूत साऽपि पार्वती	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कालिकेति समाख्याता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हिमाचल-कृताश्रया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी रुदन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल-शिखा-सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परिहरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं क्रूं नमः तस्यां विनिर्गतायां तु, कृष्णाऽभूत् साऽपि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता, हिमाचल-कृताश्रया नमो क्रूं ऐं ॐ॥३४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३४८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततोऽम्बिकां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, त्रूं वीजं, श्रीअनङ्ग-कुसुमा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो-गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, त्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअनङ्ग-कुसुमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततोऽम्बिकां परं रूपं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विभ्राणां सु-मनोहरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ददर्श चण्डो मुण्डश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सर्वं सर्वत एव सर्ग-समये कार्येन्द्रियाण्यन्तरा,**
तत्तद्-दिव्य-हृषीक-कर्मभिरियं संव्यश्नुवाना पुरा।
वागर्थ-व्यवहार-कारण-तनुः शक्तिर्जगद्-रूपिणी,
यद्-बीजात्मकतां गता विजयते चण्डे कृते दर्शने॥

ॐ ऐं त्रूं नमः ततोऽम्बिकां परं रूपं, विभ्राणां सु-मनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च, भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः नमो त्रूं ऐं ॐ॥३४८॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३४६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ताभ्यां शुम्भाय'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, डूं बीजं, श्रीविश्व-रूपा शक्तिः, श्रीसुन्दरी-महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, डूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविश्व-रूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृंगार-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं डूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अतीव सु-मनोहरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
काऽप्यास्ते स्त्री महा-राज!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भासयन्ती हिमाचलं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सर्वं सर्वत एव सर्ग-समये कार्येन्द्रियाण्यन्तरा,**
तत्तद्-दिव्य-हृषीक-कर्मभिरियं संव्यश्नुवाना पुरा।
वागर्थ-व्यवहार-कारण-तनुः शक्तिर्जगद्-रूपिणी,
यद्-बीजात्मकतां गता विजयते चण्डे कृते दर्शने।।

ॐ ऐं डूं नमः ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता, अतीव सु-मनोहरा।
काऽप्यास्ते स्त्री महा-राज! भासयन्ती हिमाचलम् नमो डूं ऐं ॐ।।३४६।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३५०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'नैव तादृक् क्वचिद्'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमुण्ड ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, जां वीजं, श्रीअसुर-भयङ्करी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमुण्ड-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअसुर-भयङ्करी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं जां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नैव तादृक् क्वचिद् रूपं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दृष्टं केनचिदुत्तमम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गृह्यतां चासुरेश्वर!	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अग्नीन्दु-द्यु-मणि-प्रभञ्जन-धरा-नीरान्तर-स्थायिनी,**

शक्तिर्ब्रह्म-हरीश-वासव-मुखा मर्त्या सुरात्म-स्थिता।

दुष्टं नैव स्वरूप-तुल्यमनघं तस्यास्समं कुत्रचित्,

सृष्ट-स्थावर-जङ्गम-स्थित-महा-चैतन्य-रूपा च सा।।

ॐ ऐं जां नमः नैव तादृक् क्वचिद रूपं, दृष्टं केनचिदुत्तमम्।

ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी, गृह्यतां चासुरेश्वर नमो जां ऐं ॐ।।३५०।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३५१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्त्री-रत्नमति-चार्वङ्गी'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहाकाली देवता, ल्हूं वीजं, श्रीआख्या शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त चतुर्थ-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीआख्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्री भुवनेशी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, लिंग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्त्री-रत्नमति-चार्वङ्गी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
द्योतयन्ती दिशस्त्विषा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तां भवान् द्रष्टुमर्हति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अग्नीन्दु-द्यु-मणि-प्रभञ्जन-धरा-नीरान्तर-स्थायिनी,**
शक्तिर्ब्रह्म-हरीश-वासव-मुखा मर्त्या सुरात्म-स्थिता।
दृष्टं नैव स्वरूप-तुल्यमनघं तस्यास्समं कुत्रचित्,
सृष्ट-स्थावर-जङ्गम-स्थित-महा-चैतन्य-रूपा च सा॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः स्त्री-रत्नमति-चार्वङ्गी, द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र! तां भवान् द्रष्टुमर्हति नमो ल्हूं ऐं ॐ॥३५१॥

१००० जपात् सिद्धिः। पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३५२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यानि रत्नानि मणयो'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रौं बीजं, श्रीपिङ्गलाक्षी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपिङ्गलाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यानि रत्नानि मणयो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गजाश्वादीनि वै प्रभो!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्ये तु समस्तानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
साम्प्रतं भान्ति ते गृहे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल - चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव - नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धिरचिरात् स्यात् तत्-स्वरूपैकता।।

ॐ ऐं फ्रौं नमः यानि रत्नानि मणयो, गजाश्वादीनि वै प्रभो!
त्रैलोक्ये तु समस्तानि, साम्प्रतं भान्ति ते गृहे नमो फ्रौं ऐं ॐ।।३५२।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३५३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ऐरावतः समानीतो'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रौं वीजं, श्रीपिशाचाक्षी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपिशाचाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ऐरावतः समानीतो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गज-रत्नं पुरन्दरात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पारिजात-तरुश्चायं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथैवोच्चैःश्रवा हयः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल-चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव - नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धि-रुचिः शुम्भेन रत्नान्य-वतु॥

ॐ ऐं क्रौं नमः ऐरावतः समानीतो, गज-रत्नं पुरन्दरात्।
पारिजात-तरुश्चायं, तथैवोच्चैःश्रवा हयः नमो क्रौं ऐं ॐ॥३५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३५४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'विमानं हंस-संयुक्तं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-काली देवता, किं वीजं, श्रीसिद्धि शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, रसना-ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, किं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसिद्धि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं किं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विमानं हंस-संयुक्तं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
एतत् तिष्ठति तेऽङ्गणे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रत्न-भूतमिहानीतं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यदासीद् वेधसोऽद्भुतम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल-चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव - नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धि-रुचिः शुम्भेन रत्नान्य-वतु।।

ॐ ऐं किं नमः विमानं हंस-संयुक्तमेतत् तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्न-भूतमिहानीतं, यदासीद् वेधसोऽद्भुतम् नमो किं ऐं ॐ।।३५४।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः, पिप्पल-पालाश-समिधा।

* * *

३५५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निधिरेष महा-पद्मः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ग्लूं बीजं, श्रीऋद्धि शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीऋद्धि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लू	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निधिरेष महा-पद्मः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समानीतो धनेश्वरात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मालामम्लान-पङ्कजां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल - चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव - नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धिरचिरात् स्यात तत्-स्वरूपैकता॥

ॐ ऐं ग्लूं नमः निधिरेष महा - पद्मः, समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लान-पङ्कजाम् नमो ग्लूं ऐं ॐ॥३५५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, विल्व-समिधा।

* * *

३५६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'छत्रं ते वारुणं गेहे'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-सरस्वती देवता, छ्रं क्लीं वीजं, श्रीश्रद्धा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठ-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, छ्रं क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीश्रद्धा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं छ्रं क्लीं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
छत्रं ते वारुणं गेहे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
काञ्चन-स्रावि तिष्ठति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथाऽयं स्यन्दन-वरो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यः पुराऽऽसीत् प्रजा-पतेः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल-चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यां शिव-नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धिरचिरात् स्यात तत्-स्वरूपैकता।।

ॐ ऐं छ्रं क्लीं नमः छत्रं ते वारुणं गेहे, काञ्चन-स्रावि तिष्ठति।
तथाऽयं स्यन्दन-वरो, यः पुराऽऽसीत् प्रजा-पतेः नमो क्लीं छ्रं ऐं ॐ।।३५६।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३५७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-काली देवता, रं बीजं, श्रीस्वाहा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो-गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वाहा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शक्तिरीश! त्वया हता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पाशः सलिल-राजस्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भ्रातुस्तव परिग्रहे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल-चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव - नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धिरचिरात् स्यात तत्-स्वरूपैकता।।

ॐ ऐं रं नमः **मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम, शक्तिरीश! त्वया हता।**
पाशः सलिल - राजस्य, भ्रातुस्तव परिग्रहे **नमो रं ऐं ॐ।।३५७।।**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

३५८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्सैं वीजं, श्रीस्वधा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्सैं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वधा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्सैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समस्ता रत्न-जातयः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वह्निरपि ददौ तुभ्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अग्नि-शौचे च वाससी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नित्यं यस्तव मातृकाक्षर-सखीं सौभाग्य-विद्याम् जपेत्,**
सम्पूज्याखिल - चक्र-राज-निलयां सायं तामग्नि-प्रभाम्।
कामाख्यं शिव-नाम-तत्त्वमुभयं व्याप्यात्मना सर्वतो,
दीव्यन्तीमिह तस्य सिद्धिरचिरात् स्यात तत्-स्वरूपैकता।।

ॐ ऐं क्सैं नमः निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च, समस्ता रत्न-जातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यं, अग्नि-शौचे च वाससी नमो क्सैं ऐं ॐ।।३५८।।

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३५९

विनियोगः—ॐ. अस्य श्री **'एवं दैत्येन्द्र'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीचण्ड-मुण्डौ ऋषी, श्रीमहा-काली देवता, स्हुं वीजं, श्रीभिक्षा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्ड-मुण्डाभ्यां ऋषिभ्यां नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्हुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभिक्षा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवं दैत्येन्द्र! रत्नानि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
समस्तान्याहृतानि ते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्त्री-रत्नमेषा कल्याणी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वया कस्मान्न गृह्यते?	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अग्नीन्दु-द्यु-मणि-प्रभञ्जन-धरा-नीरान्तर-स्थायिनी,**
शक्तिर्ब्रह्म-हरीश-वासव-मुखा मर्त्या सुरात्म-स्थिता।
दुष्टं नैव स्वरूप-तुल्यमनघं तस्यास्समं कुत्रचित्,
सृष्ट-स्थावर-जङ्गम-स्थित-महा-चैतन्य-रूपा च सा॥

ॐ ऐं स्हुं नमः एवं दैत्येन्द्र! रत्नानि, समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्री-रत्नमेषा कल्याणी, त्वया कस्मान्न गृह्यते नमो स्हुं ऐं ॐ॥३५९॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीमाया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सत्व गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शृङ्गार रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शृङ्गार-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ठि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥३६०॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३६१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'निशम्येति वचः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं वीजं, श्रीवसुन्धरा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवसुन्धरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निशम्येति वचः शुम्भः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स तदा चण्ड-मुण्डयोः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रेषयामास सुग्रीवं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दूतं देव्या महाऽसुरं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कमल - दलामल - कोमल-कान्ति-कला-कलितामल-भाल-लते।**
सकल-विलास-कला-निलय-क्रम-केलि-चलत्-कल-हंस-सुते॥
अलि-कुल-संकुल-कुवलय-मण्डल-मौलि-मिलद्-वकुलालि-युते।
जय जय जप्य-जये सुग्रीव-पर-स्तुति-मोहित-कालि नुते॥

ॐ ऐं श्रीं नमः निशम्येति वचः शुम्भः, स तदा चण्ड-मुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं, दूतं देव्या महाऽसुरम् नमो श्रीं ऐं ॐ॥३६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः समिधा पालाशः।

* * *

३६२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इति चेति च वक्तव्या'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ओं बीजं, श्रीसावित्री शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ओं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसावित्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इति चेति च वक्तव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सा गत्वा वचनान्मम	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा कार्यं त्वया लघु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शब्दानां जननि! त्वमत्र भुवने वाग्वादिनी श्रीः स्वयम्।**
लक्ष्मी राज - कुले जयं रण-मुखे सुग्रीव-सम्भाषिते।।
सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि या किंवाऽनया चिन्तया।
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति जनो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि।।

ॐ ऐं ओं नमः इति चेति च वक्तव्या, सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या, तथा कार्यं त्वया लघु नमो ओं ऐं ॐ।।३६२।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः समिधा पालाशः।

* * *

३६३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स तत्र गत्वा'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, लूं वीजं, श्रीगायत्री शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो- षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीगायत्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रयो-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स तत्र गत्वा यत्रास्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शैलोद्देशेऽति-शोभने	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा देवी तां ततः प्राह	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्लक्ष्णं मधुरया गिरा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रिय ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं लूं नमः स तत्र गत्वा यत्रास्ते, शैलोद्देशेऽति-शोभने।
सा देवी तां ततः प्राह, श्लक्ष्णं मधुरया गिरा नमो लूं ऐं ॐ॥३६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायसै-र्होमः।

* * *

३६४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दूत उवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, ल्हूं वीजं, श्रीस्वरूपा शक्तिः, श्रीभैरवी-महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वरूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ल्हूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ल्हूं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दूत उवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रियं ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः **दूत उवाच** **नमो ल्हूं ऐं ॐ॥३६४॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३६५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देवि! दैत्येश्वरः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीसुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लूं वीजं, श्रीत्रिलोक-रात्रि शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिलोक-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणायः नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः घ्राण-ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवि! दैत्येश्वरः शुम्भः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्रैलोक्ये परमेश्वरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वत्-सकाशमिहागतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालिकां युवतीं देवीं, नानालङ्कार-भूषिताम्।**

प्रसन्न - वदनाम्भोजां, शक्ति-सङ्घ-निषेविताम्॥

द्वि-भुजां सौम्य-वदनां, सन्देशं शुम्भ-रक्षयोः।

कृण्वन्तीं मोहिनीं देवीं, कालिकां प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः देवि! दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।

दूतोऽहं प्रेषितस्तेन, त्वत्-सकाशमिहागतः नमो ल्लूं ऐं ॐ॥३६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, रक्त-मांस-घृतैर्होमः।

* * *

३६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अव्याहताज्ञः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीसुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्रीं वीजं, श्रीत्रिदशेश्वरी शक्तिः, श्रीसुन्दरी-महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिदशेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीसुन्दरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणायः नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अव्याहताज्ञः सर्वासु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यः सदा देव-योनिषु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निर्जिताऽऽखिल-दैत्यारिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स यदाह शृणुष्व तत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **स्फुरत्वाम्ब-विम्बस्य मे हत्-सरोजे सदा वाङ्-मयं सर्व-तेजोमयं च।**
महालक्ष्मि-रूप तदेवं प्रपञ्चात् परं चाति-सूक्ष्मं सु-स्थूलं भजेऽहम्॥

ॐ ऐं स्क्रीं नमः अव्याहताज्ञः सर्वासु, यः सदा देव - योनिषु।
निर्जिताऽऽखिल-दैत्यारिः, स यदाह शृणुष्व तत् नमो स्क्रीं ऐं ॐ॥३६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, रक्त-मांस-घृतैर्होम।

* * *

२६७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मम त्रैलोक्यमखिलं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीशुम्भः ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, स्त्रौं वीजं, श्रीबहु-रूपा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महाविद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्लीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीबहु-रूपा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणायः नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मम त्रैलोक्यमखिलं	मध्यमाभ्यां वौषट्	शिखायै वौषट्
मम देवा वशानुगाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यज्ञ-भागानहं सर्वान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उपाश्नामि पृथक् पृथक्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्वमेवाद्य-भावा घृता शुम्भ-योगे जित येन् त्रैलोक्यमखिलाः सुराश्च।**
इडा पिङ्गलाजा सुषुम्ना-क्रमेण त्वमेका गतिस्त्राण-कर्त्री सुराणां॥

ॐ ऐं स्त्रौं नमः मम त्रैलोक्यमखिलं, मम देवा वशानुगाः।
यज्ञ-भागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् नमो स्त्रौं ऐं ॐ॥२६७॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

३६८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'त्रैलोक्ये वर-रत्नानि'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्भ्रूं वीजं, श्रीस्वरूपा शक्तिः, श्रीतारा-महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्भ्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्वरूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणायः नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे— गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्भ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रैलोक्ये वर-रत्नानि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मम वश्यान्यशेषतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथैव गज-रत्नं च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हत्वा देवेन्द्र-वाहनम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अपारे महा-दुस्तरेऽत्यन्त-घोरे विपत्-सागरे मज्जतां देव-योनिम्।**
त्वमेका गतिर्देवि! देवस्य लक्ष्मी गजं वाहनं मे हृतं शुम्भ-सङ्घैः॥

ॐ ऐं स्भ्रूं नमः त्रैलोक्ये वर-रत्नानि, मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गज-रत्नं च, हत्वा देवेन्द्र-वाहनम् नमो स्भ्रूं ऐं ॐ॥३६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

३६९

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'क्षीरोद-मथनोद्भूत'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-सप्तति मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्ष्म्क्लीं वीजं, श्रीविरूपा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविरूपा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकोन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः.
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षीरोद-मथनोद्भूतं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अश्व-रत्नं ममामरैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उच्चैः श्रवस-संज्ञं तत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रणिपत्य समर्पितं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अये मातर्लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
लुठन्तं बालं मामविरल-गलद्-वाष्प-जटिलम्।
सुधा-सेक-स्निग्धैरति-मसृण-मुग्धैः कर-तलैः,
समस्ता रत्नानि हत-विषय-शुम्भं जहि सदा॥

ॐ ऐं क्ष्मक्लीं नमः क्षीरोद-मथनोद्भूतमश्व - रत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवस-संज्ञं तत्-प्रणिपत्य समर्पितम् नमो क्ष्म्क्लीं ऐं ॐ॥३६९॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, विल्व-समिधा।

* * *

३७०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यानि चान्यानि'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्तति-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, व्रीं वीजं, श्री विश्व-रूपा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्लीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविश्व-रूपा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यानि चान्यानि देवेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गन्धर्वेषूरगेषु च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रत्न-भूतानि भूतानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तानि मय्येव शोभने	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अये मातर्लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
लुठन्तं बालं मामविरल-गलद्-वाष्प-जटिलम्।
सुधा-सेक-स्निग्धैरति-मसृण-मुग्धैः कर-तलैः,
समस्ता रत्नानि हत-विषय-शुम्भं जहि सदा॥

ॐ ऐं व्रीं नमः यानि चान्यानि देवेषु, गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्न-भूतानि भूतानि, तानि मय्येव शोभने नमो व्रीं ऐं ॐ॥३७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३७१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स्त्री-रत्न-भूतां त्वां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सीं वीजं, श्रीहत-प्रिया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो-गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रैं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीहत-प्रिया-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्त्री-रत्न-भूतां त्वां देवि!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
लोके मन्यामहे वयं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा त्वमस्मानुपागच्छ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यतो रत्न-भुजो वयं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रिय ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं सीं नमः स्त्री-रत्न-भूतां त्वां देवि! लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ, यतो रत्न-भुजो वयम् नमो सीं ऐं ॐ॥३७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-घृतैर्होमः।

* * *

३७२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मां वा ममानुजं वापि'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीनिशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, भूं वीजं, श्रीस्कन्दमाता शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, क्षोभ-मोह रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीनिशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भूं-वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्कन्द-माता-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्षोभ-मोह-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयो, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मां वा ममानुजं वापि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निशुम्भमुरु-विक्रमं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रत्न-भूताऽसि वै यतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यत्राशयो लगति तत्रागजा वसतु कुत्रापि निस्तुल-शुका,**

सुत्रामकाल - मुख - सत्राशन - प्रकर-सुत्राण-कारि-चरणा।

छत्रानिलाति-रय-पत्राभिराम-गुण-मित्रामरी-सम-वधूः,

कुत्रासहन्मणि विचित्राकृतिः स्फुरित-कन्यादि-दान-निपुणा॥

ॐ ऐं भूं नमः मां वा ममानुजं वापि, निशुम्भमुरु-विक्रमम्।

भज त्वं चञ्चलापाङ्गि!, रत्न-भूताऽसि वै यतः नमो भूं ऐं ॐ॥३७२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः।

* * *

३७३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'परमैश्वर्यमतुलं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, लां वीजं, श्रीविमला शक्तिः, श्रीकमला-महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविमला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
परमैश्वर्यमतुलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्राप्स्यसे मत्-परिग्रहात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एतद्-बुद्ध्या समालोच्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मत्-परिग्रहतां व्रज	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अये मातर्लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**

लुठन्तं बालं मामविरल-गलद्-वाष्प-जटिलम्।

सुधा-सेक-स्निग्धैरति-मसृण-मुग्धैः कर-तलैः,

समस्ता रत्नानि हत-विषय-शुम्भं जहि सदा॥

ॐ ऐं लां नमः परमैश्वर्यमतुलं, प्राप्स्यसे मत्-परिग्रहात्।

एतद्-बुद्ध्या समालोच्य, मत्-परिग्रहतां व्रज नमो लां ऐं ॐ॥३७३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३७४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीअमला शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सत्व गुण, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति (अग्नि-गर्भ) कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअमला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्व-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति (अग्नि-गर्भ) कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुः-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।३७४।।**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३७५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इत्युक्ता सा तदा'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, स्हैं बीजं, श्रीअरुणा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्हैं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअरुणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, 'मोह-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्युक्ता सा तदा देवि!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गम्भीरान्तः स्मिता जगौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दुर्गा भगवती भद्रा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ययेदं धार्यते जगत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चञ्चत्-काञ्चन-कुण्डलाङ्गद-धरामाबद्ध-काञ्ची-स्रजम्,**
सिन्दूराङ्कित-भालमब्ज-युगलं कञ्जांघ्रि-कण्ठे स्वरं।
ये त्वां चेतसि तद्-गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थिरम्,
तेषां कल्मष-कष्ट-क्लेश-कुहरां दुर्गां हसन्तीं भजे।।

ॐ ऐं स्हैं नमः इत्युक्ता सा तदा देवि! गम्भीरान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा, ययेदं धार्यते जगत् नमो स्हैं ऐं ॐ।।३७५।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

३७६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, श्रीवारुणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी-महा-विद्या, सत्व गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवारुणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रियं ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥३७६॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३७७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सत्यमुक्तं त्वया'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, श्रीप्रकृति शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, स्त्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीप्रकृति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सत्यमुक्तं त्वया नात्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मिथ्या किञ्चित् त्वयोदितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निशुम्भश्चापि तादृशः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रियं ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं श्रीं नमः सत्यमुक्तं त्वया नात्र, मिथ्या किञ्चित् त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो, निशुम्भश्चापि तादृशः नमो श्रीं ऐं ॐ॥३७७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलै-होमः।

* * *

३७८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'किं त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, फ्रें वीजं, श्रीविकृति शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविकृति-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणायः नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
किं त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मिथ्या तत् क्रियते कथं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रतिज्ञा या कृता पुरा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रेयस्करि! प्रणत-वत्सलता त्वयाति वाचं,**
शृणोषि सरलां सरसां च सत्याम्।
भक्त्या नतोऽस्मि विनतोऽस्मि सुमङ्गले!
त्वत्-पादाम्बुजे प्रणिहिते मयि सन्निधित्वम्॥

ॐ ऐं फ्रें नमः किं त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं, मिथ्या तत् क्रियते कथं?
श्रूयतामल्प - बुद्धित्वात्, प्रतिज्ञा या कृता पुरा नमो फ्रें ऐं ॐ॥३७८

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-मांस-घृतैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३७६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'यो मां जयति संग्रामे'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, रूं वीजं, श्रीसुकृति शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति (अग्नि-प्रधान) कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुकृति-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणायः नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति (अग्नि-प्रधान)-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यो मां जयति संग्रामे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यो मे दर्पं व्यपोहति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यो मे प्रति-बलो लोके	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स मे भर्त्ता भविष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आताम्रार्क-सहस्र-दीप्ति-परमा सौन्दर्य-सौर-रत्नम्,**
लोकातीत - महोदयैरुपयुता सर्वोपमा - गोचरैः।
नानानर्घ्य-विभूषणैरगणितै र्जाज्वल्यमानाचिरम्,
संग्रामस्य जयेन निश्चित-वधूर्भर्त्ता सदा पातु माम्॥

ॐ ऐं रूं नमः यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्ता भविष्यति नमो रूं ऐं ॐ॥३७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-पायस-मांस-घृतैर्होमः, पालाश-खदिर-समिधा।

* * *

३८०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'तदाऽऽगच्छतु'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अशीति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, च्छूं बीजं, श्रीविश्वकृति शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, मोह रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति (अग्नि-प्रधान) कला, ऐं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त चतुर्थ-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहासरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, च्छूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविश्वकृति-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणायः नमः अन्तरारे —मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, मोह-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं च्छूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तदाऽऽगच्छतु शुम्भोऽत्र	मध्यमाभ्यां वौषट्	शिखायै वौषट्
निशुम्भो वा महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मां जित्वा किं चिरेणात्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पाणिं गृह्णातु मे लघु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आताम्रार्क-सहस्र-दीप्ति-परमा सौन्दर्य-सौर-रत्नम्,**

लोकातीत - महोदयैरुपयुता सर्वोपमा - गोचरैः।

नानानर्घ्य-विभूषणैरगणितै र्जाज्वल्यमानाचिरम्,

संग्रामस्य जयेन निश्चित-वधूर्काली सदा पातु माम्।।

ॐ ऐं च्छूं नमः तदाऽऽगच्छतु शुम्भोऽत्र, निशुम्भो वा महाऽसुरः।

मां जित्वा किं चिरेणात्र, पाणिं गृह्णातु मे लघु नमो च्छूं ऐं ॐ।।३८०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश-समिधा।

* * *

३८१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दूत उवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एकाशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ल्हूं वीजं, श्रीसृष्टि शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उन्माद रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसृष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उन्माद-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ल्हूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ल्हूं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दूत उवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभां पूर्ण-विम्बाधर-स्मेर-वक्त्रारविन्द-श्रियं ते।**
सु-नासा-पुटं पद्म-पत्रायताक्षीं स्थिता दर्शने दूत-सुग्रीवकस्य॥

ॐ ऐं ल्हूं नमः दूत उवाच नमो ल्हूं ऐं ॐ॥३८१॥

१०००/ जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः।

* * *

३८२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अवलिप्ताऽसि मैवं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्व्यशीति-मन्त्रस्य श्रीसुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, कं वीजं, श्रीस्थिति शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, उन्माद रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्व्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, कं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्थिति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उन्माद-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे— गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्व्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं कं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवि! ब्रूहि ममाग्रतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गायत्री सशिरास्तुरीय-सहिता सन्ध्या-मयीत्यागमै—**

राख्याता त्रिपुरे! त्वमेव महतां शर्म-प्रदा कर्मणाम्।

तत्तद्-दर्शन-मुख्य-शक्तिरपि च त्वं ब्रह्म-कर्मेश्वरी,

अन्न-प्राण-मनो-प्रबोध-परमा युद्ध-प्रिया कालिका॥

ॐ ऐं कं नमः अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं, देवि! ब्रूहि ममाग्रतः।

त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः नमो कं ऐं ॐ॥३८२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः, पालाश-खदिर-काष्ठैश्च समिधा।

* * *

३८३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'अन्येषामपि दैत्यानां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्रस्य श्री सुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, द्रें बीजं, श्रीसंहति शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उन्माद रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसंहति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उन्माद-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अन्येषामपि दैत्यानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्वे देवा न वै युधि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
किं पुनः स्त्री त्वमेकिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गायत्री सशिरास्तुरीय-सहिता सन्ध्या-मयीगत्यागमै—**
राख्याता त्रिपुरे! त्वमेव महतां शर्म-प्रदा कर्मणाम्।
तत्तद्-दर्शने-मुख्य-शक्तिरपि च त्वं ब्रह्म-कर्मेश्वरी,
अन्न-प्राण-मनो-प्रबोध-परमा युद्ध-प्रिया कालिका।।

ॐ ऐं द्रें नमः अन्येषामपि दैत्यानां, सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि! किं पुनः स्त्री त्वमेकिका नमो द्रें ऐं ॐ।।३८३।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः, पालाश-खदिर-काष्ठैश्च समिधा।

* * *

३८४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इन्द्राद्याः सकला देवाः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्रस्य श्रीसुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं वीजं, श्रीसन्ध्या शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उन्माद रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसन्ध्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उन्माद-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ श्रीं नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इन्द्राद्याः सकला देवाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तस्थुर्येषां न संयुगे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शुम्भादीनां कथं तेषां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गायत्री सशिरास्तुरीय-सहिता सन्ध्या - मयीत्यागमै—**
राख्याता त्रिपुरे! त्वमेव महतां शर्म-प्रदा कर्मणाम्।
तत्तद्-दर्शने-मुख्य-शक्तिरपि च त्वं ब्रह्म-कर्मेश्वरी,
अन्न-प्राण-मनो-प्रबोध-परमा युद्ध-प्रिया कालिकाः॥

ॐ ऐं श्रीं नमः इन्द्राद्या सकला देवाः, तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां, स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् नमो श्रीं ऐं ॐ।।।३८४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः, पालाश-खदिर-काष्ठैश्च समिधा।

* * *

३८५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशीति मन्त्रस्य श्रीसुग्रीव ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सां बीजं, श्रीवन्द्या शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, उन्माद रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुग्रीव-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवन्द्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणायः नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, उन्माद-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
केशाकर्षण-निर्धूत-	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गौरवा मा गमिष्यसि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **गायत्री सशिरास्तुरीय-सहिता सन्ध्या-मयीत्यागमै—**

राख्याता त्रिपुरे! त्वमेव महतां शर्म-प्रदा कर्मणाम्।

तत्तद्-दर्शन-मुख्य-शक्तिरपि च त्वं ब्रह्म-कर्मेश्वरी,

अन्न-प्राण-मनो-प्रबोध-परमा युद्ध-प्रिया कालिका॥

ॐ ऐं सां नमः सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता, पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः।

केशाकर्षण - निर्धूत - गौरवा मा गमिष्यसि नमो सां ऐं ॐ॥३८५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः, पालाश-खदिर-काष्ठैश्च समिधा।

* * *

३८६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षडशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रीं वीजं, श्रीत्रिशूलिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, हास्य रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षडशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये: नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिशूलिनी-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, हास्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षडशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ॥३८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिलैर्होमः, पालाश-खदिर-काष्ठैश्च समिधा।

* * *

३८७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एवमेतद् बली शुम्भो'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ऐं वीजं, श्रीवाणा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, हास्य रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऐं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीबाणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, हास्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य स्वराय नमः चेतसि, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवमेतद् बली शुम्भो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निशुम्भश्चाति-वीर्य-वान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
किं करोमि प्रतिज्ञा मे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यदनालोचिता पुरा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— अये मातर्लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,
लुठन्तं बालं मामविरल-गलद्-वाष्प-जटिलम्।
सुधा-सेक-स्निग्धैरति-मसृण-मुग्धैः कर-तलैः,
समस्ता रत्नानि हत-विषय-शुम्भं जहि सदा॥

ॐ ऐं ऐं नमः एवमेतद् बली शुम्भो, निशुम्भश्चाति-वीर्य-वान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे, यदनालोचिता पुरा नमो ऐं ऐं ॐ॥३८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-तिलैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

३८८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'स त्वं गच्छ मयोक्तं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्रीं बीजं, श्रीपाशिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी-महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, हास्य रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, आकर्षिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपाशिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, हास्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य स्वराय नमः चेतसि, वायु-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आकर्षिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सं त्वं गच्छ मयोक्तं ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यदेतत् सर्वमादृतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स च युक्तं करोतु तत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अये मातर्लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
लुठन्तं बालं मामविरल-गलद्-वाष्प-जटिलम्।
सुधा-सेक-स्निग्धैरति-मसृण-मुग्धैः कर-तलैः,
समस्ता रत्नानि हत-विषय-शुम्भं जहि सदा।।

ॐ ऐं स्क्रीं नमः स त्वं गच्छ मयोक्तं ते, यदेतत् सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय, स च युक्तं करोतु तत् नमो स्क्रीं ऐं ॐ।।३८८।।

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-मांस-घृतैर्होमः, पालाश समिधा।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये देव्या दूत-सम्वादो नाम पञ्चमोऽध्यायः।।५।।
श्लोकाः ७६, उवाच-मन्त्राः ९, एवमादितो ३८८।।

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्री आदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

षष्ठ अध्याय

३८६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य नवाशीति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रौं बीजं, श्रीवादिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवादिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥३८६॥**

१००० जपात् सिद्धिः मांस-युत-हव्यैर्होमः

* * *

३६०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'इत्याकर्ण्य वचो देव्याः'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य नवति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ॐ वीजं, श्रीवन्दिनी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ॐ वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवन्दिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्याकर्ण्य वचो देव्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स दूतोऽमर्ष-पूरितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समाचष्ट समागम्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दैत्य-राजाय विस्तरात्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा-योनि-रमा-सुरेश्वर-सुहल्लेखाभिरुक्तैस्तथा,**
मार्तण्डेन्दु - मनोज - हंस - वसुधा-मायाभिरुतं सितैः।
सोमाम्बु-क्षिति-शक्तिभिः प्रकटितैर्वाणाङ्ग-वेदैः,
क्रमात् वर्णैः श्रीहरि-सेवकेन विदितां विद्यां श्रियं भावये।।

ॐ ऐं ॐ नमः इत्याकर्ण्य वचो देव्याः, स दूतोऽमर्ष-पूरितः।
समाचष्ट समागम्य, दैत्य - राजाय विस्तरात् नमो ॐ ऐं ॐ।।३६०।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस, पालाश-बन्धूक-पुष्पादिभि र्होमः।

* * *

३६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्य दूतस्य तद्-वाक्यं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य एक-नवति मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, त्रूं बीजं, श्रीवज्र-रूपा शक्तिः, श्रीकाली-महा-विद्या, तमो-गुणः, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियं, वीर-रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवज्र-रूपा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्य दूतस्य तद्-वाक्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आकर्ण्याऽसुर-राट् ततः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स क्रोधः प्राह दैत्यानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अधिपं धूम्र-लोचनं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आधैरग्नि-रवीन्दु-बिम्ब-निलयैरम्ब! त्रि-लिङ्गात्मभि-**
मिश्रा रक्तासित - प्रभैरनुपमैर्युष्मत् - पदैस्तैस्त्रिभिः।
स्वात्मोत्पादित-काल-लोक-निगमावस्थामरादि-त्रयै-
रुद्भूतं शिव-कालिकेति कलयेद् यस्ते स धन्यो नरः॥

ॐ ऐं त्रूं नमः तस्य दूतस्य तद्-वाक्यमाकर्ण्याऽसुर-राट् ततः।
स - क्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्र - लोचनं नमो त्रूं ऐं ॐ॥३६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिल-बन्धूक-पुष्पादिभिर्होमः।

* * *

३६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हे धूम्र-लोचनाशु त्वं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-नवति-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रौं बीजं, श्रीशुचि-व्रता शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्री शुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशुचि-व्रता-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य द्वि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हे धूम्र-लोचनाशु त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्व-सैन्य-परिवारितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तामानय बलाद् दुष्टां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
केशाकर्षण-विह्वलां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आधैरग्नि-रवीन्दु-बिम्ब-निलयैरम्ब! त्रि-लिङ्गात्मभि-**
मिश्रा रक्तासित - प्रभैरनुपमैर्युष्मत् - पदैस्तैस्त्रिभिः।
स्वात्मोत्पादित-काल-लोक-निगमावस्थामरादि-त्रयै-
रुद्भूतं शिव-कालिकेति कलयेद् यस्ते स धन्यो नरः॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः हे धूम्र-लोचनाशु त्वं, स्व-सैन्य-परिवारितः।
तामानय बलाद् दुष्टां, केशाकर्षण-विह्वलां नमो ह्रौं ऐं ॐ॥३६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिल-बन्धूक-पुष्पादिभिर्होमः।

* * *

३९३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तत्-परित्राणदः कश्चिद्'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्री महा-लक्ष्मी देवता, क्रौं वीजं, श्रीवरदा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्लीं श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवरदा-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्लीं श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य त्रि-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तत्-परित्राणदः कश्चिद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स हन्तव्योऽमरो वापि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यक्षो गन्धर्व एव वा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्म-योनि-रमा-सुरेश्वर-सुहल्लेखाभिरुक्तैस्तथा,**

मार्तण्डेन्दु - मनोज - हंस - वसुधा-मायाभिरुतं सितैः।

सोमाम्बु-क्षिति-शक्तिभिः प्रकटितैर्वाणाङ्ग-वेदैः,

क्रमात् वर्णैः श्रीहरि-सेवकेन विदितां विद्यां श्रियं भावये॥

ॐ ऐं क्रौं नमः तत्-परित्राणदः कश्चिद्, यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।

स हन्तव्योऽमरो वापि, यक्षो गन्धर्व एव वा नमो क्रौं ऐं ॐ॥३९३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-पलाश-बन्धूक-पुष्पादिभिर्होम।

* * *

३९४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्री महा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीवागीशी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवागीशी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ।।३९४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-युत-हव्यैर्होमः।

* * *

३६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, त्रीं बीजं, श्रीविद्या शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, क्लीं श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, क्लीं श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स दैत्यो धूम्र-लोचनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृतः षष्ट्या सहस्राणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असुराणां द्रुतं ययौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं त्रीं नमः तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं, स दैत्यो धूम्र-लोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ नमो त्रीं ऐं ॐ॥३६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-पायस-तिल-बन्धूक-पुष्पादिभिर्होमः।

* * *

३६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स दृष्ट्वा तां'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य षण्णवति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं बीजं, क्रीं शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षण्णवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्रीं शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य षण्णवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स दृष्ट्वा तां ततो देवीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तुहिनाचल-संस्थितां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जगादोच्चैः प्रयाहीति	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **तप्त-स्वर्ण-कृतोरु-कुण्डल-युगं माणिक्य-मुक्तोल्लसद्—**

हीरा - बद्धमनन्य - तुल्यमपरं हैमं च चक्र-द्वयम्।

शुक्राकार - निकार-दक्षमपरं मुक्ता-फलं सुन्दरम्,

बिभ्रत् कर्ण-युगं स -कालि वरदा धूम्रादि-सम्मर्दिनीम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः स दृष्ट्वा तां ततो देवीं, तुहिनाचल-संस्थिताम्।

जगादोच्चैः प्रयाहीति, मूलं शुम्भ - निशुम्भयोः नमो क्लीं ऐं ॐ॥३६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-बन्धूक-कुसुमैर्होमः।

* * *

३६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'न चेत् प्रीत्याऽद्य'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्रीधूम्र-लोचन ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्रीं वीजं, क्रीं शक्तिः, श्री ज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीधूम्र-लोचन-ऋषये नमः सहस्रारे— शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, क्रीं शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीज्येष्ठा- महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
न चेत् प्रीत्याऽद्य भवती	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मद्-भर्त्तारमुपैष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततो बलान्नयाम्येष	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
केशाकर्षण-विह्वलां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **तप्त-स्वर्ण-कृतोरु-कुण्डल-युगं माणिक्य-मुक्तोल्लसद्—**
हीरा - बद्धमनन्य - तुल्यमपरं हैमं च चक्र - द्वयम्।
शुक्राकार - निकार - दक्षमपरं मुक्ता-फलं सुन्दरम्,
विभ्रत् कर्ण-युगं स-कालि वरदा धूम्रादि-सम्मर्दिनीम्।।

ॐ ऐं प्रीं नमः न चेत् प्रीत्याऽद्य भवती, मद्-भर्त्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष, केशाकर्षण - विह्वलाम् नमो प्रीं ऐं ॐ।।३६७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-बन्धूक-कुसुमैर्होमः।

* * *

३६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषि, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, ऐं शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, ऐं शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ।।३६८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-बन्धूक-कुसुमैर्होमः।

* * *

३६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दैत्येश्वरेण प्रहितो'** इति सप्तशती-चतुर्थ-शतकस्य नव-नवति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं वीजं, क्लीं शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्लीं शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयो, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दैत्येश्वरेण प्रहितो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बल-वान् बल-सम्वृतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बलान्नयसि मामेवं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततः किं ते करोम्यहं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सरस्वतीं नमस्यामि चेतनां हृदि संस्थिताम्।**
कण्ठस्थां कल-भाषां च ऐङ्कारां ह्रीं-फल-प्रदाम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः दैत्येश्वरेण प्रहितो, बल-वान् बल-सम्वृतः।
बलान्नयसि मामेवं, ततः किं ते करोम्यहम् नमो ह्रौं ऐं ॐ॥३६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, पायस-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

४००

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-चतुश्शत-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, क्लीं शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, विद्या कला, क्लीं श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुश्शत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, क्लीं शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्लीं श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयो, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-चतुर्थ-शतकस्य चतुश्शत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यास	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ।।४००।।**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-युत-हव्यैर्होमः।

* * *

४०१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य प्रथम-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा - लक्ष्मी देवता, ऐं बीजं, श्री शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा - विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य प्रथम-मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऐं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवतीं-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्युक्तः सोऽभ्यधावत् तां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुरो धूम्र-लोचनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हुङ्कारेणैव तं भस्म	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सा चकाराम्बिका ततः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— पाशं प्रपूरित-महा-सुमति-प्रकाशो, यो वा तव त्रिपुर-सुन्दरि सुन्दरीणाम्।
आकर्षणोऽखिल-वशीकरणे प्रवीणा, हुङ्कार-धार-प्रलयं गतो धूम्र-चक्षुः॥

ॐ ऐं ऐं नमः इत्युक्तः सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्र-लोचनः।
हुङ्कारेणैव तं भस्म, सा चकाराम्बिका ततः नमो ऐं ऐं ॐ॥४०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अथ क्रुद्धं महा-सैन्यं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, औं वीजं, श्रीपुष्टि शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीपुष्टि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अथ क्रुद्धं महा-सैन्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराणां तथाऽम्बिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा शक्ति-परश्वधैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अथ तव धनुः पुण्ड्रेक्षुत्वात् प्रसिद्धमति-द्युति-**

त्रिभुवन - वधूमुखज्योत्स्ना कला - निधि-मण्डलम्।

सकल - जननि स्मारं स्मारं गतः स्मरताम्,

नरस्त्रिभुवन-वधू मोहाम्भोधेः जघान च तद्-बलम्।।

ॐ ऐं औं नमः अथ क्रुद्धं महा-सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका।

ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैः तथा शक्ति-परश्वधैः नमो औं ऐं ॐ।।४०२।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो धुत-सटः कोपात्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, श्रीं बीजं, श्रीप्रज्ञा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीप्रज्ञा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो धुत-सटः कोपात्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृत्वा नादं सु-भैरवं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पपाताऽसुर-सेनायां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सिंहो देव्याः स्व-वाहनः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— अथ तव धनुः पुण्ड्रेक्षुत्वात् प्रसिद्धमति-द्युति-
त्रिभुवन - वधूमुधज्योत्स्ना कला - निधि-मण्डलम्।
सकल - जननि स्मारं स्मारं गतः स्मरताम्,
नरस्त्रिभुवन-वधू मोहाम्भोधेः जघान च तद्-बलम्।।

ॐ ऐं श्रीं नमः ततो धुत-सटः कोपात्, कृत्वा नादं सु-भैरवम्।
पपाताऽसुर-सेनायां, सिंहो देव्याः स्व - वाहनः नमो श्रीं ऐं ॐ।।४०३।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कांश्चित् कर-प्रहारेण'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्री वाजसनेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रां वीजं, श्रीसिनीवाली शक्तिः, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवाजसनेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीसिनीवाली-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कांश्चित् कर-प्रहारेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दैत्यानास्येन चापरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आक्रान्त्य चाधरेणान्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स जघान महाऽसुरान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अथ तव धनुः पुण्ड्रेक्षुत्वात् प्रसिद्धमति-द्युति-**

त्रिभुवन - वधूमुग्धज्योत्स्ना कला - निधि-मण्डलम्।

सकल - जननि स्मारं स्मारं गतः स्मरताम्,

नरस्त्रिभुवन-वधू मोहाम्भोदेः जघान च तद्-बलम्।।

ॐ ऐं क्रां नमः कांश्चित् कर - प्रहारेण, दैत्यानास्येन चापरान्।

आक्रान्त्य चाधरेणान्यान्, स जघान महाऽसुरान् नमो क्रां ऐं ॐ।।४०४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'केषाञ्चित् पाटयामास'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्री वाजसनेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, हूं बीजं, श्रीकुहू शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवाजसनेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकुहू-शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
केषाञ्चित् पाटयामास	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नखैः कोष्ठानि केसरी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथा तल-प्रहारेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिरांसि कृतवान् पृथक्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अथ तव धनुः पुण्ड्रेक्षुत्वात् प्रसिद्धमति-द्युति-**

त्रिभुवन - वधूमुग्धज्योत्स्ना कला-निधि-मण्डलम्।

सकल-जननि स्मारं स्मारं गतः स्मरताम्,

नरत्रिभुवन-वधू मोहाम्भोधेः जघान च तद्-बलम्।।

ॐ ऐं हूं नमः केषाञ्चित् पाटयामास, नखैः कोष्ठानि केसरी।

तथा तल - प्रहारेण, शिरांसि कृतवान् पृथक् नमो हूं ऐं ॐ।।४०५।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विच्छिन्न-बाहु-शिरसः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्रस्य श्री वाजसनेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, छ्रां वीजं, श्रीरुद्र-वीर्या शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवाजसनेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, छ्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरुद्र-वीर्या-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्री ज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं छ्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विच्छिन्न-बाहु-शिरसः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृतास्तेन तथाऽपरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पपौ च रुधिरं कोष्ठाद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अन्येषां धुत-केसरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अथ तव धनुः पुण्ड्रेक्षुत्वात् प्रसिद्धमति-द्युति-**
त्रिभुवन - वधूमुग्धज्योत्स्ना कला - निधि-मण्डलम्।
सकल-जननि स्मारं स्मारं गतः स्मरताम्,
नरस्त्रिभुवन-वधू मोहाम्भोधेः जघान च तद्-बलम्।।

ॐ ऐं छ्रां नमः विच्छिन्न-बाहु-शिरसः, कृतास्तेन तथाऽपरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुत-केसरः नमो छ्रां ऐं ॐ।।४०६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-रक्त-पलाश-तिलैर्होमः।

* * *

४०७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'क्षणेन तद्-बलं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य वाजसनेय ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, क्ष्म्क्लीं बीजं, श्रीप्रभा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवाजसनेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्क्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्री प्रभा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्न-मस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षणेन तद्-बलं सर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षयं नीतं महात्मना	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तेन केसरिणा देव्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाहनेनाति-कोपिना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यः स्वान्ते कलयति कोविदस्त्रिलोकी-स्तम्भारम्भण-चणमत्युदार-वीर्यम्।**
मातस्ते विजय-निजांकुशं स-योषा देवांस्तम्भयति च धूम्र-लोचन-सैन्यम्॥

ॐ क्ष्मक्लीं नमः क्षणेन तद् बलं सर्वं, क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या, वाहनेनाति-कोपिना नमो क्ष्म्क्लीं ऐं ॐ॥४०७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-पायस-सुशाल्योदनेन होमः।

* * *

४०८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'श्रुत्वा तमसुरं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, ल्लुं बीजं, श्रीपोषिणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपोषिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्लुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रुत्वा तमसुरं देव्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निहतं धूम्र-लोचनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बलं च क्षयितं कृत्स्नं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवी-केसरिणा ततः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं ल्लुं नमः श्रुत्वा तमसुरं देव्या, निहतं धूम्र-लोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं, देवी-केसरिणा ततः नमो ल्लुं ऐं ॐ।।४०८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चुकोप दैत्याधिपतिः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सौः बीजं, श्रीहृद्-विदा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौः वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीहृद्-विदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः पादयोः, मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चुकोप दैत्याधिपतिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शुम्भः प्रस्फुरिताधरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आज्ञपयामास च तौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चण्ड-मुण्डौ महाऽसुरौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कुरंगे तरंगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराले मभेदे महोक्षाधि - रूढाम्।**
महत्यां नवम्यां सदा साम-रूपां भजे युद्ध-लीलार्थ-शुम्भादि-मोक्त्रीम्॥

ॐ ऐं सौः नमः चुकोप दैत्याधिपतिः, शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञपयामास च तौ, चण्ड-मुण्डौ महाऽसुरौ नमो सौः ऐं ॐ॥४०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४१०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हे चण्ड! हे मुण्ड!'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्री शुम्भ ऋषिः, श्री महालक्ष्मी देवता, ह्लौं वीजं, श्रीनन्दजा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायुः तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं. क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनन्दजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हे चण्ड! हे मुण्ड! बलैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बहुभिः परि-वारितौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत्र गच्छत गत्वा च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सा समानीयतां लघु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते, पात्यत्ति च हरिर्हरः।**
यस्य प्रसादादीशोऽहं, तां लक्ष्मीं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं ह्लौं नमः हे चण्ड! हे मुण्ड! बलैर्बहुभिः परि-वारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च, सा समानीयतां लघु नमो ह्लौं ऐं ॐ॥४१०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४११

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'केशेष्वाकृष्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकादश-मन्त्रस्य श्रीनिशुम्भ ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रूं वीजं, श्रीकाल-रात्रि शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, तमो-गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्निः तत्त्वं, विद्या-कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीनिशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकाल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यदि वः संशयो युधि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदाऽशेषायुधै सर्वैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असुरैर्विनिहन्यतां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सु-सीमन्त-वेणीं दृशा निर्जितैणीं, रणत्-कीर-वाणीं नमद्-वज्र-पाणिम्।**
मुद्राऽचिन्त्य - वेणीं गृहीतुं स चण्डोऽसुरैर्वेष्ट्यमानां भजे कालिकाम्बाम्॥

ॐ ऐं क्रूं नमः केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा, यदि वः संशयो युधि।
तदाऽशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् नमो क्रूं ऐं ॐ॥४११॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४१२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्यां हतायां'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्री निशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सौं बीजं, श्रीमहा-रात्रि शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीनिशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमहा-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्यां हतायां दुष्टायां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सिंहे च विनिपातिते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गृहीत्वा तामथाम्बिकां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ललामाङ्क-फालां लसद्-गान-लोलां स्व-भक्तैक-पालां यशः-श्री-कपोलाम्।**
करे त्वक्ष - मालां कनत् - प्रत्न - लोलां भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम्॥

ॐ ऐं सौं नमः तस्यां हतायां दुष्टायां, सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा, गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् नमो सौं ऐं ॐ॥४१२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये धूम्र-लोचन-वधो नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥
(श्लोकाः २०, उवाच-मन्त्राः ४, एवमादितो ४१२)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

सप्तम अध्याय

४१३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, श्री देव-रात्रि शक्तिः, श्रीभैरवी महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदेवरात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥४१३॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांस-तिलैर्होमः।

* * *

४१४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आज्ञप्तास्ते ततो'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, कुं बीजं, श्रीमोह-रात्रि शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, कुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमोह-रात्रि शक्त्यै नमः दशारे— नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं कुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्ड-मुण्ड-पुरोगमाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चतुरङ्ग-बलोपेता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ययुरभ्युद्यतायुधाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते पात्यत्ति च हरिर्हरः।**
यस्य प्रसादादीशोऽहं तां लक्ष्मीं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं कुं नमः आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याः, चण्ड-मुण्ड-पुरोगमाः।
चतुरङ्ग - बलोपेता, ययुरभ्युद्यतायुधाः नमो कुं ऐं ॐ॥४१४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४१५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ददृशुस्ते ततो'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, ल्हीं वीजं, श्रीदिव्य-रात्रि शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महाविद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदिव्य-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ददृशुस्ते ततो देवीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ईषद्धासां व्यवस्थितां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सिंहस्योपरि शैलेन्द्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शृङ्गे महति काञ्चने	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या माता मधु - कैटभादि-दलनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण - चण्ड-मुण्ड-मथनी या रक्त-बीजाशनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलनी या सिद्धि-दात्री परा,
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्र-शृङ्गे महति काञ्चने नमो ल्हीं ऐं ॐ॥४१५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैः होमः।

* * *

४१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ते दृष्ट्वा तां'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ह्रं वीजं, श्रीदारुणा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदारुणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ते दृष्ट्वा तां समादातुं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
उद्यमं चक्रुरुद्यताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आकृष्ट-चापाऽसि-धरां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथाऽन्ये तत्-समीपगाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा-योनि-रमा-सुरेश्वर-सुहल्लेखाभिरुक्तैस्तथा,**
मार्तण्डेन्दु - मनोज - हंस - वसुधा-मायाभिरुतं सितैः।
सोमाम्बु-क्षिति-शक्तिभिः प्रकटितैर्वाणाङ्ग-वेदैः,
क्रमात् वर्णैः श्रीहरि-सेवकेन विदितां विद्यां श्रियं भावये॥

ॐ ऐं ह्रं नमः ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्ट-चापाऽसि-धरास्तथाऽन्ये तत्-समीपगाः नमो ह्रं ऐं ॐ॥४१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, छाग-पायस-घृतैः होमः।

* * *

४१७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः कोपं चकारोच्चैः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्तदश-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, मूं वीजं, श्रीभद्रकाली शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, मूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभद्रकाली-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्तदश मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं मूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः कोपं चकारोच्चैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अम्बिका तानरीन् प्रति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कोपेन चास्या वदनं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मसी-वर्णमभूत् तदा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **माता देवि! त्वमसि भगवान् वासुदेवः पिता मे,**
जातः सोऽहं जननि! युवयोरेक - लक्ष्यं दयायाः।
दत्तो युष्मत् परिजन - तया देशिकैरप्यतस्त्वं,
किं ते भूयः प्रियमिति किल स्मेर-वक्त्रा च क्रुद्धा॥

ॐ ऐं मूं नमः ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं, मसी-वर्णमभूत तदा नमो मूं ऐं ॐ॥४१७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिलैर्होमः।

* * *

४१८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भ्रुकुटी-कुटिलात्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-दश-मन्त्रस्य श्रीक्रौञ्चिकी ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, त्रौं वीजं, श्रीकपालिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीक्रौञ्चिकी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकपालिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भ्रुकुटी-कुटिलात् तस्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ललाट-फलकाद् द्रुतं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
काली कराल-वदना	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं त्रौं नमः भ्रुकुटी-कुटिलात् तस्या, ललाट-फलकाद् द्रुतम्।
काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी नमो त्रौं ऐं ॐ॥४१८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विचित्र-खट्वाङ्ग-धरा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंश-मन्त्रस्य श्रीक्रौञ्चिकी ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्रौं वीजं, श्रीशिवा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीक्रौञ्चिकी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशिवा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विचित्र खट्वाङ्ग-धरा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नर-माला-विभूषणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
द्वीपि-चर्म-परीधाना	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शुष्क-मांसाऽति-भीषणा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः विचित्र - खट्वाङ्ग-धरा, नर-माला-विभूषणा।
द्वीपि-चर्म-परीधाना, शुष्क-मांसाऽति-भीषणा नमो ह्रौं ऐं ॐ॥४१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४२०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अति-विस्तार-वदना'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीक्रौञ्चिकी ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ॐ वीजं, श्रीदुर्गा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीक्रौञ्चिकी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ॐ बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अति-विस्तार-वदना	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जिह्वा-ललन-भीषणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निमग्राऽऽरक्त-नयना	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नादाऽऽपूरित-दिङ्-मुखा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली।।

ॐ ऐं ॐ नमः अति - विस्तार - वदना, जिह्वा-ललन-भीषणा।
निमग्राऽऽरक्त-नयना, नादाऽऽपूरित-दिङ्-मुखा नमो ॐ ऐं ॐ।।४२०।।

१००० जपः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४२१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सा वेगेनाभि-पतिता'** इति सप्तशती पञ्चम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, ह्सूं वीजं, श्रीशिवा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीशिवा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा वेगेनाभि-पतिता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
घातयन्ती महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सैन्ये तत्र सुरारीणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अभक्षयत् तद्-बलम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं ह्सूं नमः सा वेगेनाभि-पतिता, घातयन्ती महाऽसुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत् तद् - बलम् नमो ऐं ह्सूं ॐ॥४२१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४२२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पार्ष्णि-ग्राहांकुश-ग्राह'** इति सप्तशती पञ्चम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीजिह्वा-वान् ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्लूं वीजं, श्रीनादिनी शक्ति, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीजिह्वा-वान्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनादिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पार्ष्णि-ग्राहांकुश-ग्राहि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
योध-घण्टा-समन्वितान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समादायैक-हस्तेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुखे चिक्षेप वारणान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली।।

ॐ ऐं क्लूं नमः पार्ष्णि-ग्राहांकुश-ग्राहि-योध-घण्टा-समन्वितान्।
समादायैक - हस्तेन, मुखे चिक्षेप वारणान् नमो ऐं क्लूं ॐ।।४२२।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४२३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तथैव योधं तुरगै'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्रस्य श्रीजिह्वा-वान् ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, क्रें वीजं, श्रीचामुण्डा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-विंशति मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीजिह्वा-वान्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचामुण्डा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथैव योधं तुरगै	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रथं सारथिना सह	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चर्वयन्त्यति-भैरवं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं क्रें नमः तथैव योधं तुरगै, रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यति-भैरवम् नमो क्रें ऐं ॐ॥४२३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४२४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एकं जग्राह केशेषु'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्रस्य श्रीमाण्डूक ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, नें वीजं, क्षुधा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमाण्डूक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, नें वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, क्षुधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एकं जग्राह केशेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ग्रीवायामथ चापरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पादेनाक्रम्य चैवाऽन्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उरसान्यमपोथयत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**

नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।

हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल-शिखा - सन्निभं पाश - युग्मम्,

दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं नें नमः एकं जग्राह केशेषु, ग्रीवायामथ चापरम्।

पादेनाक्रम्य चैवाऽन्यमुरसान्यमपोथयत् नमो नें ऐं ॐ॥४२४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-हव्येन होमः।

* * *

४२५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तैर्मुक्तानि'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्रीशार्दूल ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, लूं वीजं, तृषा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशार्दूल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, तृषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महाऽस्त्राणि तथाऽसुरैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मुखेन जग्राह रुषा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दशनैर्मथितान्यपि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं लूं नमः तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि, महाऽस्त्राणि तथाऽसुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा, दशनैर्मथितान्यपि नमो लूं ऐं ॐ॥४२५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बलिनां तद्-बलं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्रस्य श्रीशार्दूल ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्स्लीं बीजं, भ्रान्ति शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीशार्दूल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्स्लीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, भ्रान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्स्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
बलिनां तद्-बलं सर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराणां दुरात्मनाम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ममर्दाभक्षयच्चान्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अन्यांश्चाऽताडयत् तथा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं ह्स्लीं नमः बलिनां तद्-बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाऽताडयत् तथा नमो ह्स्लीं ऐं ॐ॥४२६॥

१०′०० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४२७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'असिना निहताः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्री वेद-भृत् ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्लूं वीजं, कान्ति शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-भृत्-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, कान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
असिना निहता केचित्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
केचित् खट्वाङ्ग-ताडिताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जग्मुर्विनाशमसुरा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दन्ताग्राभि-हतास्तथा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ॐ क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली।।

ॐ ऐं प्लूं नमः असिना निहताः केचित्, केचित् खट्वाङ्ग-ताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा, दन्ताग्राभि - हतास्तथा नमो प्लूं ऐं ॐ।।४२७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४२८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'क्षणेन तद्-बलं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्रस्य, श्री वेद-भृत् ऋषिः, श्रीमहा-काली-देवता, शां वीजं, प्रकृति शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-भृत-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शां बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, प्रकृति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षणेन तद् बलं सर्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराणां निपातितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तां कालीमति-भीषणाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— ॐ **क्षुत्-क्षामा कोटराक्षी मसि-मलिन-मुखी मुक्त-केशी हसन्ती,**
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल - शिखा - सन्निभं पाश-युग्मम्,
दन्तैर्जम्बू-फलाभा परि-हरतु भयं भद्रदा भद्र-काली॥

ॐ ऐं शां नमः क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव, तां कालीमति-भीषणां नमो शां ऐं ॐ॥४२८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शर-वर्षैर्महा-भीमैः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्रस्य श्रीवेद-भृत ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्लूं बीजं, दण्डिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महाविद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-भृत-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लूं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, दण्डिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शर-वर्षैर्महा-भीमैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भीमाक्षीं तां महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
छादयामास चक्रैश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्री-विद्ये! शिव-वाम-भाग-निलये! श्रीदेव-राजार्चिते!**

चण्डो - मुण्ड - विपक्ष - चूर्ण-विभवे सिंहासने पीठिके!

श्रीवाणी - गिरिजा-नुतांघ्रि-कमले! प्रहारानति-तीव्रे!

तेजोमयि, ज्वलज्ज्वाला-जाल-मयि! मां पाहि भीमाम्बिके।।

ॐ ऐं स्लूं नमः शर-वर्षैर्महा-भीमैः, भीमाक्षीं तां महाऽसुरः।

छादयामास चक्रैश्च, मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः नमो स्लूं ऐं ॐ।।४२६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४३०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तानि चक्राण्यनेकानि'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेघनाद ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, प्लीं बीजं, मुण्डिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेघनाद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, मुण्डिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तानि चक्राण्यनेकानि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विशमानानि तन्मुखं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बभुर्यथाऽर्क-बिम्बानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सु-बहूनि घनोदरम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालाञ्जन-श्याम-द्युति-सम-प्रभां, नीलाम्बरां शोभित-मुण्ड-मालिकाम्।**
विस्तार - सुवेशां बहु -शोभमानां, चक्रान् मुखे धृत्य सद्यः चर्वयन्तीम्।।

ॐ ऐं प्लीं नमः तानि चक्राण्यनेकानि, विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथाऽर्क-बिम्बानि, सु - बहूनि घनोदरम् नमो प्लीं ऐं ॐ।।४३०।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो जहासाति-रुषा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेघनाद ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, प्रें वीजं, इन्दुखण्डा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेघनाद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, इन्दुखण्डा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो जहासाति-रुषा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भीमं भैरव-नादिनी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
काली कराल-वक्त्रान्तः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दुर्दर्श-दशनोज्ज्वला	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालाञ्जन-श्याम-द्युति-सम-प्रभां, नीलाम्बरां शोभित-मुण्ड-मालिकाम्।**
अट्टाट्ट - हासेन चैव भीम - नादं, दशनोज्ज्वला पातु कराल-काली॥

ॐ ऐं प्रें नमः ततो जहासाति-रुषा, भीमं भैरव-नादिनी।
काली कराल - वक्त्रान्तर्दुर्दर्श-दशनोज्ज्वला नमो प्रें ऐं ॐ॥४३१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४३२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'उत्थाय च महा-सिंहं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्रस्य वाजश्रवस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, अं बीजं, श्रीशिखण्डिनी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवाजश्रवस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, अं बीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीशिखण्डिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे —कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं अं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उत्थाय च महा-सिंहं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी-चण्डमधावत	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
गृहीत्वा चास्य केशेषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिरस्तेनासिनाच्छिनत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालाञ्जन-श्याम-द्युति-सम-प्रभां, नीलाम्बरां शोभित-मुण्ड-मालिकाम्।**

करे गृह्य केशेषु च चण्ड - मुण्डं, तीव्र - प्रहारेण पृथक् - कृतां भजे।।

ॐ ऐं अं नमः उत्थाय च महा - सिंहं, देवी चण्डमधावत।

गृहीत्वा चास्य केशेषु, शिरस्तेनासिनाच्छिनत् नमो अं ऐं ॐ।।४३२।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४३३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अथ मुण्डोऽभ्यधावत्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्रस्य वाजश्रवस ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, औं वीजं, इन्द्राणी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवाजश्रवस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, इन्द्राणी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे —कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अथ मुण्डोऽभ्यधावत् तां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दृष्ट्वा चण्डं निपातितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तमप्यपातयद् भूमौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सा खड्गाभि-हतं रुषा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालाञ्जन-श्याम-द्युति-सम-प्रभां, नीलाम्बरां शोभित-मुण्ड-मालिकाम्।**
करे गृह्य केशेषु च चण्ड - मुण्डं, तीव्र - प्रहारेण पृथक् - कृतां भजे॥

ॐ ऐं औं नमः अथ मुण्डोऽभ्यधावत् तां, दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद् भूमौ, सा खड्गाभि - हतं रुषा नमो औं ऐं ॐ॥४३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-हव्येन होमः।

* * *

४३४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हत-शेषं ततः सैन्यं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीवाजश्रवस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, म्ल्रीं वीजं, श्रीसरस्वती शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवाजश्रवस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्ल्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसरस्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुस्त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्ल्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हत-शेषं ततः सैन्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दृष्ट्वा चण्डं निपातितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मुण्डं च सु-महा-वीर्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दिशो भेजे भयातुरं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कालाञ्जन-श्याम-द्युति-सम-प्रभां, नीलाम्बरां शोभित-मुण्ड-मालिकाम्।**

विस्तार - सुवेशां बहु-शोभमानां, चक्रान् मुखे धृत्य सद्यः चर्वयन्तीम्।।

ॐ ऐं म्ल्रीं नमः हत-शेषं ततः सैन्यं, दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।

मुण्डं च सु-महा-वीर्यं, दिशो भेजे भयातुरं नमो म्ल्रीं ऐं ॐ।।४३४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४३५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शिरश्चण्डस्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, श्रां वीजं, नारी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, नारी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शिरश्चण्डस्य काली च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीत्वा मुण्डमेव च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्राह प्रचण्डाट्टहास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मिश्रमभ्येत्य चण्डिकां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अन्तश्चक्रे व्रजन्तीं सकल-चराचर भूतनाथेऽलि-भूताम्।**
आर्त्तान् प्रोत्साहयन्तीं नतरु-भयदां शीर्ष-चण्डस्य धृत्वा।।
मुण्डस्येवं दधानां मलय-ध्वज-करां मिश्रमभ्येति चण्डीम्।
शुम्भादीनां वधायामितं च बल-वतीं प्रेरयन्तीं नमामि।।

ॐ ऐं श्रां नमः शिरश्चण्डस्य काली च, गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहास - मिश्रमभ्येत्य चण्डिकां नमो श्रां ऐं ॐ।।४३५।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मया तवात्रोपहतौ'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-काली ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, सौं बीजं, श्रीबाला शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षुः ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-काली-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीबाला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मया तवात्रोपहतौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्ड-मुण्डौ महा-पशू	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युद्ध-यज्ञे स्वयं शुम्भं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निशुम्भं च हनिष्यसि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अन्तश्चक्रे व्रजन्तीं सकल-चराचर भूतनाथेऽलि-भूताम्,**

आर्त्तान् प्रोत्साहयन्तीं नतरु-भयदां शीर्ष-चण्डस्य धृत्वा।

मुण्डस्येवं दधानां मलय-ध्वज-करां मिश्रमभ्येति चण्डीम्,

शुम्भादीनां वधायामितं च बल-वतीं प्रेरयन्तीं नमामि।।

ॐ ऐं सौं नमः मया तवात्रोपहतौ, चण्ड - मुण्डौ महा-पशू।

युद्ध-यज्ञे स्वयं शुम्भं, निशुम्भं च हनिष्यसि नमो सौं ऐं ॐ।।४३६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४३७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, श्री नारायणी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनारायणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वांगे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥४३७॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४३८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तावानीतौ ततो'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-त्रिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, प्रीं वीजं, शङ्खिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, गुद-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य अष्ट-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, शङ्खिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वायै नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-त्रिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तावानीतौ ततो दृष्ट्वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्ड-मुण्डौ महाऽसुरौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उवाच कालीं कल्याणीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ललितं चण्डिका वचः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अन्तश्चक्रे रमन्तीं सकल - चराचर - भूत-नाथेऽलि-भूताम्,**
शोकं दारिद्रय-दुःखानल-बल-शमिनीं शीर्ष-हस्तां च दृष्ट्वा।
साऽवोचत् कालिकाम्बां परामपर-शिवां त्वं यतो चण्ड-मुण्डं,
गृह्णान् हस्ते चायाता सुर-मुनि-निकरैर्ख्यात-चामुण्ड-चण्डा॥

ॐ ऐं प्रीं नमः तावानीतौ ततो दृष्ट्वा, चण्ड-मुण्डौ महाऽसुरौ।
उवाच कालीं कल्याणीं, ललितं चण्डिका वचः नमो प्रीं ऐं ॐ॥४३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यस्माच्चण्डं च मुण्डं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य ऊन-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, हस्त्रीं वीजं, चापिनी शक्तिः, श्री-तारा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हस्त्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, चापिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हस्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीत्वा त्वमुपागता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चामुण्डेति ततो लोके	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ख्याता देवि! भविष्यसि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अन्तश्चक्रे रमन्तीं सकल - चराचर-भूत-नाथेऽलि-भूताम्,**

शोकं दारिद्र्य-दुःखानल-बल-शमिनीं शीर्ष-हस्तां च दृष्ट्वा।

साऽवोचत् कालिकाम्बां परामपर-शिवां त्वं यतो चण्ड-मुण्डं,

गृह्णान् हस्ते चायाता सुर-मुनि-निकरैर्ख्यात-चामुण्ड-चण्डा।।

ॐ ऐं ह्स्त्रीं नमः यस्माच्चण्डं च मुण्डं च, गृहीत्वा त्वमुपागता।

चामुण्डेति ततो लोके, ख्याता देवि! भविष्यसि नमो ह्स्त्रीं ऐं ॐ।।४३६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये चण्ड-मुण्ड-वधो नाम सप्तमोऽध्यायः।।७।।

(श्लोकाः २५, उवाच २, एवमादितो ४३६)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

अष्टम अध्याय

४४०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्री त्रिशूलिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिशूलिनी-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥४४०॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४४१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चण्डे च निहते'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, म्ल्व्रीं बीजं, श्रीवाणा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे —हृदि, म्ल्व्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवाणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्ल्व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चण्डे च निहते दैत्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुण्डे च विनिपातिते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बहुलेषु च सैन्येषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेक्ष-त्रयाय वौषट्
क्षयितेष्वसुरेश्वरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत-हंसे भ्रमति च गमने दक्षिणे चाक्ष-सूत्रम्।**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर-कनक-मयं पुस्तकं ज्ञान-गम्या॥
वीणां वादयन्ती स्व - कर-जपैः शास्त्र-विज्ञान-शब्दैः।
क्रीडन्ती दिव्य-स्वरूपा कर-कमल-धरा भारती सुप्रसन्ना॥

ॐ ऐं म्ल्व्रीं नमः चण्डे च निहते दैत्ये, मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु, क्षयितेष्वसुरेश्वरः नमो म्ल्व्रीं ऐं ॐ॥४४१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः कोप-पराधीन-चेताः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहाकाली देवता, प्रूं वीजं, श्रीपाशिनी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपाशिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः कोप-पराधीन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चेताः शुम्भः प्रताप-वान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उद्योगं सर्व-सैन्यानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दैत्यानामादिदेश ह	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद--दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं प्रूं नमः ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रताप-वान्।
उद्योगं सर्व - सैन्यानां, दैत्यानामादिदेश ह नमो प्रूं ऐं ॐ॥४४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि हव्येन होमः।

* * *

४४३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अद्य सर्व-बलैः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, एं बीजं, श्रीअम्बिका शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, एं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअम्बिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं एं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अद्य सर्व-बलैर्दैत्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
षडशीतिरुदायुधाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कम्बूनां चतुरशीतिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निर्यान्तु स्व-बलैर्वृताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सेवा-पूजा-नमन-विधयः सन्तु दूरे नितान्तम्,**

काद्यचित् का स्मृतिरपि पदाम्भोज-युग्मस्य तेऽम्ब!

मूकं रङ्कं कलयति सुराचार्यमिन्द्रं च वाचा,

लक्ष्म्या लोको न च कलयते तां कलेः किं दौर्लम्यम्॥

ॐ ऐं एं नमः अद्य सर्व-बलैर्दैत्याः, षडशीतिरुदायुधाः।

कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्व-बलैर्वृताः नमो एं ऐं ॐ॥४४३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४४४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कोटि-वीर्याणि'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, क्रों वीजं, श्रीखड्गिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रों वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीखड्गिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कोटि-वीर्याणि पञ्चाशद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुराणां कुलानि वै	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शतं कुलानि धौम्राणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निर्गच्छन्तु ममाज्ञया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सेवा-पूजा-नमन-विधयः सन्तु दूरे नितान्तम्,**
काद्यचित् का स्मृतिरपि पदाम्भोज-युग्मस्य तेऽम्ब!
मूकं रङ्कं कलयति सुराचार्यमिन्द्रं च वाचा,
लक्ष्म्या लोको न च कलयते तां कलेः किं दौर्लभ्यम्॥

ॐ ऐं क्रों नमः कोटि - वीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां, निर्गच्छन्तु ममाज्ञया नमो क्रों ऐं ॐ॥४४४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-हव्येन होमः।

* *·*

४४५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कालका दौर्हदा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ईं वीजं, श्रीअम्बा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ईं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीअम्बा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कालका दौर्हदा मौर्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कालकेयास्तथाऽसुराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
आज्ञया त्वरिता मम	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सेवा-पूजा-नमन-विधयः सन्तु दूरे नितान्तम्,**
काद्यचित् का स्मृतिरपि पदाम्भोज-युग्मस्य तेऽम्ब!
मूकं रङ्कं कलयति सुराचार्यमिन्द्रं च वाचा,
लक्ष्म्या लोको न च कलयते तां कलेः किं दौर्लम्यम्॥

ॐ ऐं ईं नमः कालका दौर्हदा मौर्याः, कालकेयास्तथाऽसुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु, आज्ञया त्वरिता मम नमो ईं ऐं ॐ॥४४५॥

१००० जपात् सिद्धिः। मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इत्याज्ञाप्यासुर-पतिः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्री वेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, एं वीजं, श्री अम्बालिका शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, एं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीअम्बालिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं एं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इत्याज्ञाप्यसुर-पतिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शुम्भो भैरव-शासनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निर्जगाम महा-सैन्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सहस्रैर्बहुभिर्वृतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सेवा-पूजा-नमन-विधयः सन्तु दूरे नितान्तम्,**
काचचित् का स्मृतिरपि पदाम्भोज-युग्मस्य तेऽम्ब!
मूकं रङ्कं कलयति सुराचार्यमिन्द्रं च वाचा,
लक्ष्म्या लोको न च कलयते तां कलेः किं दौर्लभ्यम्॥

ॐ ऐं एं नमः इत्याज्ञाप्यसुर-पतिः, शुम्भो भैरव-शासनः।
निर्जगाम महा - सैन्य - सहस्रैर्बहुभिर्वृतः नमो एं ऐं ॐ॥४४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४४७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आयान्तं चण्डिका'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लीं बीजं, श्रीबहुचरा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीबहुचरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तत्-सैन्यमति-भीषणं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ज्या-स्वनैः पूरयामास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धरिणी-गगनान्तरम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**
उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ॥
भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।
धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे॥

ॐ ऐं क्लीं नमः आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा, तत्-सैन्यमति-भीषणम्।
ज्या - स्वनैः पूरयामास, धरिणी - गगनान्तरम् नमो क्लीं ऐं ॐ॥४४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४४८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः सिंहो महा-नाद'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रौं बीजं, श्रीबहुचरा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीबहुचरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सिंहो महा-नाद	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
अतीव कृत-वान् नृप	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
घण्टा-स्वनेन तं नादं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अम्बिका चोप-वृंहयत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सेवा-पूजा-नमन-विधयः सन्तु दूरे नितान्तम्,**
काद्यचित् का स्मृतिरपि पदाम्भोज-युग्मस्य तेऽम्ब!
मूकं रङ्कं कलयति सुराचार्यमिन्द्रं च वाचा,
लक्ष्म्या लोको न च कलयते तां कलेः किं दौर्लभ्यम्॥

ॐ ऐं फ्रौं नमः ततः सिंहो महा-नादमतीव कृत-वान् नृप!
घण्टा-स्वनेन तं नादमम्बिका चोप-वृंहयत् नमो फ्रौं ऐं ॐ॥४४८॥

१०.०० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-धृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'धनुर्ज्या-सिंह-घण्टानां'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेघनाद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, म्लूं वीजं, श्रीवैप्रचित्ता शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेघनाद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवैप्रचित्ता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
धनुर्ज्या-सिंह-घण्टानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नादापूरित-दिङ्-मुखाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निनादैर्भीषणैः काली	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जिग्ये विस्तारितानना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्यामा श्यामा कराला विमल-वर-तनु! शम्भु-वक्षाधिरूढा,**
दिग्-वस्त्रा खड्ग-कोटि-स्खलित-खल-शिरो लीलया धारयन्ती।
वामे दक्षे वराभीः वितरण - कुशला भैरवी भीम - रूपा,
मुण्डाली रक्त - धारा - लहलह-रसना पातु काली कराली॥

ॐ ऐं म्लूं नमः धनुर्ज्या-सिंह-घण्टानां, नादापूरित-दिङ्-मुखाः।
निनादैर्भीषणैः काली, जिग्ये विस्तारितानना नमो म्लूं ऐं ॐ॥४४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तं निनादमुपश्रुत्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेघनाद ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, नों बीजं, श्रीतोयदा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, हैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेघनाद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, नों वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीतोयदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, हैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-बिलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं नों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तं निनादमुपश्रुत्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दैत्य-सैन्यैश्चतुर्दिशम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवी सिंहस्तथा काली	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स-रोषैः परिवारिताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **रक्ताक्षीं रक्त-वस्त्रां च, रक्त-चन्दन-चर्चिताम्।**
वृहन्नाद - मयीं शब्दां, शारदां प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं नों नमः तं निनादमुपश्रुत्य, दैत्य-सैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली, स-रोषैः परिवारिताः नमो नों ऐं ॐ॥४५०॥

१००० जपात् सिद्धि, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एतस्मिन्नन्तरे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीउदुम्बर ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, हूं बीज, श्रीअयोनिजा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीउदुम्बर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीअयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एतस्मिन्नन्तरे भूप	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विनाशाय सुर-द्विषाम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भवायामर-सिंहानाम्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अति-वीर्य-बलान्विताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण - वाहनं च तासामेवं स्व - देवोपमम्॥

ॐ ऐं हूं नमः एतस्मिन्नन्तरे भूप! विनाशाय सुर-द्विषाम्।
भवायामर - सिंहानामति-वीर्य-बलान्विताः नमो हूं ऐं ॐ॥४५१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीऔदुम्बर ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रौं बीजं, श्रीशताक्षी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीऔदुम्बर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीशताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथेन्द्रस्य च शक्तयः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तद्-रूपैश्चण्डिकां ययुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं फ्रौं नमः ब्रह्मेश - गुह - विष्णूनां, तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य, तद्-रूपैश्चण्डिकां ययुः नमो फ्रौं ऐं ॐ॥४५२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यस्य देवस्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीऔदुम्बर ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ग्लौं बीजं, श्रीशाकम्भरी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीऔदुम्बर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशाकम्भरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यस्य देवस्य यद् रूपं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यथा भूषण-वाहनम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तद्-वदेव हि तच्छक्तिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असुरान् योद्धुमाययौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**

उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ॥

भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।

धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः यस्य देवस्य यद् रूपं, यथा भूषण-वाहनम्।

तद् - वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ नमो ग्लौं ऐं ॐ॥४५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हसं-युक्त-विमानाग्रे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुश्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीअरुण ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्मौं बीजं, श्रीब्रह्माणी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुश्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअरुण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्मौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीब्रह्माणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुश्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्मौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हंस-युक्त-विमानाग्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
साक्ष-सूत्र-कमण्डलुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आयाता ब्रह्मणः शक्तिः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ब्रह्माणी साऽभिधीयते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**
उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ।।
भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।
धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे।।

ॐ ऐं स्मौं नमः हंस - युक्त - विमानाग्रे, साक्ष - सूत्र-कमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिः, ब्रह्माणी साऽभिधीयते नमो स्मौं ऐं ॐ।।४५४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'माहेश्वरी वृषारूढ़ा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीउद्दालक ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सौं बीजं, श्रीमाहेश्वरी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त पञ्चम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीउद्दालक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमाहेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
माहेश्वरी वृषारूढा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्रिशूल-वर-धारिणी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महाऽहि-वलया प्राप्ता	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
चन्द्र-रेखा-विभूषणा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्यामा श्यामा कराला विमल-वर-तनु! शम्भु-वक्षाधिरूढा,**
दिग्-वस्त्रा खड्ग-कोटि-स्खलित-खल-शिरो लीलया धारयन्ती।
वामे दक्षे वराभीः वितरण - कुशला भैरवी भीम - रूपा,
मुण्डाली रक्त - धारा - लहलह-रसना पातु काली कराली।

ॐ ऐं सौं नमः माहेश्वरी वृषारूढा, त्रिशूल - वर - धारिणी।
महाऽहि-वलया प्राप्ता, चन्द्र-रेखा-विभूषणा नमो सौं ऐं ॐ।।४५५।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कौमारी शक्ति-हस्ता'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षड्-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवैग्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, स्हौं बीजं, श्रीकौमारी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैग्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्हौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीकौमारी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कौमारी शक्ति-हस्ता च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मयूर-वर-वाहना	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
योद्धुमभ्याययौ दैत्यान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अम्बिका गुह-रूपिणी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्यामा श्यामा कराला विमल-वर-तनु! शम्भु-वक्षाधिरूढा,**
दिग्-वस्त्रा खड्ग-कोटि-स्खलित-खल-शिरो लीलया धारयन्ती।
वामे दक्षे वराभीः वितरण - कुशला भैरवी भीम - रूपा,
मुण्डाली रक्त - धारा - लहलह-रसना पातु काली कराली।

ॐ ऐं स्हौं नमः कौमारी शक्ति-हस्ता च, मयूर-वर-वाहना।
यौद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुह-रूपिणी नमो स्हौं ऐं ॐ।।४५६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तथैव वैष्णवी शक्तिः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्री चिक्लीत ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, श्रीवैष्णवी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचिक्लीत-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवैष्णवी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तथैव वैष्णवी शक्तिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गरुडोपरि-संस्थिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
खड्ग-हस्ताभ्युपाययौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि - संस्थिता।
शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-खड्ग-हस्ताभ्युपाययौ नमो श्रीं ऐं ॐ॥४५७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यज्ञ-वाराहमतुलं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीकहोल ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ख्सें बीजं, श्रीवाराही शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकहोल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ख्सें वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवाराही-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ख्सें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यज्ञ-वाराहमतुलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रूपं या विभ्रती हरेः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शक्तिः साप्याययौ तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाराहीं विभ्रती तनुम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं ख्सें नमः यज्ञ - वाराहमतुलं, रूपं या बिभ्रती हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र, वाराहीं बिभ्रती तनुं नमो ख्सें ऐं ॐ॥४५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४५९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नारसिंही नृसिंहस्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य ऊन-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीकौशिक ऋषिः श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्ष्म्लीं वीजं, श्रीनारसिंही शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्वं, विद्या कला, क्लीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकौशिक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीनारसिंही-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्च-शतकस्य ऊन-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नारसिंही नृसिंहस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बिभ्रती सदृशं वपुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्राप्ता तत्र सटाक्षेप	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
क्षिप्त-नक्षत्र-संहतिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः नारसिंही नृसिंहस्य, बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेप-क्षिप्त-नक्षत्र-संहतिः नमो क्ष्म्लीं ऐं ॐ॥४५९॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वज्र-हस्ता तथैवेन्द्री'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षष्टि-मन्त्रस्य श्रीजातुकर्ण ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्सीं वीजं, श्रीऐन्द्री शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, क्लीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीजातुकर्ण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्सीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीऐन्द्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्सीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वज्र-हस्ता तथैवेन्द्री	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गज-राजोपरि-स्थिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्राप्ता सहस्र-नयना	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यथा शक्रस्तथैव सा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**
नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-
याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,
रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं ल्सीं नमः वज्र-हस्ता तथैवेन्द्री, गज-राजोपरि-स्थिता।
प्राप्ता सहस्र-नयना, यथा शक्रस्तथैव सा नमो ल्सीं ऐं ॐ॥४६०॥

१००० जपात् सिद्धिः मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

४६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः परिवृतः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं वीजं, श्रीदुर्गा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीदुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः परिवृतस्ताभिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ईशानो देव-शक्तिभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**
उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ।।
भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।
धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे।।

ॐ ऐं ह्रौं नमः ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देव - शक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं, मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकां नमो ह्रौं ऐं ॐ।।४६१।।

१००० जपात्-सिद्धिः, मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

४६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो देवी-शरीरात्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, वीं वीजं, श्री भीमाक्षी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, वीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीभीमाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो देवी-शरीरात् तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विनिष्क्रान्ताऽति-भीषणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चण्डिका-शक्तिरत्युग्रा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिवा-शत-निनादिनी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्यामा श्यामा कराला विमल-वर-तनु! शम्भु-वक्षाधिरूढा,**
दिग्-वस्त्रा खड्ग-कोटि-स्खलित-खल-शिरो लीलया धारयन्ती।
वामे दक्षे वराभीः वितरण - कुशला भैरवी भीम - रूपा,
मुण्डाली रक्त - धारा - लहलह-रसना पातु काली कराली।

ॐ ऐं वीं नमः ततो देवी-शरीरात् तु, विनिष्क्रान्ताऽति-भीषणा।
चण्डिका-शक्तिरत्युग्रा, शिवा - शत-निनादिनी नमो वीं ऐं ॐ।।४६२।।

१०००, जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४६३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सा चाह धूम्र-जटिलम्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयष्षष्टि-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, लूं बीजं, श्रीत्राणकरी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीत्राणकरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा चाह धूम्र-जटिलम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ईशानमपराजिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दूत! त्वं गच्छ भगवन्!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जटा-जुटशिरो-बद्ध खड्ग-खेटक-धारिणम्।**
पद्मं चांकुश-सव्येन चेशानं दूत-रूपिणम्॥

ॐ ऐं लूं नमः सा चाह धूम्र - जटिलमीशानमपराजिता।
दूत! त्वं गच्छ भगवन्! पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः नमो लूं ऐं ॐ॥४६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुष्षष्टि मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लीं बीजं, श्रीभीमा शक्तिः, श्रीतारा महा - विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीभीमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दानवावति-गर्वितौ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ये चान्ये दानवास्तत्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युद्धाय समुपस्थिताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**

उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ।।

भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।

धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे।।

ॐ ऐं क्लीं नमः ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च, दानवावति-गर्वितौ।

ये चान्ये दानवास्तत्र, युद्धाय समुपस्थिताः नमो क्लीं ऐं ॐ।।४६४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, त्स्रों वीजं, श्रीमीनाक्षा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्स्रों वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमीनाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्स्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवाः सन्तु हविर्भुजाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यूयं प्रयात पातालम्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यदि जीवितुमिच्छथ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**

नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-

याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,

रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं त्स्रों नमः त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां, देवाः सन्तु हविर्भुजाः।

यूयं प्रयात पातालं, यदि जीवितुमिच्छथ नमो त्स्रों ऐं ॐ॥४६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बलावलेपादथ'** इति सप्तशती पञ्चम-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य, श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ब्रुं बीजं, श्रीकामाक्षा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ब्रुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्रुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
बलावलेपादथ चेद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भवन्तो युद्ध-कांक्षिणः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदाऽऽगच्छत तृप्यन्तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मच्छिवाः पिशितेन वः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जटा-जूटशिरो-बद्धः, खड्ग-खेटक-धारिणम्।**
पद्मं चांकुश - सव्येन, चेशानं दूत-रूपिणम्॥

ॐ ऐं ब्रुं नमः बलावलेपादथ चेद्, भवन्तो युद्ध-कांक्षिणः।
तदाऽऽगच्छत तृप्यन्तु, मच्छिवाः पिशितेन वः नमो ब्रुं ऐं ॐ॥४६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यतो नियुक्तो दौत्येन'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्क्लीं वीजं, श्रीकालरात्रि शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकाल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे —नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यतो नियुक्तो दौत्येन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तया देव्या शिवः स्वयं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शिव-दूतीति लोकेऽस्मिन्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततः सा ख्यातिमागता	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जटा-जूटशिरो-बद्धः, खड्ग-खेटक-धारिणम्।**
पद्मं चांकुश - सव्येन, चेशानं दूत-रूपिणम्॥

ॐ ऐं श्क्लीं नमः यतो नियुक्तो दौत्येन, तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिव-दूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता नमो श्क्लीं ऐं ॐ॥४६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तेऽपि श्रुत्वा वचो'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रूं वीजं, श्रीमहा-रात्रि शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमहा-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शर्वाख्यातं महाऽसुराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अमर्षापूरिता जग्मुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यत्र कात्यायनी स्थिता	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **क्रोध-रक्तेक्षणः शुम्भो श्रुत्वा चेशान-भाषितम्।**
युद्धायागतास्तेषां योद्धयमानामम्बिकां भजे॥

ॐ ऐं श्रूं नमः तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः, शर्वाख्यातं महाऽसुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुः, यत्र कात्यायनी स्थिता नमो श्रूं ऐं ॐ॥४६८॥

१०.०० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृत-हव्येन होमः।

* * *

४६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः प्रथममेवाग्रे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रीं वीजं, श्रीमोह-रात्रि शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रवृत्ति प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमोह-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः प्रथममेवाग्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शर-शक्त्यृष्टि-वृष्टिभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ववर्षुरुद्धतामर्षाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तां देवीममरारयः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **युद्धे सर्व-नयेष्वपि प्रति-भटान् दूरे प्रकर्तुं च सा,**

नाना-रूप-धरा गुहेश-हरयो ब्रह्मेन्द्र-वायुर्यमस्या-

याता वर-शक्तयश्च समरे युद्धाय क्रुद्धाश्च ताः,

रूपं भूषण-वाहनं च तासामेवं स्व-देवोपमम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः ततः प्रथममेवाग्रे, शर-शक्त्यृष्टि-वृष्टिभिः।

ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥४६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृत-हव्येन होमः।

* * *

४७०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सा च तान् प्रहितान्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, शीं बीजं, श्रीदारुणा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रवृत्ति प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, शीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीदारुणा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं शीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सा च तान् प्रहितान् वाणान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शूल-शक्ति-परश्वधान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मात-	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धनुर्मुक्तैर्महेषुभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं धृत-पाशांकुश-शार्ङ्ग-चाप-हस्ताम्।**
शुम्भकादिभिरावृतां रणांगे सरर्र-खट-फट् योद्धयमाना भवानी॥

ॐ ऐं शीं नमः सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूल-शक्ति-परश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मात - धनुर्मुक्तैर्महेषुभिः नमो शीं ऐं ॐ॥४७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृत-हव्येन होमः।

* * *

४७१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्याग्रतस्तथा काली'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीकहोल ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं बीजं, श्रीभ्रामरी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकहोल-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीभ्रामरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्याग्रतस्तथा काली	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
शूल-पात-विदारिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खट्वाङ्ग-पोथितांश्चारीन्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कुर्वती व्यचरत् तदा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **महा - युद्धोल्लास-रण-ग्रसन-सेना-प्रणयिनी, गलद्-वेणी बन्धा गगन-वसना क्रुद्ध-वदना।**
नवाम्भोद-स्निग्धा शब-विहित रक्तेक्षण-युता, हृदि ध्वान्तागारे तडिदिव सदा सा स्फुरतु मे।।

ॐ ऐं क्लीं नमः तस्याग्रतस्तथा काली, शूल - पात-विदारितान्।
खट्वाङ्ग-पोथितांश्चारीन्, कुर्वती व्यचरत् तदा नमो क्लीं ऐं ॐ।।४७१।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-धृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कमण्डलु-जलाक्षेप'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीअरुण ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, फ्रूं वीजं, श्रीब्रह्मचारिणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअरुण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीब्रह्म-चारिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कमण्डलु-जलाक्षेप	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हत-वीर्यान् हतौजसः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ब्रह्माणी चाऽकरोच्छत्रून्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
येन येन स्म धावति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नव शशधर - खण्डं विभ्रती चन्द्रकान्त - द्युतिरमर-प्रधाना वेद-हस्तानना त्वं।**
अवतु सुरम-हंसे युद्ध्यमाना रणेऽम्बा वितरित जल-क्षेपाद्धीन-वीर्यान् गता सा।।

ॐ ऐं फ्रूं नमः कमण्डलु - जलाक्षेप - हत-वीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाऽकरोच्छत्रून्, येन येन स्म धावति नमो फ्रूं ऐं ॐ।।४७२।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'माहेश्वरी-त्रिशूलेन'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीउद्दालक ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लौं बीजं, श्रीशैल-पुत्री शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीउद्दालक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीशैल-पुत्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं क्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
माहेश्वरी-त्रिशूलेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथा चक्रेण वैष्णवी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दैत्याञ्जघान कौमारी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथा शक्त्याति-कोपना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अचिन्त्याऽपि ध्येया स्वखिल-हृदये ध्वान्त-रुचिरा,**
मनो-ध्वान्तं गाढं हरसि करुणाम्भोनिधिरपि।
निशुम्भेन त्रस्तान् शरण-पतितान् देव-दयितान्,
महेशी कौमारी असुर - दलिनी पाहि लक्ष्मी।।

ॐ ऐं क्लौं नमः माहेश्वरी - त्रिशूलेन, तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी, तथा शक्त्याति-कोपना नमो क्लौं ऐं ॐ।।४७३।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऐन्द्री कुलिश-पातेन'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्रस्य श्रीजातु-कर्ण ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रूं बीजं, श्रीचित्र-घण्टा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीजातु-कर्ण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीचित्र-घण्टा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ऐन्द्री कुलिश-पातेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शतशो दैत्य-दानवाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्याम्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रुधिरौघ-प्रवर्षिणः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **इन्द्राक्षीं द्वि-भुजां देवीं, पीत-वस्त्र-द्वयान्विताम्।**
वज्र - घातेन दैत्यानां, प्राणघ्नीं मातरं भजे॥

ॐ ऐं ह्रूं नमः ऐन्द्री कुलिश-पातेन, शतशो दैत्य-दानवाः।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां, रुधिरौघ - प्रवर्षिणः नमो ह्रूं ऐं ॐ॥४७४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीप्रैग्य ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्लूं बीजं, श्रीकूष्माण्डा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीप्रैग्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीकूष्माण्डा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः कण्ठ-ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दंष्टाग्र-क्षत-वक्षसः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वाराह-मूर्त्या न्यपतन्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चक्रेण च विदारिताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **देवि क्रोध-मुखि! त्वदंघ्रि-कमल-द्वन्द्वानुक्तात्मने,**
भक्तं द्रुह्यति यो महेशि! मनसा कामेन वाचा नरः।

तस्याशु त्वदयोग्र-निष्ठुर-हलाघात प्रभूत-व्यथा,
शुम्भस्येवानीश्च वत् विलयते प्राणाः प्रयाणोन्मुखाः॥

ॐ ऐं क्लूं नमः तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता, दंष्टाग्र-क्षत-वक्षसः।
वाराह-मूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः नमो क्लूं ऐं ॐ॥४७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नखैर्विदारितांश्चान्यान्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीकौशिक ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, तीं बीजं, श्रीकात्यायनी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकौशिक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, तीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीकात्यायनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं तीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नखैर्विदारितांश्चान्यान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भक्षयन्ती महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नारसिंही चचाराजौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नादापूर्ण-दिगम्बरा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रत्यानीताः परम-भयता त्रायता नः स्व-भागा, दैत्याक्रान्तं हृदय-कमलं त्वद्-गृहं प्रत्यबोधि।**
काल - ग्रस्तं कियदिदमहो अम्ब! शुश्रूषतां ते, मुक्तिस्तेषां नहि बहु-मता नारसिंही परा का।।

ॐ ऐं तीं नमः नखैर्विदारितांश्चान्यान्, भक्षयन्ती महाऽसुरान्।
नारसिंही चचाराजौ, नादापूर्ण - दिगम्बरा नमो तीं ऐं ॐ।।४७६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चण्डाट्ट-हासैरसुराः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीकात्यायन ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, म्लूं बीजं, श्रीस्कन्द-माता शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकात्यायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीस्कन्द-माता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चण्डाट्ट-हासैरसुराः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिव-दूत्यभि-दूषिताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पेतुः पृथिव्यां पतितान्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तांश्च खादाथ सा तदा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **चर्वन्तीमस्थि - खण्डं प्रकट - कट-कटा-शब्द-सङ्घातमुग्रम्,**
कुर्वाणा प्रेत-मध्ये हहह-हह-हहा हास्यमुग्रं कृशाङ्गी।
नित्यं नित्य-प्रसक्ता डमरु-डिम-डिमा स्फारयन्ती मुखाब्जम्,
पायान्नश्चण्डिकेयं झझम-झम-झमा पर्यटन् दूत-रूपा।।

ॐ ऐं म्लूं नमः चण्डाट्ट - हासैरसुराः, शिव-दूत्यभि-दूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्च खादाथ सा तदा नमो म्लूं ऐं ॐ।।४७७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इति मातृ-गणं क्रुद्धं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीकात्यायन ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हं बीजं, श्रीगौरी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकात्यायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीगौरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
इति मातृ-गणं क्रुद्ध	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मर्दयन्तं महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नेशुर्देवारि-सैनिकाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बध्वा खट्वाङ्ग-कोटी कपिल-वर-जटा-मण्डलं पद्म-योनेः,**

कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैस्स्रजमुरसि शिरश्शेखरं ताक्ष्र्य - पक्षैः।

पूर्ण रक्तैस्सुराणां यम - महिष - महा-शृङ्गमादाय पाणौ,

पायाद् वो वन्द्य-मानाः प्रलयमुदितयो शक्तयः काल-रात्र्याः॥

ॐ ऐं हं नमः इति मातृ-गणं क्रुद्धं, मर्दयन्तं महाऽसुरान्।

दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारि-सैनिकाः नमो हं ऐं ॐ॥४७८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पलायन-परान् दृष्ट्वा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्रस्य श्री कात्यायन ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लूं बीजं, श्रीसिद्धिदा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति-कला, हैं स्त्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीकात्यायन-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीसिद्धिदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, हैं स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पलायन-परान् दृष्ट्वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दैत्यान् मातृ-गणार्दितान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-वीजो महाऽसुरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **संग्रामे हेति कृत्वा स-रुधिर-दशनैर्यद्-भटानां शिरोभि—**

मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वज-वितत-भुजा त्वं रणार्णे प्रविष्टा।

दृष्टाऽभूत-प्रभूतैः पृथु-तर-जघनाबद्ध-नागेन्द्र-काञ्ची,

शूलाग्र - व्यग्र-हस्ता मधु-रुधिर-पिबन्ताम्र-नेत्रा निशायाम्॥

ॐ ऐं स्लूं नमः पलायन-परान् दृष्ट्वा, दैत्यान् मातृ-गणार्दितान्।

योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो, रक्त - वीजो महाऽसुरः नमो स्लूं ऐं ॐ॥४७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रक्त-विन्दुर्यदा भूमौ'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अशीति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, औं बीजं, श्रीमहा-क्रोधा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमहा-क्रोधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रक्त-विन्दुर्यदा भूमौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पतत्यस्य शरीरतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समुत्पतति मेदिन्यां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्-प्रमाणस्तदाऽसुरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त-बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्र - काली॥

ॐ ऐं औं नमः रक्त - बिन्दुर्यदा भूमौ, पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां, तत्-प्रमाणस्तदाऽसुरः नमो औं ऐं ॐ॥४८०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'युयुधे स गदा-पाणि'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकाशीति-मन्त्रस्य श्रीगौतम ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्हौं बीजं, श्रीभैरवी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, ऐं ह्रीं स्त्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीगौतम-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीभैरवी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ऐं ह्रीं स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
युयुधे स गदा-पाणिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
इन्द्र-शक्त्या महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततश्चैन्द्री स्व-वज्रेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-बीजमताडयत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं सिद्धिदा सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं ल्हौं नमः युयुधे स गदा-पाणिरिन्द्र-शक्त्या महाऽसुरः।

ततश्चैन्द्री स्व-वज्रेण, रक्त-बीजमताडयत् नमो ल्हौं ऐं ॐ॥४८१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कुलिशेनाहतस्याशु'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्स्रीं वीजं, श्री इन्द्राणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, ऐं ह्रीं स्त्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्स्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीइन्द्राणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ऐं ह्रीं स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कुलिशेनाहतस्याशु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बहु सुस्राव शोणितम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समुत्तस्थुस्ततो योधाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तद्-रूपास्तत्-पराक्रमाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्रन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं सिद्धिदा सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं श्स्रीं नमः कुलिशेनाहतस्याशु, बहु सुस्राव शोणितम्।

समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्-रूपास्तत्-पराक्रमाः नमो श्स्रीं ऐं ॐ॥४८२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यावन्तः पतितास्तस्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, यां वीजं, श्रीयोगिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति-कला, ह्रैं स्त्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, यां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीयोगिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रैं स्त्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्र्यशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं यां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यावन्तः पतितास्तस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शरीराद् रक्त-बिन्दवः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तावन्तः पुरुषा जाताः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तद्-वीर्य-बल-विक्रमाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्रन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं शान्तिदा शारदाम्बा॥

ॐ ऐं यां नमः यावन्तः पतितास्तस्य, शरीराद् रक्त-बिन्दवः।

तावन्तः पुरुषा जातास्तद्-वीर्य-बल-विक्रमाः नमो यां ऐं ॐ॥४८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

४८४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ते चापि युयुधुस्तत्र'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्रस्य श्रीगौतम ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, थ्लीं वीजं, श्रीवाराही शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीगौतम-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारें—हृदि, थ्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवाराही-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं थ्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ते चापि युयुधुस्तत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पुरुषा रक्त-सम्भवाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समं मातृभिरत्युग्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शस्त्र-पातातिभीषणं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त-बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्र - काली॥

ॐ ऐं थ्लीं नमः ते चापि युयुधुस्तत्र, पुरुषा रक्त-सम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्र-शस्त्र-पातातिभीषणम् नमो थ्लीं ऐं ॐ॥४८४॥

१००० जपात्-सिद्धिः, मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

४८५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पुनश्च वज्र-पातेन'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्हीं वीजं, श्रीखड्ग-धारिणी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति-कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युंत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीखड्ग-धारिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुनश्च वज्र-पातेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षतमस्य शिरो यदा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ववाह रक्तं पुरुषाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततो जाताः सहस्रशः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं सिद्धिदा सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः पुनश्च वज्र-पातेन, क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः नमो ल्हीं ऐं ॐ॥४८५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वैष्णवी समरे चैनं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षडशीति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्रपद ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ग्लौं बीजं, श्रीवारुणी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षडशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवारुणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये; तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षडशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वैष्णवी समरे चैनं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चक्रेणाभि-जघान ह	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
गदया ताडयामास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं सिद्धिदा सिद्धि-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः वैष्णवी-समरे चैनं, चक्रेणाभि-जघान ह।
गदया ताडयामास, ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् नमो ग्लौं ऐं ॐ॥४८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रौं बीजं, श्रीमृग-वाहिनी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा-कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीमृग-वाहिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रुधिर-स्राव-सम्भवैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सहस्रशो जगद्-व्याप्तं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्-प्रमाणैर्महाऽसुरैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं सिद्धिदा सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य, रुधिर-स्राव-सम्भवैः।

सहस्रशो जगद्-व्याप्तं, तत्-प्रमाणैर्महाऽसुरैः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥४८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शक्त्या जघान कौमारी'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्टाशाति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्रां बीजं, श्रीकौमारी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या-कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैयाघ्र-पद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीकौमारी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शक्त्या जघान कौमारी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वाराही च तथाऽसिना	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
माहेश्वरी त्रिशूलेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-बीजं महाऽसुरम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-बीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त-बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्र - काली॥

ॐ ऐं प्रां नमः शक्त्या जघान कौमारी, वाराही च तथाऽसिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन, रक्त - बीजं महाऽसुरम् नमो प्रां ऐं ॐ॥४८८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

४८९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स चापि गदया'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रीं बीजं, कौबेरी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैयाघ्र-पद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीकौबेरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स चापि गदया दैत्यः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्वा एवाहनत् पृथक्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मातृः कोप-समाविष्टो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-बीजो महाऽसुरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**
मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।
जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त - बीजं पयोदम्,
जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्र - काली।।

ॐ ऐं क्रीं नमः स चापि गदया दैत्यः, सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातृः कोप-समाविष्टो, रक्त-बीजो महाऽसुरः नमो क्रीं ऐं ॐ।।४८९।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्या हतस्य बहुधा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य नवति-मन्त्रस्य श्रीसांजीवि ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लीं वीजं, श्रीशूल-धारिणी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, हैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसांजीवि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीशूल-धारिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, हैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्या हतस्य बहुधा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शक्ति-शूलादिभिर्भुवि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पपात यो वै रक्तौघः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तेनासन् शतशोऽसुराः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽसि च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय - करं रक्त-बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं शान्तिदा शारदाम्बा॥

ॐ ऐं क्लीं नमः तस्या हतस्य बहुधा, शक्ति-शूलादिभिर्भुवि।

पपात् यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः नमो क्लीं ऐं ॐ॥४६०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तैश्चासुरासृक्-सम्भूतैः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लुं वीजं, श्रीब्राह्मी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लुं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीब्राह्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः करतले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तैश्चासुरासृक्-सम्भूतैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
असुरैः सकलं जगत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
व्याप्तमासीत् ततो देवा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भयमाजग्मुरुत्तमम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **प्रातर्या स्यात् कुमारी धनु-कर-कलिता रक्त-वीजेन युद्धम्,**

मध्याह्ने प्रौढ़-रूपाऽस्ति च कर-कमले वज्र-शस्त्रादिभिस्तम्।

जिघ्नन्तं वर्द्धयन्तममर - भय-करं रक्त - बीजं पयोदम्,

जिह्वाग्रे शोधयन्ती मम हरतु भयं शान्तिदा शारदाम्बा॥

ॐ ऐं स्लुं नमः तैश्चासुरासृक् - सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।

व्याप्तमासीत् ततो देवा, भयमाजग्मुरुत्तमम् नमो स्लुं ऐं ॐ॥४६१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तान् विषण्णान् सुरान्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य द्वा-नवति मन्त्रस्य श्री चण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, श्रीवैष्णवी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीवैष्णवी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्डिका प्राह सत्वरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उवाच कालीं चामुण्डे!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विस्तीर्णं वदनं कुरु	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**

तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।

कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,

भक्षयन्तीं खखटाट्ट - हास - निरतां शारदाम्बामाश्रये॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा, चण्डिका प्राह सत्वरा।

उवाच कालीं चामुण्डे! विस्तीर्णं वदनं कुरु नमो ह्रीं ऐं ॐ॥४६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४९३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान्'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्लौः बीजं, श्रीईशाना शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लौः वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीईशाना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्लौः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रक्त-बिन्दून् महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रक्त-बिन्दोः प्रतीच्छ त्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वक्त्रेणानेन वेगिना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**
तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।
कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य बीजं च तम्,
भक्षयन्तीं खखटाट् - हास-निरतां श्रीकालिकामाश्रये।।

ॐ ऐं ह्लौः नमः मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान्, रक्त-बिन्दून् महाऽसुरान्।
रक्त - बिन्दोः प्रतीच्छ त्वं, वक्त्रेणानेन वेगिना नमो ह्लौः ऐं ॐ।।४९३

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

४६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भक्षयन्ती चर रणे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रैं बीजं, श्रीजया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रैं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीजया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, ह्रैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भक्षयन्ती चर रणे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तदुत्पन्नान् महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवमेष क्षयं दैत्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
क्षीण-रक्तो गमिष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**

तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।

कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,

भक्षयन्तीं खखटाट् - हास - निरतां शारदाम्बामाश्रये॥

ॐ ऐं ह्रैं नमः भक्षयन्ती चर रणे, तदुत्पन्नान् महाऽसुरान्।

एवमेष क्षयं दैत्यः, क्षीण-रक्तो गमिष्यति नमो ह्रैं ऐं ॐ॥४६४॥

१००० जपात् सिद्धि, मांस-मत्स्य-मधु-हव्येन होमः।

* * *

४६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भक्ष्यमाणास्त्वया'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, भ्रं वीजं, श्रीविजया शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भ्रं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीविजया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भ्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
न चोत्पस्त्यन्ति चापरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इत्युक्त्वा तां ततो देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शूलेनाभि-जघान तम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**
तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।
कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,
भक्षयन्तीं खखटाट्ट - हास-निरतां शारदाम्बामाश्रये॥

ॐ ऐं भ्रं नमः भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा, न चोत्पस्त्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी, शूलेनाभि-जघान तम् नमो भ्रं ऐं ॐ॥४६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-हव्येन होमः।

* * *

४६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मुखेन काली जगृहे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, सौं वीजं, श्रीरौद्री शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैयाघ्र-पद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीरौद्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य षड्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मुखेन काली जगृहे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रक्त-बीजस्य शोणितम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततोऽसावाजघानाथ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गदया तत्र चण्डिकाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**
तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।
कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,
भक्षयन्ती खखटाट् - हास-निरतां श्रीकालिकामाश्रये।।

ॐ ऐं सौं नमः मुखेन काली जगृहे, रक्त-बीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ, गदया तत्र चण्डिकाम् नमो सौं ऐं ॐ।।४६६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

४६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'न चास्या वेदना चक्रे'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्रीश्रवण ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, श्रीचण्डिका शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्री उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तपञ्चम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीश्रवण-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीचण्डिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्री उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
न चास्या वेदना चक्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गदा-पातोऽल्पिकामपि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्या हतस्य देहात् तु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बहु सुस्राव शोणितं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**
तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।
कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्पेष्य बीजं च तम्,
भक्षयन्तीं खखटाट् - हास - निरतां श्रीचण्डिकामाश्रये।।

ॐ ऐं श्रीं नमः न चास्या वेदना चक्रे, गदा-पातोऽल्पिकामपि।
तस्या हतस्य देहात् तु, बहु सुस्राव शोणितम् नमो श्रीं ऐं ॐ।।४६७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

४६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यतस्ततस्तद्-वक्त्रेण'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्रस्य श्रीअगस्त्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्सूं वीजं, श्रीचामुण्डा शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअगस्त्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्सूं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीचामुण्डा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यतस्ततस्तद्-वक्त्रेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
चामुण्डा सम्प्रतीच्छति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मुखे समुद्गता येऽस्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-पातान्महाऽसुराः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**

तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।

कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,

भक्षयन्तीं खखटाट्ट - हास-निरतां श्रीकालिकामाश्रये॥

ॐ ऐं प्सूं नमः यतस्ततस्तद् - वक्त्रेण, चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।

मुखे समुद्गता येऽस्या, रक्त-पातान् महाऽसुराः नमो प्सूं ऐं ॐ॥४६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

४६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तांश्च खादाथ चामुण्डा'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्रस्य श्रीअगस्त्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, द्रौं वीजं, श्रीअजिता शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअगस्त्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीअजिता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तांश्च खादाथ चामुण्डा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पपौ तस्य च शोणितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देवी शूलेन वज्रेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **दंष्ट्रा येन कराल - गाल - गरलं सर्वं क्षणाद् भक्षितम्,**
तस्मात् त्वं बहुलाननं च कुर्वन् भक्ष्याचिरं तु शोणितम्।
कालीमित्युक्त्वा तु सा चण्डि-चरणे सम्प्रेष्य वीजं च तम्,
भक्षयन्तीं खखटाट् - हास - निरतां श्रीकालिकामाश्रये।।

ॐ ऐं द्रौं नमः तांश्च खादाथ चामुण्डा, पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण, बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः नमो द्रौं ऐं ॐ।।४६६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५००

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जघान रक्त-बीजं तं'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-शततम-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्त्रां बीजं, श्रीअपराजिता शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रां वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीअपराजिता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः करतले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य पञ्च-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
जघान रक्त-बीजं तं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चामुण्डा-पीत-शोणितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स पपात मही-पृष्ठे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शस्त्र-सङ्घ-समाहतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड़-धड़-धड़द् धावमाना भवानी,**

काल्या पीतं च रक्तं ततड़-तड़-तड़द् रक्त-वीजं च हत्वा।

तेषां रक्तं पिबन्ती घुघुट-घुट-घुटः तृप्त-चामुण्ड-चण्डा,

भक्षन्ती रक्त-वीजं जयति जय-जये देव-सङ्घाभि-वन्द्या॥

ॐ ऐं स्त्रां नमः जघान रक्त-बीजं तं, चामुण्डा-पीत-शोणितम्।

स पपात मही - पृष्ठे, शस्त्र - सङ्घ-समाहतः नमो स्त्रां ऐं ॐ॥५००॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०१

विनियोगः— ॐ अस्यश्री **'नीरक्तश्च मही-पाल'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य प्रथम-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्स्लीं बीज, श्रीउद्योतिनी शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्स्लीं बीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीउद्योतिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेशी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्स्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नीरक्तश्च मही-पाल	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रक्त-बीजो महाऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततस्ते हर्षमतुलं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अवापुस्त्रिदशा नृप!	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड़-धड़-धड़द् धावमाना भवानी,**
काल्या पीतं च रक्तं ततड़-तड़-तड़द् रक्त-बीजं च हत्वा।
तेषां रक्तं पिबन्ती घुघुट-घुट-घुटः तृप्त-चामुण्ड-चण्डा,
भक्षन्ती रक्त-बीजं जयति जय-जये देव-सङ्घाभि-वन्द्या।।

ॐ ऐं ह्स्लीं नमः नीरक्तश्च मही-पाल! रक्त-बीजो महाऽसुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप नमो ह्स्लीं ऐं ॐ।।५०१।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तेषां मातृ-गणो जातो'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्ल्क्रीं बीजं, श्रीउमा शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्ल्क्रीं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीउमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेशी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः करतले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ स्ल्क्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं स्ल्क्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तेषां मातृ-गणो जातो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ननर्ताऽसृङ्-मदोद्धतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां वौषट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड़-धड़-धड़द् धावमाना भवानी,**
काल्या पीतं च रक्तं ततड़-तड़-तड़द् रक्त-वीजं च हत्वा।
तेषां रक्तं पिबन्ती घुघुट-घुट-घुटः तृप्त-चामुण्ड-चण्डा,
भक्षन्ती रक्त-वीजं जयति जय-जये देव-सङ्घाभि-वन्द्या॥

ॐ ऐं स्ल्क्रीं नमः तेषां मातृ-गणो जातो, ननर्तासृङ्-मदोद्धतः नमो स्ल्क्रीं ऐं ॐ॥५०२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये रक्त-बीज-वधो नाम अष्टमो अध्यायः॥८॥
(श्लोकाः ६१, अर्द्ध-श्लोक १, उवाच-मन्त्राः १, एवमादितो ५०२)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

नवम अध्याय

५०३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'राजोवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीदुर्गा देवता, रैं बीजं, श्रीमालिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीदुर्गा-देवतायै नमः द्वादशारे — हृदि, रैं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रैं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं रैं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
राजोवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

ॐ ऐं रैं नमः राजोवाच नमो रैं ऐं ॐ॥५०३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-तिल-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विचित्रमिदमाख्यातं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, क्लीं वीजं, श्रीमालिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं-वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विचित्रमिदमाख्यातं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भगवन् भवता मम	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देव्याश्चरित-माहात्म्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रक्त-बीज-बधाश्रितम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **नागाधीश्वर-विष्टरां किणि-फणोत्तंसोरु-रत्नावलीम्,**
भास्वद्-देह-लतां दिवाकर-निभां नेत्र-त्रयोद्भासिताम्।
माला-कुम्भ-कपाल-नीरज-करां चन्द्रार्द्ध-चूडां पराम्,
सर्वज्ञेश्वर - भैरवाङ्क - निलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

ॐ ऐं क्लीं नमः विचित्रमिदमाख्यातं, भगवन्! भवता मम।
देव्याश्चरित-माहात्म्यं, रक्त-बीज-बधाश्रितम् नमो क्लीं ऐं ॐ॥५०४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भूयश्चेच्छाम्यहं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्रीसुरथ ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, म्लौं बीजं, श्रीमालिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, हैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसुरथ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लौं-वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे— मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, हैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रक्त-बीजे निपातिते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चकार शुम्भो यत् कर्म	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
निशुम्भश्चाति-कोपनः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **वालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनां,**
पाशांकुश-वराभीतिर्धारयन्तीं शिवां भजे॥

ॐ ऐं म्लौं नमः भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं, रक्त - बीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत् कर्म, निशुम्भश्चाति-कोपनः नमो म्लौं ऐं ॐ॥५०५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीमालिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं-वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमालिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रौं नमः ऋषिरुवाच नमो श्रौं ऐं ॐ।।५०६।।

१०,०० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चकार कोपमतुलं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ग्लीं बीजं, श्रीमाला-धरा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाला-धरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चकार कोपमतुलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रक्त-बीजे निपातिते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शुम्भासुरो निशुम्भश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हतेष्वन्येषु चाहवे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं धृत-पाशांकुश-मुख्य-चाप-हस्ताम्।**
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्॥

ॐ ऐं ग्लीं नमः चकार कोपमतुलं, रक्त - बीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च, हतेष्वन्येषु चाहवे नमो ग्लीं ऐं ॐ॥५०७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हन्य-मानं महा-सैन्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रौं बीजं, श्रीयशस्विनी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीयशस्विनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हन्य-मानं महा-सैन्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विलोक्यामर्षमुद्-वहन्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुख्ययाऽसुर-सेनया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उत्तप्त-हेम-रुचिरां रवि-चन्द्र-वह्नि-नेत्रां धनुः-शर-युतांकुश-पाश-शूलम्।**
अभ्यागतो यमुत्याप्य महोग्र-यन्त्रं देवि! निशुम्भमभिहत्य सुरानवतु त्वम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः हन्य-मानं महा-सैन्यं, विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ, मुख्ययाऽसुर-सेनया नमो ह्रौं ऐं ॐ॥५०८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५०८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्याग्रतस्तथा'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, ह्सौं वीजं, श्रीत्रिनेत्रा शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्रिनेत्रा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पार्श्वयोश्च महाऽसुराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सन्दष्टौष्ठ-पुटाः क्रुद्धा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
हन्तुं देवीमुपाययुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।

ॐ ऐं ह्सौं नमः तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे, पार्श्वयोश्च महाऽसुराः।
सन्दष्टौष्ठ - पुटाः क्रुद्धा, हन्तुं देवीमुपाययुः नमो ह्सौं ऐं ॐ।।५०८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५१०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आजगाम महा-वीर्यः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ईं बीजं, श्रीयम-घण्टा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ईं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीयम-घण्टा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आजगाम महा-वीर्यः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शुम्भोऽपि स्व-बलैर्वृतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कृत्वा युद्धे तु मातृभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **उत्तप्त-हेम-रुचिरां रवि-चन्द्र-वह्नि - नेत्रां धनुः-शर-युतांकुश-पाश-शूलम्।**
अभ्यागतो यमुत्थाप्य महोग्र-यन्त्रं देवि! निशुम्भमभिहत्य सुरानवतु त्वम्।।

ॐ ऐं ईं नमः आजगाम महा-वीर्यः, शुम्भोऽपि स्व - बलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्, कृत्वा युद्धं तु मातृभिः नमो ईं ऐं ॐ।।५१०।।

१००० जपात् सिद्धि, मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५११

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो युद्धमतीवासीद्'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एकादश-मन्त्रस्य श्रीभारद्वाज ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ब्रूं वीजं, श्रीशङ्खिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभारद्वाज-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ब्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशङ्खिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो युद्धमतीवासीद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शर-वर्षमतीवोग्रं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मेघयोरिव वर्षतोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड - तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं ब्रूं नमः ततो युद्धमतीवासीद्, देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः।
शर - वर्षमतीवोग्रं, मेघयोरिव वर्षतोः नमो ब्रूं ऐं ॐ॥५११॥

१००० जपात् सिद्धिः; मांस-मधु-मत्स्यादि-हव्येन होमः।

* * *

५१२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्रीभारद्वाज ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रां वीजं, श्रीविच्छादिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीभारद्वाज-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविच्छादिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्डिका स्व-शरोत्करैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ताडयामास चाङ्गेषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं श्रां नमः चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां, चण्डिका स्व-शरोत्करैः।

ताडयामास चाङ्गेषु, शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ नमो श्रां ऐं ॐ॥५१२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मत्स्य-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

५१३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'निशुम्भो निशितं खड्गं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, लूं वीजं, श्रीहस्तिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीहस्तिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयोदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निशुम्भो निशितं खड्गं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चर्म चादाय सुप्रभं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अताडयन् मूर्ध्नि सिंहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्या वाहनमुत्तमं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य - मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं लूं नमः निशुम्भो निशितं खड्गं, चर्म चादाय सुप्रभम्।

अताडयन् मूर्ध्नि सिंहं, देव्या वाहनमुत्तमम् नमो लूं ऐं ॐ॥५१३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मत्स्य-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५१४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ताडिते वाहने देवी'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, आं बीजं, श्रीचित्रिणी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहालक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, आं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचित्रिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ताडिते वाहने देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षुरप्रेणासिमुत्तमं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निशुम्भस्याशु चिच्छेद	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चर्म चाप्यष्ट-चन्द्रकम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य - मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां सिद्ध-लक्ष्मी।।

ॐ ऐं आं नमः ताडिते वाहने देवी, क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद, चर्म चाप्यष्ट-चन्द्रकम् नमो आं ऐं ॐ।।५१४।।

१००० जपात् सिद्धिः, मत्स्य-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५१५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'छिन्ने चर्मणि खड्गे च'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, श्रीपद्मिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीपद्मिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
छिन्ने चर्मणि खड्गे च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तामप्यस्य द्विधा चक्रे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चक्रेणाभि-मुखागतां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य - मुख्यैरसुर - वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूडिकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां सिद्धि-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं श्रीं नमः छिन्ने चर्मणि खड्गे च, शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे, चक्रेणाभि - मुखागतां नमो श्रीं ऐं ॐ॥५१५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मत्स्य-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रौं बीजं, श्रीद्वार-वासिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीद्वार-वासिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शूलं जग्राह दानवः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आयातं मुष्टि-पातेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवी तच्चाप्यचूर्णयत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं क्रौं नमः कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ, शूलं जग्राह दानवः।

आयातं मुष्टि - पातेन, देवी तच्चाप्यचूर्णयत् नमो क्रौं ऐं ॐ॥५१६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मत्स्य-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५१७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आविध्याथ गदां सोऽपि'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्तदश-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रूं वीजं, श्रीसुगन्धा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुगन्धा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्तदश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आविध्याथ गदां सोऽपि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चिक्षेप चण्डिकां प्रति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
साऽपि देव्या त्रिशूलेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भिन्ना भस्मत्वमागता	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं प्रूं नमः आविध्याथ गदां सोऽपि, चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
साऽपि देव्या त्रिशूलेन, भिन्ना भस्मत्वमागता नमो प्रूं ऐं ॐ॥५१७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मत्स्य-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५१८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः परशु-हस्तं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्लीं बीजं, श्रीकालिका शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवैयाघ्र-पद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकालिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः परशु-हस्तं तं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आयान्तं दैत्य-पुङ्गवं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आहत्य देवी बाणौघैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
आपातयत भू-तले	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं क्लीं नमः ततः परशु - हस्तं तमायान्तं दैत्य - पुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भू - तले नमो क्लीं ऐं ॐ॥५१८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

५१९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्मिन् निपतिते'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य ऊन-विंशति-मन्त्रस्य श्री अलम्बुष ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, भ्रूं वीजं, श्रीचर्चिका शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र-वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य ऊन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअलम्बुष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भ्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचर्चिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य ऊन-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्मिन् निपतिते भूमौ	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निशुम्भे भीम-विक्रमे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अचिन्त्याऽपि ध्येया स्वखिल-हृदये ध्वान्त-रुचिरा,**
मनो-ध्वान्तं गाढं हरसि करुणाम्भो-निधिरपि।
रमन्तीं युद्धेऽस्मिन् निपतित - समूर्च्छाद्युपगतं,
निशुम्भं प्राणाग्रमरुण - वरणः शुम्भ युयुधे॥

ॐ ऐं भ्रूं नमः तस्मिन् निपतिते भूमौ, निशुम्भे भीम-विक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः, प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् नमो भ्रूं ऐं ॐ॥५१९॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मत्स्य-तिल-हव्येन होमः।

* * *

५२०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स रथस्थस्तथाऽत्युच्चैः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीअलम्बुष ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रौं वीजं, श्रीअमृत-कला शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअलम्बुष-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअमृत-कला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शक्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स रथस्थस्तथाऽत्युच्चैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीत-परमायुधैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भुजैरष्टाभिरतुलैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
व्याप्याशेषं बभौ नभः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अचिन्त्याऽपि ध्येया स्वखिल-हृदये ध्वान्त-रुचिरा,**
मनो-ध्वान्तं गाढ़ं हरसि करुणाम्भो-निधिरपि।
रमन्तीं युद्धेऽस्मिन् निपतित - समूर्च्छाद्युपगतं,
निशुम्भं प्राणाग्रमरुण - वरणः शुम्भ युयुधे॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः स रथस्थस्तथाऽत्युच्चैर्गृहीत-परमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥५२०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मत्स्य-तिल-हव्येन होमः।

* * *

५२१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तमायान्तं समालोक्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्रस्य श्री ईशान ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं वीजं, श्रीजया-शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, हैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीईशान-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीजया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, हैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तमायान्तं समालोक्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी शङ्खमवादयत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ज्या-शब्दं चापि धनुषः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चकारातीव-दुस्सहम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः तमायान्तं समालोक्य, देवीं शङ्खमवादयत्।
ज्या-शब्दं चापि धनुषश्चकारातीव-दुस्सहम् नमो क्रीं ऐं ॐ॥५२१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-मत्स्य-हव्येन होमः।

* * *

५२२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पूरयामास ककुभो'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीनन्दी ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्लीं वीजं, श्रीविजया शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीनन्दी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविजया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पूरयामास ककुभो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निज-घण्टा-स्वनेन च	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
समस्त-दैत्य-सैन्यानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तेजो-वध-विधायिना	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं म्लीं नमः पूरयामास ककुभो, निज-घण्टा-स्वनेन च।
समस्त-दैत्य-सैन्यानां, तेजो-वध-विधायिना नमो म्लीं ऐं ॐ॥५२२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मत्स्य-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५२३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः सिंहो महा-नादैः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्रस्य श्रीगरुड़ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ग्लौं बीजं, श्रीशाङ्करी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीगरुड़-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशाङ्करी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सिंहो महा-नादैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्याजितेभ-महा-मदैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पूरयामास गगनं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गां तथैव दिशो दश	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृड्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः ततः सिंहो महा-नादैस्त्याजितेभ-महा-मदैः।

पूरयामास गगनं गां, तथैव दिशो दश नमो ग्लौं ऐं ॐ॥५२३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मत्स्य-घृत-हव्येन होमः।

* * *

५२४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः काली समुत्पत्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुर्विंशति मन्त्रस्य श्री वीरभद्र ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्सूं वीजं, श्रीचर्चिका शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवीरभद्र-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचर्चिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः काली समुत्पत्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गगनं क्ष्मामताडयत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कराभ्यां तन्निनादेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्राक्-स्वनास्ते तिरोहिताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **शब्द-रूपा महा-माया, गगनं क्ष्मामताडयन्।**
सिंह - नादेन घोरेणाट्टाट्ट - हासेन तं ययुः॥

ॐ ऐं ह्सूं नमः ततः काली समुत्पत्य, गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन, प्राक्-स्वनास्ते तिरोहिताः नमो ह्सूं ऐं ॐ॥५२४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृत-हव्येन होमः।

* * *

५२५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अट्टाट्ट-हासमशिवं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्रीपाञ्च-जन्य ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्लीं वीजं, श्रीअमृत-कला शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपाञ्च-जन्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीअमृत-कला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अट्टाट्ट-हासमशिवं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिव-दूती चकार ह	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शुम्भः कोपं परं ययौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अचिन्त्याऽपि ध्येया स्वखिल-हृदये ध्वान्त-रुचिरा,**
मनो-ध्वान्तं गाढं हरसि करुणाम्भो-निधिरपि।
रमन्तीं युद्धेऽस्मिन् निपतित - समूर्च्छाद्युपगतं,
निशुम्भं प्राणाग्रमरुण - वरणः शुम्भ युयुधे।।

ॐ ऐं प्लीं नमः अट्टाट्ट-हासमशिवं, शिव-दूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः, शुम्भः कोपं परं ययौ नमो प्लीं ऐं ॐ।।५२५।।

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-धृत-हव्येन होमः।

* * *

५२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं बीजं, श्री सरस्वती शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्रः स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसरस्वती-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षड्-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
व्याजहाराम्बिका यदा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदा जयेत्यभिहितं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देवैराकाश-संस्थितैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति, व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं, देवैराकाश-संस्थितैः नमो ह्रौं ऐं ॐ॥५२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५२७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शुम्भेनागत्य या शक्तिः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीपौति-माष ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्स्त्रां बीजं, श्रीकौमारी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपौति-माष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्स्त्रां वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकौमारी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्स्त्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शुम्भेनागत्य या शक्तिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वौषट्
मुक्ता ज्वालाऽति-भीषणा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आयान्ती वह्नि-कूटाभा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सा निरस्ता महोल्कया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्।।

ॐ ऐं ह्स्त्रां नमः शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालाऽति-भीषणा।
आयान्ती वह्नि-कूटाभा, सा निरस्ता महोल्कया नमो ह्स्त्रां ऐं ॐ।।५२७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५२८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सिंह-नादेन शुम्भस्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीपाञ्चजन्य ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता स्हौं वीजं, श्रीचित्रघण्टा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपाञ्चजन्य-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्हौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचित्र-घण्टा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सिंह-नादेन शुम्भस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
व्याप्तं लोक-त्रयान्तरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निर्घात-निःस्वनो घोरो	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जितवानवनी-पते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली।।

ॐ ऐं स्हौं नमः सिंह-नादेन शुम्भस्य, व्याप्तं लोक-त्रयान्तरम्।
निर्घात - निःस्वनो घोरो, जितवानवनी-पते नमो स्हौं ऐं ॐ।।५२८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शुम्भ-मुक्ताञ्छरान्'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य ऊन-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्लूं बीजं, श्रीमहामाया शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पाणि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य ऊन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमहा-माया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पाणि-कर्मेन्द्रियाय नमः पाणि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य ऊन-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शुम्भ-मुक्ताञ्छरान् देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शुम्भस्तत्-प्रहिताञ्छरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चिच्छेद स्व-शरैरुग्रैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शतशोऽथ सहस्रशः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह - पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर - निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूडिकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-घरण-सु-कुशला पातु मां सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः शुम्भ-मुक्ताञ्छरान् देवी, शुम्भस्तत् प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्व - शरैरुग्रैः, शतशोऽथ सहस्रशः नमो ल्लूं ऐं ॐ॥५२६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः सा चण्डिका क्रुद्धा'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्रपद ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्स्लीं वीजं, श्रीबहुचरा शक्तिः, तारा महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवातायै नमः द्वादशारे— हृदि, क्स्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीबहुचरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्स्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सा चण्डिका क्रुद्धा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शूलेनाभि-जघान तं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स तथाऽभिहतो भूमौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मूर्छितो निपपात ह	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं क्स्लीं नमः ततः सा चण्डिका क्रुद्धा, शूलेनाभि-जघान तम्।
स तथाऽभिहतो भूमौ, मूर्छितो निपपात ह नमो क्स्लीं ऐं ॐ॥५३०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो निशुम्भः सम्प्राप्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअति-भाग ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रीं वीजं, श्रीदशभुजा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअति-भाग-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे— हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीदश-भुजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो निशुम्भः सम्प्राप्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चेतनामांत्त-कार्मुकः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आजघान शरैर्देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कालीं केसरिणं तथा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र - पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं श्रीं नमः ततो निशुम्भः सम्प्राप्य, चेतनामात्त-कार्मुकः।

आजघान शरैर्देवीं, कालीं केसरिणं तथा नमो श्रीं ऐं ॐ॥५३१॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

५३२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पुनश्च कृत्वा बाहूनां'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअतिभाग ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्तूं वीजं, श्रीअष्टादश-भुजा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्तूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीअष्टादश-भुजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्तूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुनश्च कृत्वा बाहूनां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अयुतं दनुजेश्वरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चक्रायुधेन दितिजः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
छादयामास चण्डिकाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड - तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य - मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-घरण-सु-कुशला पातु मां सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं स्तूं नमः पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।

चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् नमो स्तूं ऐं ॐ॥५३२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो भगवती क्रुद्धा'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअतिभाग ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, च्रें वीजं, श्रीअष्टभुजा शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, च्रें वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीअष्ट-भुजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं च्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो भगवती क्रुद्धा	मध्यमाभ्यां-वषट्	शिखायै वषट्
दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चिच्छेद तानि चक्राणि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्व-शरैः सायकांश्च तान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या माता मधु - कैटभादि-दलनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण - चण्ड-मुण्ड-मथनी या रक्त-बीजाशनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलनी या सिद्धि-दात्री परा,
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥

ॐ ऐं च्रें नमः ततो भगवती क्रुद्धा, दुर्गा दुर्गार्ति - नाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि, स्व-शरैः सायकांश्च तान् नमो च्रें ऐं ॐ॥५३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो निशुम्भो वेगेन'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअतिभाग ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, वीं बीजं, श्रीसर्व-मङ्गला शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, वीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीसर्व-मङ्गला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुस्त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं वीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो निशुम्भो वेगेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गदामादाय चण्डिकाम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अभ्यधावत वै हन्तुम्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दैत्य-सेना-समावृतः	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां भद्र-काली॥

ॐ ऐं वीं नमः ततो निशुम्भो वेगेन, गदामादाय चण्डिकाम्।

अभ्यधावत वै हन्तुं, दैत्य-सेना-समावृतः नमो वीं ऐं ॐ॥५३४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्यापतत एवाशु'** इति् सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीअतिभाग ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्ष्लूं बीजं, श्रीधनुर्धरा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीधनुर्धरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्यापतत एवाशु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गदां चिच्छेद चण्डिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
खड्गेन शित-धारेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स च शूलं समाददे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं क्ष्लूं नमः तस्यापतत एवाशु, गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शित - धारेण, स च शूलं समाददे नमो क्ष्लूं ऐं ॐ॥५३५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शूल-हस्तं समायान्तं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्लूं वीजं, श्रीनीलग्रीवा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनील-ग्रीवा नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शूल-हस्तं समायान्तं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निशुम्भममरार्दनम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हृदि विव्याध शूलेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वेगाविद्धेन चण्डिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**

युद्ध्यन्तीं दैत्य-मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।

कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,

रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु सा देव-सङ्घान्॥

ॐ ऐं श्लूं नमः शूल-हस्तं समायान्तं, निशुम्भममरार्दनम्।

हृदि विव्याध शूलेन, वेगाविद्धेन चण्डिका नमो श्लूं ऐं ॐ॥५३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५३७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भिन्नस्य तस्य शूलेन'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्रस्य वैयाघ्रपद ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्रूं वीजं, श्रीलक्ष्मी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः—श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीलक्ष्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, ज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	षडङ्ग-न्यासः
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भिन्नस्य तस्य शूलेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हृदयान्निः सृतोऽपरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-बलो महा-वीर्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तिष्ठेति पुरुषो वदन्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ध्यायेयं सिंह-पीठे ततड-तड-तडच्छस्त्र-पातोग्र-चित्ता,**
युद्ध्यन्तीं दैत्य - मुख्यैरसुर-वर-निशुम्भाख्य-सम्मोहयित्रीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चूड़िकां रक्त-वस्त्राम्,
रक्तासृङ्-मांस-धारा-धरण-सु-कुशला पातु मां सिद्ध-लक्ष्मी॥

ॐ ऐं क्रूं नमः भिन्नस्य तस्य शूलेन, हृदयान्निः सृतोऽपरः।
महा-बलो महा-वीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् नमो क्रूं ऐं ॐ॥५३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-मधु-हव्येन होमः।

* * *

५३८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्य निष्कामतो देवी'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्रस्य श्री वैयाघ्रपद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रां वीजं, श्रीभद्रकाली शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र वीर रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीभद्रकाली-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्य निष्कामतो देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रहस्य स्वनवत् ततः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शिरश्चिच्छेद खड्गेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ततोऽसावपतद् भुवि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
युद्धे शस्त्र - कलावगहा-तड़ितं रक्त-प्रधारा वहन्।
देव्याश्चण्डि-प्रहार-चट्ट-चचटा खड्गादि-पातैरयम्,
दैत्यं तं च निशुम्भमुग्रमतुलं हत्वा शिरः पातितः॥

ॐ ऐं क्रां नमः तस्य निष्कामतो देवी, प्रहस्य स्वनवत् ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन, ततोऽसावपतद् भुवि नमो क्रां ऐं ॐ॥५३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-मधु-हव्येन होमः।

* * *

५३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः सिंहश्चखादोग्रं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्री अतिभाग ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्लीं वीजं, श्रीनल-कूबरी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः—श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनल-कूबरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकोन-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः सिंहश्चखादोग्रं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दंष्ट्रा क्षुण्ण-शिरोधरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
असुरांस्तांस्तथा काली	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिव-दूती तथाऽपरान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनां।**
शत्रु-भक्षण-कार्ये तं, सिंहं प्रेरयन्तीं भजे।।

ॐ ऐं स्क्लीं नमः ततः सिंहश्चखादोग्रं, दंष्ट्रा क्षुण्ण-शिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली, शिव-दूती तथाऽपरान् नमो स्क्लीं ऐं ॐ।।५३६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-हव्येन होमः।

* * *

५४०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कौमारी-शक्ति-निर्भिन्नाः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीअति-भाग ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, भ्रूं वीजं, श्रीनील-ग्रीवा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअतिभाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, भ्रूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनील-ग्रीवा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं भ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कौमारी-शक्ति-निर्भिन्नाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
केचिन्नेशुर्महाऽसुराः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ब्रह्माणी मन्त्र-पूतेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तोयेनान्ये निराकृताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बन्धूक-काञ्चन-निभां रुचिराक्ष-मालां, पाशांकुशौ च वरदं निज-बाहु-दण्डैः।**
विभ्राणमिन्दु - शकलाभरणं त्रिनेत्रामम्बां निशुम्भ-मथिनीं सैन्यं निजिघ्नन्॥

ॐ ऐं भ्रूं नमः कौमारी-शक्ति-निर्भिन्नाः, केचिन्नेशुर्महाऽसुराः।
ब्रह्माणी - मन्त्र-पूतेन, तोयेनान्ये निराकृताः नमो भ्रूं ऐं ॐ॥५४०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'माहेश्वरी-त्रिशूलेन'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रौं बीजं, श्रीखड्गिनी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीखड्गिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
माहेश्वरी-त्रिशूलेन	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वाराही-तुण्ड-घातेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
केचिच्चूर्णी-कृता भुवि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**

युद्धे शस्त्र - कलावगहा-तडितं रक्त-प्रधारा वहन्।

देव्याश्चण्डि-प्रहार-चट्ट-चचटा खड्गादि-पातैरयम्,

दैत्यं तं च निशुम्भमुग्रमतुलं हत्वा शिरः पातितः॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः माहेश्वरी-त्रिशूलेन, भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे।

वाराही-तुण्ड-घातेन, केचिच्चूर्णी-कृता भुवि नमो ह्रौं ऐं ॐ॥५४१॥

१००० जपात् सिद्धि, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'खण्डं खण्डं च चक्रेण'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्री वैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्रां वीजं, श्रीवज्रिणी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवैयाघ्रपद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीवज्रिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
खण्डं खण्डं च चक्रेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वैष्णव्या दानवाः कृताः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वज्रेण चैन्दी-हस्ताग्र-	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विमुक्तेन तथाऽपरे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनां।**
शत्रु-भक्षण-कार्ये तं, सिंहं प्रेरयन्तीं भजे॥

ॐ ऐं क्रां नमः खण्डं खण्डं च चक्रेण, वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्री - हस्ताग्र - विमुक्तेन तथाऽपरे नमो क्रां ऐं ॐ॥५४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'केचिद् विनेशुरसुराः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, फ्रूं वीजं, श्रीदण्डिनी शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलाम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीदण्डिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
केचिद् विनेशुरसुराः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
केचिन्नष्टा महाऽऽहवात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भक्षिताश्चापरे काली	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शिव-दूती-मृगाधिपैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बन्धूक-काञ्चन-निभां रुचिराक्ष-मालां, पाशांकुशौ च वरदं निज-बाहु-दण्डैः।**
बिभ्राणमिन्दु - शकलाभरणं त्रिनेत्रामम्बां निशुम्भ-मथिनीं सैन्यं निजिघ्नन्॥

ॐ ऐं फ्रूं नमः केचिद् विनेशुरसुराः, केचिन्नष्टा महाऽऽहवात्।
भक्षिताश्चापरे काली - शिव-दूती-मृगाधिपैः नमो फ्रूं ऐं ॐ॥५४३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये निशुम्भ-वधो नाम नवमोऽध्यायः॥९॥
(श्लोकाः ३९, उवाच २, एवमादितो ५४३)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

दशम अध्याय

५४४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, श्रीशूलिनी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र रसः, पद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीशूलिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥५४४॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीपाशिनी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, क्रोध रसः, पद-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीपाशिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्रोध-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भ्रातरं प्राण-सम्मितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हन्य-मानं बलं चैव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद् वचः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा, भ्रातरं प्राण-सम्मितम्।
हन्य-मानं बलं चैव, शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद् वचः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥५४५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बलावलेपाद्'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीशुम्भ ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ब्लूं बीजं, श्रीपाशिनी शक्तिः, श्री छिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, क्रोध रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशुम्भ-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ब्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीपाशिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्रोध-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
बलावलेपाद् दुष्टे! त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मा दुर्गे! गर्वमावह	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्यासां बलमाश्रित्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युद्ध्यसे चाति-मानिनी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण - पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च कालीम्॥

ॐ ऐं ब्लूं नमः बलावलेपाद् दुष्टे! त्वं, मा दुर्गे! गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य, युद्ध्यसे चाति-मानिनी नमो ब्लूं ऐं ॐ॥५४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्रीगदिनी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, क्रोध रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्तषष्ठम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि,, ह्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीगदिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, क्रोध-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ।।५४७।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृत-मधु-हव्येन होमः।

* * *

५४८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एकैवाऽहं जगत्यत्र'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, म्लूं वीजं, श्रीभुशुण्डिनी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीभुशुण्डिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एकैवाऽहं जगत्यत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
द्वितीया का ममाऽपरा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पश्यैता दुष्ट! मय्येव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विशन्त्यो मद्-विभूतयः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कैलासाचल - कन्दरालय - करी गौरी उमा शङ्करी,**
कौमारी निगमार्थ - गोचर-करी ॐकार-वीजाक्षरी।
माया-वीजं त्वमेव ह्रीं-श्रिय-करी ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरी,
एकैवाऽसि त्वमेव विश्व-रचने आद्या महेशेश्वरी।।

ॐ ऐं म्लूं नमः एकैवाऽहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममाऽपरा।
पश्यैता दुष्ट! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः नमो म्लूं ऐं ॐ।।५४८।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः समास्तास्ता देव्यो'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रं बीजं, श्रीशतघ्निनी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त षष्ठम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीशतघ्निनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य ऊन-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः समस्तास्ता देव्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
एकैवासीत् तदाऽम्बिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण - पदाम्भोज-निकटे,**

निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।

स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,

समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च कालीम्।।

ॐ ऐं ह्रं नमः ततः समस्तास्ता देव्यो, ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम्।

तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत् तदाऽम्बिका नमो ह्रं ऐं ॐ।।५४६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५५०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं वीजं, श्रीमहा-लयिनी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीमहा-लयिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥५५०॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

* * *

५५१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अह विभूत्या बहुभिः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-चण्डि-ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ग्लीं वीजं, श्री कुलेश्वरी शक्तिः, श्रीभुवनेशी महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, अद्भुत रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-चण्डि-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीकुलेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुबनेशी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्भुत-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अहं विभूत्या बहुभिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
इह रूपैर्यदास्थिता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत्-संहतं मयैकैव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयायं वौषट्
तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कैलासाचल - कन्दरालय - करी गौरी उमा शङ्करी,**

कौमारी निगमार्थ-गोचर-करी ॐ-कार-वीजाक्षरी।

माया-वीजं त्वमेव ह्रीं-श्रिय-करी ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरी,

एकैवाऽसि त्वमेव विश्व-रचने आद्या महेशेश्वरी।।

ॐ ऐं ग्लीं नमः अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।

तत्-संहतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव नमो ग्लीं ऐं ॐ।।५५१।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

५५२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीवेदव्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीदेवेश्वरी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, अद्‌भुत रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य तीव्र स्वरः, भू तत्त्वं, प्रवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेदव्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदेवेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥५५२॥**

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५५३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'ततः प्रववृते युद्धं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, धूं वीजं, श्रीचक्रिणी शक्तिः, श्रीधूमा महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, रौद्र-वीर-रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, धूं-वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचक्रिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीधूमा-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, रौद्र-वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं धूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः प्रववृते युद्धम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देव्याः शुम्भस्य चोभयोः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पश्यतां सर्व-देवानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
असुराणां च दारुणं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं धूं नमः ततः प्रववृते युद्धं, देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्व-देवानामसुराणां च दारुणम् नमो धूं ऐं ॐ॥५५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५५४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्री मेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, हुं बीजं, श्री कुलेश्वरी शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हुं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकुलेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथास्त्रैश्चैव दारुणैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तयोर्युद्धमभूद् भूयः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सर्व-लोक-भयङ्करं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च कालीम्॥

ॐ ऐं हुं नमः शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद् भूयः, सर्व-लोक-भयङ्करम् नमो हुं ऐं ॐ॥५५४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५५५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दिव्यान्यस्त्राणि शतशो'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीअशोक ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, द्रौं बीजं, श्री अम्बिका शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअशोक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री अम्बिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुमुचे यान्यथाऽम्बिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्-प्रतीघात-कर्तृभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-बाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं द्रौं नमः दिव्यान्यस्त्राणि शतशो, मुमुचे यान्यथाऽम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्-प्रतीघात-कर्तृभिः नमो द्रौं ऐं ॐ॥ ५५५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५५६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मुक्तानि तेन चास्त्राणि'** इति सप्तशती - षष्ठम् - शतकस्य षट् - पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्री अशोक ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, श्रीललिता - शक्तिः, श्रीतारा महा - विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, हैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम् - शतकस्य षट् - पञ्चाशन्मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्री अशोक - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीललिता - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, घ्राण - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर - रसाय नमः चेतसि, वाक् - कर्मेन्द्रियाय नमः वाक् - कर्मेन्द्रिये, तीव्र - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, वायु - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति - कलायै नमः कर - तले, हैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम् - शतकस्य षट् - पञ्चाशन्मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मुक्तानि तेन चास्त्राणि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दिव्यानि परमेश्वरी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
बभञ्ज लीलयैवोग्र	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
हुङ्कारोच्चारणादिभिः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा —
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रीं नमः मुक्तानि तेन चास्त्राणि, दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्र - हुङ्कारोच्चारणादिभिः नमो श्रीं ऐं ॐ ।।५५६।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस - घृतादि - हव्येन होमः।

***

५५७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः शर-शतैर्देवीं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्री अशोक ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, त्रों बीजं, श्रीकामिनी शक्तिः, श्री छिन्नमस्ता महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम्-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअशोक-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्री महा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रों बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम्-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रों	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः शर-शतैर्देवीं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आच्छादयत सोऽसुरः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
साऽपि तत्-कुपिता देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
धनुश्चिच्छेद चेषुभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**

निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-बाष्प-जटिलो।

स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,

समायातो युद्धे ततः तामति-कलाञ्जीं च कालीम्॥

ॐ ऐं त्रों नमः ततः शर - शतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।

साऽपि तत्-कुपिता देवी, धनुश्चिच्छेद चेषुभिः नमो त्रों ऐं ॐ ॥५५७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५५८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रः'** इति सप्तशती-षष्ठम्-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीउदुम्बर ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, व्रूं वीजं, श्री गुह्येश्वरी शक्तिः, श्री कमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीउदुम्वर-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीगुह्येश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथा शक्तिमथाददे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चिच्छेद देवी चक्रेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तामप्यस्य करे स्थिताम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-तन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं व्रूं नमः छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण, तामप्यस्य करे स्थिताम् नमो व्रूं ऐं ॐ ॥५५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः खड्गमुपादाय'** इति सप्तशती - षष्ठम् - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्रस्य श्री उदुम्वर ऋषिः, श्री महा - सरस्वती देवता, फ्रें वीजं, श्रीललिता शक्तिः, श्री सुन्दरी महा - विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीउदुम्वर - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रें वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीललिता - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, श्रोतृ - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर - रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग - कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग - कर्मेन्द्रिये, तीव्र - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, वायु - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति - कलायै नमः कर - तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम् - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	षडङ्ग - न्यासः
ॐ ऐं फ्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः खड्गमुपादाय	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शत - चन्द्रं च भानु - मत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अभ्यधावत् तदा देवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
दैत्यानामधिपेश्वरः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं फ्रें नमः ततः खड्गमुपादाय, शत - चन्द्रं च भानु - मत।
अभ्यधावत् तदा देवीं, दैत्यानामधिपेश्वरः नमो फ्रें ऐं ॐ ॥५५६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस - घृतादि - हव्येन होमः।

***

५६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्यापतत एवाशु'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षष्टि-मन्त्रस्य श्रीअति-भाग ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रां बीजं, श्रीकामिका शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअति-भाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीकामिका-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्यापतत एवाशु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
खड्गं चिच्छेद चण्डिका	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
धनुर्मुक्तैः शितैर्वाणैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चर्म चार्क-करामलम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**

निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।

स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,

समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं ह्रां नमः तस्यापतत एवाशु, खड्गं चिच्छेद चण्डिका।

धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्क-करामलम् नमो ह्रां ऐं ॐ॥५६०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

४६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः परिवृतः'** इति सप्तशती-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीचण्डिका ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं वीजं, श्रीदुर्गा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरं, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीचण्डिका-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं वीजाय नमः षडारे— लिङ्गे, श्रीदुर्गा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-पञ्चम-शतकस्य एक-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः परिवृतस्ताभिः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ईशानो देव-शक्तिभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **श्रुत्वा चण्डं च मुण्डं निहतं कर-करैः कोप-युक्तो स शुम्भः।**
उद्योगं सर्व - सैन्यानामुपरि-गतं हि युद्ध-चेष्टावृतोऽसौ॥
भ्राता क्रुद्धो निशुम्भः कर -करट-मधु-ध्वनिर्कोटि-वीर्याणि।
धूम्रस्याज्ञा कम्बुश्च मौर्या कलक-कालिकाया यान्तु युद्धे॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देव - शक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं, मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकां नमो ह्रौं ऐं ॐ॥४६१॥

१००० जपात्-सिद्धिः, मधु-घृत-मांसादि-हव्येन होमः।

* * *

५६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'चिच्छेदापततस्तस्य'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य द्वा - षष्टि - मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा - काली देवता, सौः वीजं, महिष - वाहिनी शक्तिः, ज्येष्ठा महा - विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य द्वा - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीपौतिमाष - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - काली - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौः वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, महिष - वाहिनी - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, ज्येष्ठा - महा - विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, रसना - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर - रसाय नमः चेतसि, गुद - कर्मेन्द्रियाय नमः गुद - कर्मेन्द्रिये, तीव्र - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, अग्नि - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या - कलायै नमः कर - तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य द्वा - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सौः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
चिच्छेदापततस्तस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुद्गरं निशितैः शरैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथापि सोऽभ्यधावत् तां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
मुष्टिमुद्यम्य वेग - वान्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**हरे काले काली त्वदरुण - पदाम्भोज - निकटे,**

निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत - पतित - तद् - वाष्प - जटिलो।

स शुम्भः क्रोधाक्षो कट - कटित - तन्तैरभिद्रुवन्,

समायातो युद्धे ततः तामति - कलाक्षीं च कालीम्

ॐ ऐं सौः नमः चिच्छेदापततस्तस्य, मुद्गरं निशितैः शरैः।

तथापि सोऽभ्यधावत् तां, मुष्टिमुद्यम्य वेग - वान् नमो सौः ऐं ॐ॥ ५६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस - घृतादि - हव्येन होमः।

***

५६३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स मुष्टिं पातयामास'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्लौं वीजं, श्रीमहा-वला शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्लौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीमहा-वला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स मुष्टिं पातयामास	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हृदये दैत्य-पुङ्गवः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
देव्यास्तं चापि सा देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तलेनोरस्यताडयत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा —
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं स्लौं नमः स मुष्टिं पातयामास, हृदये दैत्य-पुङ्गवः।
देव्यास्तं चापि सा देवी, तलेनोरस्यताडयत् नमो स्लौं ऐं ॐ॥ ५६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तल-प्रहाराभि-हतो'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्रस्य श्रीपौतिमाष ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रें वीजं, श्रीअर्थदा शक्तिः, श्रीपीताम्वरा महा-विद्या, रजो गुणः, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीपौतिमाष-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीअर्थदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्वरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तल-प्रहाराभि-हतो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निपपात मही-तले	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स दैत्य-राजः सहसा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पुनरेव तथोत्थितः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं प्रें नमः तल-प्रहाराभि-हतो, निपपात मही-तले।
स दैत्य-राजः सह-सा, पुनरेव तथोत्थितः नमो प्रें ऐं ॐ॥५६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि हव्येन होमः।

***

५६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीक्रौञ्चिकी ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्स्वां वीजं, मोक्षदा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीक्रौञ्चिकी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि ह्स्वां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, मोक्षदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्स्वां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवीं गगनमास्थितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत्रापि सा निराधारा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
युयुधे तेन चण्डिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च कालीम्॥

ॐ ऐं ह्स्वां नमः उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा, युयुधे तेन चण्डिका नमो ह्स्वां ऐं ॐ॥ ५६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नियुद्धं खे तदा दैत्यः'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्रस्य श्री क्रौञ्चिकी ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्रीं बीजं, कामदा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीक्रौञ्चिकी-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, कामदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नियुद्धं खे तदा दैत्यः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चण्डिका च परस्परं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चक्रतुः प्रथमं सिद्ध	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मुनि-विस्मय-कारकं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **हरे काले काली त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्य-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च कालीम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्ध-मुनि-विस्मय-कारकम् नमो प्रीं ऐं ॐ॥५६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो नियुद्धं सु-चिरं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीअति-भाग ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रां वीजं, भोगदा शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्या, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअति-भाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, भोगदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो नियुद्धं सु-चिरं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृत्वा तेनाम्बिका सह	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
उत्पात्य भ्रामयामास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चिक्षेप धरणी-तले	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **रमे पद्मे लक्ष्मी त्वदरुण-पदाम्भोज-निकटे,**
निशुम्भं सो दृष्ट्वा मृत-पतित-तद्-वाष्प-जटिलो।
स शुम्भः क्रोधाक्षो कट-कटित-दन्तैरभिद्रुवन्,
समायातो युद्धे ततः तामति-कलाक्षीं च लक्ष्मीम्॥

ॐ ऐं फ्रां नमः ततो नियुद्धं सु-चिरं, कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास, चिक्षेप धरणी-तले नमो फ्रां ऐं ॐ॥ ५६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीअति-भाग ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रीं वीजं, धर्मदा शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअति-भाग-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, धर्मदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महाविद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, तीव्र-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुष्टिमुद्यम्य वेगितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अभ्यधावत दुष्टात्मा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चण्डिका-निधनेच्छया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य, मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा, चण्डिका-निधनेच्छया नमो क्रीं ऐं ॐ॥ ५६८॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तमायान्तं ततो देवी'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य ऊन - सप्तति - मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र - पद ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, श्रीनारसिंही शक्तिः, श्रीतारा महा - विद्या, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीर रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, तीव्र स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रैं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य ऊन - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीवैयाघ्र - पद - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीनारसिंही - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा - महा - विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, त्वक् - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीर - रसाय नमः चेतसि, पाद - कर्मेन्द्रियाय नमः पाद - कर्मेन्द्रिये, तीव्र - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, अग्नि - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या - कलायै नमः कर - तले, ह्रैं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य ऊन - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तमायान्तं ततो देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व - दैत्य - जनेश्वरं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जगत्यां पातयामास	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
भित्वा शूलेन वक्षसि	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम् ।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम् ।।
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम् ।।

ॐ ऐं श्रीं नमः तमायान्तं ततो देवी, सर्व - दैत्य - जनेश्वरम् ।
जगत्यां पातयामास, भित्वा शूलेन वक्षसि नमो श्रीं ऐं ॐ ।। ५६६ ।।

१००० जपात् सिद्धिः, मांस - घृतादि - हव्येन होमः ।

***

५७०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स गतासुः पपातोर्व्यां'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवैयाघ्र-पद ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, क्रां वीजं, तैजसी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, वीभत्स-अद्‌भुत-रसौ, गुद कर्मेन्द्रियं, भग्न स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, क्षोभिणी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवैयाघ्र-पद-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रां वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, तैजसी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, वीभत्स-अद्‌भुत-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, भग्न-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, क्षोभिणी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स गतासुः पपातोर्व्याम्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी-शूलाग्र-विक्षतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चालयन् सकलां पृथिवीं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
साब्धि-द्वीपां स-पर्वतां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **या माता मधु-कैटभादि-दलनी या माहिषोन्मूलिनी,**
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-मथनी या रक्त-बीजाशनी।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलनी या सिद्धि-दात्री परा,
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥

ॐ ऐं क्रां नमः स गतासुः पपातोर्व्यां, देवी - शूलाग्र-विक्षतः।
चालयन् सकलां पृथिवीं, साब्धि-द्वीपां स-पर्वतां नमो क्रां ऐं ॐ॥५७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, मांस-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः प्रसन्नमखिलं'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्रस्य श्री वेदव्यास ऋषिः, श्रीमहा - लक्ष्मी देवता, सः बीजं, श्री मितौजसी शक्तिः, श्रीकमला महा - विद्या, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्यं स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वागवीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीवेद - व्यास - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - लक्ष्मी - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सः वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीमितौजसी - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला - महा - विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, त्वक् - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, कर - कर्मेन्द्रियाय नमः कर - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, जल - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा - कलायै नमः कर - तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः प्रसन्नमखिलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हते तस्मिन् दुरात्मनि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जगत् स्वास्थ्यमतीवाप	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
निर्मलं चाभवन्नभः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **कैलासाचल - कन्दरालय - करी गौरी उमा शङ्करी,**
कौमारी निगमार्थ - गोचर - करी ॐ - कार - बीजाक्षरी।
माया - बीजं त्वमेव ह्रीं - श्रिय - करी ब्रह्माण्ड - भाण्डोदरी,
एकैवाऽसि त्वमेव विश्व - रचने आद्या महेशेश्वरी॥

ॐ ऐं सः नमः ततः प्रसन्नमखिलं, हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत् स्वास्थ्यमतीवाप, निर्मलं चाभवन्नभः नमो सः ऐं ॐ॥ ५७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिलादि - हव्येन होमः।

***

५७२

विनियोगः— अस्य श्री **'उत्पात-मेघाः सोल्का ये'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्लीं बीजं, श्रीराजसी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्या, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीराजसी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महाविद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उत्पात-मेघाः सोल्का ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रागासंस्ते शमं ययुः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सरितो मार्ग-वाहिन्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथाऽऽसंस्तत्र पातिते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**कैलासाचल-कन्दरालय-करी गौरी उमा शङ्करी,**
कौमारी निगमार्थ-गोचर-करी ॐ-कार-बीजाक्षरी।
माया-बीजं त्वमेव ह्रीं-श्रिय-करी ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरी,
एकैवाऽसि त्वमेव विश्व-रचने आद्या महेशेश्वरी॥

ॐ ऐं क्लीं नमः उत्पात-मेघाः सोल्का ये, प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्ग - वाहिन्यस्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते नमो क्लीं ऐं ॐ॥५७२॥

१००० जपात् सिद्धिः, मधु-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो देव-गणाः सर्वे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, व्रें वीजं, श्रीसात्विकी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रें वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीसात्विकी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-सप्तति-मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं व्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो देव-गणाः सर्वे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हर्ष-निर्भर-मानसाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वभूवुर्निहते तस्मिन्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गन्धर्वा ललितं जगुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं व्रें नमः ततो देव-गणाः सर्वे, हर्ष-निर्भर-मानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन्, गन्धर्वा ललितं जगुः नमो व्रें ऐं ॐ।। ५७३।।

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अवादयंस्तथैवान्ये'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषि, श्रीमहा-काली देवता, इं वीजं, श्रीतामसी शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पाद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, इं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीतामसी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पाद-कर्मेन्द्रियाय नमः पाद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं इं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अवादयंस्तथैवान्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ननृतुश्चाप्सरो-गणाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ववुः पुण्यास्तथा वाताः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सु-प्रभोऽभूद् दिवाकरः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**धीं धीं धीं धारणादये धृति-मति-नतिभिदांमभिः कीर्तनीये,**
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनि-गण-नमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्य-प्रवाहे सुर-गण-नमिते हन्य-माने च शुम्भे,
मातर्मान्त्रार्थ-रतेऽमित-मति-गतिदे कालिके सु-प्रसन्ने!।।

ॐ ऐं इं नमः अवादयंस्तथैवान्ये, ननृतुश्चाप्सरो - गणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः, सुप्रभोऽभूद् दिवाकरः नमो इं ऐं ॐ।। ५७४।।

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषि, श्रीमहा - सरस्वती देवता, जस्हव्रीं बीजं, विद्या शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा - विद्या, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्तः रसः, पाद कर्मेन्द्रिय, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थे च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमार्कण्डेय - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ज्स्हव्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, विद्या - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, चक्षु - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, पाद - कर्मेन्द्रियाय नमः पाद - कर्मेन्द्रियं, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, अग्नि - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या - कलायै नमः कर - तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थे च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ज्स्हव्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ज्स्हव्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
शान्ता दिग् - जनित - स्वनः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अरघट्ट - घटित - जूटी - ताडित - ताली कपाल - ताटङ्कम्।**
वीणा - वादन - वेला - कम्पित - शिरसां नमामि हंसाङ्गीम्॥

ॐ ऐं ज्स्हव्रीं नमः जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः,
शान्ता दिग् - जनित - स्वनाः नमो ज्स्हव्रीं ऐं ॐ॥ ५७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल - घृतादि - हव्येन होमः।

***

इति श्रीमार्कण्डेय - पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी - माहात्म्ये शुम्भ - वधो नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥
(श्लोकाः २७, अर्द्ध - श्लोक १, उवाच ५, एवमादितो ५७५)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

एकादश अध्याय

५७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं वीजं, श्रीमहा-विद्या शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीमहा-विद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी - देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥५७६॥**

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्या हते तत्र'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्रूं बीजं, श्रीपरा शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीपरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देव्या हते तत्र महाऽसुरेन्द्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरो-गमास्तां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट-लाभाद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशिताशाः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अरघट्ट-घटित-जूटी-ताडित-ताली कपाल-ताटङ्कम्।**
वीणा-वादन-वेला-कम्पित-शिरसां नमामि हंसाङ्गीम्॥

ॐ ऐं क्रूं नमः देव्या हते तत्र महाऽसुरेन्द्रे, सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरो-गमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट-लाभाद्, विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशिताशाः नमो क्रूं ऐं ॐ॥ ५७७॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देवि! प्रपन्नार्ति-हरे!'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं बीजं, श्रीअपरा शक्तिः, श्रीछिन्नादि-दश-महा-विद्या, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीअपरा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवि! प्रपन्नार्ति-हरे! प्रसीद	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत-हंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्ष-सूत्रम्,**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर-कनक-मयं पुस्तकं ज्ञान-गम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्व-कर-कर-जपैः शास्त्र-विज्ञान-शब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्य-रूपा कर-कमल-धरा भारती सु-प्रसन्ना॥

ॐ ऐं श्रीं नमः देवि! प्रपन्नार्ति-हरे! प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य नमो श्रीं ऐं ॐ ॥५७८॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आधार-भूता जगतस्त्वमेका'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्रस्य श्रीवह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लीं बीजं, श्रीवागीश्वरी शक्तिः, श्रीताराादि-दश-महा-विद्याः, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्यं एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि,श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लीं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीवागीश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीताराादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकोनाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
आधार-भूता जगतस्त्वमेका	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मही-स्वरूपेण यतः स्थिताऽसि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अपां स्वरूप-स्थितया त्वयैतद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
आप्यायते कृत्स्नमलंघ्य-वीर्ये	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **इन्द्रः कामः सुरेशो विदथ-नवल-सृगु-वाम-नेत्रार्द्ध-चन्द्रैः,**
युक्तं यद् वीजमेतत् तदपि तव वपुः सच्चिदानन्द-रूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवन-जननी तारिणी नील-वर्णा,
त्वं गौरी त्वं च काली सकल-मनु-मयी त्वं महा-मोक्ष-दात्री॥

ॐ ऐं ल्लीं नमः आधार-भूता जगतस्त्वमेका, मही-स्वरूपेण यतः स्थिताऽसि।
अपां स्वरूप-स्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलंघ्य-वीर्ये नमो ल्लीं ऐं ॐ॥ ५७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५८०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अशीति-मन्त्रस्य श्रीवह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्रें वीजं, लक्ष्मी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी-आदि-दश-महा-विद्या, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि,श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीलक्ष्मी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-आदि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विश्वस्य वीजं परमाऽसि माया	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सम्मोहितं देवि! समस्तमेतत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्ण-हृदयस्थ-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं प्रें नमः त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या, विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया।
सम्मोहितं देवि! समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः नमो प्रें ऐं ॐ॥५८०॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५८१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्रस्य श्रीवह्नि - पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा - काली देवता, सौः बीजं, श्रीकराल - दंष्ट्रा शक्तिः, श्रीकाली - आदि - दश - महा - विद्या, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीवह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो - सेन्द्रा - सुरा - ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा - काली - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौः वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीकराल - द्रंष्ट्रा - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली - आदि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, रसना - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, योनि - कर्मेन्द्रियाय नमः योनि - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, अग्नि - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या - कलायै नमः कर - तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सौः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
का ते स्तुतिः स्तव्य - परा परोक्तिः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **इन्द्रः कामः सुरेशो विदथ - नवल - सृगु - वाम - नेत्रार्द्ध - चन्द्रैः,**
युक्तं यद् वीजमेतत् तदपि तव वपुः सच्चिदानन्द - रूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवन - जननी तारिणी नील - वर्णा,
त्वं गौरी त्वं च काली सकल - मनु - मयी त्वं महा - मोक्ष - दात्री॥

ॐ ऐं सौः नमः विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्य - परा परोक्तिः नमो सौः ऐं ॐ॥ ५८१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिलादि - हव्येन होमः।

***

५८२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सर्व-भूता यदा देवी'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्रस्य श्रीवह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, स्हौं बीजं, श्रीऊर्ध्व-केशी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा-आदि-दश-महा-विद्याः, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, प्रार्थना मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि,श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्हौं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, श्रीऊर्ध्व-केशी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-आदि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, प्रार्थना-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वयशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्व-भूता यदा देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वं स्तुता स्तुतये का वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भवन्तु परमोक्तयः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **इन्द्रः कामः सुरेशो विदथ-नवल-सृगु-वाम-नेत्रार्द्ध-चन्द्रैः,**
युक्तं यद् वीजमेतत् तदपि तव वपुः सच्चिदानन्द-रूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवन-जननी तारिणी नील-वर्णा,
त्वं गौरी त्वं च काली सकल-मनु-मयी त्वं महा-मोक्ष-दात्री॥

ॐ ऐं स्हौं नमः सर्व-भूता यदा देवी, स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा, भवन्तु परमोक्तयः नमो स्हौं ऐं ॐ॥५८२॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५८३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सर्वस्य बुद्धि - रूपेण'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य त्र्यशीति - मन्त्रस्य श्री वह्नि - पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, श्रूं बीजं, चेतना शक्तिः, श्रीतारादि - दश - महा - विद्या, सतो - गुण - प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ - प्रधान पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद - प्रधान पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य त्र्यशीति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीवह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो - सेन्द्रा - सुरा - ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं वीजाय नमः षडारे —लिङ्गे, चेतना - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सतो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, पद - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य त्र्यशीति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्वस्य बुद्धि - रूपेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जनस्य हृदि संस्थिते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्वर्गापवर्गदे देवि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत - हंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्ष - सूत्रम्,**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर - कनक - मयं पुस्तकं ज्ञान - गम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्व - कर - कर - जपैः शास्त्र - विज्ञान - शब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्य - रूपा कर - कमल - धरा भारती सु - प्रसन्ना॥

ॐ ऐं श्रूं नमः सर्वस्य बुद्धि - रूपेण, जनस्य हृदि संस्थिते!
स्वर्गापवर्गदे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो श्रूं ऐं ॐ॥५८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

५८४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'कला-काष्ठादि-रूपेण'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्री महा-काली देवता, क्लीं बीजं, बुद्धि शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, बुद्धि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय-नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्ववीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
कला-काष्ठादि-रूपेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
परिणाम-प्रदायिनि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विश्वस्योपरतौ शक्ते!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **काली काष्ठा कला त्वं सकल-जन-मनो-साक्षिणी काम-रूपा।**
क्लीं जाप्य-जपो जगन्मय-वपुः ध्यायेऽहं सच्चिदानन्द-रूपाम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः कला - काष्ठादि - रूपेण, परिणाम-प्रदायिनि!
विश्वस्योपरतौ शक्ते! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो क्लीं ऐं ॐ॥५८४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

* * *

५८५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्लीं बीजं, निद्रा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, निद्रा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिवे! सर्वार्थ-साधिके!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्ण-हृदयस्थ-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं स्क्लीं नमः सर्व - मङ्गल - माङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो स्क्लीं ऐं ॐ॥ ५८५॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-हव्येन-होमः।

***

५८६

विनोयोगः— ॐ अस्य श्री **'सृष्टि-स्थिति-विनाशानां'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रीं बीजं, श्रीक्षुधा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणा, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीक्षुधा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम्-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सृष्टि-स्थिति-विनाशानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शक्ति-भूते सनातनि!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
गुणाश्रये गुण-मये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान— **आरूढा काल-चक्रे रचति स्थिति-विनाशाग्र-सम्मोहयित्री।**
हंस-ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा शारदाम्बा सदा प्रसन्ना॥

ॐ ऐं प्रीं नमः सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते सनातनि!
गुणाश्रये गुण-मये, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो प्रीं ऐं ॐ॥५८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५८७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शरणागत-दीनार्त'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ग्लौं बीजं, श्रीछाया शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे-विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ग्लौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीछाया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शरणागत-दीनार्त-	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
परित्राण-परायणे!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सर्वस्यार्त्ति-हरे देवि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बालार्का बाल-रूपा च, त्रिशूल-वर-धारिणी।**
माहेश्वरी-स्वरूपेण, कालिकां प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं ग्लौं नमः शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे!
सर्वस्यार्त्ति - हरे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ग्लौं ऐं ॐ॥ ५८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५८८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हंस-युक्त-विमानस्थे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्स्ह्लीं वीजं, श्रीशक्ति शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्स्ह्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशक्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रयेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्स्ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हंस-युक्त-विमानस्थे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्माणी-रूप-धारिणि!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कौशाम्भः-क्षरिके देवि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**ब्रह्मा ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या-वस्त्र-कमण्डलुः कर-जपा त्वक्षांशु-मन्मोहिनी।
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृता लोक-त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त-स्वरूपिणी विजयते शान्तिं करोत्येव नः॥

ॐ ऐं ह्स्ह्लीं नमः हंस-युक्त-विमानस्थे, ब्रह्माणी-रूप-धारिणि!
कौशाम्भः-क्षरिके देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ह्स्ह्लीं ऐं ॐ॥५८८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५८६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, स्तौं बीजं, श्रीतृष्णा शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्तौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीतृष्णा-शक्त्यै नमः दशारे-नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले,पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एकोन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्तौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महा-वृषभ-वाहिनि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
माहेश्वरी-स्वरूपेण	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बालार्का बाल-रूपा च, त्रिशूल-वर-धारिणी।**
माहेश्वरी-स्वरूपेण, कालिकां प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं स्तौं नमः त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे, महा-वृषभ-वाहिनि!
माहेश्वरी-स्वरूपेण, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो स्तौं ऐं ॐ॥५८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५९०

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मयूर-कुक्कुट-वृत्ते'** इति सप्तशती-षष्ठम शतकस्य नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, लीं बीजं, श्रीशान्ति शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा—काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मयूर-कुक्कुट-वृत्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महा-शक्ति-धरेऽनघे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कौमारी-रूप-संस्थाने	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मयूरा मायूराभरण-मख-मौलिश्शशि-कला, वरा रामा चैव रामेश्वरि चापरा वंश-कन्या।**
कुमारी कौमारी च करण-घण्टा तु चन्द्र-घण्टा, प्रसीद त्वं देवि! चरण-चपला चारु-मुकुटा॥

ॐ ऐं लीं नमः मयूर - कुक्कुट - वृते, महा - शक्ति-धरेऽनघे!
कौमारी - रूप-संस्थाने, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो लीं ऐं ॐ॥५९०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५९१

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, म्लीं बीजं, श्रीजाति शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीजाति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीत-परमायुधे!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रसीद वैष्णवी-रूपे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**

राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।

राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,

श्रीकृष्ण-हृदयस्थ-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं म्लीं नमः शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परमायुधे!

प्रसीद वैष्णवी-रूपे, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो म्लीं ऐं ॐ॥ ५९१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५९२

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'गृहीतोग्र-महा-चक्रे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्तूं वीजं, श्री लज्जा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्तूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीलज्जा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती - दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्तूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
गृहीतोग्र-महा-चक्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वराह-रूपिणि शिवे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्ण-हृदयस्य-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं स्तूं नमः गृहीतोग्र-महा-चक्रे, दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे।
वराह-रूपिणि शिवे, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो स्तूं ऐं ॐ॥५९२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५९३

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'नृसिंह-रूपेणोग्रेण'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ज्स्ह्रीं वीजं, श्रीक्षान्ति शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-व्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जस्ह्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीक्षान्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य त्रयो-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ज्स्ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नृसिंह-रूपेणोग्रेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्य-त्राण-सहिते	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **जयतु जयतु लक्ष्मी नारसिंहात्म-रूपा, जयतु जयतु सत्या सर्व-भक्षा शिवा त्वम्।**
जयतु जयतु नित्या त्राण-रूपान्तराक्षा, जयतु जयतु माता सर्व-लोकान्तरस्था॥

ॐ ऐं ज्स्ह्रीं नमः नृसिंह-रूपेणोग्रेण, हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे!
त्रैलोक्य-त्राण-सहिते, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ज्स्ह्रीं ऐं ॐ॥५९३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५६४

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'किरीटिनि महा-वज्रे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, फ्रूं बीजं, श्रीश्रद्धा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीश्रद्धा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं फ्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
किरीटिनि महा-वज्रे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सहस्र-नयनोज्ज्वले	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वृत्र-प्राण-हरे चैन्द्रि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **सहस्र-नयनां देवीं, किरीटिन-महोज्ज्वलां।**
इन्द्राक्षीं वज्र-हस्तां तां, भजामि परमेश्वरीम्॥

ॐ ऐं फ्रूं नमः किरीटिनि महा-वज्रे, सहस्र-नयनोज्ज्वले!
वृत्र-प्राण-हरे चैन्द्रि, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो फ्रूं ऐं ॐ॥ ५६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५६५

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'शिव - दूती - स्वरूपेण'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्रस्य श्री वह्नि - पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा - काली देवता, क्रूं बीजं, श्रीकान्ति शक्तिः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, तमो - गुण - प्रधान त्रिगुणाः, त्वक् - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक् - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीवह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो - सेन्द्रा - सुरा - ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - काली - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकान्ति - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक् - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, वाक् - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शिव - दूती - स्वरूपेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हत - दैत्य - महा - बले!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
घोर - रूपे महा - रावे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—

जटा - जूटं शिरो - बद्धां, खड्ग - खेटक - धारिणीम्।
घोर - रूपां महा - रावां, शिव - दूतीं नमाम्यहम्॥

ॐ ऐं क्रूं नमः शिव - दूती - स्वरूपेण, हत - दैत्य - महा - बले!
घोर - रूपे महा - रावे, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो क्रूं ऐं ॐ॥ ५६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

५६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'दंष्ट्रा कराल-वदने'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षट्-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रीं बीजं, श्रीवृत्ति शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य षट्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवृत्ति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थ च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य षट्-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दंष्ट्रा कराल-वदने	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
शिरो-माला-विभूषणे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
चामुण्डे मुण्ड-मथने	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **बालार्का बाल-रूपा च, त्रिशूल-वर-धारिणी।**
माहेश्वरी-स्वरूपेण, कालिकां प्रणमाम्यहम्॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः दंष्ट्रा कराल-वदने, शिरो-माला-विभूषणे!
चामुण्डे मुण्ड-मथने, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ह्रौं ऐं ॐ॥ ५६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

* * *

५६७

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'लक्ष्मि लज्जे महा-विद्ये'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्लूं बीजं, श्री स्मृति शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीस्मृति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थ च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-षष्ठम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
लक्ष्मि लज्जे महा-विद्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
श्रद्धे पुष्टि-स्वधे ध्रुवे!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-रात्रि महा-माये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्ण-हृदयस्थ-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं ल्लूं नमः लक्ष्मि लज्जे महा-विद्ये, श्रद्धे पुष्टि-स्वधे ध्रुवे!
महा-रात्रि महा-माये, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ल्लूं ऐं ॐ॥ ५६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, तिल-घृतादि-हव्येन होमः।

***

५९८

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'मेधे सरस्वति वरे'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्ष्म्रीं वीजं, श्रीदया शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीदया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मेधे सरस्वति वरे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भूति बाभ्रवि तामसि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नियते त्वं प्रसीदेशे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नारायणि! नमोऽस्तु ते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या-वस्त्र-कमण्डलुः कर-जपा त्वक्षांशु-मन्मोहिनी।
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृता लोक-त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त-स्वरूपिणी विजयते शान्तिं करोत्येव नः॥

ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः मेधे सरस्वति वरे, भूति बाभ्रवि तामसि!
नियते त्वं प्रसीदेशे, नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो क्ष्म्रीं ऐं ॐ ॥५९८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

५६६

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'सर्व - स्वरूपे सर्वेशे'** इति सप्तशती - षष्ठम - शतकस्य एकोन - शत - मन्त्रस्य श्री वह्नि - पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, श्रूं बीजं, श्रीतुष्टि शक्तिः, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याः, सतो - गुण - प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्बीज - स्व - बीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एकोन - शत - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीवह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो - सेन्द्रा - सुरा - ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीतुष्टि - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, कर - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्बीज - स्व - बीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - षष्ठम - शतकस्य एकोन - शत - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्व - स्वरूपे सर्वेशे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सर्व - शक्ति - समन्विते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा ब्रह्म - स्वरूपिणी जल - धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या - वस्त्र - कमण्डलुः कर - जपा त्वक्षांशु - मन्मोहिनी।
भास्वन्मौक्तिक - जालिका - परिवृता लोक - त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त - स्वरूपिणी विजयते शान्तिं करोत्येव नः॥

ॐ ऐं श्रूं नमः सर्व - स्वरूपे सर्वेशे, सर्व - शक्ति - समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते नमो श्रूं ऐं ॐ॥५६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६००

विनियोगः—ॐ अस्य श्री **'एतत् ते वदनं सौम्यं'** इति सप्तशती-षष्ठम-शतकस्य षड्-शतति-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, इं बीजं, श्रीमाता शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य षड्-शतति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, इं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाता-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -षष्ठम-शतकस्य षड्-शतति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं इं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एतत् ते वदनं सौम्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
लोचन-त्रय-भूषितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पातु नः सर्व-भीतिभ्यः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कात्यायनि! नमोऽस्तु ते	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **ब्रह्मा ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या-वस्त्र-कमण्डलुः कर-जपा त्वक्षांशु-मन्मोहिनी॥
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृता लोक-त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त-स्वरूपिणी विजयते शान्तिं करोत्येव नः॥

ॐ ऐं ईं नमः एतत् ते वदनं सौम्यं, लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भीतिभ्यः, कात्यायनि! नमोऽस्तु ते नमो ईं ऐं ॐ॥६००॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ज्वाला - करालमत्युग्रं'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य प्रथम - मन्त्रस्य श्री वह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा - काली देवता, जुं वीजं, श्री भ्रान्ति शक्तिः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, तमो - गुण - प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, गुद - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य प्रथम - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीवह्नि - पुरोगमा - ब्रह्मादयो - सेन्द्रा - सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - काली - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, जुं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीभ्रान्ति - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, गुद - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य प्रथम - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं जुं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ज्वाला - करालमत्युग्रं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अशेषासुर - सूदनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रिशूलं पातु नो भीतेः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
भद्र - कालि! नमोऽस्तु ते	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आद्यैरग्नि - रवीन्दु - बिम्ब - निलयैरम्ब! त्रि - लिङ्गात्मभि -**
मिश्रा रक्तासित - प्रभैरनुपमैर्युष्मत् - पदैस्तैस्त्रिभिः।
स्वात्मोत्पादित - काल - लोक - निगमावस्थामरादि - त्रयै -
रुद्भूतं शिव - कालिकेति कलयेद् यस्ते स धन्यो नरः॥

ॐ ऐं जुं नमः ज्वाला - करालमत्युग्रमशेषासुर - सूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि! नमोऽस्तु ते नमो जुं ऐं ॐ॥६०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६०२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हिनस्ति दैत्य-तेजांसि'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, त्रैं वीजं, श्रीचिति शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रैं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचिति-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्रैं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हिनस्ति दैत्य-तेजांसि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्वनेनापूर्य या जगत्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा घण्टा पातु नो देवि!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
पापेभ्योऽनः सुतानिव	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**ब्रह्मा ब्रह्म-स्वरूपिणी जल-धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या-वस्त्र-कमण्डलुः कर-जपा त्वक्षांशु-मन्मोहिनी।
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृता लोक-त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त-स्वरूपिणी विजयते शान्तिं करोत्येव नः॥

ॐ ऐं त्रैं नमः हिनस्ति दैत्य-तेजांसि, स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्योऽनः सुतानिव नमो त्रैं ऐं ॐ॥ ६०२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'असुरासृग्-वसा-पङ्क'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य तृतीय-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, द्रूं वीजं, श्रीसन्ध्या शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसन्ध्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
असुरासृग्-वसा-पङ्क	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चर्चितस्ते करोज्ज्वलः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शुभाय खड्गो भवतु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चण्डिके! त्वां नता वयं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आद्यैरग्नि-रवीन्दु-बिम्ब-निलयैरम्ब! त्रि-लिङ्गात्मभि-**
मिश्रा रक्तासित-प्रभैरनुपमैर्युष्मत्-पदैस्तैस्त्रिभिः।
स्वात्मोत्पादित-काल-लोक-निगमावस्थामरादि-त्रयै-
रुद्भूतं शिव-कालिकेति कलयेद् यस्ते स धन्यो नरः॥

ॐ ऐं द्रूं नमः असुरासृग्-वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु, चण्डिके! त्वां नता वयम् नमो द्रूं ऐं ॐ॥६०३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रोगानशेषानपहंसि तुष्टा'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं वीजं, श्रीउषा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीउषा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**ऐन्द्रस्येव शरासनं विदधती मध्ये ललाट-प्रभाम्,**
शौक्लीं कान्तिमुष्य गोरिव शिरस्यातन्वतीं सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हदि द्युतिरिवोष्मांशोः सदा हि स्थिता,
रोगान् सर्व-भयाननुग्रह-युता हन्ति स्वयं सिद्धिदा॥

ॐ ऐं ह्रौं नमः रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति नमो ह्रौं ऐं ॐ॥ ६०४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एतत्-कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लीं वीजं, श्री मध्या शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमध्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, त्वक्-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एतत् कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धर्म-द्विषां देवि! महाऽसुराणां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रूपैरनेकैर्वहुधाऽऽत्म-मूर्तिं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कृत्वाऽम्विके! तत् प्रकरोति काऽन्या	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**दुर्गे! चाष्ट-भुजे! सरस्वति! परे! रूपैरनेकैस्त्वया,**
एतद् यत्-कदनं कृतं सुर तथा धर्म-द्विषां द्रोहिणाम्।
काऽन्या कोऽन्यो कलाऽन्या कतिपय-करणे शक्नुवन्तो कराले!,
त्वत्-करुणा-वरुणालये स-करुणे तु नन्दन्ति योगीश्वराः॥

ॐ ऐं क्लीं नमः एतत् कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य, धर्म-द्विषां देवि! महाऽसुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्म-मूर्तिम्, कृत्वाऽम्विके तत् प्रकरोति काऽन्या नमो क्लीं ऐं ॐ॥६०५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपेषु'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षष्ठम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सूं वीजं, श्री आद्या शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षष्ठम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीआद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षष्ठम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ममत्व-गर्तेऽति-महान्धकारे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **त्वं विद्ये शास्त्र-दीपे त्वमसि स्वर-विवेकात्म-दृष्टिः परा सा,**
त्वं मायामहयन्ती प्रखर-तम-तमा चान्धकारो विवेके।
त्वां नित्यं जप-योग-ध्यान-प्रमुखै भक्त्याद्यमी साधनैः,
सेवन्ते सुर-सङ्घ-दैत्य-निकराम्बां स्मरेत् शारदाम्॥

ॐ ऐं सूं नमः विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या?
ममत्व-गर्तेऽति-महान्धकारे, विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् नमो सूं ऐं ॐ॥६०६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्तम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, हौं वीजं, श्रीव्रीड़ा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्री महा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीव्रीड़ा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यत्रारयो दस्यु-बलानि यत्र	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दावानलो यत्र तथाऽब्धि-मध्ये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **यः कश्चिद् बुद्धि-हीनोऽप्यविदित-नमन-ध्यान-पूजा-प्रकारः,**
तेषामर्थे विकारास्सकल-कलि-कराः रक्ष-नागादि-भीतिः।
कर्याद् यद्यम्ब-सेवां तव पद-सरसी यत्न-लेश-विनैव,
चित्रं तस्यास्य मध्यात् प्रसरति कविता-वाहिनी दिव्य-शक्तिः॥

ॐ ऐं हौं नमः रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा, यत्रारयो दस्यु-बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धि-मध्ये, तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् नमो हौं ऐं ॐ॥६०७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, श्व्रं वीजं, श्रीकला शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्व्रं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, चक्षु-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्व्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति	कनिष्ठिकाभ्या वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **राजन्मत्त-मराल-मन्द-गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,**
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत्-पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्ण-हृदयस्थ-चक्र-वसितां ध्यायेज्जगन्मातरम्॥

ॐ ऐं श्व्रं नमः विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः नमो श्व्रं ऐं ॐ॥ ६०८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६०६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देवि! प्रसीद परि-पालय'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य नवम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ब्रूं वीजं, श्रीआद्या शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ब्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीआद्या-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नवम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
देवि! प्रसीद परि-पालय नोऽरि-भीतेः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नित्यं यथाऽसुर-वधादधुनैव सद्यः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उत्पात-पाक-जनितांश्च महोप-सर्गान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**इन्द्रः कामः सुरेशो विदथ-नवल-सृगु-वाम-नेत्रार्द्ध-चन्द्रैः,**
युक्तं यद् वीजमेतत् तदपि तव वपुः सच्चिदानन्द-रूपम्।
बाला त्वं भैरवी त्वं त्रिभुवन-जननी तारिणी नील-वर्णा,
त्वं गौरी त्वं च काली सकल-मनु-मयी त्वं महा-मोक्ष-दात्री॥

ॐ ऐं ब्रूं नमः देवि! प्रसीद परि-पालय नोऽरि-भीतेर्नित्यं यथाऽसुर-वधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु, उत्पात-पाक-जनितांश्च महोप-सर्गान् नमो ब्रूं ऐं ॐ॥ ६०६॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६१०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'प्रणतानां प्रसीद त्वं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य दशम-मन्त्रस्य श्री वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, स्क्रूं वीजं, श्रीविकला शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो-सेन्द्रा-सुरा ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविकला-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुण प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य दशम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्रणतानां प्रसीद त्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवि! विश्वार्ति-हारिणि!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
लोकानां वरदा भव	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत-हंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्ष-सूत्रम्,**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर-कनक-मयं पुस्तकं ज्ञान-गम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्व-कर-कर-जपैः शास्त्र-विज्ञान-शब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्य-रूपा कर-कमल-धरा भारती सु-प्रसन्ना॥

ॐ ऐं स्क्रूं नमः प्रणतानां प्रसीद त्वं, देवि! विश्वार्ति-हारिणि!
त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये, लोकानां वरदा भव नमो स्क्रूं ऐं ॐ॥ ६१०॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६११

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एकादश - मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्री सुकला शक्तिः, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याः, सतो - गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकादश - मन्त्र - जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमार्कण्डेय - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुकला - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग - कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग - कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकादश - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम् ।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम् ॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ ॥ ६११ ॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः ।

***

६१२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वरदाऽहं सुर-गणा'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वादश-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती त्रिगुणा (महा-काली, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती) देवता, लं वीजं, श्रीज्योत्स्ना शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्व-रजो-तमांसि त्रि-गुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, सप्त स्वराः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, वरदा मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-त्रिगुणा-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, लं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीज्योत्स्ना-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्वं-रजो-तमांसि-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, सप्त-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वरदा-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-महामाया-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं लं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वरदाऽहं सुर-गणा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वरं यन्मनसेच्छथ	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जगतामुप-कारकं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मातः कांचन-दण्ड-मण्डितमिदं पूर्णेन्दु-बिम्ब-प्रभम्,**
नाना-रत्न-विशोभि-हेम-कलशं लोक-त्रयाह्लादकम्।
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृतं प्रीत्यात्म-हस्ते धृतम्,
छत्रं विष्णु-हरादिभिर्विजयते वर-दान-दानोद्यता॥

ॐ ऐं लं नमः वरदाऽहं सुर-गणा, वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि, जगतामुप-कारकम् नमो लं ऐं ॐ॥ ६१२॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६१३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देवा ऊचुः'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयोदश - मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, ह्सौं वीजं, श्रीनीला शक्तिः, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याः, सतो - गुण - प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयोदश - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमार्कण्डेय - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्सौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनीला - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ - प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयोदश - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्सौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्सौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
देवा ऊचुः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आरूढा श्वेत - हंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्ष - सूत्रम्,**
वामे हस्ते च दिव्याम्बर - कनक - मयं पुस्तकं ज्ञान - गम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्व - कर - कर - जपैः शास्त्र - विज्ञान - शब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्य - रूपा कर - कमल - धरा भारती सु - प्रसन्ना॥

ॐ **ऐं ह्सौं नमः** **देवा ऊचुः** **नमो ह्सौं ऐं ॐ॥ ६१३॥**

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६१४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सर्वा-बाधा-प्रशमनं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्रस्य श्री सेन्द्रा सुरा ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, सें बीजं, श्रीरमा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीसेन्द्रा-सुरा-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरमा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, स्तवन-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुर्दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्वा-बाधा-प्रशमनं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवमेव त्वया कार्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अस्मद्-वैरि-विनाशनं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **मुख-कमल-विलास-लोल-वेणी, विलसित-जित-लोल-भृङ्ग-माला।**
इयमभिनय-दर्शन-प्रवीणा, शमयतु बाधाः मानसं त्वदीयम्॥

ॐ ऐं सें नमः सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम् नमो सें ऐं ॐ॥६१४॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६१५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य पञ्च - दश - मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्रीकिणि शक्तिः, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याः, सतो - गुण-प्रधान त्रिगुणाः, श्रोतृ - प्रधान पञ्च - ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्त रसः, लिङ्ग - प्रधान पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, स्तवन स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः - प्रधान त्रिगुणाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवन मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत-प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - दश - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमार्कण्डेय - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकिणि - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुण - प्रधान - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, श्रोतृ-प्रधान - पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग - प्रधान - पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः लिङ्ग - कर्मेन्द्रिये, स्तवन - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, स्तवन - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - महामाया - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत-प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - दश - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥ ६१५॥**

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षोडश-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ल्हीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसाः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ल्हीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षोडश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ल्हीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अष्टा-विंशतिमे युगे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्याव	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उत्पत्स्येते महाऽसुरौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ल्हीं नमः वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते, अष्टा-विंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महाऽसुरौ नमो ल्हीं ऐं ॐ॥६१६॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६१७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'नन्द-गोप-गृहे जाता'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, विं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्त्यश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसाः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, विं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्त्यश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-दश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं विं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
नन्द-गोप-गृहे जाता	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
यशोदा-गर्भ-सम्भवा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततस्तौ नाशयिष्यामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विन्ध्याचल-निवासिनी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**

कूटस्थं यदि बा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं विं नमः नन्द-गोप-गृहे जाता, यशोदा-गर्भ-सम्भवा।

ततस्तौ नाशयिष्यामि, विन्ध्याचल-निवासिनी नमो विं ऐं ॐ॥६१७॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृतादि-हव्येन होमः।

***

६१८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पुनरप्यति-रौद्रेण'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, प्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसाः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टादश-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पुनरप्यति-रौद्रेण	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
रूपेण पृथिवी-तले	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अवतीर्य हनिष्यामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वैप्रचित्तांस्तु दानवान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
वेद-व्याकरणावगाह-कविता तर्कोक्ति-मुक्ति-प्रदम्।
वश्याकर्ष-पुर-प्रवेश-नगर-क्षोभादि-सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त-मनसो श्रीरक्त-दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं प्लीं नमः पुनरप्यति-रौद्रेण, रूपेण पृथिवी-तले।
अवतीर्य हनिष्यामि, वैप्रचित्तांस्तु दानवान् नमो प्लीं ऐं ॐ॥६१८॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६१६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य ऊन - विंशति - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, क्ष्म्क्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव - रसाः, पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्म्क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वैप्रचित्तान् महाऽसुरान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
दाडिमी - कुसुमोपमाः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव - कम्प - घूर्ण - नयनं निद्राट्ट - हासादिकम्,**
वेद - व्याकरणावगाह - कविता तर्कोक्ति - मुक्ति - प्रदम्।
वश्याकर्ष - पुर - प्रवेश - नगर - क्षोभादि - सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त - मनसो श्रीरक्त - दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्, वैप्रचित्तान् महाऽसुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति, दाडिमी - कुसुमोपमाः नमो क्ष्म्क्लीं ऐं ॐ॥ ६१६॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६२०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो मां देवताः'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, त्स्रां बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसाः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, त्स्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं त्स्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततो मां देवताः स्वर्गे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मर्त्य-लोके च मानवाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सततं रक्त-दन्तिकां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
वेद-व्याकरणावगाह-कविता तर्कोक्ति-मुक्ति-प्रदम्।
वश्याकर्ष-पुर-प्रवेश-नगर-क्षोभादि-सिद्धिप्रदकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त-मनसो श्रीरक्त-दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं त्स्रां नमः ततो मां देवताः स्वर्गे, मर्त्य-लोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति, सततं रक्त-दन्तिकाम् नमो त्स्रां ऐं ॐ॥६२०॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भूयश्च शत- वार्षिक्यां'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एक - विंशति - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, प्रं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव - रसः, पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, प्रं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे - मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं प्रं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भूयश्च शत - वार्षिक्यां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अनावृष्ट्यामनम्भसि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मुनिभिः संस्तुता भूमौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
सम्भविष्याम्ययोनिजा	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव - कम्प - घूर्ण - नयनं निद्राट्ट - हासादिकम्,**
वेद - व्याकरणावगाह - कविता - तर्कोक्ति - मुक्ति - प्रदम्।
वश्याकर्ष - पुर - प्रवेश - नगर - क्षोभादि - सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त - मनसो श्रीरक्त - दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं प्रं नमः भूयश्च शत - वार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ, सम्भविष्याम्ययोनिजा नमो प्रं ऐं ॐ॥ ६२१॥

११०० जपात् सिद्धिः घृतं - हव्येन होमः।

***

६२२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततः शतेन नेत्राणां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, म्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं म्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततः शतेन नेत्राणां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शताक्षीमिति मां ततः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
वेद-व्याकरणावगाह-कविता-तर्कोक्ति-मुक्ति-प्रदम्।
वश्याकर्ष-पुर-प्रवेश-नगर-क्षोभादि-सिद्धयष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त-मनसो श्रीरक्त-दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं म्लीं नमः ततः शतेन नेत्राणां, निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः, शताक्षीमिति मां ततः नमो म्लीं ऐं ॐ॥६२२॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततोऽहमखिलं लोकं'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयो - विंशति - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, स्रूं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव - रसः, पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयो - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे - मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयो - विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं स्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ततोऽहमखिलं लोकं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
आत्म - देह - समुद्भवैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भरिष्यामि सुराः शाकैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
आवृष्टेः प्राण - धारकैः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**आनन्दोद्भव - कम्प - घूर्ण - नयनं निद्राट्ट - हासादिकम्,**
वेद - व्याकरणावगाह - कविता - तर्कोक्ति - मुक्ति - प्रदम्।
वश्याकर्ष - पुर - प्रवेश - नगर - क्षोभादि - सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त - मनसो श्रीरक्त - दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं स्रूं नमः ततोऽहमखिलं लोकमात्म - देह - समुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राण - धारकैः नमो स्रूं ऐं ॐ॥६२३॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६२४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शाकम्भरीति विख्यातिं'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य चतुर्विंशति - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, क्ष्मां बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव - रसः, पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य चतुर्विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्ष्मां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे - मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य चतुर्विंशति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्ष्मां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शाकम्भरीति विख्यातिं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तदा यास्याम्यहं भुवि	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तत्रैव च वधिष्यामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
दुर्गमाख्यं महाऽसुरं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव - कम्प - घूर्ण - नयनं निद्राट्ट - हासादिकम्,**
वेद - व्याकरणावगाह - कविता - तर्कोक्ति - मुक्ति - प्रदम्।
वश्याकर्ष - पुर - प्रवेश - नगर - क्षोभादि - सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त - मनसो श्रीरक्त - दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं क्ष्मां नमः शाकम्भरीति विख्यातिं, तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि, दुर्गमाख्यं महाऽसुरम् नमो क्ष्मां ऐं ॐ॥६२४॥

११०० जपात् सिद्धिओछ, घृत - हव्येन होमः।

***

६२५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दुर्गा-देवीति विख्यातं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, स्तूं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्तूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्तूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहः
दुर्गा-देवीति विख्यातं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तन्मे नाम भविष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पुनश्चाहं यदा भीमं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रूपं कृत्वा हिमाचले	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
वेद-व्याकरणावगाह-कविता-तर्कोक्ति-मुक्ति-प्रदम्।
वश्याकर्ष-पुर-प्रवेश-नगर-क्षोभादि-सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त-मनसो श्रीरक्त-दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं स्तूं नमः दुर्गा-देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं, रूपं कृत्वा हिमाचले नमो स्तूं ऐं ॐ॥६२५॥

११०० जपात् सिद्धः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रक्षांसि भक्षयिष्यामि'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षष्ठ-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, स्त्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य षष्ठ-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्त्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षष्ठ-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्त्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रक्षांसि भक्षयिष्यामि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मुनीनां त्राण-कारणात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदा मां मुनयः सर्वे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्तोष्यन्त्यानम्र-मूर्तयः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **आनन्दोद्भव-कम्प-घूर्ण-नयनं निद्राट्ट-हासादिकम्,**
वेद-व्याकरणावगाह-कविता-तर्कोक्ति-मुक्ति-प्रदम्।
वश्याकर्ष-पुर-प्रवेश-नगर-क्षोभादि-सिद्ध्यष्टकम्,
सर्वं सिद्ध्यति यस्य चित्त-मनसो श्रीरक्त-दन्तां स्मरेत्॥

ॐ ऐं स्त्रीं नमः रक्षांसि भक्षयिष्यामि, मुनीनां त्राण-कारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे, स्तोष्यन्त्यानम्र-मूर्तयः नमो स्त्रीं ऐं ॐ॥ ६२६॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भीमा-देवीति विख्यातं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, थ्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, थ्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं थ्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भीमा-देवीति विख्यातं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तन्मे नाम भविष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-बाधां करिष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं थ्रीं नमः भीमा-देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये, महा-बाधां करिष्यति नमो थ्रीं ऐं ॐ॥६२७॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तदाऽहं भ्रामरं रूपं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, क्रौं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टा-विंशति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तदाऽहं भ्रामरं रूपं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कृत्वाऽसंख्येय-षट्-पदं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वधिष्यामि महाऽसुरं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्रौं नमः तदाऽहं भ्रामरं रूपं, कृत्वाऽसंख्येय-षट्-पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय, वधिष्यामि महाऽसुरम् नमो क्रौं ऐं ॐ॥ ६२८॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६२६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भ्रामरीति च मां लोकाः'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य ऊन-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, श्रां बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव-रसः, पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य ऊन-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे-मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य ऊन-त्रिशंत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भ्रामरीति च मां लोकाः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इत्थं यदा यदा बाधा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दानवोत्था भविष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं श्रां नमः भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा, दानवोत्था भविष्यति नमो श्रां ऐं ॐ॥६२६॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६३०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तदा तदाऽवतीर्याऽहं'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, म्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव - रसः, पञ्च - कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यासः—श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, म्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे— कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे - मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशीष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ म्लीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं म्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तदा तदाऽवतीर्याऽहं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
करिष्याम्यरि - संक्षयं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यञ्जना व्यञ्जनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥

ॐ ऐं म्लीं नमः तदा तदाऽवतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि - संक्षयम् नमो म्लीं ऐं ॐ ॥ ६३० ॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः ।

* * *

इति श्रीमार्कण्डेय - पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे दवी - माहात्म्ये देव - कृत - नारायणी - स्तुतिर्नामैकादशोऽध्याय ॥ ११ ॥
(श्लोकाः ५०, अर्द्ध - श्लोक १, उवाच ४, एवमादितो ६३०)

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

द्वादश अध्याय

६३१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य एक-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य एक-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य एक-त्रिशंत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ॥६३१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६३२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एभिः स्तवैश्च मां नित्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ओं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ओं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एभिः स्तवैश्च मां नित्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स्तोष्यते यः समाहितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्याऽहं सकलां बाधां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नाशयिष्याम्यसंशयं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ओं नमः एभिः स्तवैश्च मां नित्यं, स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याऽहं सकलां बाधां, नाशयिष्याम्यसंशयम् नमो ओं ऐं ॐ॥६३२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६३३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मधु - कैटभ - नाशं च'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयस्त्रिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, श्रीं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयस्त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयस्त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मधु - कैटभ - नाशं च	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महिषासुर - घातनं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
कीर्तयिष्यन्ति ये तद् - वद्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
वधं शुम्भ - निशुम्भयोः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः मधु - कैटभ - नाशं च, महिषासुर - घातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद् - वद्, वधं शुम्भ - निशुम्भयोः नमो श्रीं ऐं ॐ॥ ६३३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६३४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अष्टम्यां च चतुर्दश्यां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुस्त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ईं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुस्त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ईं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशीष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुस्त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ईं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नवम्यां चैक-चेतसः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मम माहात्म्यमुत्तमम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ईं नमः अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, नवम्यां चैक-चेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या, मम माहात्म्यमुत्तमम् नमो ईं ऐं ॐ॥ ६३४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६३५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य पञ्च - त्रिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, क्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि- योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष- मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - त्रिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ने तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दुष्कृतोत्था न चापदः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
भविष्यति न दारिद्र्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
न चैवेष्ट - वियोजनम्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**

कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥

ॐ ऐं क्लीं नमः न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्, दुष्कृतोत्था न चापदः ।

भविष्यति न दारिद्र्यं, न चैवेष्ट - वियोजनम् नमो क्लीं ऐं ॐ ॥ ६३५ ॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः ।

***

६३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शत्रुतो न भयं तस्य'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षट्-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, क्रूं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षट्-त्रिशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षट्-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शत्रुतो न भयं तस्य	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
दस्युतो वा न राजतः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
न शस्त्रानल-तोयौघात्	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
कदाचित् सम्भविष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्रूं नमः शत्रुतो न भयं तस्य, दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानल-तोयौघात्, कदाचित् सम्भविष्यति नमो क्रूं ऐं ॐ॥६३६॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-हव्येन होमः।

***

६३७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, श्रूं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य सप्त-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पठितव्यं समाहितैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
परं स्वस्त्ययनं हि तत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं श्रूं नमः तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं, पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या, परं स्वस्त्ययनं हि तत् नमो श्रूं ऐं ॐ॥ ६३७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृतादि-हव्येन होमः।

***

६३८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'उपसर्गानशेषांस्तु'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, प्रां बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नवशक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नवरसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, प्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टा-त्रिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उपसर्गानशेषांस्तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महा-मारी-समुद्भवान्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तथा त्रिविधमुत्पातं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
माहात्म्यं शमयेन्मम	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं प्रां नमः उपसर्गानशेषांस्तु, महा-मारी-समुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं, माहात्म्यं शमयेन्मम नमो प्रां ऐं ॐ॥ ६३८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६३६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, स्क्रूं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्क्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं स्क्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नित्यमायतने मम	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सदा न तद् विमोक्ष्यामि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
सान्निध्यं तत्र मे स्थितं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं स्क्रूं नमः यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्, नित्यमायतने मम।
सदा न तद् विमोक्ष्यामि, सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् नमो स्क्रूं ऐं ॐ॥ ६३६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६४०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बलि-प्रदानने पूजायां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, दिं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, दिं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं दिं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वलि-प्रदानने पूजायां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
अग्नि-कार्ये महोत्सवे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सर्वं ममैतच्चरितं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
उच्चार्यं श्राव्यमेव च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं दिं नमः बलि-प्रदानने पूजायामग्नि-कार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च नमो दिं ऐं ॐ॥६४०॥

११०० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जानताऽजानता वापि'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एक - चत्वारिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, फ्रें वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, फ्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं फ्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
जानताऽजानता वापि	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वलि - पूजां तथा कृतां	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
वह्नि - होमं तथा कृतं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं फ्रें नमः जानताऽजानता वापि, बलि - पूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या, वह्नि - होमं तथा कृतम्। नमो फ्रें ऐं ॐ॥ ६४१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६४२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शरत्-काले महा-पूजा'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, हं वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, हं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः क्रण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वा-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शरत्-काले महा-पूजा	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्रियते या च वार्षिकी	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं हं नमः शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं, श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः नमो हं ऐं ॐ॥६४२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सर्वा - बाधा - विनिर्मुक्तो'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशत् - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, सः बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, सः बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयश्चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्वा - बाधा - विनिर्मुक्तो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धन - धान्य - सुतान्वितः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मनुष्यो मत् - प्रसादेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
भविष्यति न संशयः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं सः नमः सर्वा - बाधा - विनिर्मुक्तो, धन - धान्य - सुतान्वितः।
मनुष्यो मत् - प्रसादेन, भविष्यति न संशयः नमो सः ऐं ॐ॥६४३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

* * *

६४४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, चें वीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, चें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुश्चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं चें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथा चोत्पत्तयः शुभाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पराक्रमं च युद्धेषु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जायते निर्भयः पुमान्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं चें नमः श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं, तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु, जायते निर्भयः पुमान् नमो चें ऐं ॐ॥६४४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रिपवः संक्षयं यान्ति'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, सूं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, सूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य पञ्च-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रिपवः संक्षयं यान्ति	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
कल्याणं चोप-पद्यते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
नन्दते च कुलं पुंसां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
माहात्म्यं मम श्रृण्वतां	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं सूं नमः रिपवः संक्षयं यान्ति, कल्याणं चोप-पद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां, माहात्म्यं मम शृण्वताम् नमो सूं ऐं ॐ॥६४५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'शान्ति-कर्मणि सर्वत्र'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, प्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य षट्-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
शान्ति-कर्मणि सर्वत्र	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तथा दुःस्वप्न-दर्शने	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ग्रह-पीडासु चोग्रासु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
माहात्म्यं शृणुयान्मम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः शान्ति-कर्मणि सर्वत्र, तथा दुःस्वप्न-दर्शने।
ग्रह-पीडासु चोग्रासु, माहात्म्यं शृणुयान्मम नमो प्रीं ऐं ॐ॥६४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'उप-सर्गाः शमं यान्ति'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ब्लूं बीजं, श्रींचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ब्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्बीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य सप्त-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ब्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
उप-सर्गाः शमं यान्ति	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ग्रह-पीडाश्च दारुणाः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सु-स्वप्नमुप-जायते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**

कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ब्लूं नमः उप-सर्गाः शमं यान्ति, ग्रह-पीडाश्च दारुणाः।

दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं, सु-स्वप्नमुप-जायते नमो ब्लूं ऐं ॐ॥६४७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बाल-ग्रहाभि-भूतानां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशत्-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, आं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, आं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टा-चत्वारिंशत्-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
बाल-ग्रहाभि-भूतानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बालानां शान्ति-कारकं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
संघात-भेदे च नृणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मैत्री-करणमुत्तमं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं आं नमः बाल-ग्रहाभि-भूतानां, बालानां शान्ति-कारकम्।
संघात-भेदे च नृणां, मैत्री - करणमुत्तमम् नमो आं ऐं ॐ॥ ६४८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६४६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दुर्वृत्तानामशेषाणां'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंश - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, औं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नवशक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंशन्मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, औं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य ऊन - चत्वारिंशत् - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दुर्वृत्तानामशेषाणां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
बल - हानि - करं परं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
रक्षो - भूत - पिशाचानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
पठनादेव नाशनं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं औं नमः दुर्वृत्तानामशेषाणां, बल - हानि - करं परम्।
रक्षो - भूत - पिशाचानां, पठनादेव नाशनम् नमो औं ऐं ॐ॥ ६४६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६५०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सर्वं ममैतन्माहात्म्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ह्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मम सन्निधि-कारकं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
पशु-पुष्पार्घ्य-धूपैश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गन्ध-दीपैस्तथोत्तमैः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः सर्वं ममैतन्माहात्म्यं, मम सन्निधि-कारकम्।
पशु-पुष्पार्घ्य-धूपैश्च, गन्ध-दीपैस्तथोत्तमैः नमो ह्रीं ऐं ॐ॥ ६५०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विप्राणां भोजनैर्होमैः'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एक - पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, क्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - पञ्चाशन्मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - पञ्चाशन्मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विप्राणां भोजनैर्होमैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रोक्षणीयैरहर्निशं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
प्रदानैर्वत्सरेण या	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः विप्राणां भोजनैर्होमैः, प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः, प्रदानैर्वत्सरेण या नमो क्रीं ऐं ॐ ॥६५१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६५२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, द्रां बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, द्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वा-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सुकृत् सुचरिते श्रुते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
श्रुतं हरति पापानि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रम
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं न

ॐ ऐं द्रां नमः प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्, सुकृत् सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि, तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ ७० ॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'रक्षां करोति भूतेभ्यो'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य त्रयष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, श्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य त्रयष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य त्रयष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
रक्षां करोति भूतेभ्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
जन्मनां कीर्तनं मम	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युद्धेषु चरितं यन्मे	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दुष्ट-दैत्य-निबर्हणं	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः रक्षां करोति भूतेभ्यो, जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे, दुष्ट-दैत्य-निबर्हणम् नमो श्रीं ऐं ॐ॥ ६५३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तस्मिञ्छुते वैरि-कृतं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, स्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुष्पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तस्मिञ्छुते वैरि-कृतं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भयं पुंसां न जायते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
युष्माभिः स्तुतयो याश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं स्लीं नमः तस्मिञ्छुते वैरि-कृतं, भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च, याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः नमो स्लीं ऐं ॐ॥ ६५४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, क्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
अरण्ये प्रान्तरे वापि	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दावाग्नि-परि-वारितः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु, प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि, दावाग्नि-परि-वारितः नमो क्लीं ऐं ॐ॥६५५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दस्युभिर्वा वृतः शून्ये'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, स्लूं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, स्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यों नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य षट्-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं स्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गृहीतो वापि शत्रुभिः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सिंह-व्याघ्रानु-यातो वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वने वा वन-हस्तिभिः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं स्लूं नमः दस्युभिर्वा वृतः शून्ये, गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंह-व्याघ्रानु-यातो वा, वने वा वन-हस्तिभिः नमो स्लूं ऐं ॐ॥ ६५६॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-हव्येन होमः।

***

६५७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, ह्रीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्त्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वध्यो बन्ध-गतोऽपि वा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आघूर्णितो वा वातेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्थितः पोते महार्णवे	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो, वध्यो बन्ध-गतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन, स्थितः पोते महार्णवे नमो ह्रीं ऐं ॐ॥ ६५७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृतादि-हव्येन होमः।

***

६५८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पतत्सु चापि शस्त्रेषु'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, क्लीं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्ट-पञ्चाशन्मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पतत्सु चापि शस्त्रेषु	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
संग्रामे भृश-दारुणे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सर्वा-बाधासु घोरासु	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वेदनाऽभ्यर्दितोऽपि वा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः पतत्सु चापि शस्त्रेषु, संग्रामे भृश-दारुणे।
सर्वा-बाधासु घोरासु, वेदनाऽभ्यर्दितोऽपि वा नमो क्लीं ऐं ॐ॥ ६५८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६५६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स्मरन् ममैतच्चरितं'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्रस्य श्रीमहा - सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीः देवताः, ओं बीजं, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो नव - शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याः, सत् - रजो - तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च - तत्वानि तत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमहा - सरस्वती - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वती - देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, ओं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि - योगिन्यो - नव - शक्तयश्च - शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि - दश - महा - विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत् - रजो - तमाः - त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च - ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव - रसाय नमः चेतसि, पञ्च - कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, पञ्च - तत्त्वानि - तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च - कलाभ्यो नमः कर - तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकोन - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्मरन् ममैतच्चरितं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नरो मुच्येत सङ्कटात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मम प्रभावात् सिंहाद्याः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
दस्यवो वैरिणस्तथा	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ओं नमः स्मरन् ममैतच्चरितं, नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात् सिंहाद्या, दस्यवो वैरिणस्तथा नमो ओं ऐं ॐ॥६५६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'दूरादेव पलायन्ते'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीः देवताः, त्रों बीजं, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो नव-शक्तयश्च शक्तयः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, सत्-रजो-तमाः त्रिगुणाः, पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नव रसाः, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, आशिष स्वरः, पञ्च-तत्वानितत्त्वं, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनं, आशिष मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं तत्त्वं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः द्वादशारे—हृदि, त्रों बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचतुष्षष्टि-योगिन्यो-नव-शक्तयश्च-शक्तिभ्यो नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः षोडशारे—कण्ठे, सत्-रजो-तमाः-त्रिगुणेभ्यो नमः अन्तरारे—मनसि, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, नव-रसाय नमः चेतसि, पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः कर्मेन्द्रिये, आशिष-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, पञ्च-तत्त्वानि-तत्त्वेभ्यो नमः चतुरारे—गुदे, पञ्च-कलाभ्यो नमः कर-तले, ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, आशिष-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रों नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं त्रों नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दूरादेव पलायन्ते	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्मरतश्चरितं मम	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं—**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**

कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं त्रों नमः दूरादेव पलायन्ते, स्मरतश्चरितं मम नमो त्रों ऐं ॐ॥ ६६०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एक - षष्टि - मन्त्रस्य श्रीवेद - व्यास ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, श्रीत्राणकरी शक्तिः, श्रीतारा महा - विद्याः, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, ताड़िनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीवेद - व्यास - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीत्राणकरी - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, श्रोतृ - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, कर - कर्मेन्द्रियाय नमः कर - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, भू - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति - कलायै नमः कर - तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ताड़िनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ नमोः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा —
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ ॥६६१॥**

१००० जपात् सिद्धिः, तिल - घृतादि - हव्येन होमः।

***

६६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इत्युक्त्वा सा भगवती'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ऐं बीजं, श्री अन्तर्गोप्त्री शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्याः, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं ह्रीं उत्कीलनं, गोपिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऐं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री अन्तर्गोप्त्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, गोपिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ऐं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ऐं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इत्युक्तवा सा भगवती	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
चण्डिका चण्ड-विक्रमा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**

कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं ऐं नमः इत्युक्त्वा सा भगवती, चण्डिका चण्ड-विक्रमा नमो ऐं ऐं ॐ॥६६२॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

* * *

६६३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'पश्यतामेव देवानां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य त्रयषष्टि-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रें बीजं, श्री अन्तर्गोप्त्री शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्याः, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, आकाश-तत्त्वं, परा-शान्ति कला, ह्रौं ॐ ऐं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य त्रयष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्री मार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री अन्तर्गोप्त्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, आकाश-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, परा-शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रौं ॐ ऐं उत्कीलनाय नमः, पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त - सप्तम-शतकस्य त्रयष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्रें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
पश्यतामेव देवानां	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तत्रैवान्तरधीयत	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तेऽपि देवा निरातङ्काः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
स्वाधिकारान् यथा पुरा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं —**एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**

कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।

यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,

जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं प्रें नमः पश्यतामेव देवानां, तत्रैवान्तरधीयत।

तेऽपि देवा निरातङ्का, स्वाधिकारान् यथा पुरा नमो प्रें ऐं ॐ॥६६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, द्रूं वीजं, जया शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्याः, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, द्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, जया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुष्षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं द्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
चक्रुर्विनिहतारयः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
दैत्याश्च देव्या निहते	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शुम्भे देव-रिपौ युधि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं द्रूं नमः यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे, चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते, शुम्भे देव-रिपौ युधि नमो द्रूं ऐं ॐ॥६६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन्'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लूं बीजं, श्रीचण्डी शक्तिः, श्रीभैरवी-काली महा-विद्याः, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, ह्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचण्डी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-काली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवति-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्च-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्लूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन्	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
महोग्रेऽतुल-विक्रमे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निशुम्भे च महा-वीर्ये	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
शेषाः पातालमाययुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं क्लूं नमः जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन्, महोग्रेऽतुल-विक्रमे।
निशुम्भे च महा-वीर्ये, शेषाः पातालमाययुः नमो क्लूं ऐं ॐ॥ ६६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एवं भगवती देवी'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य षट् - षष्टि - मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, औं बीजं, श्री विजया शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा - विद्याः, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं ह्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थ च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य षट् - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमेधस - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीविजया - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, घ्राण - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, गुद - कर्मेन्द्रियाय नमः गुद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, भू - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति - कलायै नमः कर - तले, ऐं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य षट् - षष्टि - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एवं भगवती देवी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सा नित्याऽपि पुनः पुनः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सम्भूय कुरुते भूप!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
जगतः परि - पालनं	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स - व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम - गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली - करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं औं नमः एवं भगवती देवी, सा नित्याऽपि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप! जगतः परि - पालनम् नमो औं ऐं ॐ॥ ६६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

***

६६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तयैतन्मोह्यते विश्वं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, सूं बीजं, अयोनिजा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्याः, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ल्हीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, अयोनिजा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ल्हीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
तयैतन्मोह्यते विश्वं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सैव विश्वं प्रसूयते	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सा याचिता च विज्ञानं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **एकैकं तव देवि! जन्म ह्यनघं स-व्यंजना व्यंजनम्,**
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम्॥

ॐ ऐं सूं नमः तयैतन्मोह्यते विश्वं, सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं, तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति नमो सूं ऐं ॐ॥६६७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'व्याप्तं तयैतत् सकलं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टा-षष्टि-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, चें बीजं, श्रीशताक्षी शक्तिः, श्रीकाली ज्येष्ठा महा-विद्याः, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, चें बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-ज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टा-षष्टि-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं चें	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
व्याप्तं तयैतत् सकलं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
महा-काल्या महा-काले	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
महा-मारी-स्वरूपया	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृतां।।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ ऐं चें नमः व्याप्तं तयैतत् सकलं, ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर!
महा-काल्या महा-काले, महा-मारी-स्वरूपया नमो चें ऐं ॐ।। ६६८।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६६९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सैव काले महा-मारी'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, हूं बीजं, श्रीशताक्षी शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्याः, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीशताक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य ऊन-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं हूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सैव काले महा-मारी	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
सैव सृष्टिर्भवत्यजा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्थितिं करोति भूतानां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सैव काले सनातनी	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं हूं नमः सैव काले महा-मारी, सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां, सैव काले सनातनी नमो हूं ऐं ॐ॥ ६६९॥

१००० जपात् सिद्धि, घृत-हव्येन होमः।

***

६७०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'भव-काले नृणां सैव'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, प्लीं वीजं, श्रीमाया शक्तिः, श्रीकमला-महा-विद्याः, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाया-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
भव-काले नृणां सैव	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
लक्ष्मीर्वृद्धि-प्रदा गृहे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सैवाऽभावे तथाऽलक्ष्मीः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
विनाशायोप-जायते	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं प्लीं नमः भव-काले नृणां सैव, लक्ष्मीर्वृद्धि-प्रदा गृहे।
सैवाऽभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोप-जायते नमो प्लीं ऐं ॐ॥ ६७०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६७१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स्तुता सम्पूजिता पुष्पैः'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा - लक्ष्मी देवता, क्षां बीजं, श्रीमाया शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा - विद्याः, रजो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्बीज - स्व - बीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमेधस - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - लक्ष्मी - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्षां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाया - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, श्रोत्र - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग - कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, वायु - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति - कलायै नमः कर - तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्बीज - स्व - बीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एक - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं क्षां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
धूप - गन्धादिभिस्तथा	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ददाति वित्तं पुत्रांश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
मतिं धर्मे गतिं शुभाम्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष - स्रक् - परशुं गदेषु - कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म - जलजं घण्टां सुरा - भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल - प्रभां,
सेवे सैरिभ - मर्दिनीमिह महा - लक्ष्मीं सरोज - स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्षां नमः स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूप - गन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च, मतिं धर्मे गतिं शुभाम् नमो क्षां ऐं ॐ॥६७१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - हव्येन होमः।

॥ इति श्रीमार्कण्डेय - पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी - माहात्म्ये फल - स्तुतिः नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥
(श्लोकाः ३७, अर्द्ध - श्लोक २, उवाच २, एवमादितो ६७१)

***

ॐ ह्रीं श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीआदि-नाथाय नमः।

तृतीय चरित (शुम्भ-निशुम्भ-वधः)

त्रयोदशः अध्यायः

६७२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ऋषिरुवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रौं बीजं, त्राणकारी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्याः, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, ताडिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, त्राणकारी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, ताडिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रौं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ऋषिरुवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रौं नमः **ऋषिरुवाच** **नमो श्रौं ऐं ॐ॥६७२॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-हव्येन होमः।

***

६७३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'एतत् ते कथितं भूप!'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयस्सप्तति - मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, व्रीं वीजं, भीमा शक्तिः, श्रीभैरवी महा - विद्याः, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पद कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं ह्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रय - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमेधस - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, व्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, भीमा - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, चक्षु - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य - रसाय नमः चेतसि, पद - कर्मेन्द्रियाय नमः पद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, वायु - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति - कलायै नमः कर - तले, ऐं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयस्सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ व्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
एतत् ते कथितं भूप!	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी - माहात्म्यमुत्तमम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवं प्रभावा सा देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
ययेदं धार्यते जगत्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं व्रीं नमः एतत् ते कथितं भूप! देवी - माहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी, ययेदं धार्यते जगत् नमो व्रीं ऐं ॐ॥ ६७३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिल - हव्येन होमः।

***

६७४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'विद्या तथैव क्रियते'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ओं बीजं, श्री मीनाक्षी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्याः, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पद-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ओं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री मीनाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, पद-कर्मेन्द्रियाय नमः पद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुस्सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
विद्या तथैव क्रियते	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भगवद्-विष्णु-मायया	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
त्वया त्वमेष वैश्यश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तथैवान्ये विवेकिनः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ओं नमः विद्या तथैव क्रियते, भगवद्-विष्णु-मायया।
त्वया त्वमेष वैश्यश्च, तथैवान्ये विवेकिनः नमो ओं ऐं ॐ॥ ६७४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६७५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मोह्यन्ते मोहिताश्चैव'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा - काली देवता, औं बीजं, श्री काल - रात्रिः शक्तिः, श्रीकाली महा - विद्याः, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, पद - कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमेधस - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - काली - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, औं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री काल - रात्रि - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, चक्षु - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य - रसाय नमः चेतसि, पद - कर्मेन्द्रियाय नमः पद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, अग्नि - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या - कलायै नमः कर - तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - सप्तति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं औं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
मोहमेष्यन्ति चापरे	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तामुपैहि महा - राज!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
शरणं परमेश्वरीम्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र - गदेषु - चाप - परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग - भूषावृताम्॥
नीलाश्म - द्युतिमास्य - पाद - दशकां सेवे महा - कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं औं नमः मोह्यन्ते मोहिताश्चैव, मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महा - राज! शरणं परमेश्वरीम् नमो औं ऐं ॐ॥ ६७५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिल - हव्येन होमः।

***

६७६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'आराधिता सैव नृणां'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमेधस ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्रां वीजं, श्री मीनाक्षी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्याः, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमेधस-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री मीनाक्षी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोत्र-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य षट्-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रां नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
आराधिता सैव नृणां	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
भोग-स्वर्गापवर्गदा	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभां,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्रां नमः आराधिता सैव नृणां, भोग-स्वर्गापवर्गदा नमो ह्रां ऐं ॐ॥ ६७६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६७७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मार्कण्डेय उवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं बीजं, श्रीब्रह्म-चारिणी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्याः, सतो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीब्रह्म-चारिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मार्कण्डेय उवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः **मार्कण्डेय उवाच** **नमो श्रीं ऐं ॐ॥ ६७७॥**

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६७८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इति तस्य वचः श्रुत्वा'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रां बीजं, श्रीकामाक्षा शक्तिः, श्रीकाली महा-विद्याः, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रां बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामाक्षा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्ट-सप्तति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रां नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं श्रां नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इति तस्य वचः श्रुत्वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सुरथः स नराधिपः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं श्रां नमः इति तस्य वचः श्रुत्वा, सुरथः स नराधिपः नमो श्रां ऐं ॐ॥ ६७८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६७९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'प्रणिपत्य महा-भागं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ओं बीजं, श्रीकात्यायनी शक्तिः, श्रीकमला महा-विद्याः, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ओं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकात्यायनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नव-सप्तत-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ओं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्रणिपत्य महा-भागं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तम् ऋषिं शंसित-व्रतम्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निर्विण्णोऽति-ममत्वेन	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
राज्यापहरणेन च	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ओं नमः प्रणिपत्य महा-भागं, तमृ ऋषिं शंसित-व्रतम्।
निर्विण्णोऽति-ममत्वेन, राज्यापहरणेन च नमो ओं ऐं ॐ॥ ६७९॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'जगाम सद्यस्तपसे'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्लीं बीजं, श्रीकाल-रात्रि शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्याः, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री काल-रात्रि-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं प्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
जगाम सद्यस्तपसे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
स च वैश्यो महा-मुने!	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सन्दर्शनार्थमम्बाया	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
नदी-पुलिन-संस्थितः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं प्लीं नमः जगाम सद्यस्तपसे, स च वैश्यो महा-मुने!
सन्दर्शनार्थमम्बाया, नदी-पुलिन-संस्थितः नमो प्लीं ऐं ॐ॥६८०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८१

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स च वैश्यस्तपस्तेपे'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा - सरस्वती देवता, सौं वीजं, महा - मेधा शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा - विद्याः, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, गुद - कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीमार्कण्डेय - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - सरस्वती - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, महा - मेधा - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, रसना - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य - रसाय नमः चेतसि, गुद - कर्मेन्द्रियाय नमः गुद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, जल - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा - कलायै नमः कर - तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य एकाशीति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
स च वैश्यस्तपस्तेपे	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
देवी - सूक्तं परं जपन्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
कृत्वा मूर्तिं मही - मयीम्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधती घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्॥
गौरी - देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं सौं नमः स च वैश्यस्तपस्तेपे, देवी - सूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः, कृत्वा मूर्तिं मही - मयीम् नमो सौं ऐं ॐ॥ ६८१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिल - हव्येन होमः।

***

६८२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अर्हणां चक्रतुस्तस्याः'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वाशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ह्रीं बीजं, श्री चित्रघण्टा शक्तिः, श्रीभैरवी-महा-विद्याः, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, गुद-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री चित्रघण्टा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
निराहारौ यताहारौ	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तन्मनस्कौ समाहितौ	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः अर्हणां चक्रतुस्तस्याः, पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ, तन्मनस्कौ समाहितौ नमो ह्रीं ऐं ॐ॥ ६८२॥

१००० जपात् सिद्धिः घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ददतुस्तौ बलिं चैव'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य त्र्याशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, क्रीं बीजं, श्रीयशस्विनी शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्याः, रजो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, गुद-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य त्र्याशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीयशस्विनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य त्र्याशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं क्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ददतुस्तौ वलिं चैव	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
निज-गात्रासृगुक्षितं	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवं समाराधयतोः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं क्रीं नमः ददतुस्तौ बलिं चैव, निज-गात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः नमो क्रीं ऐं ॐ॥ ६८३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'परितुष्टा जगद्धात्री'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ल्लूं बीजं, श्रीकात्यायनी शक्तिः, श्रीज्येष्ठा महा-विद्याः, तमो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकात्यायनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीज्येष्ठा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्धयर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुरशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ल्लूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्लूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
परितुष्टा जगद्-धात्री	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

ॐ ऐं ल्लूं नमः परितुष्टा जगद्धात्री, प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका नमो ल्लूं ऐं ॐ।।६८४।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्री द्योतिनी शक्तिः, श्रीभैरवी-महा-विद्याः, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री द्योतिनी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तन्ने, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य पञ्चाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यास**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः देव्युवाच नमो ह्रीं ऐं ॐ॥ ६८५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'यत्-प्रार्थ्यते त्वया भूप'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, क्लीं बीजं, श्रीमाला-धरी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्याः, सतो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, क्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीमाला-धरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षडाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्लीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं क्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप!	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
त्वया च कुल-नन्दन!	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं क्लीं नमः यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप! त्वया च कुलनन्दन नमो क्लीं ऐं ॐ॥६८६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्रस्य श्रीमहा-सरस्वती ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, प्लीं बीजं, श्री त्रिनेत्रा शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्याः, तमो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, योनि-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमहा-सरस्वती-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री त्रिनेत्रा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्वरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्ताशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्लीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं प्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
परि-तुष्टा ददामि तत्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं प्लीं नमः मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परि-तुष्टा ददामि तत् नमो प्लीं ऐं ॐ॥६८७॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मार्कण्डेय उवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, श्रीरोहिणी शक्तिः, श्रीपीताम्बरा महा-विद्याः, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, योनि-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल-तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीरोहिणी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीपीताम्बरा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्टाशीति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मार्कण्डेय उवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं श्रीं नमः मार्कण्डेय उवाच नमो श्रीं ऐं ॐ॥ ६८८॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६८९

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'ततो वव्रे नृपो राज्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य ऊन-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ल्लीं बीजं, श्री सुभद्रा शक्तिः, श्री सुन्दरी महा-विद्याः, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, योनि-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य ऊन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ल्लीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीसुभद्रा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य ऊन-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ल्लीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ल्लीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ततो वव्रे नृपो राज्यं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
अविभ्रंश्यन्य-जन्मनि	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ल्लीं नमः ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्य-जन्मनि नमो ल्लीं ऐं ॐ॥६८९।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६६०

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'अत्रैव च निजं राज्यं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, श्रूं बीजं, श्री यम-घण्टा शक्तिः, श्री छिन्नमस्ता महा-विद्याः, तमो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीयम-घण्टा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं श्रूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
अत्रैव च निजं राज्यं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
हत-शत्रु-बलं बलात्	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
वव्रे निर्विण्ण-मानसः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं श्रूं नमः अत्रैव च निजं राज्यं, हत-शत्रु-बलं बलात्।
सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं, वव्रे निर्विण्ण-मानसः नमो श्रूं ऐं ॐ॥६६०॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६९१

विनियोग—ॐ अस्य श्री **'ममेत्यहमिति प्राज्ञः'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहासरस्वती देवता, हूं बीजं, कुमारी शक्तिः, श्रीतारा महाविद्या, सतो गुणः, श्रोत्र ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल-तत्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे–शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, हूं वीजाय नमः षडारे–लिङ्गे, कुमारी-शक्त्यै नमः दशारे–नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती- दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतस्य एक-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं हूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ममेत्यहमिति प्राज्ञः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सङ्ग-विच्युति-कारकम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं हूं नमः ममेत्यहमिति प्राज्ञः, सङ्ग-विच्युति-कारकम् नमो हूं ऐं ॐ॥६९१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६६२

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'देव्युवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, श्री कामदा शक्तिः, श्री भैरवी महा-विद्याः, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, सौम्य रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, भू तत्त्वं, निवृत्ति कला, ऐं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीकामदा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, सौम्य-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, भू-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, निवृत्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य द्वा-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं ह्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
देव्युवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः **देव्युवाच** **नमो ह्रीं ऐं ॐ॥६६२॥**

***

६६३

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'स्वल्पैरहोभिर्नृपते!'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य त्रयर्नवति - मन्त्रस्य श्री दुर्गा ऋषिः, श्रीमहा - लक्ष्मी देवता, त्रूं बीजं, श्री ब्रह्माणी शक्तिः, श्री कमला महा - विद्याः, रजो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, पद - कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयर्नवति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीदुर्गा - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - लक्ष्मी - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, त्रूं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री ब्रह्माणी - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकमला - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, श्रोतृ - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, पद - कर्मेन्द्रियाय नमः पद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, जल - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा - कलायै नमः कर - तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य त्रयर्नवति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
त्रूं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं त्रूं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
स्वल्पैरहोभिर्नृपते	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष - स्रक् - परशुं गदेषु - कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म - जलजं घण्टां सुरा - भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधती हस्तैः प्रवाल - प्रभाम्,
सेवे सैरिभ - मर्दिनीमिह महा - लक्ष्मीं सरोज - स्थिताम्॥

ॐ ऐं त्रूं नमः स्वल्पैरहोभिर्नृपते! स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् नमो त्रूं ऐं ॐ॥६६३॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिल - हव्येन होमः।

***

६६४

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'हत्वा रिपूनस्खलितं'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्रस्य श्रीदुर्गा ऋषिः, श्रीमहा-काली देवता, ऊं वीजं, श्री माहेश्वरी शक्तिः, श्री काली महा-विद्याः, तमो गुणः, श्रोतृ ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, अग्नि-तत्त्वं, विद्या कला, क्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त -सप्तम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीदुर्गा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-काली-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ऊं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री माहेश्वरी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीकाली-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, तमो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, श्रोतृ-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, अग्नि-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, विद्या-कलायै नमः कर-तले, क्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्वा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य चतुर्नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं ऊं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
हत्वा रिपूनस्खलितं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
तव तत्र भविष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
जन्म देवाद् विवस्वतः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः।**
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्॥
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

ॐ ऐं ऊं नमः हत्वा रिपूनस्खलितं, तव तत्र भविष्यति।
मृतश्च भूयः सम्प्राप्य, जन्म देवाद् विवस्वतः नमो ऊं ऐं ॐ॥ ६६४॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६६५

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सावर्णिको नाम मनुर्भवान्'** इति सप्तशती - सप्तम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्रस्य श्री दुर्गा ऋषिः, श्रीमहा - लक्ष्मी देवता, सूं वीजं, श्री कौमारीः शक्तिः, श्री तारा महा - विद्याः, रजो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद - कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्र - जपे विनियोगः।

ऋष्यादि - न्यासः— श्रीदुर्गा - ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा - लक्ष्मी - देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, सूं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री कौमारी - शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्री तारा - महा - विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो - गुणाय नमः अन्तरारे - मनसि, चक्षु - ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त - रसाय नमः चेतसि, गुद - कर्मेन्द्रियाय नमः गुद - कर्मेन्द्रिये, सौम्य - स्वराय नमः कण्ठ - मूले, जल - तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा - कलायै नमः कर - तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी - मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम - स्थैर्यायुरारोग्याभि - वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा - योगमाया - भगवती - दुर्गा - प्रसाद - सिद्ध्यर्थं च नमो - युत - प्रणव - वाग्वीज - स्व - वीज - लोम - विलोम - पुटितोक्त - सप्तम - शतकस्य पञ्च - नवति - मन्त्र - जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर - न्यासः	**षडङ्ग - न्यासः**
ॐ ऐं सूं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
सावर्णिको नाम मनुः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भवान् भुवि भविष्यति	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
वैश्य - वर्य! त्वया यश्च	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
वरोऽस्मत्तोऽभि - वाञ्छितः	करतल - कर - पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— अक्ष - स्रक् - परशुं गदेषु - कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म - जलजं घण्टां सुरा - भाजनम्।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल - प्रभाम्,
सेवे सैरिभ - मर्दिनीमिह महा - लक्ष्मीं सरोज - स्थिताम्॥

ॐ ऐं सूं नमः सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।
वैश्य - वर्य! त्वया यश्च, वरोऽस्मत्तोऽभि - वाञ्छितः नमो सूं ऐं ॐ॥६६५॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत - तिल - हव्येन होमः।

***

६९६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य षण्ण-नवति-मन्त्रस्य श्रीदुर्गा ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, प्रीं बीजं, श्री ऐन्द्री शक्तिः, श्रीतारा महा-विद्याः, सतो गुणः, चक्षु ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, गुद-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षण्ण-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीदुर्गा-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, प्रीं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्री ऐन्द्री-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीतारा-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, चक्षु-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, गुद-कर्मेन्द्रियाय नमः गुद-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै-नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य षण्ण-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
प्रीं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं प्रीं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
तव ज्ञानं भविष्यति	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं प्रीं नमः तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै, तव ज्ञानं भविष्यति नमो प्रीं ऐं ॐ॥ ६९६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

* * *

६६७

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'मार्कण्डेय उवाच'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, श्री चामुण्डा शक्तिः, श्रीछिन्नमस्ता महा-विद्याः, सतो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, कर-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ह्रीं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, श्रीं वीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीचामुण्डा-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीछिन्नमस्ता-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, कर-कर्मेन्द्रियाय नमः कर-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य सप्त-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमो	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमो	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
श्रीं नमो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
नमो नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
ॐ ऐं श्रीं नमः	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
मार्कण्डेय उवाच	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।

ॐ ऐं श्रीं नमः मार्कण्डेय उवाच नमो श्रीं ऐं ॐ।। ६६७।।

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

६९८

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'इति दत्वा तयोर्देवी'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ह्लौं बीजं, श्री वाराही शक्तिः, श्रीसुन्दरी महा-विद्याः, रजो गुणः, घ्राण ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ह्लौं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवाराही-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीसुन्दरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, घ्राण-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, लिङ्ग-कर्मेन्द्रियाय नमः लिङ्ग-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य अष्ट-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्लौं नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ह्लौं नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
इति दत्वा तयोर्देवी	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
यथाऽभिलषितं वरम्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ह्लौं नमः इति दत्वा तयोर्देवी, यथाऽभिलषितं वरम् नमो ह्लौं ऐं ॐ॥६९८॥

***

६६६

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'बभूवाऽन्तर्हिता सद्यो'** इति सप्तशती-सप्तम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, आं बीजं, श्री नारसिंही शक्तिः, श्रीभुवनेश्वरी महा-विद्याः, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, वाक्-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, वायु तत्त्वं, शान्ति कला, ऐं उत्कीलनं, वोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीमार्कण्डेय-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, आं बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीनारसिंही-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, सतो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, वाक्-कर्मेन्द्रियाय नमः वाक्-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, वायु-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, शान्ति-कलायै नमः कर-तले, ऐं उत्कीलनाय नमः पादयोः, वोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्तम-शतकस्य नव-नवति-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ ऐं आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
नमो नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
वभूवाऽन्तर्हिता सद्यो	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
एवं देव्या वरं लब्ध्वा	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सुरथः क्षत्रियर्षभः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्।**
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्॥
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

ॐ ऐं आं नमः बभूवाऽन्तर्हिता सद्यो, भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा, सुरथः क्षत्रियर्षभः नमो आं ऐं ॐ॥६६६॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

***

७००

विनियोगः— ॐ अस्य श्री **'सूर्याज्जन्म समासाद्य'** इति सप्तशती सप्त-शततम-मन्त्रस्य श्रीवेद-व्यास ऋषिः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, ॐ बीजं, श्री वैष्णवी शक्तिः, श्रीमातङ्गी महा-विद्याः, रजो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्त रसः, योनि-कर्मेन्द्रियं, सौम्य स्वरः, जल तत्त्वं, प्रतिष्ठा कला, श्रीं ह्रीं उत्कीलनं, बोधिनी मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त सप्त-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीवेद-व्यास-ऋषये नमः सहस्रारे—शिरसि, श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः द्वादशारे—हृदि, ॐ बीजाय नमः षडारे—लिङ्गे, श्रीवैष्णवी-शक्त्यै नमः दशारे—नाभौ, श्रीमातङ्गी-महा-विद्यायै नमः षोडशारे—कण्ठे, रजो-गुणाय नमः अन्तरारे-मनसि, रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः ज्ञानेन्द्रिये, शान्त-रसाय नमः चेतसि, योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः योनि-कर्मेन्द्रिये, सौम्य-स्वराय नमः कण्ठ-मूले, जल-तत्त्वाय नमः चतुरारे—गुदे, प्रतिष्ठा-कलायै नमः कर-तले, श्रीं ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः, बोधिनी-मुद्रायै नमः सर्वाङ्गे, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योगमाया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त सप्त-शततम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

	कर-न्यासः	**षडङ्ग-न्यासः**
ॐ नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ऐं नमः	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ॐ नमः	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ॐ ऐं ॐ नमः	अनामिकाभ्यां हुम्	कवचाय हुम्
सूर्याज्जन्म समासाद्य	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
सावर्णिर्भविता मनुः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यानं— **अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल-प्रभाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्॥

ॐ ऐं ॐ नमः सूर्याज्जन्म समासाद्य, सावर्णिर्भविता मनुः नमो ॐ ऐं ॐ ॥७००॥
ॐ ह्रीं सावर्णिर्भविता मनुः ह्रीं ॐ ॥७०१॥

१००० जपात् सिद्धिः, घृत-तिल-हव्येन होमः।

इति श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वर-प्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥
(श्लोका १२, अर्द्ध-श्लोक ११, उवाच-मन्त्राः ६, एवमादितो ७००)

***

अनुभूत मन्त्रों की तालिका

पृष्ठ	मन्त्र-संख्या	मन्त्र का प्रथम चरण	काम्य फल
१०	२	सावर्णिः सूर्य-तनयो, यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।	पुत्र-प्राप्ति
२२	१४	मम वैरि-वशं यातः, कान् भोगानुप-लप्स्यते।	शत्रु-नाश
५०	४२	ममत्वं गत-राज्यस्य, राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।	ज्ञान-प्राप्ति
६३	५५	ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा।	सद्यः मोहन, वशीकरण
६४	५६	तया विसृज्यते विश्वं, जगदेतच्चराचरम्।	मोक्ष-प्राप्ति
६५	५७	सैषा प्रसन्ना वरदा, नृणां भवति मुक्तये।	मोक्ष-प्राप्ति
६६	५८	संसार-बन्ध-हेतुश्च, सैव सर्वेश्वरेश्वरी।	मोक्ष-प्राप्ति
७८	७०	बिबोधनार्थाय हरेर्हरि-नेत्र-कृतालयाम्।	निद्रा-विहीन-महा-रोग-शान्ति
८४	७६	त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।	सर्व-विघ्न-शान्ति
९३	८५	कारितास्ते यतोऽतस्त्वां, कः स्तोतुं शक्तिभान् भवेत्।	दुर्जन-वशीकरण
१०५	९७	भवेतामद्य मे तुष्टौ, मम वध्यावुभावपि।	शत्रु-नाश
१२५	११३	इत्थं निशम्य देवानाम्, वचांसि मधु-सूदनः।	समृद्धि की प्राप्ति
१६६	१५४	लीलयैव प्रचिच्छेद, निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी।	सङ्घर्ष में विजय
१६९	१५७	त एव सद्यः सम्भूता, गणाः शत-सहस्त्रशः।	सङ्घर्ष में विजय
१८३	१७१	क्षणेन तन्महा-सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका।	सर्व-शत्रु-नाश
२०३	१९१	देवी क्रुद्धा गदा-पातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।	शत्रु-नाश
२२३	२११	गर्ज गर्ज क्षणं मूढ!, मधु यावत् पिबाम्यहम्।	शत्रु-नाश
२२५	२१३	एवमुक्त्वा समुत्पत्य, साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्।	शत्रु-नाश
२३२	२२०	देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या।	सामूहिक कल्याण
२३३	२२१	यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो।	विश्व के अशुभ व भय का विनाश
२३४	२२२	या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः।	विश्व की रक्षा।
२३८	२२६	या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता	विद्या, मुक्ति की प्राप्ति।
२३९	२२७	शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां निधानम्।	दारिद्र्य-दुःख-निवारण
२४०	२२८	मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा।	वाक्-सिद्धि।
२४४	२३२	ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषां।	सर्व-विध अभ्युदय

पृष्ठ	मन्त्र-संख्या	मन्त्र का प्रथम चरण	काम्य फल
२४५	२३३	धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव।	सर्व-कार्य-सिद्धि
२४६	२३४	दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः।	दारिद्र्य-दुःख-नाश, सर्व-आपत्ति-निवारण
२५०	२३८	दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं।	दुर्वृत्तियों का शमन
२५३	२४१	शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके!	पाप-रक्षा, अप-मृत्यु-नाश
२५४	२४२	प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।	सर्व-रक्षा
२५५	२४३	सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।	विश्व-रक्षा
२५६	२४४	खड्ग-शूल-गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!	सर्वतो-भाव संरक्षा
२६३	२५१	भगवत्या कृतं सर्वं, न किञ्चिदवशिष्यते।	सर्व-काम-प्रद, सर्वापत्ति-निवारण
२८२	२६५	तयाऽस्माकं वरो दत्तो, यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः।	सर्व-आपत्ति-नाश
२८५	२६८	नमो देव्यै महा-देव्यै, शिवायै सततं नमः।	लक्ष्मी-प्राप्ति
२८६	२६९	रौद्रायै नमो नित्यायै, गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।	सुख-शान्ति-प्राप्ति
२८८	२७१	दुर्गायै दुर्ग-पारायै, सारायै सर्व-कारिण्यै।	कीर्ति-यश-प्राप्ति
३३२	३१५	या देवी सर्व-भूतेषु, लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।	लक्ष्मी-प्राप्ति
३३३	३१६	लक्ष्म्यै नमस्तस्यै।	लक्ष्मी-प्राप्ति
३३४	३१७	लक्ष्म्यै नमस्तस्यै नमो नमः।	लक्ष्मी-प्राप्ति
३५७	३४०	स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्।	विपत्ति-नाश, शुभ-प्राप्ति, सर्व-कार्य-सिद्धि
३९२	३७५	इत्युक्त्वा सा तदा देवि! गम्भीरान्तः-स्मिता जगौ।	विद्या-प्राप्ति
५९५	५७८	देवि! प्रपन्नार्ति-हरे! प्रसीद।	विश्व-व्यापी-विपत्ति-नाश
५९७	५८०	त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या।	मोक्ष-प्राप्ति
५९८	५८१	विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः।	विद्या-प्राप्ति, मातृ-भाव- प्राप्ति
५९९	५८२	सर्व-भूता यदा देवी, स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी।	स्वर्ग व मोक्ष-प्राप्ति
६००	५८३	सर्वस्य बुद्धि-रूपेण, जनस्य हृदि संस्थिते!	स्वर्ग व मोक्ष-प्राप्ति
६०२	५८५	सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थ-साधिके!	सर्व-कल्याण-प्राप्ति
६०३	५८६	सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते सनातनि!	शक्ति-प्राप्ति
६०४	५८७	शरणागत-दीनार्त्त-परित्राण-परायणे!	विपत्ति-नाश, सर्व-कार्य-सिद्धि
६१२	५९५	शिव-दूती-स्वरूपेण, हत-दैत्य-महा-बले!	भय-नाश

पृष्ठ	मन्त्र-संख्या	मन्त्र का प्रथम चरण	काम्य फल
६१६	५९९	सर्व-स्वरूपे सर्वेशे! सर्व-शक्ति-समन्विते!	भय-नाश
६१७	६००	एतत् ते वदनं सौम्यं, लोचन-त्रय-भूषितम्!	भय-नाश
६१८	६०१	ज्वाला-करालमत्युग्रमशेषासुर-सूदनम्।	घोर-सङ्कट से मुक्ति
६१९	६०२	हिनस्ति दैत्य-तेजांसि, स्वनेनापूर्य या जगत्।	पाप-नाश, बाल-ग्रह-शान्ति
६२०	६०३	असुरासृग्-वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।	शत्रु-नाश
६२१	६०४	रोगानशेषानपहंसि तुष्टा।	रोग-नाश
६२२	६०५	एतत् कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य।	धर्म-द्वेषियों का नाश
६२४	६०७	रक्षांसि यज्ञोग्र-विषाश्च नागा।	विविध उपद्रव-नाश
६२५	६०८	विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं।	विश्व का अभ्युदय
६२६	६०९	देवि! प्रसीद परि-पालय।	विश्व का पाप-ताप-निवारण
६२७	६१०	प्रणतानां प्रसीद त्वं, देवि! विश्वार्ति-हारिणि!	देवी की प्रसन्नता की प्राप्ति
६३१	६१४	सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!	बाधा-शान्ति, शत्रु-नाश
६३५	६१८	पुनरप्यति-रौद्रेण, रूपेण पृथिवी-तले।	अशान्त मन की शान्ति
६४७	६३०	तदा तदाऽवतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि-संक्षयम्।	महामारी-शान्ति, अप-मृत्यु-निवारण
६५५	६३८	उपसर्गानशेषांस्तु, महा-मारी-समुद्भवान्।	दैवी बाधाओं से मुक्ति
६५६	६३९	यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्, नित्यमायतने मम।	सर्व-बाधा-निवारण
६६०	६४३	सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तो, धन-धान्य-सुतान्वितः।	बाधा-मुक्त होकर धन-पुत्रादि की प्राप्ति
६६४	६४७	उप-सर्गाः शमं यान्ति, ग्रह-पीडाश्च दारुणाः।	दुःस्वप्न-जन्य क्लेश-निवृत्ति
६६५	६४८	बाल-ग्रहाभि-भूतानां, बालानां शान्ति-कारकम्।	बाल-ग्रह-शान्ति
६६६	६४९	दुर्वृत्तानामशेषाणां, बल-हानि-करं परम्।	भूत-प्रेत-नाश
६७६	६५९	स्मरन् ममैतच्चरितं, नरो मुच्येत सङ्कटात्।	सङ्कट एवं शत्रु-नाश
६९३	६७६	आराधिता सैव नृणां, भोग-स्वर्गापवर्गदा।	भुक्ति-मुक्ति-प्राप्ति
७०६	६८९	ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्य-जन्मनि।	नष्ट सम्पत्ति की पुनः प्राप्ति
७१३	६९६	तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै, तव ज्ञानं भविष्यति।	सिद्धि हेतु तत्त्व-ज्ञान-प्राप्ति
७१७	७००	सूर्याज्जन्म समासाद्य, सावर्णिर्भविता मनुः।	स्व-अभीष्ट की प्राप्ति।

***

मन्त्रात्मक सप्तशती के
उपहार-दाता
गुप्तावतार पूज्य बाबाश्री